मसीही आराधना का परिचय

shepherds
GLOBAL CLASSROOM

मसीही आराधना

का परिचय

shepherds
GLOBAL CLASSROOM

Shepherds Global Classroom का अस्तित्व इस पूरे संसार में उभरते हुए मसीही अगुवों के लिए एक कोर्स प्रदान करके यीशु मसीह की देह को तैयार करने के लिए है। हमारा लक्ष्य संसार के हर देश में आत्मिक प्रशिक्षकों के हाथों में 20-कोर्स पाठ्यक्रम उपकरण को देकर स्वदेशी प्रशिक्षण कार्यक्रमों की संख्या को बढ़ाना है।

यह पुस्तक https://www.shepherdsglobal.org/courses से निःशुल्क डाउनलोड के लिए उपलब्ध है।

मुख्य लेखक: Dr. Randall D. McElwain

कॉपीराइट© 2025 Shepherds Global Classroom

चौथे अंग्रेज़ी संस्करण से हिन्दी भाषा में अनुवादित

सर्वाधिकार सुरक्षित।

तृतीय-पक्ष पाठ्यसामग्री पर उनके सम्बन्धित प्रकाशकों का कॉपीराइट है और उन्हें विभिन्न लाइसेंसों के अन्तर्गत साझा किया गया है।

जब तक संकेत न दिया जाए, सभी पवित्रशास्त्र के उद्धरण HINDI OV (RE-EDITED) बाइबल से लिए गए हैं। कॉपीराइट ©2012 द बाइबल सोसायटी ऑफ इंडिया। इन्हें अनुमति के साथ प्रयोग किया गया है। पूरे विश्व में सर्वाधिकार सुरक्षित।

अनुमति सूचना:

इस पुस्तक को निम्नलिखित दिशानिर्देशों के अन्तर्गत प्रिंट और डिजिटल प्रारूप में स्वतंत्रपूर्वक छापा और वितरित किया जा सकता है: (1) पुस्तक की सामग्री में किसी भी तरह से बदलाव नहीं किया जाना चाहिए; (2) इसकी प्रतियाँ मुनाफ़े के लिए बेची न जाएँ; (3) शैक्षणिक संस्थान इस पुस्तक का उपयोग/प्रतिलिपि बनाने के लिए स्वतंत्र हैं, भले ही वे शिक्षा शुल्क ही क्यों न लेते हों; और (4) Shepherds Global Classroom की अनुमति और पर्यवेक्षण के बिना इस पुस्तक का अनुवाद न किया जाए।

विषय-वस्तु

कोर्स अवलोकन 5

(1) आराधना को परिभाषित करना 7

(2) परमेश्वर और आराधक 29

(3) पुराना नियम में आराधना 45

(4) नया नियम में आराधना 63

(5) कलीसिया के इतिहास में आराधना 83

(6) आराधना में संगीत 99

(7) आराधना में पवित्रशास्त्र और प्रार्थना 121

(8) आराधना की योजना बनाना और उसकी अगुआई करना 147

(9) अन्य प्रश्न 171

(10) आराधना की जीवनशैली 193

आराधना सभाओं की योजना बनाने की रूपरेखा 205

सुझाए गए संसाधन 211

कार्यों का रिकॉर्ड 215

कोर्स अवलोकन

यह कोर्स आराधना के मूल सिद्धांतों से परिचित कराता है।

यदि आप समूह में अध्ययन कर रहे हैं, तो बारी-बारी से विषयवस्तु पढ़ें। आपको कक्षा में किसी भी विचार विमर्श के लिए समय-समय पर रुकना चाहिए। कक्षा अगुए के रूप में, आपकी ज़िम्मेदारी है कि विचार विमर्श अध्ययन की जा रही विषयवस्तु से भटक न जाए। प्रत्येक विचार विमर्श अवधि के लिए एक समय सीमा निर्धारित करना उपयोगी होता है।

विचार विमर्श के प्रश्न और **कक्षा में होने वाली गतिविधियाँ** ► तीर के निशान से चिह्नित हैं।

जब भी आप किसी प्रश्न पर पहुँचें, तो छात्रों को उत्तर पर विचार विमर्श करने दें। यह सुनिश्चित करने का प्रयास करें कि कक्षा के सभी छात्र विचार विमर्श में शामिल हों। यदि आवश्यक हो, तो आप छात्रों को नाम से बुला सकते हैं।

पूरे कोर्स में, कक्षा में गतिविधियाँ और कार्य होते हैं जिनमें विशिष्ट योग्यताओं को पूरा करने वाले भजन और कोरस ढूँढ़ना शामिल होता है। इन गतिविधियों का उद्देश्य आपको आपके द्वारा संचालित सभाओं के लिए आराधना गीत चुनने के लिए तैयार करना है।

यदि आपकी भाषा में छपी हुई भजन पुस्तकें उपलब्ध हैं, तो आप उनका उपयोग कर सकते हैं। वेबसाइट https://worshipleaderapp.com/ और मोबाइल ऐप "Worship Leader" कई अलग-अलग भाषाओं में मसीही गीत उपलब्ध कराते हैं। आप अन्य वेबसाइट्स भी देख सकते हैं जहाँ आपकी भाषा में लिखे गए आराधना गीत उपलब्ध हैं।

इस कोर्स में बहुत सारे **बाइबल वचनों** का उपयोग किया गया है। कक्षा में जिन अंशों को ज़ोर से पढ़ा जाना चाहिए, उन्हें भी तीर के निशान ► से दर्शाया गया है। कृपया छात्रों से पदों को खोजने और बारी-बारी से उन्हें समूह के सामने पढ़ने के लिए कहें।

प्रत्येक पाठ **कार्य** के साथ समाप्त होता है। कार्य अगले पाठ के समय से पहले पूरे करके रिपोर्ट कर देने चाहिए।

प्रत्येक पाठ के लिए एक **परीक्षा** होती है, जिसमें बाइबल वचनों को याद करना शामिल होता है। प्रत्येक कक्षा के अंत में, अगुआ छात्रों के साथ इन प्रश्नों की समीक्षा कर सकता है। अगला कक्षा सत्र इन प्रश्नों पर एक परीक्षा के साथ आरम्भ होना चाहिए। परीक्षाएँ कोर्स पुस्तिका, लिखित नोट्स, बाइबल या सहपाठियों की सहायता के बिना ही दी जानी चाहिए। परीक्षा की उत्तर कुंजी Shepherds Global Classroom से कक्षा प्रमुख द्वारा डाउनलोड के लिए उपलब्ध है।

पाठ 1 में, छात्रों को **30-दिन का एक प्रोजेक्ट** दिया जाता है। इस प्रोजेक्ट के पूरा होने पर, प्रत्येक छात्र को एक पृष्ठ की रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होगी जिसमें प्रोजेक्ट से सीखी गई बातों का सारांश हो। छात्र अपनी प्रोजेक्ट पत्रिका जमा नहीं करेंगे।

यदि छात्र **Shepherds Global Classroom से प्रमाणपत्र प्राप्त करना** चाहता है, तो उसे कक्षा सत्रों में उपस्थित होकर कार्य को पूरा करना होगा। कोर्स के अंत में पूरे किए गए कार्य को रिकॉर्ड करने के लिए एक फॉर्म दिया जाता है।

पाठ 1

आराधना को परिभाषित करना

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अन्त होने तक विद्यार्थी को नीचे दिए गए कार्य करने के योग्य होना चाहिए:

(1) आराधना की परिभाषा बाइबल आधारित होनी चाहिए।

(2) यह समझे कि सच्ची आराधना हमारे जीवन के सभी क्षेत्रों को प्रभावित करती है।

(3) आराधना के ढंग को पहचानना जो परमेश्वर को ग्रहणयोग्य हो।

(4) मसीही जीवन में आराधना के महत्व को समझना।

इस पाठ की तैयारी

कण्ठस्थ करें यूहन्ना 4:23-24।

भूमिका

अमेरिका में यह रविवार की सुबह है। सजे-धजे मसीही एक खूबसूरत पवित्र स्थान पर आराधना के लिए इकट्ठा होते हैं। ऑर्गन और गायक मंडली के साथ, वे भव्य भजन गाते हैं। दान इकट्ठा करते समय ऑर्केस्ट्रा बजता है। पास्टर प्रार्थना की अगुआई करते हैं और विश्वासी मन ही मन प्रार्थना करते हैं। अपने उपदेश के दौरान, पास्टर अपने विशाल पुस्तकालय से लेखकों के उद्धरण देते हैं। प्रवचन के बाद, चर्च चाँदी की एक प्रभु-भोज ट्रे, प्रभु-भोज वेफर्स और अलग-अलग प्यालों का उपयोग करके प्रभु-भोज मनाता है। यही आराधना है।

चीन में यह रविवार की सुबह है। 30 साधारण कपड़े पहने हुए विश्वासी एक कमरे में इकट्ठा होते हैं। वे बिना किसी वाद्य यंत्र के आराधना गीत और भजन गाते हैं। अगुआ एक सच्चाई साझा करता हैं जो उन्होंने हाल ही में बाईबल के अध्ययन से सीखी है। एक विस्तारित प्रार्थना समय के दौरान, इस गृह कलीसिया के सदस्य बारी-बारी से एक-दूसरे की ज़रूरतों के लिए प्रार्थना करते हैं। प्रार्थना के बाद, वे प्लास्टिक के प्यालों में परोसी गई रोटी और दाखरस के साथ प्रभु-भोज मनाते हैं। जैसे ही लोग जाते हैं, वे चुपचाप अपना दान दरवाज़े के पास एक दान-पात्र में रख देते हैं। यह दान उन सदस्यों के साथ बाँटा जाएगा जिनकी विशेष ज़रूरतें हैं। यही आराधना है।

नाइजीरिया में यह रविवार की सुबह है। रंग-बिरंगे कपड़े पहने मसीही एक ऊर्जावान आराधना सभा के लिए इकट्ठा होते हैं। गिटार, कीबोर्ड और ड्रम के साथ एक आराधक मंडली स्क्रीन पर प्रस्तुत गीतों में मण्डली की अगुआई करती है। बैंड बजता है और सदस्य

पवित्र स्थान के सामने एक दान पात्र में अपना दान डालते हैं। यह प्रवचन व्यावहारिक है और समकालीन नाइजीरियाई समाज की ज़रूरतों को ध्यान में रखता है। सभा का समापन हाथ मिलाने, गले मिलने और उत्सव मनाने के साथ होता है। यही आराधना है।

आराधना कई अलग-अलग प्रकार से होती है। हर देश और हर संस्कृति में, आराधना के रूप अलग-अलग होंगे। आराधना किसी विशेष प्रकार की सभा से कहीं बढ़कर है। वास्तव में, आराधना स्वयं सभा से कहीं बढ़कर है; आराधना में मसीही जीवन के सभी क्षेत्र शामिल हैं। इस पाठ में, हम आराधना की बाइबल आधारित परिभाषा पर विचार करेंगे।

► यूहन्ना 4:1-29 पढ़ें। विचार-विमर्श करें कि आत्मा और सच्चाई से आराधना करने का क्या अर्थ है।

बाइबल आधारित आराधना की विशेषताएँ

आराधना का अर्थ है परमेश्वर के महत्व को पहचानना और उसका आदर करना। इसका अर्थ है परमेश्वर को वह सम्मान देना जो उसका अधिकार है।

► नीचे आराधना की तीन परिभाषाएँ दी गई हैं। जो परिभाषा आपको अधिकाधिक सार्थक लगे, उसे याद कर लीजिए।

- “आराधना, सनातन परमेश्वर के प्रति मनुष्य की प्रेममय प्रतिक्रिया है।" - एवलिन अंडरहिल
- “आराधना, परमेश्वर के प्रति इच्छुक प्रत्युत्तर से अपने हृदय को ऊपर उठाना है।" - फ्रैंकलिन सेग्लर
- “आराधना, परमेश्वर के प्रति हमारी संपूर्णता की प्रतिक्रिया है।" - वॉरेन विर्सबे

आराधना आदर-सूचक समर्पण है

बाइबल में “आराधना” के लिए जिन मुख्य इब्रानी और यूनानी शब्दों का अनुवाद किया गया है, उनका अर्थ परमेश्वर के सामने झुकना है।[1] यह आराधना में शामिल विनम्र समर्पण को दर्शाता है। झुकने की शारीरिक क्रिया हृदय के आदर को दर्शाती है। कम से कम दूसरी शताब्दी से, मसीही प्रार्थना करते समय श्रद्धापूर्वक घुटने टेकते थे।

प्रकाशितवाक्य 4:10-11 में, प्रेरित यूहन्ना ने स्वर्ग में होने वाली आराधना देखी:

> तब चौबीसों प्राचीन सिंहासन पर बैठनेवाले के सामने गिर पड़ेंगे, और उसे जो युगानुयुग जीवता है प्रणाम करेंगे; और वे अपने–अपने मुकुट सिंहासन के सामने यह कहते हुए डाल देंगे,“हे हमारे प्रभु और परमेश्वर, तू ही महिमा और आदर और सामर्थ्य के योग्य है; क्योंकि तू ही ने सब वस्तुएँ सृजीं और वे तेरी ही इच्छा से थीं और सृजी गईं।”

[1] इब्रानी शब्द है *शाचा,* जिसका अनुवाद है “आराधना करना,” “झुकना,” “गिरना,” या “आदर।” यूनानी शब्द है *प्रोस्कुनेओ,* जिसका अनुवाद नए नियम में “आराधना करना” या “झुकना” किया गया है।

जब किसी हारे हुए राजा को कैसर के सामने लाया जाता था, तो उसे अपना मुकुट कैसर के चरणों में डालकर समर्पण में झुकना होता था। यूहन्ना दिखाता है कि परमेश्वर, जो कैसर से कहीं अधिक शक्तिशाली और योग्य है, आराधकों के विनम्र समर्पण का अधिकार रखता है।

पुराने नियम में, परमेश्वर ने विद्रोही लोगों के बलिदानों को अस्वीकार कर दिया था, “ये लोग जो मुँह से मेरा आदर करते हुए समीप आते परन्तु अपना मन मुझ से दूर रखते हैं, और जो केवल मनुष्यों की आज्ञा सुन सुनकर मेरा भय मानते हैं...” (यशायाह 29:13)। बाहर से तो वे आराधक दिखाई देते थे; वे उचित शब्द बोलते थे और उचित रीति-रिवाज़ों का पालन करते थे। अन्दर से, उनका हृदय परमेश्वर से दूर था। सच्ची आराधना हृदय से आदर-सूचक समर्पण है।

यही सच्चाई नए नियम में भी देखी जा सकती है। सामरी स्त्री ने आराधना के भौतिक स्थान, यरूशलेम बनाम गिरिज्जीम पर्वत, के बारे में वाद-विवाद किया। यीशु ने आराधना के आत्मिक स्थान, हृदय, की ओर संकेत किया, “परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करनेवाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें” (यूहन्ना 4:24)। सच्ची आराधना के लिए परमेश्वर के प्रति समर्पण होना आवश्यक है।

जिसकी आराधना की जाती है, सच्ची आराधना, उसका आदर करती है। कुछ कलीसियाओं में, आराधना, परमेश्वर के प्रति उचित आदर को पहचानने में असफल होती है। जैसा कि हम आनेवाली परिभाषा में देखेंगे, आराधना में उत्सव तो शामिल है, परन्तु साथ ही परमेश्वर का आदर भी होता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि आराधना की केवल एक ही शैली उपयुक्त है। हालाँकि, यह पहली परिभाषा हमें याद दिलाती है कि अपनी आराधना पद्धतियों का निर्णय लेते समय, हमें यह पूछना चाहिए, "क्या मैं जिस परमेश्वर की आराधना करता हूँ, उसका आदर कर रहा हूँ?"

आराधना सेवा है

> इसलिये हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। (रोमियों 12:1)।

यह पद हमारे आदर-सूचक समर्पण को दैनिक जीवन से जोड़ता है। जब हम स्वयं को जीवित बलिदान के रूप में समर्पित करते हैं, तभी हमारी सेवा या आराधना परमेश्वर को स्वीकार्य होती है। कलीसिया की नियमित सभा महत्वपूर्ण है; प्रारंभिक कलीसिया सामूहिक आराधना को महत्व देती थी।[2] जबकि, सार्वजनिक सभा समाप्त होने पर आराधना समाप्त नहीं होती। सच्ची आराधना जीवन के सभी क्षेत्रों को प्रभावित करती है।

---

[2] इब्रानियों 10:25 वचन में सामूहिक आराधना का **आदेश** दिया गया है। प्रेरितों 2:46-47 वचनों में सामूहिक आराधना की **कल्पना** की गई है।

आराधना स्तुति है

भजन संहिता की पुस्तक में *स्तुति* शब्द का प्रयोग 130 से भी ज़्यादा बार हुआ है। "स्तुति" के लिए तीन इब्रानी शब्द हैं। पहला शब्द, *हलाल,* उत्सव मनाने या शेखी बघारने का भाव रखता है। दूसरा शब्द, *यादाह,* का अर्थ है प्रशंसा करना, धन्यवाद देना या आभार प्रकट करना। तीसरा शब्द, *ज़मार,* का अर्थ है "गाना" या "स्तुति गाना"।

ये शब्द, विशेष रूप से *हलाल,* आराधना के आनंद का संकेत देते हैं। *हलाल* वह शब्द है जिसका इस्तेमाल एक यहूदी व्यक्ति किसी पर शेखी बघारने के लिए करता है। आराधना में, हम परमेश्वर की प्रशंसा करते हैं; आराधना में, हम उनकी भलाइयों का जश्न मनाते हैं; आराधना में, हम परमेश्वर की महानता का आनंद लेते हैं।

सच्ची आराधना परमेश्वर का आदर करती है; तब भी, सच्ची आराधना परमेश्वर का उत्सव भी मनाती है! आराधना में, हम परमेश्वर की भलाई में आनन्दित होते हैं। पाठ 6 में, हम आराधना में संगीत की भूमिका का अध्ययन करेंगे। आराधना में संगीत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह मण्डली को उत्सव और परमेश्वर की स्तुति में शामिल होने का एक माध्यम प्रदान करता है।

आराधना संगति है

परमेश्वर और मनुष्य के बीच आराधना संगति है। आराधना में आराधकों के बीच की संगति भी शामिल है। यूनानी शब्द (*कोइनोनिया*) जिसका अर्थ संगति या साझा करना है, अक्सर आराधना के संदर्भ में प्रयोग किया जाता है। मसीही प्रेरितों की शिक्षाओं और संगति (*कोइनोनिया*), रोटी तोड़ने और प्रार्थनाओं के लिए समर्पित थे (प्रेरितों 2:42)। विश्वासियों के रूप में, हमें परमेश्वर के पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह की संगति (*कोइनोनिया*) में बुलाया गया है (1 कुरिन्थियों 1:9)।

आराधना को संगति के रूप में समझने का आदर्श त्रिएकत्व है। जिस प्रकार ईश्वरत्व के सदस्य संगति में एक-दूसरे से संबंध रखते हैं, उसी प्रकार हम आराधना में एक-दूसरे से और परमेश्वर से संबंध रखते हैं। सांसारिक आराधना को सनातन त्रिएकत्व से जोड़ने वाले एक आशीर्वाद में, पौलुस ने लिखा, “प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ होती रहे” (2 कुरिन्थियों 13:14)। जैसे कि हम मसीह के साथ एक हैं, हम आत्मा के द्वारा पिता के

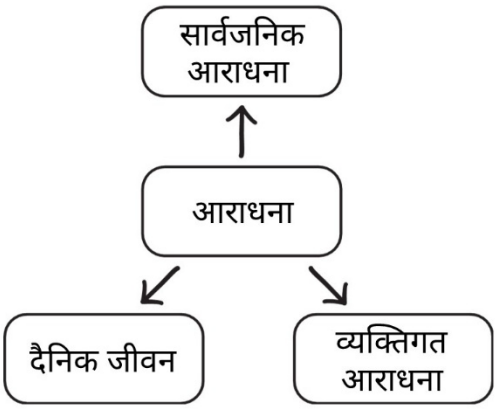

साथ पुत्र की संगति में भाग लेते हैं।[3] आराधना में, हम त्रिएकत्व की भरपूर संगति का अनुभव करते हैं। हमारी सांसारिक आराधना त्रिएकत्व की पूर्ण संगति पर आधारित है।

त्रिएकत्ववादी आराधना अनुग्रह का अनुभव है, कर्मों का नहीं। आराधना हमारे महायाजक, यीशु मसीह के द्वारा संभव होती है। वह हमारी अयोग्य आराधना को ग्रहण करता है, उसे पवित्र करता है, और उसे पिता के सामने निष्कलंक और बिना किसी झुर्री के प्रस्तुत करता है। यीशु के कारण पिता हमारी आराधना को स्वीकार करते हैं, और हम आत्मा में यीशु के जीवन में उनके साथ एक हो जाते हैं।

हम आराधना इसलिए नहीं करते कि इससे परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त होगा, बल्कि इसलिए करते हैं क्योंकि अनुग्रह के द्वारा हमें परमेश्वर के साथ संगति में भाग लेने का विशेषाधिकार प्राप्त हुआ है।

आज हमारा सीमित *कोइनोनिया* (आराधना में परमेश्वर के साथ संगति और अन्य विश्वासियों के साथ संगति) स्वर्गीय आराधना का पूर्वानुभव है। आराधकों के रूप में, हम संगी विश्वासियों के साथ संगति चाहते हैं क्योंकि पृथ्वी पर आराधना अनन्त आराधना का पूर्वाभ्यास है।

आराधना में सम्पूर्ण जीवन शामिल होता है

नया नियम में आराधना के लिए प्रयुक्त एक अन्य शब्द का कभी-कभी अनुवाद किया जाता है "भक्ति":[4]

> यदि कोई अपने आप को भक्त समझे और अपनी जीभ पर लगाम न दे पर अपने हृदय को धोखा दे, तो उसकी भक्ति व्यर्थ है। हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल **भक्ति** यह है कि अनाथों और विधवाओं के क्लेश में उनकी सुधि लें, और अपने आप को संसार से निष्कलंक रखें। (याकूब 1:26-27)।

यह शब्द दर्शाता है कि आराधना केवल रविवार को होने वाली आराधना से कहीं बढ़कर है। बाइबल आधारित आराधना में संपूर्ण जीवन शामिल होता है। एक आराधना सेवा, आराधना की एक केंद्रित अभिव्यक्ति है, परन्तु केवल आराधना सेवा ही पर्याप्त नहीं है। हमें आराधना की जीवनशैली अपनानी चाहिए। हमारी साप्ताहिक सामूहिक आराधना हमारे दैनिक जीवन में दिखाई देनी चाहिए।

सच्ची आराधना प्रतिदिन परमेश्वर के प्रति समर्पण में देखी जाती है। याकूब दर्शाता है कि यदि मैं रविवार को स्तुति गीत गाता हूँ, परन्तु सोमवार को अपनी ज़ुबान पर काबू नहीं रख पाता, तो मेरी आराधना अधूरी है। शुद्ध और निष्कलंक आराधना में व्यावहारिक सेवा (अनाथों और विधवाओं से भेंट करना) और प्रतिदिन आज्ञाकारिता (स्वयं को संसार से निष्कलंक रखना) दोनों शामिल हैं।

---

[3] James B. Torrance, *Worship, Community, and the Triune God of Grace* (Downers Grove: InterVarsity Press, 1996), 20-21

[4] यूनानी शब्द का अर्थ आमतौर पर आराधना के बाहरी दृष्टिकोणों से है। प्रेरितों 26:5, कुलुस्सियों 2:18, और याकूब 1:26-27.

यशायाह 6 में, नबी ने परमेश्वर को अपने सिंहासन पर बैठे हुए देखा। यशायाह की एक नबी के रूप में सेवा इस अनुभव से बदल गई। यशायाह ने परमेश्वर को यह कहते हुए सुना, “मैं किसको भेजूँ, और हमारी ओर से कौन जाएगा?” तब यशायाह ने कहा, “मैं यहाँ हूँ! मुझे भेज” (यशायाह 6:8)। सच्ची आराधना हमारे जीवन को बदल देती है और हमें परमेश्वर के इच्छुक और प्रभावशाली सेवक बनाती है।

► मलाकी 1:6-9, 1 शमूएल 13:8-14, लैव्यव्यवस्था 10:1-3, और प्रेरितों 5:1-11 पढ़ें। यह वचन आराधना के विषय क्या सिखाते हैं?

आराधना क्यों महत्वपूर्ण है?

ए.डब्ल्यू. टोज़र ने आराधना को आधुनिक कलीसिया का "खोया हुआ रत्न" कहा है। उन्होंने कहा कि हम जानते हैं कि कैसे प्रचार करना है, कैसे सुसमाचार प्रचार करना है, और कैसे संगति करनी है। फिर भी, अपनी सारी शक्ति के बावजूद, हम अक्सर आराधना में असफल हो जाते हैं। हम प्रचारक को प्रचार करते हुए देखते हैं; हम गायक मंडली, स्तुति मंडली, या एकल गायक को गाते हुए सुनते हैं; हम दान में धन देते हैं। परन्तु हम अक्सर सच्ची आराधना करने में असफल हो जाते हैं; हम सच्ची आराधना की जगह कर्म को अपना लेते हैं।

आराधना हमारे लिए आवश्यक होनी चाहिए क्योंकि यह परमेश्वर के लिए सबसे महत्वपूर्ण है।

► परमेश्वर आराधना को कितना महत्व देता है यह जानने के लिए निर्गमन 20:1-5 पढ़ें।

पहली दो आज्ञाओं का सम्बन्ध आराधना से है। पहली आज्ञा हमें बताती है कि **हम किसकी आराधना करते हैं**। “तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना” (निर्गमन 20:3)। दूसरी आज्ञा हमें बताती है कि **हम किस प्रकार आराधना करते हैं**। “तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना...” (निर्गमन 20:4)। तब निर्गमन 20 के अन्तिम पद में, परमेश्वर आराधना के विषय पर वापिस आता है। ये पद इस्राएलियों को सिखाते हैं कि उन्हें अपनी वेदियाँ कैसे बनानी चाहिए और वेदी के पास आदरपूर्वक कैसे जाना चाहिए।

► निर्गमन 20:23-26 पढ़ें। परमेश्वर के लिए आराधना सबसे महत्वपूर्ण है!

बाइबल में आराधना एक मुख्य भूमिका निभाती है। निर्गमन और लैव्यव्यवस्था इस्राएल की आराधना के लिए विशेष निर्देश देते हैं। भजन संहिता आराधना के लिए एक गीत-पुस्तक प्रदान करती है। सुसमाचारों में, हम लोगों को यीशु की आराधना करने के लिए झुकते हुए देखते हैं।

► मत्ती 2:11, मत्ती 8:2, मत्ती 9:18, मत्ती 14:33, मत्ती 15:25, और मत्ती 28:17 पढ़ें।

प्रेरितों में, कलीसिया आराधना के लिए एकत्र होती है।[5] अपनी पत्रियों में, पौलुस कलीसिया में आराधना अभ्यास को सम्बोधित करता है (1 कुरिन्थियों 11 और 1 तीमुथियुस 2)। प्रकाशितवाक्य कि पुस्तक हमें स्वर्ग में उस आराधना की झलक पाने का अवसर देती है जो परमेश्वर के सिंहासन पर पहले से ही हो रही है। पृथ्वी पर की गई आराधना, स्वर्ग में की गई आराधना का पूर्वाभ्यास है (प्रकाशितवाक्य 4-5)। परमेश्वर के लिए आराधना सबसे महत्वपूर्ण है।

आराधना महत्वपूर्ण है क्योंकि हम आराधना में परमेश्वर को देखते है

► यशायाह 6:1-8 पढ़ें। मन्दिर में यशायाह के अनुभव पर विचार-विमर्श करें।

यशायाह अध्याय 6 आराधना का एक महत्वपूर्ण बाइबल आधारित चित्रण प्रदान करता है। यह दर्शाता है कि आराधना में हम परमेश्वर को देखते हैं। मंदिर में, यशायाह ने प्रभु को ऊँचे पर देखा।

यह सत्य सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में दोहराया गया है। प्रभु के दिन आराधना करते समय, यूहन्ना ने स्वर्गीय दर्शन देखे (प्रकाशितवाक्य 1:10)। जब पौलुस और सीलास प्रार्थना और गीत गाकर आराधना कर रहे थे, तब परमेश्वर ने अपनी सामर्थ्य प्रकट की (प्रेरितों 16:25-26)। दाऊद ने कष्ट सहा जिसके कारण वह पुकार उठा, “हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?” (भजन संहिता 22:1)। अपने कष्टों के बीच में, दाऊद ने आराधना और स्तुति के माध्यम से परमेश्वर को देखा; “तू जो इस्राएल की स्तुति के सिंहासन पर विराजमान है, तू तो पवित्र है” (भजन संहिता 22:3)। आराधना में, हम परमेश्वर को देखते हैं।

आराधना महत्वपूर्ण है क्योंकि आराधना में हम स्वयं को देखते हैं और बदल जाते हैं

मंदिर में, यशायाह ने न केवल प्रभु को, बल्कि स्वयं को भी देखा। जब यशायाह ने परमेश्वर को सिंहासन पर विराजमान देखा, तो वह बोल उठा, “हाय! हाय! मैं नष्ट हुआ; क्योंकि मैं अशुद्ध होंठवाला मनुष्य हूँ...” (यशायाह 6:5)। सच्ची आराधना हमें स्वयं को वैसे देखने की अनुमति देती है जैसे परमेश्वर हमें देखता है।

यही कारण है कि आराधना पद्धति में पारंपरिक रूप से अंगीकार की प्रार्थना शामिल की जाती रही है। अंगीकार की प्रार्थना यह नहीं कहती, "हमने परमेश्वर के नियम के विरुद्ध विद्रोह किया है और जानबूझकर पाप किया है।" अंगीकार की प्रार्थना यह मानती है, "पवित्र परमेश्वर की पूर्ण पवित्रता की तुलना में सबसे शुद्ध मानव हृदय भी अशुद्ध है। हमें परमेश्वर की कृपा की निरंतर आवश्यकता है।"

आराधना में, हम स्वयं को एक पवित्र परमेश्वर की दृष्टि से देखते हैं। आराधना के अलावा, यह दृश्य एक भयावह अनुभव होता। यद्यपि, क्योंकि हम परमेश्वर को पहले ही देख चुके हैं, इसलिए हम शुद्ध होते हैं, दोषी नहीं ठहराए जाते। चूँकि हमने परमेश्वर और उनके अनुग्रह

---

[5] प्रारंभिक मसीही मंदिर और आराधनालय में आराधना करना जारी रखते थे (प्रेरितों 2:46-47, प्रेरितों 3:1-11, प्रेरितों 5:12, 21, 42). इसके अलावा, मसीही लोग प्रार्थना, शिक्षा और संगति के लिए घरों में मिलते थे। ये सभी आराधना के दृष्टिकोण हैं (प्रेरितों 2:46-47, प्रेरितों 4:31, प्रेरितों 5:42)।

को देखा है, इसलिए हम स्वयं को ईमानदारी से देखते हैं, उनकी आवश्यकता को स्वीकार करते हैं, और अपने जीवनों में उनके अनुग्रह की मांग करते हैं।

आराधना हमें प्रकट करती है कि हम कौन हैं, परन्तु यह हमें जिस रूप में पाती है, उसी रूप में हमें छोड़ती नहीं। परमेश्वर की पवित्रता के प्रकाश में, यशायाह ने स्वयं को अशुद्ध देखा। फिर भी, निराशा उत्पन्न करने के बजाय, आराधना ने परिवर्तन किया।

> तब एक साराप हाथ में अँगारा लिये हुए, जिसे उसने चिमटे से वेदी पर से उठा लिया था, मेरे पास उड़ कर आया। उसने उससे मेरे मुँह को छूकर कहा, "देख, इसने तेरे होंठों को छू लिया है, इसलिये तेरा अधर्म दूर हो गया और तेरे पाप क्षमा हो गए।" (यशायाह 6:6-7)।

यशायाह पवित्र परमेश्वर से मिलकर बदल गया। सच्ची आराधना आराधक को बदल देती है—मंदिर में यशायाह, कुएँ के पास सामरी स्त्री और रूपांतरण पर्वत पर शिष्य। परमेश्वर से मिलकर आराधक बदल जाता है।

आराधना महत्वपूर्ण है क्योंकि हम आराधना में हमारे संसार को देखेते हैं

आराधना में यशायाह ने परमेश्वर को देखा; उसने स्वयं को देखा; उसने अपने संसार की आवश्यकताओं को देखा। "अशुद्ध होंठवाले मनुष्यों के बीच में रहता हूँ" (यशायाह 6:5)। अपने प्रत्युत्तर में उसने कहा, "मैं यहाँ हूँ! मुझे भेज" (यशायाह 6:8)। यह आराधना ही है जिसमें कि हम जरूरतमंद संसार की प्रभावशाली सेवा के लिए तैयार किए जाते हैं।

> "आराधना के लिए आएँ – सेवा के लिए जाएँ"
> - कलीसिया के दरवाज़े के ऊपर लिखा हुआ बोर्ड

पहले, हमने देखा कि सच्ची आराधना जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित करती है। कुछ कलीसियाओं ने आराधना और सुसमाचार प्रचार को अलग कर दिया है। वे कहते हैं, "हमारे कलीसिया का केंद्र सुसमाचार प्रचार है। अन्य कलीसियाएँ आराधना पर ध्यान केंद्रित कर सकती हैं।" या वे कहते हैं, "हमारा लक्ष्य आराधना है। हम सुसमाचार प्रचार और मिशन को किसी और पर छोड़ देंगे।" यह आराधना के विषय हमारी गलतफहमी को दर्शाता है। आराधना में, हम परमेश्वर को अपनी संसार की ज़रूरतें दिखाने देते हैं। सच्ची आराधना का परिणाम सुसमाचार प्रचार होगा।

सच्ची आराधना ने यशायाह की ज़रूरत को प्रकट किया—और आराधना के द्वारा उसका परिवर्तन हुआ। सच्ची आराधना ने यशायाह के संसार की ज़रूरत को प्रकट किया—और उसने उस संसार को बदलने के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया। आराधना में, हम अपने संसार की सेवा करने का उत्साह उत्पन्न करेंगे। सच्ची आराधना के प्रति आवश्यक प्रतिक्रिया यह है, "मैं यहाँ हूँ! मुझे भेज।"

ओसवाल्ड चेम्बर्स ने भावी मिशनरियों को चेतावनी दी, "यदि आप प्रतिदिन परमेश्वर के कार्य में शामिल होने के समय आराधना नहीं करते हैं, तो आप न केवल स्वयं निकम्मे होंगे, परन्तु अपने आस-पास के लोगों के लिए भी रुकावट बनेंगे।"[6]

---

[6] Oswald Chambers, *My Utmost for His Highest*, (September 10 entry). 21 जुलाई 2020 को https://utmost.org/missionary-weapons-1/ से लिया गया।

चैंबर्स ने प्रभावशाली सेवा की तैयारी के रूप में आराधना के महत्व को पहचाना। आराधना में, परमेश्वर हमारे आस-पास के संसार की ज़रूरतों को प्रकट करता है और हमें उन ज़रूरतों को पूरा करने के लिए तैयार करता है।

आराधना महत्वपूर्ण है क्योंकि आराधना में विफलता हमें परमेश्वर से अलग कर देती है

► रोमियों 1:18-25 पढ़ें। झूठी आराधना और पाप का परस्पर क्या सम्बन्ध है?

रोमियों के आरम्भ में, पौलुस दर्शाता है कि मनुष्य परमेश्वर के सामने क्यों दोषी ठहराया जाता है। वह बताता है कि मनुष्य की भटकी अवस्था सच्चे परमेश्वर की आराधना करने से इनकार करने का परिणाम है। ध्यान दें कि रोमियों 1:21-25 में पौलुस किस प्रक्रिया का वर्णन करता है:

1. उन्होंने परमेश्वर की आराधना नहीं की। "इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया..." (रोमियों 1:21)। "उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर झूठ बना डाला, और सृष्टि की आराधना और सेवा की, न कि उस सृजनहार की..." (रोमियों 1:25)।

2. परिणाम के रूप में "...व्यर्थ विचार करने लगे, यहाँ तक कि उन का निर्बुद्धि मन अन्धेरा हो गया। वे अपने आप को बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गए, और अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशवान् मनुष्य, और पक्षियों, और चौपायों, और रेंगनेवाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला" (रोमियों 1:21-23)।

3. न्याय में "परमेश्वर ने उन्हें उनके मन की अभिलाषाओं के अनुसार अशुद्धता के लिये छोड़ दिया..." (रोमियों 1:24)।

पौलुस दर्शाता है कि मानवजाति की मूर्खता, भ्रष्टाचार और वासना में पतन, लोगों द्वारा परमेश्वर की आराधना करने से इनकार करने का परिणाम था। उन्होंने परमेश्वर की आराधना नहीं की; उन्होंने सृष्टिकर्ता की नहीं, परन्तु सृष्टि की आराधना और सेवा की।

हर कोई आराधना करता है। मसीही परमेश्वर की आराधना करते हैं। एक मुसलमान अल्लाह की आराधना करता है। एक नास्तिक अपनी बुद्धि की आराधना करता है। हर कोई आराधना करता है। यदि हम सृष्टिकर्ता की आराधना करने से इनकार करते हैं, तो हम सृष्टि की आराधना करेंगे।

आराधना आवश्यक है। सच्चे परमेश्वर की सच्ची आराधना हमें उसकी छवि में बदल देती है। झूठे ईश्वर की आराधना हमें उस ईश्वर की छवि में बदल देती है। हम जिसकी भी आराधना करते हैं, हम उसके जैसे बन जाते हैं।

आराधना में तीन लक्ष्य

मारवा डॉन ने सच्ची आराधना के तीन लक्ष्यों को पहचाना है।[7] आराधना मे हम:

(1) आराधना में हम परमेश्वर से भेंट करते हैं।

कोई भी आराधना सभा जो हमें परमेश्वर के पास नहीं लाती, वह सच्ची आराधना के विपरीत होती है। इसका अर्थ यह नहीं कि हर आराधना सभा भावनात्मक या प्रभावशाली होगी। इसका अर्थ यह भी नहीं कि हर आराधना सभा का विषय आराधना ही होगी। परन्तु हर आराधना सभा में, हमें स्वयं को परमेश्वर की उपस्थिति में दिखाई देना चाहिए। यह प्रवचन से प्राप्त सत्य के माध्यम से हो सकता है; यह परमेश्वर के वचन के पाठ के माध्यम से हो सकता है; यह परमेश्वर की स्तुति करने वाले गीत के माध्यम से हो सकता है; यह प्रार्थना के समय हो सकता है जिसके दौरान हम परमेश्वर के साथ चलने के लिए नई शक्ति प्राप्त करते हैं। किसी न किसी रूप में, प्रत्येक आराधना सभा हमें परमेश्वर के साथ भेंट करवाने वाली होनी चाहिए।

(2) आराधना में हम मसीही चरित्र को तैयार करते हैं।

आराधना में, हम स्वयं को देखते हैं और परिवर्तित होते हैं। आराधना में, हम उन सच्चाइयों को सीखते हैं जो हमारे मसीही चरित्र को आकार देती हैं। जैसे-जैसे हम परमेश्वर की आराधना करते हैं, हमारा चरित्र उसकी छवि में और अधिकाधिक ढलता जाता है। हम जिसकी भी आराधना करते हैं, हम उसके जैसे बन जाते हैं।

(3) आराधना में हम मसीही समाज का निर्माण करते है।

आराधना में, हम अपने आस-पास के संसार को देखते हैं और उस संसार की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए स्वयं को समर्पित करते हैं। जब हम ऐसा करते हैं, तो कलीसिया का निर्माण होता है, और विश्वासी हर तरह से उसमें, जो सिर है, अर्थात् मसीह में बढ़ते हैं (इफिसियों 4:15)। सच्ची आराधना सच्चे मसीही समाज के निर्माण का एक साधन है।

किस प्रकार की आराधना परमेश्वर को ग्रहणयोग्य है?

► आपके विचार से परमेश्वर किस प्रकार की आराधना को ग्रहण करते हैं?

यीशु ने सामरी स्त्री से कहा कि सच्चे आराधक उसकी आराधना आत्मा और सच्चाई से करते हैं (यूहन्ना 4:23-24)। एक सच्ची आराधना है जो परमेश्वर को ग्रहणयोग्य है; इसका अर्थ यह है कि एक झूठी आराधना भी है जो ग्रहणयोग्य नहीं है।[8]

---

[7] Marva Dawn, *Reaching Out Without Dumbing Down* (Grand Rapids: Eerdmans, 1995)

[8] इस खण्ड का यह भाग यहाँ से लिया गया है David Jeremiah, *Worship* (CA: Turning Point Outreach, 1995), 20-24.

आराधना अगुवे अक्सर पूछते हैं, “क्या हमारी आराधना ने कलीसिया को प्रभावित किया? क्या इसने उस शैली में संवाद किया जिसे लोग पसंद करते हैं?” बाइबल दर्शाती है कि ज़्यादा महत्वपूर्ण प्रश्न ये हैं, “क्या हमारी आराधना ने परमेश्वर का आदर किया? क्या हमने परमेश्वर की आराधना उसकी माँग के अनुसार की? क्या हमारी आराधना उसे ग्रहणयोग्य है?”

वह आराधना जिसे परमेश्वर अस्वीकार करता है

परमेश्वर अज्ञानतापूर्ण आराधना को ग्रहण नहीं करता।

सामरी स्त्री नहीं जानती थी कि वह किसकी आराधना करती है (यूहन्ना 4:22)। एथेंस में पौलुस ने ऐसे लोगों को देखा जो एक अनजान ईश्वर की आराधना करते थे (प्रेरितों 17:23)।

पाठ 2 में हम उस परमेश्वर के स्वरूप का अध्ययन करेंगे जिसकी हम आराधना करते हैं। जब हम परमेश्वर को सही अर्थ में नहीं जानते, तो हमारी आराधना अज्ञानतापूर्ण होती है; यह एक अज्ञात परमेश्वर की आराधना होती है। हम एक आराधना पद्धति की औपचारिकता निभाते,[9] परन्तु हमारी आराधना एक अज्ञात ईश्वर की है। आराधना से आराधक को परमेश्वर का स्वरूप प्रकट होना चाहिए। हमें ऐसे गीत गाने चाहिए जो परमेश्वर के गुणों का वर्णन करें; हमें ऐसे बाइबल अंश पढ़ने चाहिए जो परमेश्वर के बारे में सत्य बताते हों; हमें ऐसे संदेश देने चाहिए जो परमेश्वर के स्वरूप को प्रकट करें। हमें किसी अज्ञात ईश्वर की आराधना स्वीकार नहीं करनी चाहिए।

परमेश्वर मूर्तिपूजा को ग्रहण नहीं करता।

मूर्ति वह वस्तु है जो जीवन के किसी भी क्षेत्र में परमेश्वर के सर्वोच्च अधिकार के रूप में उचित स्थान लेती है। संसार के कुछ भागों में, मूर्तियाँ मूर्तिपूजक देवताओं की मूर्तियाँ हैं। संसार के कुछ भागों में, मूर्तियाँ नौकरियाँ, बैंक खाते, घर और मनोरंजन हैं। हमारे जीवन में परमेश्वर का उचित स्थान लेने वाली कोई भी वस्तु मूर्ति है। यदि हम रविवार को चर्च जाते हैं, परन्तु अपने दैनिक जीवन में अन्य वस्तुओं को सर्वोच्च अधिकार देते हैं, तो हम एक मूर्ति की सेवा कर रहे हैं।

परमेश्वर घटिया आराधना ग्रहण नहीं करता।

► घटिया आराधना के कुछ उदाहरण दें।

नबी मलाकी ने चेतावनी दी कि इस्राएलियों की आराधना परमेश्वर को अपमानित करने लगी है। उन्होंने विरोध किया, “हमने परमेश्वर को कैसे अपमानित किया है?” मलाकी ने उत्तर दिया,

---

[9] आराधना-पद्धति सार्वजनिक आराधना के दौरान अपनाई जाने वाली एक योजना है। लिखित निर्देशों के साथ एक आराधना -पद्धति बहुत व्यवस्थित हो सकती है। यह आराधकों के लिए बिना किसी लिखित निर्देश के बहुत अनौपचारिक भी हो सकती है। इस कोर्स में, आराधना -पद्धति शब्द का प्रयोग आराधना की किसी भी योजना के लिए किया जाएगा। कुछ लोग भी आराधना-पद्धतियों की आलोचना करते हैं, यह सुझाव देते हुए कि नियोजित आराधना सच्ची आराधना नहीं है। हम आराधना -पद्धति शब्द का प्रयोग बहुत सामान्य अर्थ में करेंगे। नियोजित आराधना खाली हो सकती है, या यह परमेश्वर की उपस्थिति से भरी हो सकती है।

> जब तुम अन्धे पशु को बलि करने के लिये समीप ले आते हो तो क्या यह बुरा नहीं? जब तुम लंगड़े या रोगी पशु को ले आते हो, तो क्या यह बुरा नहीं? अपने हाकिम के पास ऐसी भेंट ले जाओ; क्या वह तुम से प्रसन्न होगा या तुम पर अनुग्रह करेगा? सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। (मलाकी 1:8)।

वे अपने राज्य के राज्यपाल को भेंट के रूप में कभी भी लंगड़ा पशु नहीं लाते थे, लेकिन वे ब्रह्मांड के सर्वशक्तिमान परमेश्वर के लिए बलि के रूप में लंगड़े पशु लाते।

कुछ लोग मानते हैं कि आराधना के बाहरी रूप महत्वपूर्ण नहीं हैं क्योंकि परमेश्वर हृदय को देखते हैं। यह सच है कि परमेश्वर हृदय को देखते हैं। हालाँकि, पूरी बाइबल में यह स्पष्ट है कि आराधना के बाहरी रूप परमेश्वर के लिए महत्वपूर्ण हैं। निर्गमन और लैव्यव्यवस्था आराधना के लिए परमेश्वर की आवश्यकताओं के बारे में विस्तृत निर्देश देते हैं। मिलाप-तम्बू के लिए निर्देश स्पष्ट थे। परमेश्वर ने याजकों को पहनने वाले वस्त्रों के बारे में विस्तृत निर्देश दिये थे। निर्गमन 39-40 में, यह वाक्य "जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी" इस्राएल की आज्ञाकारिता दिखाने के लिए इसे 13 बार दोहराया गया है। परमेश्वर के लिए आराधना की छोटी छोटी बातें महत्व रखती थीं। उसे इस्राएल का सर्वोत्तम चाहिए था।

जब हम परमेश्वर को अपने सर्वोत्तम से कम देते हैं, तो हम घटिया आराधना करते हैं। भले ही अब हम परमेश्वर को पशु बलि नहीं चढ़ाते, फिर भी ये सिद्धांत महत्वपूर्ण हैं। मलाकी की पुस्तक में पूछे गए प्रश्न सुझाव देते हैं कि हमें आज अपनी आराधना के विषय वही प्रश्न पूछने चाहिए।

- **पास्टरस:** "यदि मेरी मण्ड्ली में उच्चाधिकारी होते, तो क्या मैं अपना संदेश ज़्यादा ध्यान से तैयार करता? क्या मैं परमेश्वर के लिए एक लंगड़ा बलिदान ला रहा हूँ?"
- **संगीतकार:** "यदि श्रोताओं में कोई प्रसिद्ध संगीतकार होता, तो क्या मैं ज़्यादा ध्यान से अभ्यास करता? क्या मैं परमेश्वर के लिए एक लंगड़ा बलिदान ला रहा हूँ?"
- **आम आदमी:** "यदि राष्ट्रपति वक्ता होते, तो क्या मैं इस उपदेश को ज़्यादा ध्यान से सुनता? क्या मैं परमेश्वर के लिए एक लंगड़ा बलिदान ला रहा हूँ?"

परमेश्वर घमंडी आराधना को ग्रहण नहीं करता।

परमेश्वर हमारे सर्वोत्तम से कम बलिदान को ग्रहण नहीं करते। जबकि, एक विपरीत ख़तरा भी है जिससे हमें बचना चाहिए। परमेश्वर अभिमानी और अहंकारी हृदय से उत्पन्न बलिदान को ग्रहण नहीं करते। भले ही हम परमेश्वर को अपना सर्वोत्तम अर्पित करते हैं, हमें यह समझना चाहिए कि हम जो कुछ भी अर्पित करते हैं, वह वास्तव में परमेश्वर के योग्य नहीं है। हमारी सबसे अच्छी भेंट भी केवल उस बात का एक छोटा सा प्रतीक है जिसके योग्य परमेश्वर है।हम परमेश्वर के समक्ष विनम्रता के साथ आते हैं, कभी भी अभिमान और अहंकार के भाव के साथ नहीं।

वह आराधना जिसे परमेश्वर ग्रहण करता है।

यदि ये आराधना की ऐसी विशेषताएँ हैं जो परमेश्वर को ग्रहण नहीं हैं, तो परमेश्वर किस प्रकार की आराधना को ग्रहण करता है?

ग्रहणयोग्य आराधना परमेश्वर पर केंद्रित होती है।

जैसे यशायाह 6, प्रकाशितवाक्य 4 स्वर्ग की एक खिड़की खोलता है। प्रकाशितवाक्य 4 में, आराधकों का ध्यान उस पर है जो सिंहासन पर विराजमान है। सच्ची आराधना परमेश्वर पर केंद्रित होती है। सच्ची आराधना परमेश्वर को आराधना के योग्य बताती है।

ग्रहणयोग्य आराधना परमेश्वर को वह महिमा देती है जिसके वह योग्य है।

भजन संहिता 96:7-8 पद आराधना के उद्देश्य को दर्शाते हैं:

> हे देश देश के कुल के लोगो, यहोवा का गुणानुवाद करो,यहोवा की महिमा और सामर्थ्य को मानो! यहोवा के नाम की ऐसी महिमा करो जो उसके योग्य है; भेंट लेकर उसके आँगनों में आओ!!

आराधना परमेश्वर को वह महिमा प्रदान करती है जिसके वह योग्य हैं। हम चाहे जो भी गीत गाएँ, चाहे जो भी भावनाएँ जगाएँ, या लोगों से हमें जो भी प्रतिक्रिया मिले, जो आराधना परमेश्वर को महिमा नहीं देती, वह अपने उद्देश्य को पूरा करने में विफल रही है।

आराधना का उद्देश्य स्वयं के लिए आशीष प्राप्त करना नहीं है; आराधना का उद्देश्य परमेश्वर को सम्मान और महिमा प्रदान करना है। जब हम आराधना करते हैं, तो हमें अक्सर आशीष मिलती है - परन्तु हमारी आशीष आराधना की प्रेरणा नहीं है। आराधना की प्रेरणा परमेश्वर का सम्मान करना है।

आराधना के उद्देश्य को समझने से वह प्रश्न बदल जाता है जो हम अक्सर आराधना के बारे में पूछते हैं। यह पूछने के बजाय कि, "क्या मुझे आज की आराधना में आनंद आया?" हम पूछेंगे, "क्या आज की आराधना ने परमेश्वर का सम्मान किया?" जैसे-जैसे हम आराधना के उद्देश्य को बेहतर ढंग से समझते हैं, हम अपना ध्यान स्वयं से हटाकर परमेश्वर पर केंद्रित करेंगे।

ग्रहणयोग्य आराधना आत्मा और सच्चाई से की गई आराधना होती है।

यूहन्ना अध्याय 4 में सामरी स्त्री के साथ यीशु की बातचीत में, यीशु ने सामरी स्त्री से कहा कि जो लोग परमेश्वर की आराधना करते हैं, उन्हें आत्मा और सच्चाई से परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए (यूहन्ना 4:24)। यही आराधना का सही तरीका है।

प्राय: जब हम आराधना के तरीकों पर चर्चा करते हैं, तो हम संगीत शैलियों, आराधना पद्धति के क्रम और अन्य औपचारिकताओं पर चर्चा करते हैं। नए नियम की कलीसिया में आराधना पद्धतियों के बारे में विस्तृत जानकारी के अभाव से बहुत से लोग निराश हुए हैं। उन सभी बातों के बारे में सोचें जो हम नए नियम की आराधना के बारे में नहीं जानते।

- **हम जानते हैं कि उन्होंने गाया** भजन संहिता। हम नहीं जानते कि उन्होंने कौन सी धुनों का प्रयोग किया; हम नहीं जानते कि उन्होंने कौन से वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया; हम नहीं जानते कि उन्होंने कौन से नये गीत गाए।

- **हम जानते हैं कि वे प्रार्थना करते थे।** हमें नहीं पता कि वे सब ज़ोर से प्रार्थना करते थे, छोटे-छोटे समूहों में प्रार्थना करते थे, या कोई एक व्यक्ति प्रार्थना का नेतृत्व करता था। हमें नहीं पता कि वे सिर्फ़ लिखित प्रार्थनाएँ करते थे (भजन संहिता) या तत्क्षण प्रार्थनाएँ करते थे।

- **हम जानते हैं कि उन्होंने प्रचार किया।** हमें नहीं पता कि उन्होंने कितनी देर तक प्रचार किया, उन्होंने किस तरह का प्रचार किया, या हर सभा में प्रचार होता था या नहीं।

नया नियम और कुछ दशकों बाद लिखे गए एक वचन के अलावा, हमारे पास प्रारंभिक चर्च की आराधना पद्धति के बारे में बहुत कम जानकारी है।[10]

विद्वानों के लिए, जानकारी का यह अभाव निराशाजनक है। यद्यपि, शायद यह दर्शाता है कि जिन मुद्दों को हम सबसे महत्वपूर्ण मानते हैं, वे परमेश्वर के लिए सबसे महत्वपूर्ण नहीं हैं! जब यीशु ने आराधना पद्धति पर चर्चा की, तो उन्होंने दो मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया: आत्मा और सच्चाई। सच्ची आराधना के लिए ये मुद्दे सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं।

आत्मा में आराधना संभवतः मानवीय आत्मा को प्रस्तुत करती है। आराधना एक नासमझी भरा अनुष्ठान नहीं होना चाहिए; इसमें आत्मा शामिल होती है। यह सच्ची आराधना है; यह हृदय से निकलती है।

आत्मा में आराधना?
वर्ष 1994 में, टोरंटो के विननयार्ड चर्च ने एक बेदारी की सूचना दी जिसमें लोग हँसे, शेरों की तरह दहाड़े, और " जोर से उबकाई जैसी हरकत की " (भावनाओं को शुद्ध करने के लिए उल्टी जैसी उबकाई)। "पवित्र हँसी" के दौरान, जोर-जोर से अनियंत्रित होकर हँसने या रोने लगे। परमेश्वर के वचन को आराधकों के हृदय में गहराई से कार्य करने देने पर ज़ोर देने के बजाय, "टोरंटो आशीष" केवल एक भावनात्मक प्रतिक्रिया चाहता था। क्या यह आत्मिक आराधना है? क्या यह सच्ची आराधना है?

सच्चाई से की गई आराधना बाइबल की शिक्षाओं के अनुरूप होती है। यह एक अच्छी भावना या भावनात्मक प्रतिक्रिया से कहीं बढ़कर है। पास्टर और आराधना के अगुवों के रूप में, हम अपनी आराधना के प्रत्येक पहलू का मूल्यांकन करते हैं और पूछते हैं, "क्या यह सच है?" हम जो संदेश देते हैं, जो गाते हैं और जो प्रार्थना करते हैं, वे बाइबल के अनुसार होने चाहिए। परमेश्वर खोखले शब्दों से प्रभावित नहीं होते; वह आत्मा और सच्चाई से की गई आराधना की आशा रखते हैं (यूहन्ना 4:24)।

---

[10] *डिडेचे* (शिक्षा) पहली शताब्दी के अंत या दूसरी शताब्दी के आरंभ का एक संक्षिप्त ग्रंथ है। *डिडेचे* में मसीही नैतिकता, चर्च के रीति-रिवाजों और चर्च संगठन पर शिक्षाएँ शामिल हैं।

सच्चाई में आराधना?
पास्टर रोहन आराधना में संगीत के महत्व को समझते हैं। वे पुराने भजनों की सराहना करते हैं, इसके साथ ही साथ वह नए गीतों का भी स्वागत करते हैं। एक गीत जो कई कलीसियाओं में लोकप्रिय है यह सिखाता है कि विश्वासी लगातार जानबूझकर पाप में गिरते हैं और फिर बहाली की तलाश करते हैं। यह गीत एक विजयी मसीही जीवन का कोई वादा नहीं करता। गीत सुनकर, रोहन ने कहा, "यह गीत बाइबल के अनुसार नहीं है, बल्कि यह सिर्फ़ एक गीत है। लोगों को संगीत पसंद है; शब्द महत्वपूर्ण नहीं हैं।" क्या यह आराधना सच्ची है?

आराधना के खतरे: सच्ची आराधना के विकल्प

यीशु ने सच्ची आराधना की बात की। यदि सच्ची आराधना है, तो झूठी आराधना भी होगी। मार्टिन लूथर अक्सर एक जर्मन कहावत का हवाला देते थे, "जहाँ भी परमेश्वर एक चर्च बनाता है, शैतान उसके बगल में एक चैपल (छोटा चर्च-भवन) बनाता है।" शैतान हमें सच्ची आराधना के स्थान पर झूठे विचारों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना पसंद करता है। हमने अक्सर आराधना को उस परमेश्वर की माँगों के बजाय संस्कृति की माँगों के अनुसार चलने दिया है जिसकी हम आराधना करते हैं। सच्ची आराधना के कुछ विकल्प क्या हैं?

मैक-आराधना

मैक-आराधना वह आराधना है जो परमेश्वर को प्रसन्न करने के बजाय व्यक्तिगत सुविधा पर केंद्रित होती है। दुनिया में 35,000 मैकडॉनल्ड्स हैं। 68 मिलियन ग्राहक प्रतिदिन मैकडॉनल्ड्स में भोजन करते हैं। ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि मैकडॉनल्ड्स सर्वोत्तम उपलब्ध भोजन प्रदान करता है। ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि वे अनोखे रूप से स्वास्थ्यवर्धक आहार प्रदान करते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि मैकडॉनल्ड्स सुविधा, सहजता और मनोरंजक वातावरण प्रदान करता है। मैक-आराधना में, हमारी प्राथमिक चिंता सुविधा, सहजता और मनोरंजन होता है।

मैकडॉनल्ड्स और मैक-आराधना सफलता को संख्याओं से मापते हैं। मैकडॉनल्ड्स दावा करता है, "300 बिलियन से अधिक लोगों को सेवा दी गई।" मैक-आराधना दावा करती है, "हमने पिछले वर्ष की तुलना में 17% की वृद्धि की है।" ईश्वरीयता के बजाय संख्याएँ सफलता का पैमाना बन जाती हैं।

मैक-आराधना करने वालों की माँग बहुत कम होती है। मैक-आराधना अच्छा संगीत, मनोरंजक वक्ता और एक आकर्षक पैकेज प्रदान करता है - और वह भी कम कीमत पर। मैक-आराधना भीड़ खींचता है, परन्तु आत्मिक भोजन अक्सर खोखला होता है और आत्मिक दृढ़ता को बढ़ावा नहीं देता। लोगों को सुसमाचार की ओर आकर्षित करना अच्छी बात है, परन्तु मैक-आराधना सच्ची आराधना नहीं है।

संग्रहालय (म्यूज़ियम) आराधना

संग्रहालय का माहौल मैकडॉनल्ड्स के बिल्कुल विपरीत होता है। अजायब घर में परंपरा के संरक्षण पर बहुत ज़ोर दिया जाता है। लोग प्रदर्शनों को देखते हुए सम्मानपूर्वक व्यवहार करते हैं। ज़्यादातर संग्रहालय व्यक्तिगत भागीदारी और प्रतिबद्धता पर ज़ोर नहीं देते। आपको लूवर कला संग्रहालय की दीवार पर अपनी पेंटिंग लगाने के लिए आमंत्रित नहीं किया जाता!

संग्रहालय (म्यूज़ियम) आराधना में, हमारी मुख्य चिंता परंपरा और स्वरूप है। हम वे गीत गाते हैं जो चर्च हमेशा से गाता आया है। हमें परंपरा के प्रति अपनी निष्ठा पर गर्व है। परन्तु यह संभव है कि लोग सप्ताह-दर-सप्ताह व्यक्तिगत प्रतिबद्धता की ईश्वरीय माँग का सामना किए बिना भी चर्च में आएँ। हर रविवार को चर्च में जाकर प्रदर्शनों (प्रवचन, गीत, प्रार्थनाएँ) को देखना संभव है, परन्तु जीवन में कोई बदलाव नहीं आता। अपनी विरासत को महत्व देना अच्छी बात है, परन्तु संग्रहालय (म्यूज़ियम) आराधना सच्ची आराधना नहीं है।

अध्ययन-कक्ष (क्लासरूम) आराधना

कक्षा में, शिक्षक ही चलानेवाला होता है। शिक्षक ही तय करता है कि कक्षा क्या सीखेगी। शिक्षक व्याख्यान देता है; छात्र सुनते हैं और नोट्स लेते हैं। भागीदारी शिक्षक द्वारा नियंत्रित होती है।

अध्ययन-कक्ष (क्लासरूम) आराधना में, पास्टर ही मुख्य व्यक्ति होता है। प्रवचन ही सभा का मुख्य केंद्र होता है; बाकि सब प्रारंभिक होता है। मण्डली सुनने और नोट्स लेने के लिए होती है। आराधना एक बौद्धिक गतिविधि तक सीमित हो जाती है। अपनी आराधना में सत्य का संचार करना अच्छी बात है; हमें अपने आराधकों को सत्य समझाना चाहिए, परन्तु अध्ययन-कक्ष (क्लासरूम) आराधना सच्ची आराधना नहीं है।

सच्ची आराधना

सच्ची आराधना परमेश्वर पर केंद्रित होती है। सच्ची आराधना पूछती है, "परमेश्वर क्या चाहते हैं?" सच्ची आराधना मुझे स्वयं को परमेश्वर की नज़र से देखने में सहायता करती है—और यह उस व्यक्ति के लिए असहज है जो परमेश्वर द्वारा बदले जाने को तैयार नहीं है। सच्ची आराधना परमेश्वर के बारे में है। सच्ची आराधना में एक क्रूस, एक बलिदान, एक समर्पण शामिल है। सच्ची आराधना आराधक को बदल देती है।

निष्कर्ष: मारथा की गवाही

आराधना कितनी आवश्यक है? मार्था की गवाही सुनिए।

"मैं एक व्यावहारिक व्यक्ति हूँ। किसी को तो झाड़ू लगानी पड़ती है, खाना बनाना पड़ता है, और घर के छोटे-मोटे काम निपटाने पड़ते हैं। यही मेरी ताकत है; मुझमें सेवा का वरदान है।'

"मुझे वह दिन याद है जब यीशु बैतनिय्याह में हमारे छोटे से घर में आए थे। मैं अपने घर में इतने महत्वपूर्ण शिक्षक के आने से घबरा रही थी। मैं चाहती थी कि सब कुछ सही रहे। लूका ने बाद में लिखा, "'मार्था सेवा करते करते घबरा गई' (लूका 10:40)। मैं सब कुछ सही करने के प्रयास में व्यस्त थी।'

"जब मैं घर की देखभाल में व्यस्त थी, मरियम अगले कमरे में बैठकर यीशु की बातें सुन रही थी। मैं खुश नहीं थी; मुझे मदद की ज़रूरत थी! इसके अलावा, वह एक महिला है; उसे रब्बी से सीखने की ज़रूरत नहीं है।'

"मैं इतनी परेशान हो गई कि मैं अंदर गई और बोली, "'हे प्रभु, क्या तुझे कुछ भी चिन्ता नहीं कि मेरी बहिन ने मुझे सेवा करने के लिये अकेली ही छोड़ दिया है? इसलिये उससे कह कि मेरी सहायता करे' (लूका 10:40)। मैं उनका उत्तर कभी नहीं भूलूँगी। यीशु ने मेरी तरफ़ देखा और अपना सिर हिलाया। 'मार्था, हे मार्था; तू बहुत बातों के लिये चिन्ता करती और घबराती है। परन्तु एक बात अवश्य है, और उस उत्तम भाग को मरियम ने चुन लिया है....' (लूका 10:41-42)।

"प्रभु मुझसे क्या कह रहे थे? उनका अर्थ यह नहीं था कि सेवा महत्वपूर्ण नहीं है। हमसे मिलने से ठीक पहले, यीशु ने दयालु सामरी का दृष्टांत सुनाया—सेवा के बारे में एक कहानी (लूका 10:25-37)। यीशु यह नहीं कह रहे थे कि सेवा महत्वपूर्ण नहीं है; वे मुझसे कह रहे **थे कि मेरी सेवा मेरी आराधना से निकलनी चाहिए।** मूल बात आराधना है। यदि मैं आराधना करूँगी, तो सेवा स्वाभाविक रूप से प्रवाहित होगी; मैं 'चिंतित और व्याकुल' नहीं रहूँगी।' (लूका 10:41)।

"उस दिन, मैंने जीवन भर के लिए एक पाठ सीखा। फिर कभी भी मेरी सेवा मेरी आराधना से ज़्यादा महत्व नहीं रख पाई। उस दिन से, मैं मरियम के साथ यीशु के चरणों में बैठने के लिए समय निकालने लगी; मैंने आराधना के लिए समय निकाला।"

जाँच

स्वयं से पूछें, "मैं एक बेहतर आराधक कैसे बन सकता हूँ?" कुछ ऐसे क्षेत्रों का पता लगाएँ जहाँ आप अपनी आराधना को बाइबल में दी गयी आराधना की परिभाषा के अधिक करीब ला सकते हैं।

पाठ 1 की समीक्षा

(1) आराधना क्या है?

- आराधना आदर-सूचक समर्पण है (प्रकाशितवाक्य 4:10-11)।
- आराधना सेवा है (रोमियों 12:1)।
- आराधना स्तुति है (भजन संहिता)।
- आराधना संगति है (प्रेरितों 2:42)।
- आराधना में सम्पूर्ण जीवन शामिल होता है (याकूब 1:26-27)।

(2) आराधना क्यों आवश्यक है?

- हम आराधना में परमेश्वर को देखते है (यशायाह 6:1-8)।
- आराधना में हम स्वयं को देखते हैं और रूपांतरित हो जाते हैं (यशायाह 6:1-8)।
- हम आराधना में हमारे संसार को देखते हैं (यशायाह 6:1-8)।
- आराधना में विफलता हमें परमेश्वर से अलग कर देती है (रोमियों 1:18-25)।

(3) आराधना में तीन लक्ष्य:

- आराधना में हम परमेश्वर से भेंट करते हैं।
- आराधना में हम मसीही चरित्र को तैयार करते हैं।
- आराधना में हम मसीही समाज का निर्माण करते हैं।

(4) किस प्रकार की आराधना परमेश्वर को ग्रहणयोग्य है?

- ग्रहणयोग्य आराधना परमेश्वर पर केंद्रित होती है (प्रकाशितवाक्य 4)।
- ग्रहणयोग्य आराधना परमेश्वर को वह महिमा देती है जिसके वह योग्य है (भजन संहिता 96:7-8)।
- ग्रहणयोग्य आराधना आत्मा और सच्चाई से की गई आराधना होती है (यूहन्ना 4:23-24)।

पाठ 1 के कार्य

(1) बाइबल आराधना का वर्णन कैसे करती है? निम्नलिखित पदों के आधार पर एक पृष्ठ का उत्तर लिखिए:

- भजन संहिता 111:1-2
- भजन संहिता 147:1
- भजन संहिता 150
- यशायाह 6:1-8
- प्रकाशितवाक्य 4

यदि आप समूह में अध्ययन कर रहे हैं, तो अगली कक्षा में अपने उत्तर पर विचार विमर्श करें।

(2) अगले पाठ के आरम्भ में, आप इस पाठ पर आधारित एक परीक्षा देंगे। तैयारी के लिए परीक्षा के प्रश्नों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें।

कोर्स योजना

आराधना की एक 30-दिवसीय यात्रा[11]

आप इस पूरे कोर्स के दौरान इस योजना पर काम करेंगे। कोर्स के अंत में, आप रिपोर्ट करेंगे कि आपने यह योजना पूरी कर ली है। आप अपनी डायरी कक्षा अगुए को नहीं सौंपेंगे।

30 दिनों तक, हर दिन, आप परमेश्वर के किसी एक गुण पर ध्यान लगाने में कुछ मिनट बिताएँगे। इस योजना को सुबह के समय करना सबसे अच्छा है ताकि आप पूरे दिन उस गुण पर ध्यान लगा सकें। ध्यान करने का अर्थ है किसी चीज़ के बारे में गहराई से सोचना।

डायरी के रूप में उपयोग करने के लिए एक खाली नोटबुक लें। प्रत्येक दिन की शुरुआत परमेश्वर से स्वयं को आपके सामने प्रकट करने की प्रार्थना के साथ करें। फिर, भजन संहिता की पुस्तक खोलें और पढ़ना आरम्भ करें। इस योजना का लक्ष्य मनन करना है, न कि बहुत अधिक पढ़ना। आप केवल एक वचन या एक पूरा भजन पढ़ सकते हैं।

ज्यों-ज्यों आप पढ़ते, परमेश्वर के किसी एक गुण या परमेश्वर के रूपक की तलाश करें। गुण, परमेश्वर के चरित्र का एक पहलू है - उनकी दया, उनकी पवित्रता, उनकी देखभाल। परमेश्वर के लिए एक रूपक परमेश्वर की तुलना किसी और चीज़ से करता है - वह एक चरवाहा, एक चट्टान, हमारा शरणस्थान है।

जब आपको कोई ऐसा गुण या रूपक मिले जो आपको प्रभावित करता हो, तो उस गुण को अपनी डायरी के किसी पृष्ठ के शीर्ष पर लिखें। उसके नीचे, उस गुण का संदर्भ देने वाला पद लिखें।

उस गुण के बारे में सोचें और वह परमेश्वर के बारे में क्या कहता है। प्रार्थना करने के बाद, परमेश्वर और उस गुण के बारे में अपने विचार लिखें। यह कोई शैक्षणिक शोधपत्र नहीं है; यह आराधना की एक व्यक्तिगत डायरी है। पूरे दिन परमेश्वर और उनके चरित्र के बारे में मनन करें। वे जो हैं, उसके लिए उनकी स्तुति करें। ऐसा 30 दिनों तक करने से आपको परमेश्वर का गहरा ज्ञान होगा।

---

[11] यह योजना यहाँ से ली गई है Louie Giglio, *The Air I Breathe: Worship as a Way of Life* (Sisters, OR: Multnomah Publishers, 2003).

पाठ 1 परीक्षा

(1) इस पाठ की आरम्भ में आपको आराधना की तीन परिभाषाएँ दी गई थीं। आपको जो परिभाषा याद हो गई हो, उसे लिखिए।

(2) बाइबल आधारित आराधना के चार पहलुओं की सूची बनाएँ।

(3) जब सामरी स्त्री ने आराधना के भौतिक स्थान के बारे में तर्क किया, तो यीशु ने आराधना के _____ स्थान की ओर संकेत किया।

(4) भजन संहिता में, _____ शब्द का प्रयोग प्रायः आराधना के आनंद को दर्शाने के लिए किया जाता है।

(5) याकूब के अनुसार, शुद्ध और निष्कलंक आराधना में कौन से दो पहलू शामिल हैं?

(6) आराधना आवश्यक है इसके चार कारण बताएँ।

(7) इस पाठ के अनुसार, आराधना की तीन विशेषताएँ क्या हैं जो परमेश्वर को ग्रहणयोग्य हैं?

(8) याद किया हुआ यूहन्ना 4:23-24 लिखें।

पाठ 2

परमेश्वर और आराधक

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अन्त होने तक विद्यार्थी को नीचे दिए गए कार्य करने के योग्य होना चाहिए:

(1) परमेश्वर की बाइबल आधारित छवि और हमारी आराधना में उसकी भूमिका को पहचानना।

(2) आराधकों के लिए परमेश्वर की शर्तों को समझना।

(3) आराधकों के लिए परमेश्वर की शर्तों के अनुरूप होने का प्रयास करना।

(4) मनुष्य को आराधना के लिए अपनी उपस्थिति में प्रवेश करने की अनुमति देने में परमेश्वर की कृपा की प्रशंसा करो।

इस पाठ की तैयारी

कण्ठस्थ करें प्रकाशितवाक्य 5:9-14।

भूमिका

एक छोटा समूह मेज़ के चारों ओर बैठकर सप्ताह के बाइबल अध्ययन विषय पर विचार विमर्श कर रहा था। विचार विमर्श का प्रश्न था, "परमेश्वर कैसा है और हम उसकी आराधना कैसे करते हैं?"

कविता ने सबसे पहले बात की। "जब मैं परमेश्वर के बारे में सोचती हूँ, तो मुझे एक लंबी सफ़ेद दाढ़ी वाले दादाजी की याद आती है। वह हमें पोते-पोतियों की तरह देखते हैं। जब हम पाप करते हैं तो उन्हें दुख होता है, परन्तु वह हमसे प्यार करते हैं और समझते हैं कि हम अपना उत्तम कर रहे हैं। मुझे नहीं लगता कि परमेश्वर को इस बात से कोई फ़र्क़ पड़ता है कि हम कैसे आराधना करते हैं, जब तक हम दिखाते हैं कि हम उससे प्यार करते हैं।"

सुमन ने जवाब दिया। "मैं परमेश्वर को एक माँग करने वाले पिता की तरह मानती हूँ। वह अपने बच्चों के ज़्यादा करीब नहीं आता, परन्तु वह यह देखने के लिए देखता है कि हम उसकी बात मानते हैं या नहीं। आराधना में, हमें यह दिखाना चाहिए कि हम विनम्र और आज्ञाकारी हैं। मुझे ऐसे गीत पसंद नहीं हैं जिनमें परमेश्वर को हमारा मित्र माना जाता है; हमें याद रखना चाहिए कि वह हमारा स्वर्गीय स्वामी है और हम उसके सेवक हैं! मैं यह जानने के लिए कलीसिया जाती हूँ कि परमेश्वर मुझसे क्या आशा करता है।"

शालिनी इनमें से किसी भी उत्तर से संतुष्ट नहीं थी। “मैं परमेश्वर को एक मित्र की तरह मानती हूँ। बाइबल कहती है कि परमेश्वर अपने बच्चों को अच्छे उपहार देना पसंद करते हैं। मैं यह जानने के लिए कलीसिया जाती हूँ कि परमेश्वर मेरे लिए क्या करना चाहते हैं। मैं

प्रार्थना करती हूँ और उन्हें बताती हूँ कि मुझे क्या चाहिए। मैं यह जानने के लिए प्रवचन और संगीत सुनती हूँ कि परमेश्वर मेरे जीवन को कैसे आशीषित करेंगे। परमेश्वर अच्छे उपहार देना चाहते हैं; मैं उन उपहारों को प्राप्त करने के लिए कलीसिया जाती हूँ।”

इनमें से प्रत्येक महिला की परमेश्वर के विषय एक अलग धारणा है। इसीलिए, प्रत्येक महिला की आराधना सेवा से अलग आशाएँ होती हैं।

कविता एक ऐसे पितामह परमेश्वर की आशा करती हैं जो हमारी आराधना के विवरणों की ज़्यादा परवाह नहीं करते। उनकी आदर्श सेवा में, प्रत्येक व्यक्ति उस तरीके से आराधना करेगा जो उसे सबसे अधिक आरामदायक लगे। कविता तम्बू में आराधना देखकर आश्चर्यचकित हो जाती। वहाँ उसने सीखा होता कि परमेश्वर आराधना के हर विवरण का ध्यान रखते हैं।

सुमन परमेश्वर को दूर और निषेधात्मक मानती है। वह भजनों की अंतरंग भाषा और परमेश्वर से अय्यूब की शिकायतों की ईमानदारी से असहज होगी। उसकी आदर्श आराधना सेवा आराधक और परमेश्वर के बीच एक दूरी बनाए रखेगी। प्रार्थना औपचारिक और संरचित होगी। संगीत भव्य होगा, लेकिन अवैयक्तिक। सुमन को पहली सदी की गृह कलीसियाओं में मिलने वाली घनिष्ठ संगति का आनंद नहीं मिलेगा।

शालिनी के मन में, परमेश्वर एक सेवक है जो मनुष्यों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए है। जब शालिनी किसी सेवा से बाहर निकलती है, तो उसका सवाल होता है, "मुझे इससे क्या मिला?" संगीत उसकी व्यक्तिगत रुचि के अनुरूप होना चाहिए। प्रार्थनाएँ व्यक्तिगत ज़रूरतों पर केंद्रित होनी चाहिए। प्रवचन व्यावहारिक होना चाहिए और उसकी महसूस की गई ज़रूरतों को पूरा करना चाहिए। शालिनी मंदिर की आराधना से निराश होती। मंदिर की आराधना परमेश्वर के लिए बलिदान चढ़ाने के बारे में थी, न कि परमेश्वर द्वारा मनुष्य को उपहार देने के बारे में।

इनमें से प्रत्येक महिला एक ऐसी आराधना सेवा की तलाश करती है जो परमेश्वर के विषय उसकी धारणा को प्रदर्शित करे। परमेश्वर के विषय हमारी समझ का हमारी आराधना पर बहुत प्रभाव पड़ता है।

► परमेश्वर के विषय अपनी धारणा पर विचार विमर्श करें। परमेश्वर के विषय आपकी धारणा आपकी आराधना को कैसे प्रभावित करती है?

इस पाठ में हम दो प्रश्नों पर विचार करेंगे:

(1) हम किसकी आराधना करते हैं?

क्योंकि आराधना का अर्थ है परमेश्वर को उनका उचित सम्मान देना, इसलिए जितना अधिक हम परमेश्वर के विषय जानेंगे, उतनी ही बेहतर हम सच्ची आराधना के लिए तैयार होंगे। परमेश्वर की विकृत छवि विकृत आराधना की ओर ले जाती है।

मूर्तिपूजा का बाइबल आधारित चित्रण इसी सिद्धांत को दर्शाता है। बाल एक उर्वरता का देवता था, अनियंत्रित अधिकता का देवता। बाल के भविष्यवक्ताओं ने किस प्रकार आराधना की? अनियंत्रित भावना और अधिकता के साथ। “और उन्होंने बड़े शब्द से पुकार

पुकार के अपनी रीति के अनुसार छुरियों और बर्छियों से अपने अपने को यहाँ तक घायल किया कि लहू लुहान हो गए" (1 राजाओं 18:28)।

(2) परमेश्वर अपने आराधकों से क्या आशा करता है?

क्योंकि परमेश्वर पवित्र है, तो हम उसकी उपस्थिति में कैसे प्रवेश कर सकते हैं? परमेश्वर अपने आराधकों से क्या आशा करता है?

बाल और मोलेक जैसे झूठे देवता पवित्र नहीं थे; उनके आराधकों को पवित्र होने की आवश्यकता नहीं थी। बाल के आराधक बाल के समान, नैतिक रूप से अशुद्ध हो गए। हम जिसकी भी आराधना करते हैं, उसके समान हो जाते हैं।

सच्चा परमेश्वर पवित्र है। इसलिए, उसे पवित्र लोगों की आवश्यकता है। यहोवा के आराधक यहोवा के समान बन गए; उन्हें एक पवित्र परमेश्वर की आराधना करने वाले पवित्र लोग बनना था।

हम किसकी आराधना करते हैं?

कल्पना करें कि आप एक सुंदर सूर्यास्त की प्रशंसा कर रहे हैं।[12] अचानक आप सूर्यास्त देखना बंद कर देते हैं और अपनी तस्वीर लेते हैं: "मैं सूर्यास्त देख रहा हूँ।" इसे "सेल्फ़ी" कहते हैं, अर्थात अपनी तस्वीर। आपका ध्यान सूर्यास्त से हटकर स्वयं पर केंद्रित हो जाता है। सेल्फ़ी लेने वाला व्यक्ति उस घटना से ज़्यादा अपनी उपस्थिति में रुचि रखता है जिसे वह देख रहा होता है।

परमेश्वर हमारी सर्वोत्तम आराधना के योग्य हैं। परन्तु जब हम जिस परमेश्वर की आराधना करते हैं, उस पर ध्यान देने के बजाय अपनी आराधना की गुणवत्ता पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो हम एक धार्मिक सेल्फी ("मैं परमेश्वर की आराधना कर रहा हूँ") बना लेते हैं। हमें अपनी आराधना सेवा की श्रेष्ठता की चिंता को, जिस परमेश्वर की हम आराधना करते हैं, उस पर ध्यान केंद्रित करने से कभी नहीं रोकना चाहिए!

> "हे परमेश्वर, आप...
> सर्वोच्च, सर्वोत्कृष्ट हैं;
> सबसे दयालु और न्यायी हैं;
> सबसे अदृश्य और सर्वव्यापी हैं;
> सबसे सुन्दर और सर्वशक्तिमान हैं;
> सदैव कार्यरत, सर्वदा विश्राम में हैं;
> एकत्र करते हैं, परंतु आपको किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं हैं;
> सबको संभालते और रक्षा करते हैं; सृजन और पोषण करते हैं;
> खोजते है, फिर भी सब कुछ आपके ही पास है।"
> - ऑगस्टिन से लिया गया

सी.एस. लुईस ने परमेश्वर की बजाय आराधना पर ज़्यादा ध्यान देने की मूर्तिपूजा के बारे में लिखा था। हाल ही में, डी.ए. कार्सन ने चेतावनी दी थी कि हम "परमेश्वर की आराधना करने के बजाय आराधना करने" के प्रलोभन में पड़ सकते हैं।"[13]

---

[12] पाठ 5 का अधिकांश भाग इससे लिया गया है Warren Wiersbe, *Real Worship*, (Grand Rapids: Baker Books, 2000).
[13] D.A. Carson, *Worship by the Book*, (Grand Rapids: Zondervan, 2002), 31 इससे लिया गया है.

जब तक मैं परमेश्वर की आराधना में पूरी तरह डूब नहीं जाता, तब तक मेरी आराधना सच्ची आराधना नहीं है। सच्ची आराधना में, मैं अपनी आराधना के प्रयासों की गुणवत्ता से ज़्यादा परमेश्वर पर ध्यान देता हूँ। सच्ची आराधना परमेश्वर पर केंद्रित होती है, न कि मेरे आराधना अनुभव की गुणवत्ता पर।

जैसा कि हमने पाठ 1 में देखा, पहली आज्ञा हमें बताती है कि हम किसकी आराधना करते हैं। "मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ.... तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना" (निर्गमन 20:2-3)। क्योंकि आराधना का अर्थ है परमेश्वर को वह सम्मान देना जिसके वह योग्य हैं, इसलिए आराधना का अध्ययन इस प्रश्न से आरम्भ होना चाहिए कि परमेश्वर कौन है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के चार भजन इस प्रश्न का अपूर्ण उत्तर देते हैं।

हम सृष्टिकर्ता की आराधना करते हैं (प्रकाशितवाक्य 4)

► प्रकाशितवाक्य 4 जोर से पढ़ें। स्वर्गीय दृश्य की कल्पना करने के लिए समय निकालें। यह अध्याय हमें उस परमेश्वर के बारे में क्या बताता है जिसकी हम आराधना करते हैं?

स्वर्ग की ओर खुलने वाली अपनी खिड़की के साथ, प्रकाशितवाक्य अध्याय 4 उस सृष्टिकर्ता की झलक देता है जिसकी हम आराधना करते हैं।

सृष्टिकर्ता सर्वोच्च है।

परमेश्वर संसार के ऊपर सिंहासन पर विराजमान है। इस अध्याय में "सिंहासन" शब्द का प्रयोग 14 बार हुआ है। वह सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर है; वह सर्वोच्च है। आराधना में हमेशा परमेश्वर की सर्वोच्चता को स्वीकार करना चाहिए। आराधना में, हम सर्वोच्च परमेश्वर के प्रति अपनी अधीनता व्यक्त करते हैं। वह एक प्रेममय पिता है, परन्तु वह सर्वोच्च है।

सृष्टिकर्ता पवित्र है।

सम्पूर्ण बाइबल में परमेश्वर को पवित्र परमेश्वर के रूप में देखा गया है।

- परमेश्वर इस्राएलियों से कहता है, "मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा पवित्र हूँ" (लैव्यव्यवस्था 19:2)।
- परमेश्वर की स्तुति होती है, "परन्तु तू जो इस्राएल की स्तुति के सिंहासन पर विराजमान है, तू तो पवित्र है" (भजन संहिता 22:3)।
- नबी यशायाह सिंहासन के चारों ओर स्वर्गदूतों को आराधना करते हुए देखता है, "सेनाओं का यहोवा पवित्र, पवित्र, पवित्र है; सारी पृथ्वी उसके तेज से भरपूर है" (यशायाह 6:3)।
- प्रेरित यूहन्ना स्वर्ग में देखता है, जहाँ जीवित प्राणी कहते हैं, "पवित्र, पवित्र, पवित्र प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, जो था और जो है और जो आनेवाला है" (प्रकाशितवाक्य 4:8)।

हम एक पवित्र परमेश्वर की आराधना करते हैं।

सृष्टिकर्ता अनन्त है।

वह जो था और जो है और जो आनेवाला है (प्रकाशितवाक्य 4:8)।

दाऊद ने सृष्टि के आश्चर्य को परमेश्वर की महिमा की एक खिड़की के रूप में सुस्पष्ट किया। “आकाश परमेश्वर की महिमा का वर्णन कर रहा है; और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है” (भजन संहिता 19:1)। उत्पत्ति की पुस्तक का पहला अध्याय परमेश्वर को सृष्टिकर्ता के रूप में प्रस्तुत करता है; बाइबल की अंतिम पुस्तक हमें फिर से याद दिलाती है कि परमेश्वर ही सृष्टिकर्ता हैं और वह अपनी सृजित सृष्टि पर अनंत काल तक राज्य करेगा।

यह ज़ोर आराधना के उचित केंद्र बिंदु को दर्शाता है। हम सृजित प्राणी सृष्टिकर्ता परमेश्वर की आराधना करते हैं। आराधना वास्तव में उनके विषय है, हमारे विषय नहीं। जैसे ही हम सृष्टिकर्ता की आराधना में मग्न हो जाते हैं, आकाश फिर से उनकी महिमा का बखान करता है।

हम उद्धारकर्ता की आराधना करते हैं (प्रकाशितवाक्य 5)

► प्रकाशितवाक्य अध्याय 5 ऊँची आवाज़ मे पढ़ें। यह भव्य दृश्य हमें उस परमेश्वर के बारे में क्या बताता है जिसकी हम आराधना करते हैं?

मसीहियों के रूप में, हमें यह याद करते हुए अपने आश्चर्य की भावना को कभी नहीं खोना चाहिए कि ब्रह्मांड के राजा ने हमारे उद्धार का प्रबंध किया है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 5 में, हम देखते हैं कि परमेश्वर के मेमने, संसार के उद्धारक, की आराधना की जाती है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में यीशु को 28 बार "उस मेम्ने" कहा गया है। यह प्रकाशितवाक्य में मुख्य छवियों में से एक है।

वह कौन है इस कारण से हम उद्धारकर्ता की आराधना करते हैं।

वह यहूदा के गोत्र का वह सिंह है। वह दाऊद का मूल है। यह वही मेम्ना है जो वध किया गया था। यह वही मेम्ना है जिसके सात सींग और सात आँखें हैं (प्रकाशितवाक्य 5:6), सिद्धता का प्रतीक। वह कौन है इस कारण से आराधना में हम यीशु का आदर करते हैं। आराधना “मसीह की महिमामय सिद्धताओं का पर्व” है। (जॉन पाइपर)।

वह कहाँ है इस कारण से हम उद्धारकर्ता की आराधना करते हैं।

प्रकाशितवाक्य 5:6 में, यीशु स्वर्गीय आराधना के केंद्र बिन्दु हैं। वह सिंहासन और चार जीवित प्राणियों के बीच और प्राचीनों के बीच हैं। इब्रानियों का लेखक अद्भुत प्रतिज्ञा देता है कि हमारा अधिवक्ता परमेश्वर के सिंहासन के दाहिने हाथ बैठा है (इब्रानियों 12:2)।

उसने क्या किया है इस कारण से हम उद्धारकर्ता की आराधना करते हैं।

परमेश्वर के श्रेय पर ध्यान केंद्रित करने के प्रयास में, कुछ शिक्षकों ने गलत सुझाव दिया है कि हमें परमेश्वर की आराधना केवल उसके स्वरूप के लिए करनी चाहिए, न कि उसके द्वारा हमारे लिए किए गए कार्यों के लिए। यूहन्ना प्रकटकर्ता दिखाता है कि स्वर्गीय आराधना मेम्ने के कार्यों के लिए उसकी स्तुति करती है। "वध किया हुआ मेम्ना...योग्य है ..." (प्रकाशितवाक्य 5:12)।

यह नमूना भजन संहिता में देखा जाता है। भजन संहिता 134 हमें प्रभु को धन्यवाद देने का आदेश देता है। इसमें कोई कारण नहीं बताया गया है; हम उसकी स्तुति इसलिए करते हैं क्योंकि वह परमेश्वर है। इसके बाद आता है भजन संहिता 135-136, जो इस्राएल के इतिहास में परमेश्वर के कार्यों के कारण उसकी स्तुति करते हैं। परमेश्वर का चरित्र, बल्कि उसके महान कार्य भी स्तुति के योग्य हैं। हमें परमेश्वर की स्तुति उसके स्वरूप और उसके कार्यों के लिए करनी चाहिए।

हम राजा की आराधना करते हैं (प्रकाशितवाक्य 11:15-18)

प्रकाशितवाक्य 11 स्वर्गीय आराधना का एक और दृश्य प्रस्तुत करता है। इस दृश्य में, प्राचीन उस राजा की आराधना करते हैं जिसने अपना वास्तविक सिंहासन ग्रहण कर लिया है। भले ही, सांसारिक राज्य उसके विरुद्ध विद्रोह करते हैं, फिर भी उन्हें अंततः उसके अधिकार के आगे झुकना ही पड़ता है। "जगत का राज्य हमारे प्रभु का और उसके मसीह का हो गया, और वह युगानुयुग राज्य करेगा" (प्रकाशितवाक्य 11:15)।

इस भजन में, राजा की संसार पर उसके धर्मी न्याय के लिए प्रशंसा की गई है। यह भजन हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर बड़ी शक्ति से शासन करता है। यद्यपि राष्ट्र क्रोधित थे, परमेश्वर ने उनका न्याय धर्म से किया।

आराधना सच्चाई से की जाने वाली आराधना है। सच्ची आराधना परमेश्वर के भयानक न्याय को कम नहीं करती। पुनः, प्रकाशितवाक्य की आराधना भजन संहिता की आराधना के अनुरूप है। भजन संहिता 96 प्रभु के लिए एक नया गीत है। इस गीत में, राष्ट्रों के बीच परमेश्वर की स्तुति की जाती है। वह सभी देवताओं से अधिक भययोग्य है। उसकी स्तुति इसलिए की जाती है क्योंकि वह लोगों का न्याय धर्म से करेगा। सच्ची आराधना जानती है कि हमें परमेश्वर का भय मानना चाहिए; हम उसकी आराधना राजा के रूप में करते हैं।

हम विजयी दूल्हे की आराधना करते हैं (प्रकाशितवाक्य 19:1-9)

बाइबल सर्वेक्षण की एक कक्षा में, एक शिक्षक ने पूछा, "आपमें से कितने लोगों को प्रकाशितवाक्य पुस्तक पसंद है?" बहुत कम छात्रों ने हाथ उठाया। जब शिक्षक ने पूछा, "आपको प्रकाशितवाक्य क्यों पसंद नहीं है?" तो एक छात्र ने जवाब दिया, "यह डरावनी है!"

इन छात्रों को प्रकाशितवाक्य इसलिए डरावना लगता है इसका कारण यह कि वे पुस्तक के सर्वोत्तम अंशों को अनदेखा कर देते हैं। वे उन न्यायदंडों पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करने वालों पर आते हैं। यह निश्चित रूप से प्रकाशितवाक्य का एक महत्वपूर्ण संदेश है। परन्तु मसीहियों के लिए, प्रकाशितवाक्य का मुख्य संदेश हमारे परमेश्वर की अंतिम विजय है!

प्रकाशितवाक्य अध्याय 19 इस संदेश को चित्रित करता है। अध्याय की समाप्ति इस विवरण से होती है उस आग की झील...जो गन्धक से जलती है (प्रकाशितवाक्य 19:20) और उन पक्षियों के विषय जो राजाओं का मांस, सेनापतियों का मांस, और शक्तिशाली पुरुषों का मांस खाते हैं... (प्रकाशितवाक्य 19:18)। राजा के विरुद्ध विद्रोह करने वालों का यही परिणाम होता है। जो लोग श्रद्धापूर्वक राजा की आराधना करते हैं, उनके लिए प्रकाशितवाक्य अध्याय 19 आनन्द का गीत है। वह बड़ी वेश्या जिसने अपनी अनैतिकता से पृथ्वी को भ्रष्ट कर दिया था (प्रकाशितवाक्य 19:2) नष्ट हो जाती है। दूल्हा अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है और अपनी पवित्र दुल्हन का मेम्ने के विवाह भोज में स्वागत करता है (प्रकाशितवाक्य 19:9)।

इस बड़ी जय के उत्सव के प्रत्युत्तर में, यूहन्ना ने सुना "बड़ी भीड़ का सा और बहुत जल का सा शब्द, और गर्जन का सा बड़ा शब्द...: "हल्लिलूय्याह! क्योंकि प्रभु हमारा परमेश्वर सर्वशक्तिमान राज्य करता है। आओ, हम आनन्दित और मगन हों, और उसकी स्तुति करें, क्योंकि मेम्ने का विवाह आ पहुँचा है, और उसकी दुल्हिन ने अपने आप को तैयार कर लिया है" (प्रकाशितवाक्य 19:6-7)।

आराधना में, हम विजयी दूल्हे की स्तुति करते हैं। हमारी आराधना उस भविष्य की आशा करती है जो यीशु अपनी दुल्हन के लिए तैयार कर रहे हैं। आराधना के महत्व का एक कारण यह है कि आराधना हमें इस विरोधी संसार में एक विजयी मसीही जीवन जीने की सामर्थ देती है। आराधना में, हम याद रखते हैं कि "हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है; और हम एक उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के वहाँ से आने की बाट जोह रहे हैं। वह अपनी शक्ति के उस प्रभाव के अनुसार जिसके द्वारा वह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है, हमारी दीन–हीन देह का रूप बदलकर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा" (फिलिप्पियों 3:20-21)।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के ये चार भजन उस परमेश्वर की एक झलक देते हैं जिसकी हम आराधना करते हैं। आराधना में, हम स्वयं पर नहीं, बल्कि परमेश्वर पर ध्यान केंद्रित करते हैं। आराधना में, हम सृष्टिकर्ता के सम्मुख झुकते हैं; आराधना में, हम उद्धारकर्ता की स्तुति करते हैं; आराधना में हम राजा मसीह का उत्सव मनाते हैं; आराधना में, हम विजयी दूल्हे की उपस्थिति में अनंत काल की आशा करते हैं।

यही वह परमेश्वर है जिसकी हम आराधना करते हैं। इससे यह प्रश्न उठता है, "कौन आराधना कर सकता है? परमेश्वर अपनी उपस्थिति में आने वालों से क्या आशा करता है?"

परमेश्वर अपने आराधक से क्या आशा करता है?

सामरी स्त्री के साथ अपनी बातचीत में,[14] यीशु ने एक विशेष बात कही। यीशु ने उसे बताया कि सच्चे आराधक पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, और कहा कि पिता ऐसे लोगों को ढूँढ़ रहा है जो उसकी आराधना करें (यूहन्ना 4:23)। परमेश्वर एक विशेष प्रकार के आराधकों को खोज रहा है, जो आत्मा और सच्चाई से आराधना करते हों। परमेश्वर आराधकों को खोजता है।

परमेश्वर अपने आराधकों में कौन-से गुण चाहता है? कोई भी आराधना सभा में शामिल हो सकता है; कोई भी स्तुति-गीत गा सकता है; कोई भी प्रार्थना कर सकता है। जबकि, परमेश्वर ने एक सच्चे आराधक के गुणों के लिए विशेष दिशानिर्देश दिए हैं। इसे हम भजन संहिता 15 में देख सकते हैं।

► भजन संहिता 15 पढ़ें। यह हमें एक आराधक के जीवन के बारे में क्या बताता है?

भजन संहिता 15 एक आराधना सैद्धांतिक भजन है। यह मंदिर के प्रवेश द्वार पर एक याजक और एक आराधक के बीच हुए संवाद का वर्णन करता है। आराधक परमेश्वर के पवित्र मंदिर में प्रवेश चाहता है। आराधक के प्रश्न, "कौन प्रवेश कर सकता है?" के उत्तर में याजक प्रवेश की आवश्यकता बताता है। वही नमूना भजन संहिता 24:3-6 और मीका 6:6-8। भजन संहिता 15 में प्रयोग किया गया है जो इसे तीन भागों में बाँटता है:

1. प्रश्न: कौन आराधना कर सकता है?
2. उत्तर: आराधक का विवरण
3. अंतिम टिप्पणी: आराधक से किया गया वादा

प्रश्न: कौन आराधना कर सकता है? (भजन संहिता 15:1)

मंदिर के प्रवेश द्वार पर एक आराधक पूछता है, “हे परमेश्वर तेरे तम्बू में कौन रहेगा? तेरे पवित्र पर्वत पर कौन बसने पाएगा?” ये प्रश्न आराधक के तीन गुणों की ओर संकेत करते हैं।

एक सच्चा उपासक ईश्वरीय भय को जानता है।

यह भजन संहिता दर्शाती है कि परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश कभी भी सहज नहीं होता। एक सच्चा आराधक समझता है कि परमेश्वर पवित्र है और हम उससे अलग हैं।

---

[14] अध्याय 2 का अधिकांश भाग में पाया जाता है “The Worshipper’s Approach to God” by Ronald E. Manahan, *Authentic Worship*, Herbert Bateman द्वारा संपादित. (Grand Rapids: Kregel Books, 2002).

पूरी बाइबल में, परमेश्वर की उपस्थिति के साथ एक भय का भाव जुड़ा हुआ है। सिनाई पर्वत पर, लोगों को उस पर्वत से दूर रहने की चेतावनी दी गई थी जहाँ परमेश्वर ने मूसा से बात की थी (निर्गमन 19:7-25)। रूपांतरण पर्वत पर, शिष्य बहुत डरे हुए थे (मत्ती 17:6)।

विश्वासी के लिए, ईश्वरीय भय वह भय नहीं है जो किसी व्यक्ति को परमेश्वर की उपस्थिति से दूर भगाता है। बल्कि, यह सम्मान है जो आराधक को विनम्रता से परमेश्वर के पास आने के लिए प्रेरित करता है। एक आराधक को परमेश्वर की उपस्थिति में बिना तैयारी के नहीं जाना चाहिए।

एक सच्चा आराधक विनम्रता से आराधना करता है।

आराधक ने पूछा, "तेरे तम्बू में कौन रहेगा?" प्रवासी दूसरे देश में रहने वाले विदेशी नागरिक होते हैं। वे मेहमान होते हैं, जिनके पास नागरिकों जैसे अधिकार नहीं होते।

भजन संहिता 15 में आराधक को यह स्वीकार करना आवश्यक है कि हम परमेश्वर की उपस्थिति में मेहमान हैं। क्योंकि परमेश्वर पवित्र हैं और उनका घर पवित्र है, इसलिए हम वहाँ रहने के योग्य नहीं हैं। जीवन में हमारी स्थिति चाहे जो भी हो, हमें विनम्रता के साथ परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करना चाहिए। हम उनके मेहमान हैं।

एक सच्चा आराधक परमेश्वर के अनुग्रह का जश्न मनाता है।

क्योंकि हम परमेश्वर की पवित्रता को पहचानते हैं, इसलिए जब वह हमें अपने घर में स्वागत करता है, तो हम उसके अनुग्रह का उत्सव मनाते हैं। आराधक जिसने यह पूछा, "तेरे पवित्र पर्वत पर कौन बसने पाएगा?" उन्होंने यह सवाल इस विश्वास के साथ पूछा कि उन्हें परमेश्वर के घर में आमंत्रित किया जाएगा। परमेश्वर ने इस्राएल के साथ एक सम्बन्ध स्थापित किया था; यहूदी आराधना इस अनुग्रहपूर्ण सम्बन्ध का जश्न मनाती थी।

भजन संहिता 103 आराधना के लिए निमन्त्रण है, "हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह ।" भजन संहिता 103 इसमें उस अनुग्रह का एक सुंदर स्मरण है जो हमें परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करने की अनुमति देता है।[15]

"जैसे पिता अपने बालकों पर दया करता है, वैसे ही यहोवा अपने डरवैयों पर दया करता है। क्योंकि वह हमारी सृष्टि जानता है; और उसको स्मरण रहता है कि मनुष्य मिट्टी ही है" (भजन संहिता 103:13-14)। जिस परमेश्वर ने हमें मिट्टी से रचा है, उसने अपने अनुग्रह में हमें आराधना के लिए बुलाया है! जब हम आराधना में प्रवेश करते हैं, तो हम परमेश्वर के अनुग्रह को याद करते हैं। यह अनुग्रह ही है जो धूल को ब्रह्मांड के सृष्टिकर्ता की उपस्थिति में प्रवेश करने देता है।

---

[15] यह टिप्पणी यहाँ से आई है Richard Averbeck, "Worshipping God in Spirit."

सच्ची आराधना में ईश्वरीय भय, विनम्रता और अनुग्रह शामिल हैं। आराधना के ये सभी पहलू मंदिर-आराधना में देखे जा सकते थे। यहूदी आराधक मंदिर का आदर करते थे क्योंकि यह एक पवित्र परमेश्वर का घर था।[16] परमेश्वर के समक्ष उचित विनम्रता दिखाने के लिए वे आराधना की सावधानीपूर्वक तैयारी करते थे। वे आराधना में जश्न भी मनाते थे। यहूदी आराधना गायन, वाद्यों, मधुर सुगंधों और ऐसे वातावरण से भरी होती थी जो अपने लोगों पर परमेश्वर के अनुग्रह का जश्न मनाता था।

आज, हमें ईश्वरीय भय के भाव के साथ परमेश्वर के घर में प्रवेश करना चाहिए। हमें परमेश्वर के समक्ष अपनी अयोग्यता को स्वीकार करना चाहिए। परन्तु हमारी आराधना में परमेश्वर के अनुग्रह का भी जश्न मनाना चाहिए जो हमारा उनकी उपस्थिति में स्वागत करती है। एक प्राचीन मत की आराधना पद्धति कहती है, "हम इसलिए नहीं आते क्योंकि हम योग्य हैं, बल्कि इसलिए आते हैं क्योंकि हमें आमंत्रित किया गया है।" यह वह आराधना है जो परमेश्वर के अनुग्रह का जश्न मनाती है।

उत्तर: आराधक का विवरण (भजन संहिता 15:2-5)

"परमेश्वर के भवन में कौन प्रवेश कर सकता है?" इस प्रश्न के उत्तर में, याजक ने आराधक का वर्णन किया। आराधक परमेश्वर के सामने निष्कलंक चलता है। वह दूसरों के साथ अपने व्यवहार में सावधान रहता है। वह उन लोगों को अस्वीकार करता है जो परमेश्वर को अस्वीकार करते हैं, परन्तु वह उनका आदर करता है जो परमेश्वर का भय मानते हैं। वह अपने चरित्र को परमेश्वर के चरित्र के अनुरूप ढालने का प्रयास करता है। जो व्यक्ति सच्चे मन से परमेश्वर की आराधना करता है, वह अधिकाधिक परमेश्वर के समान बनता जाएगा।

यह उत्तर हमें याद दिलाता है कि आराधना जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करती है। परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश के लिए पूर्ण आज्ञाकारिता की आवश्यकता होती है। दाऊद ऐसे व्यक्ति की कल्पना नहीं कर सकता था जो कहे, "मैं परमेश्वर की संतान हूँ, परन्तु मैं परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन नहीं रहता।" बाइबल किसी व्यक्ति को यह कहने की अनुमति नहीं देती, "यीशु मेरा उद्धारकर्ता है, परन्तु वह मेरे जीवन का प्रभु नहीं है।" परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश के लिए परमेश्वर के अधिकार के अधीन होना आवश्यक है।

एक सच्चा आराधक ईश्वरीय जीवन व्यतीत करता है।

भजन संहिता 15:2 आराधक का सामान्य विवरण देता है। जो लोग परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करते हैं, उन्हें निष्कलंक होकर चलना चाहिए; यह सभी क्षेत्रों में एक ईमानदार जीवन का संकेत देता है। उन्हें हमेशा वही करना चाहिए जो सही है। उन्हें हृदय से (या हृदय में) सत्य बोलना चाहिए। ये वाक्यांश आराधक के निरंतर जीवन का वर्णन करते हैं। जीवन का हर क्षेत्र आराधना से प्रभावित होता है।

---

[16] यीशु के समय तक, यह सम्मान खो गया था और मंदिर का प्रवेश द्वार एक बाज़ार बन गया था। यीशु ने मंदिर को अपमानित करने वाले सर्राफों को बाहर निकाल दिया, जो इसे "डाकुओं की खोह" (मत्ती 21:12-13) बना रहे थे।

एक सच्चा आराधक समाज के साथ सही सम्बन्ध में रहता है।

जिस तरह दाऊद ऐसे व्यक्ति की कल्पना नहीं कर सकता था जो कहे, "मैं परमेश्वर की संतान हूँ, परन्तु मैं परमेश्वर के नियमों का पालन नहीं करता," उसी तरह वह ऐसे व्यक्ति की कल्पना भी नहीं कर सकता था जो कहे, "मैं परमेश्वर के सामने धर्मी हूँ, परन्तु मैं अपने पड़ोसियों के साथ धर्मी व्यवहार नहीं करता।"

जो व्यक्ति परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करता है, उसे ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो समाज के साथ सही संबंध बनाए रखे। वह:

- अपनी जीभ से निन्दा नहीं करता।
- अपने पड़ोसी की बुराई नहीं करता।
- अपने मित्र की निन्दा नहीं करता; वह चुगली नहीं करता।
- परमेश्वर को अस्वीकार करने वालों का विरोध करता है।
- परमेश्वर का भय मानने वालों का सम्मान करता है।
- अपने वचन का पक्का होता है।
- गरीबों को अनुचित ऋण देकर उनका शोषण नहीं करता।
- रिश्वत लेकर निर्दोषों के साथ अन्याय नहीं करता।

जो व्यक्ति परमेश्वर के तम्बू में निवास करता है, वह आंतरिक और बाह्य दोनों रूप से एक धर्मी व्यक्ति है। सच्चा आराधक एक ईमानदार व्यक्ति होता है। सच्चा आराधक आज्ञाकारिता के दैनिक जीवन को बदलने के लिए आराधना के रीति-रिवाजों को अनुमति नहीं देता है।

अंतिम टिप्पणी: आराधक से किया गया वादा (भजन संहिता 15:5)

भजन संहिता 15 आराधक को दिए गए वादे के साथ समाप्त होती है; “जो कोई ऐसी चाल चलता है वह कभी न डगमगाएगा” (भजन संहिता 15:5)। जो व्यक्ति परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करता है, उसे परमेश्वर की सुरक्षा का वादा किया जाता है। भजन संहिता 15, भजन संहिता 1 के समान है, जिसमें ईश्वरीयता का वर्णन है और परमेश्वर के द्वारा धर्मी व्यक्ति को आशीष दिए जाने का वादा है।

भजन संहिता 15 दिखाता है कि परमेश्वर उनसे क्या आशा करता है जो उसकी आराधना करते हैं। भजन संहिता 15 को एक आदेश (“परमेश्वर यही चाहता है”) और एक वादे (“यही परमेश्वर उनके लिए करेगा जो उससे मांगते हैं”) दोनों के रूप में पढ़ा जाना चाहिए। यशायाह 6 के प्रकाश में, हम समझते हैं कि यह परमेश्वर ही है जो आज्ञाकारिता के लिए आराधक को सामर्थी बनाता है; यह परमेश्वर ही है जो अशुद्ध होठों को शुद्ध करता है; यह परमेश्वर ही है जो भजन संहिता 15 की माँगों को संभव बनाता है। सच्ची आराधना परमेश्वर के अनुग्रह पर निर्भर करती है। यह हमारे कमजोर प्रयासों से नहीं, परन्तु उन लोगों के जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह से प्राप्त होती है

जो उसकी आराधना करना चाहते हैं। आराधना में परमेश्वर के अनुग्रह को कभी न भूलें; पिता सच्चे आराधकों को खोजता है, और पिता आराधना को संभव बनाता है।

दोबारा जाँच

स्वयं से पूछें, "क्या मेरे पास एक सच्चे आराधक का हृदय और हाथ हैं?" भजन संहिता 15 को एक *परीक्षा* के रूप में पढ़ें। प्रत्येक वाक्यांश के बाद पूछें, "क्या यह मेरा वर्णन करता है? क्या मैं आराधना के लिए तैयार हूँ?"

भजन संहिता 15 को फिर से एक *व्यक्तिगत प्रार्थना* के रूप में पढ़ें। "हे प्रभु, मुझे सीधाई से चलने और धर्म के काम करने की शक्ति प्रदान करें... मुझे चुगली और निन्दा से दूर रहने की कृपा प्रदान करें..." परमेश्वर की यह प्रतिज्ञा सुनकर समाप्त करें, "जो इन कामों पर चलता है, वह कभी विचलित नहीं होगा।"

आराधना के खतरे: पाखण्ड

यीशु ने उन लोगों से बात की जो स्वयं को आराधना के विशेषज्ञ मानते थे। शास्त्री और फरीसी आराधना की हर बारीकी का ध्यान रखते थे, चाहे वह बाइबल की आज्ञाएँ हों या यहूदी परंपराएँ। जो कोई भी उनके रीति-रिवाजों का पालन नहीं करता था, वे उसकी निंदा करने में तत्पर रहते थे। यद्यपि, यीशु ने उनकी आराधना की निंदा की क्योंकि वे पाखंडी थे।

फरीसियों ने शिकायत की कि यीशु के शिष्य हाथ धोने के धार्मिक रीति-रिवाजों का पालन नहीं करते। यीशु ने उत्तर दिया, "हे कपटियो, यशायाह ने तुम्हारे विषय में यह भविष्यद्वाणी ठीक ही की है :'ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उनका मन मुझ से दूर रहता है। और ये व्यर्थ मेरी आराधना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं" (मत्ती 15:7-9)। यशायाह के दिनों के झूठे आराधकों की तरह, फरीसियों को भी यीशु ने दो विफलताओं के कारण पाखंडी कहा था:

1. उनकी आराधना बाहरी थी, हृदय से नहीं (मत्ती 15:8)।
2. उनकी आराधना मानवीय परम्परा पर आधारित थी, परमेश्वर की आज्ञाओं पर नहीं (मत्ती 15:9)।

हमें पाखंड की आराधना के खतरे से बचने के लिए सावधान रहना चाहिए। हमारी आराधना हृदय से होनी चाहिए, और हमारी आराधना परमेश्वर द्वारा निर्देशित होनी चाहिए, न कि उन परंपराओं द्वारा जिन्हें परमेश्वर के वचन के बराबर स्थान दिया गया है।

निष्कर्ष: आराधकों की गवाहियाँ

यदि हम मसीही जीवन में अनुग्रह की भूमिका को ध्यान में रखे बिना भजन संहिता 15 पढ़ते हैं, तो हमें यह गलत धारणा हो सकती है कि हमें आराधना का अधिकार अर्जित करना होगा। यद्यपि, भजन संहिता 15 यह दर्शाता है कि परमेश्वर हमारे लिए क्या करता है, न कि यह कि हम उसके घर में स्वागत पाने के लिए क्या करते हैं।

आराधना के लिए किसे आमंत्रित किया जाता है? **आराधकों से कुछ आश्चर्यजनक गवाहीयाँ सुनें**। वे दर्शाते हैं कि आराधना का अर्थ योग्य होना नहीं है; आराधना का अर्थ है विनम्रतापूर्वक परमेश्वर की उपस्थिति में आना और उनके अनुग्रह से बदल जाना।

एक फरीसी बोलता है:

“मुझे भरोसा है कि आप समझ सकते हैं कि मैं यीशु की शिक्षाओं से क्यों आहत हूँ। मैं एक अच्छा इंसान हूँ। मैं आज्ञाओं का उल्लंघन नहीं करता। मैं उपवास करता हूँ और दशमांश देता हूँ। यदि कोई परमेश्वर की कृपा का पात्र है, तो वह मैं ही हूँ! मैं परमेश्वर के घर यह दिखाने आता हूँ कि मैं एक अच्छा इंसान हूँ। परमेश्वर मेरी आराधना को कैसे अस्वीकार कर सकते हैं?”

एक चुंगी लेने वाला बोलता है:

“सच कहूँ तो, मैं भी फरीसी जितना ही हैरान हूँ! मुझे विश्वास ही नहीं था कि मैं मंदिर में प्रवेश कर पाऊँगा। मैं अच्छे लोगों से जितना हो सके दूर रहा। मुझे उम्मीद थी कि कोई मुझ पर ध्यान नहीं देगा। मैंने परमेश्वर की दया माँगी, यद्यपि मैं दया का पात्र नहीं हूँ। मुझे आश्चर्य हुआ कि मैं धर्मी ठहराकर घर गया। आराधना में मेरा जीवन बदल गया।”

एक अमीर आदमी बोलता है:

“मैं मंदिर में बहुत सारा पैसा देता हूँ। मुझे लगता है कि यीशु मेरे चढ़ावे से प्रभावित होंगे। यही मेरी आराधना है। जब मैं अपना चढ़ावा पेटी में डालता हूँ, तो सभी जानते हैं कि 'श्रीमान धन' यहाँ हैं। मुझे उम्मीद है कि परमेश्वर ध्यान देंगे कि मैं कितना देता हूँ!”

एक गरीब विधवा कहती है:

“मुझे अपना दान पेटी में डालने में शर्म आ रही थी। मेरे पास सिर्फ़ दो छोटे सिक्के थे। बाकी सब लोग बड़ा दान दे रहे थे; मेरे पास लगभग कुछ भी नहीं था। लेकिन आराधना का अर्थ है परमेश्वर को अपना सर्वश्रेष्ठ देना। यह ज़्यादा नहीं था; परन्तु मैंने अपना सब कुछ दे दिया। मुझे आशा थी कि मेरे इस छोटे से दान पर किसी का ध्यान नहीं जाएगा, परन्तु किसी ने ध्यान दिया। यीशु ने देखा कि मैंने क्या दिया! और उन्होंने कहा कि मैंने किसी और से ज़्यादा दिया है। मुझे नहीं पता कि यीशु के इस कथन का क्या अर्थ था, परन्तु मुझे खुशी है कि मैंने अपना सर्वश्रेष्ठ दिया!”

सामूहिक विचार विमर्श

► इस पाठ के व्यावहारिक लागूकरण के लिए, निम्नलिखित विषय पर विचार विमर्श करें:

मनीष कई वर्षों से मसीही है। वह जानता है कि कलीसिया जाना, बाइबल पढ़ना और प्रार्थना करना ज़रूरी है, परन्तु इन गतिविधियों में परमेश्वर की उपस्थिति महसूस करना उसके लिए मुश्किल है। ये सब उसे दिखावे से ज़्यादा कुछ नहीं लगते। आप मनीष को उसकी आराधना में परमेश्वर को देखने में कैसे मदद कर सकते हैं?

पाठ 2 की समीक्षा

(1) परमेश्वर के विषय में हमारी समझ आराधना के लिए ज़रूरी है क्योंकि परमेश्वर की विकृत छवि विकृत आराधना की ओर ले जाएगी।

(2) आराधना परमेश्वर पर केंद्रित होनी चाहिए, न कि हमारी आराधना अनुभव की गुणवत्ता पर।

(3) प्रकाशितवाक्य की पुस्तक स्वर्गीय आराधना का एक चित्र प्रस्तुत करती है:

- स्वर्गीय आराधना उस सृष्टिकर्ता की आराधना है जो सर्वोच्च, पवित्र और अनन्त है।
- स्वर्गीय आराधना उद्धारकर्ता की आराधना है।
- स्वर्गीय आराधना राजा की आराधना है।
- स्वर्गीय आराधना विजयी दूल्हे की आराधना है।

(4) भजन संहिता 15 एक आराधना भजन है जो आराधकों के लिए परमेश्वर की आवश्यकताओं का सारांश प्रस्तुत करता है। एक सच्चा आराधक:

- ईश्वरीय भय को जानता है।
- विनम्रता से आराधना करता है।
- परमेश्वर के अनुग्रह का जश्न मनाता है।
- ईश्वरीय जीवन व्यतीत करता है।
- समाज के साथ सही सम्बन्ध में रहता है।
- परमेश्वर की सुरक्षा और आशीष का वादा प्राप्त करता है।

पाठ 2 के कार्य

(1) भजन संहिता 120-134 यरूशलेम की यात्रा करने वाले तीर्थयात्रियों के लिए गीतों का एक संग्रह है। ये भजन विभिन्न परिस्थितियों में आराधना के विषय सिखाते हैं। नीचे दी गई तालिका में दिए गए प्रश्नों के उत्तर देते समय इन भजन संहिताओं को पढ़ें।

भजन	उत्तर देने के लिए प्रश्न
120	मेशेक और केदार कहाँ हैं? मेशेक या केदार में रहने वाले तीर्थयात्री के लिए यरूशलेम में आराधना क्यों महत्वपूर्ण है?
122	यह भजन संहिता आराधना के प्रति हमारे दृष्टिकोण के विषय क्या सिखाती है?
123	पद 2, आराधक के परमेश्वर के साथ संबंध के विषय क्या सिखाता है?
124	इस भजन से आप कठिन परिस्थितियों में स्तुति के बारे में क्या सीखते हैं?
126	राष्ट्रों के बीच आराधना का मिशन से क्या संबंध है? पद 2 पर ध्यान दें।
130	यह भजन संहिता आराधना में अंगीकार की भूमिका के विषय क्या सिखाती है?
131	भजनकार आराधना के लिए स्वयं को कैसे तैयार करता है? इस आदर्श का अनुसरण करने के लिए आप कौन से व्यावहारिक कदम उठा सकते हैं?
133	भजन संहिता 133, यूहन्ना 17:20-23, और इफिसियों 4:1-16, सभी एकता की बात करते हैं और सभी किसी न किसी रूप में कलीसिया जीवन से संबंधित हैं। एकता का आराधना और कलीसिया के जीवन से क्या संबंध है?
134	भजन संहिता 134, आराधना भजनों की इस श्रृंखला के लिए एक उपयुक्त समापन कैसे है?

(2) अगले पाठ के आरम्भ में, आप इस पाठ पर आधारित एक परीक्षा देंगे। तैयारी के लिए परीक्षा के प्रश्नों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें।

पाठ 2 परीक्षा

(1) प्रकाशितवाक्य अध्याय 4 के भजन में हम सृष्टिकर्ता परमेश्वर के बारे में जो तीन बातें सीखते हैं, उन्हें सूचीबद्ध करें।

(2) प्रकाशितवाक्य अध्याय 5 में उद्धारक की आराधना करने के तीन कारणों की सूची बनाएं।

(3) मसीहियों के लिए प्रकाशितवाक्य का मुख्य संदेश क्या है?

(4) भजन संहिता 15 एक धार्मिक भजन है जो तीन भागों में विभाजित है। तीनों भागों की सूची बनाइए।

(5) उस आराधक का रवैया क्या है जो समझता है कि वह परमेश्वर की उपस्थिति में एक मेहमान है?

(6) भजन संहिता 15:2-5 से एक सच्चे आराधक की दो महत्वपूर्ण विशेषताएँ क्या हैं?

(7) यीशु ने फरीसियों को पाखंडी क्यों कहा?

(8) याद किया हुआ प्रकाशितवाक्य 5:9-14 लिखें।

पाठ 3

पुराना नियम में आराधना

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अन्त होने तक विद्यार्थी को नीचे दिए गए कार्य करने के योग्य होना चाहिए:

(1) परमेश्वर के अनुग्रह की सराहना करना जो आराधना को संभव बनाता है।

(2) आज्ञाकारिता के हृदय से आराधना में बढ़ना।

(3) आराधना में क्रियापद्धति की भूमिका को जानना।

(4) आराधना के मुख्य तत्व के रूप में स्तुति का अभ्यास करना।

(5) आराधना में परमेश्वर के वचन की घोषणा के महत्व को पहचानना।

(6) आराधना में असंतुलन के ख़तरे से बचना।

इस पाठ की तैयारी

कण्ठस्थ करें मीका 6:6-8।

भूमिका

पासबानों का एक समूह हर महीने अपनी कलीसियाओं के विषयों पर विचार विमर्श करने के लिए मिलता है। हाल ही में उन्होंने आराधना पर विचार विमर्श किया। आराधना के विषय पर इन पासबानों के बीच काफ़ी मतभेद हैं। जबकि उनके सिद्धांत समान हैं, फिर भी आराधना की शैलियों के मामले में उनमें काफ़ी अंतर है।

सुमित एक ऐसी कलीसिया का पासबान है जो आराधना के पारंपरिक दृष्टिकोण का पालन करता है। निखिल एक ऐसी बढ़ती हुई कलीसिया में सेवा करता हैं जो आराधना में कई समकालीन विचारों का उपयोग करता है। अनुज अभी भी अपनी कलीसिया के लिए सबसे उपयुक्त आराधना का प्रकार खोजने की कोशिश कर रहा है। इन पासबानों ने आराधना के विषय कई विचार विमर्श किए हैं, परन्तु वे आराधना के मूल सिद्धांतों पर सहमत होने के अपने प्रयास में निराश हैं।

आज, विवेक कहता है, "शायद हम इसे गलत तरीके से देख रहे हैं। हम पूछते रहते हैं, 'हम किस प्रकार की आराधना का आनंद लेते हैं? हम कैसे आराधना करना चाहते हैं?' शायद हमें पूछना चाहिए, 'परमेश्वर हमसे किस प्रकार की आराधना चाहते हैं? उन्हें किस प्रकार की आराधना पसंद है? यदि परमेश्वर आराधना की रूपरेखा तैयार करें, तो वह कैसी होगी?' यदि हम जानें कि बाइबल आधारित आराधना कैसी होती है, तो शायद हमें आज की आराधना के लिए एक आदर्श मिल जाए।"

► यदि परमेश्वर आराधना की कोई रूपरेखा बनाए, तो वह कैसी होगी? बाइबल आधारित आराधना के विषय आप जो कुछ जानते हैं, उसका सारांश दीजिए।

भूमिका: परमेश्वर उचित आराधना की माँग करता है

पाठ 2 में, हमने प्रकाशितवाक्य से देखा कि सच्ची आराधना एक पवित्र परमेश्वर की आराधना है। हमने भजन संहिता 15 से देखा कि परमेश्वर अपने आराधकों से पवित्र होने की आशा करता है। पाठ 3 में, हम पूछते हैं, "एक आराधक पवित्र परमेश्वर के पास कैसे पहुँचता है?"

कुछ लोग कहते हैं कि परमेश्वर को इस बात की परवाह नहीं है कि हम कैसे आराधना करते हैं; उसे केवल इस बात की परवाह है कि हमारा हृदय पवित्र है। यह सच है कि हृदय ही आराधना का मूल है। यद्यपि, हमें बाइबल के वचनों से पर्याप्त प्रमाण मिलते हैं कि परमेश्वर इस बात की बहुत परवाह करता है कि उसकी आराधना कैसे की जाती है।

आराधना का स्वरूप महत्वपूर्ण है क्योंकि **हमारी आराधना परमेश्वर के बारे में हमारी समझ को प्रभावित करती है।** पिछले पाठ में, हमने देखा कि परमेश्वर की विकृत छवि विकृत आराधना की ओर ले जाती है। यह भी सच है कि विकृत आराधना परमेश्वर की हमारी छवि को विकृत करती है। जब इस्राएलियों ने यहोवा की आराधना उसी तरह की जिस तरह कनानियों ने अपने देवताओं की आराधना की थी, तो उन्होंने जल्द ही यह मान लिया कि परमेश्वर का स्वरूप कनानियों के देवताओं जैसा है। वे यह मानने लगे कि परमेश्वर कनानियों के देवताओं की तरह ही प्रतिशोधी और अविश्वासयोग्य है।[17]

आराधना का स्वरूप महत्वपूर्ण है क्योंकि **हम जिस प्रकार आराधना करते हैं वह प्रायः इस बात का प्रतिबिंब होता है कि हम आराधना क्यों करते हैं।** प्रेमपूर्ण हृदय परमेश्वर का आदर करने वाली आराधना करने में प्रसन्न होता है , अनिच्छापूर्वक आज्ञापालन का हृदय परमेश्वर के तरीके के बजाय अपने तरीके से आराधना करना चाहता है।

कई कॉलेज कक्षाओं में शोध पत्रों के स्वरूप के लिए कुछ निश्चित आवश्यकताएँ होती हैं। उन्हें एक आवरण पृष्ठ, फ़ुटनोट और एक निश्चित हाशिए की आवश्यकता होती है। ये विवरण शोध पत्र का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा नहीं हैं; विषय-वस्तु सबसे महत्वपूर्ण है। यद्यपि, कई शिक्षकों ने देखा है कि जो छात्र विवरणों के प्रति सावधान रहता है वह आमतौर पर विषय-वस्तु के बारे में भी सावधान रहता है; वे अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना चाहते हैं। दूसरी ओर, जो छात्र इन आवश्यकताओं की अनदेखी करता है वह अक्सर विषय-वस्तु के प्रति लापरवाह होता है। शोध पत्र का स्वरूप प्रायः शोध पत्र की विषय-वस्तु को दर्शाता है। जिस प्रकार हम आराधना करते हैं वह प्रायः हमारे हृदय के दृष्टिकोण को दर्शाता है। हम जिस प्रकार आराधना करते हैं वह प्रायः हमारी आराधना के कारण से संबंधित होता है। इस कारण, परमेश्वर इस बात की परवाह करता है कि हम कैसे आराधना करते हैं।

---

[17] मीका 6:6-7 में, धार्मिक अगुवे यहोवा को बच्चों की बलि चढ़ाकर घूस देने की कोशिश करते हैं। उन्हें लगता है कि यहोवा मोलेक की माँग के मुताबिक बच्चों की बलि चढ़ाने की उम्मीद करता है।

- कैन यहोवा के लिए भेंट लाया। कैन एक किसान था। वह ज़मीन की उपज लाया, परन्तु यहोवा ने कैन और उसकी भेंट की ज़रा भी परवाह नहीं की। कैन द्वारा उचित रूप से आराधना न करना उसके हृदय के मनोभाव को दर्शाता है। कैन की भेंट उसके लिए सुविधाजनक थी, परन्तु परमेश्वर ने उसकी आराधना ग्रहण नहीं की। (उत्पत्ति 4:1-5)।

- हारून ने यहोवा की आराधना के लिए एक सोने का बछड़ा बनाया। उसने कहा, "कल यहोवा के लिये पर्व होगा" (निर्गमन 32:1-5)। हो सकता है कि हारून ने स्वयं को यह भरोसा दिलाया था कि वह लोगों को खुश करने वाले तरीके से परमेश्वर की आराधना कर सकता है, परन्तु परमेश्वर ने उसकी आराधना ग्रहण नहीं की।

- नादाब और अबीहू ने सीनै पर्वत पर इस्राएल के परमेश्वर को देखा (निर्गमन 24:1-11)। वे मूसा के अलावा किसी और से ज़्यादा परमेश्वर के करीब थे, परन्तु तम्बू में याजकीय सेवा के अपने पहले दिन, उन्होंने प्रभु के सामने निषिद्ध अग्नि चढ़ाई। प्रत्युत्तर में, प्रभु की अग्नि ने उन्हें भस्म कर दिया। मूसा ने उनके दुःखी पिता को परमेश्वर के न्याय के बारे में समझाया; "यह वही बात है जिसे यहोवा ने कहा था कि जो मेरे समीप आए, अवश्य है कि वह मुझे पवित्र जाने, और सारी जनता के सामने मेरी महिमा करे" (लैव्यव्यवस्था 10:1-7)। ये याजक परमेश्वर की आज्ञा मानने की बजाय, अपने तरीके से धूप जलाते थे। परमेश्वर ने उनकी आराधना ग्रहण नहीं की।

> "यदि आप पुराने नियम के याजक होते, और आप परमेश्वर की उसी तरह सेवा करते जैसे आप अब करते हैं, तो प्रभु द्वारा आपको मार डाले जाने में कितना समय लगता?"
> - वॉरेन विर्सबे
> (आराधना की गंभीरता को लेकर)

- उज्जिय्याह एक महान राजा था। उसने वही किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था। 2 इतिहास उनके शासनकाल का सारांश देता है: "...उसे अद्भुत सहायता यहाँ तक मिली कि वह सामर्थी हो गया" (2 इतिहास 26:15)। दुःख की बात है कि उज्जियाह की कहानी यहीं खत्म नहीं होती। "परन्तु जब वह सामर्थी हो गया, तब उसका मन फूल उठा; और उसने बिगड़कर अपने परमेश्वर यहोवा का विश्वासघात किया, अर्थात् वह धूप की वेदी पर धूप जलाने को यहोवा के मन्दिर में घुस गया" (2 इतिहास 26:16)। उसने अपने तरीके से परमेश्वर की आराधना करने का प्रयास किया और उसे कुष्ठ रोग हो गया (2 इतिहास 26:1-21)। परमेश्वर ने उसकी आराधना ग्रहण नहीं की।

- निर्वासन के बाद यहूदी मंदिर में विकृत बलि चढ़ाते थे। उचित बलि न चढ़ाने से उनके हृदय की लापरवाही झलकती थी। वे परमेश्वर से सच्चा प्रेम नहीं करते थे, इसलिए परमेश्वर ने उनकी आराधना ग्रहण नहीं की। (मलाकी 1:6-14)।

परमेश्वर को इस बात की परवाह है कि उसकी आराधना किस प्रकार की जाती है। ये उदाहरण दर्शाते हैं कि यदि हमें अपने हाल पर छोड़ दिया जाए, तो हम परमेश्वर के पास उस तरीके से नहीं जा पाएँगे जिससे उसका आदर हो। जो हमें उचित लगता है, वह परमेश्वर को ग्रहण नहीं भी हो सकता है। हमें अपनी आराधना के लिए उसका मार्गदर्शन प्राप्त करना होगा।

क्योंकि आराधना का अर्थ परमेश्वर को आदर देना है, इसलिए हमारी आराधना हमारी इच्छाओं के बजाय परमेश्वर के चरित्र के अनुसार निर्धारित होनी चाहिए। हम स्वयं यह तय नहीं कर सकते कि परमेश्वर को क्या प्रसन्न करता है; हमें परमेश्वर के वचन को ध्यान से पढ़ना होगा ताकि हम सीख सकें कि परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले तरीके से आराधना कैसे करें।

परमेश्वर के साथ चलना: अनुग्रह के सम्बन्ध के रूप में आराधना

बाइबल आधारित आराधना का पहला चित्रण अदन के बगीचे में मिलता है, "तब यहोवा परमेश्वर, जो दिन के ठंडे समय वाटिका में फिरता था, का शब्द उनको सुनाई दिया..." (उत्पत्ति 3:8)। यह परमेश्वर की आराधना के आदर्श को दर्शाता है: मनुष्य और उसके सृष्टिकर्ता के बीच अटूट संगति। पतन से पहले, मनुष्य और परमेश्वर के बीच की संगति पाप से बाधित नहीं थी। वाटिका में आराधना सरल और सीधी थी।

वाटिका में, हम देखते हैं कि परमेश्वर अपनी सृष्टि के साथ संगति चाहता है। पतन तक, मनुष्य परमेश्वर के साथ पूर्ण संगति का आनंद लेता था; पाप द्वारा मनुष्य के स्वभाव को भ्रष्ट करने के बाद ही मनुष्य ने स्वयं को परमेश्वर से छिपाया।

पूरे पुराने नियम में, यह शब्द *परमेश्वर के साथ साथ चलता था* यह दर्शाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है कि आराधना में परमेश्वर के साथ एक सम्बन्ध शामिल है। हनोक परमेश्वर के साथ चला; नूह परमेश्वर के साथ चला; अब्राहम को परमेश्वर के साथ चलने की आज्ञा दी गई थी (उत्पत्ति 5:24, उत्पत्ति 6:9, उत्पत्ति 17:1)। इनमें से हर उदाहरण एक ऐसे व्यक्ति को दर्शाता है जिसने परमेश्वर के साथ समय व्यतीत करके एक सम्बन्ध बनाया। सही आराधना परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध पर आधारित है।

उत्पत्ति 3:8 दर्शाता है कि आराधना सम्बन्धों पर आधारित थी। यह यह भी दर्शाता है कि आराधना केवल परमेश्वर की कृपा से ही संभव है। मूर्तिपूजक देवता मनुष्य से आशा करते थे कि वे उन्हें प्रसन्न करने के लिए उचित आराधना का तरीका खोजें। इसके विपरीत, यहोवा ने कृपापूर्वक आराधना के उचित साधन प्रदान किए। ये तीन उदाहरण इसे स्पष्ट करते हैं।

परमेश्वर ने आदम और हव्वा के लिए आराधना करना संभव बनाया

पतन के बाद, परमेश्वर आदम और हव्वा से आराधना मांगने या ग्रहण करने के लिए बाध्य नहीं था। उन्होंने परमेश्वर के नियम को तोड़ा था; उन्होंने उसकी सृष्टि को भ्रष्ट कर दिया था; वे न्याय के अलावा किसी और चीज़ के हकदार नहीं थे।

पाप करने के बाद, आदम और हव्वा प्रभु की उपस्थिति से छिप गए (उत्पत्ति 3:8)। आदम और हव्वा के लिए कोई और कार्य नहीं था; वे मृत्यु के अलावा किसी और चीज़ की आशा नहीं कर सकते थे। वे केवल यही जानते थे कि व्यवस्था देने वाले से छिप जाएँ, परन्तु अनुग्रह में प्रभु परमेश्वर ने आदम को बुलाया। आराधना परमेश्वर के अनुग्रह से संभव है। अपने आप पर छोड़ दिए जाने पर, हमारे पास पवित्र परमेश्वर तक पहुँचने का कोई साधन नहीं है। केवल उनके अनुग्रह से ही हमें आराधना के लिए बुलाया जाता है।

परमेश्वर ने अब्राहम के लिए आराधना करना संभव बनाया

► उत्पत्ति 18:1-8 पढ़ें।

पाठ 1 में, हमने देखा कि आराधना के लिए एक इब्रानी शब्द (*शखाह*) का अर्थ है "झुकना" या "आराधना करना"। इस शब्द का पहली बार उत्पत्ति 18:2 में प्रयोग किया गया है। जब अब्राहम अपने तम्बू के द्वार पर बैठा था, तब प्रभु और दो स्वर्गदूत प्रकट हुए। अब्राहम उनसे मिलने के लिए तम्बू के द्वार से दौड़ा और धरती पर गिरकर दण्डवत् किया। अब्राहम ने दण्डवत् किया—उसने आराधना की।

ध्यान दें कि इस कहानी में परमेश्वर ने पहल की; वह अब्राहम से मिलने आया। परमेश्वर ने आराधना को संभव बनाया। नए नियम की तरह पुराने नियम में भी, आराधना केवल अनुग्रह से ही संभव है। पुराने नियम के बलिदान किसी क्रोधित परमेश्वर को प्रसन्न करने का साधन नहीं हैं जो संबंध नहीं चाहता; इन्हें स्वयं परमेश्वर ने परमेश्वर और पापी मनुष्य के बीच मेल-मिलाप के साधन के रूप में रचा था। पुराने नियम में भी, आराधना केवल परमेश्वर के अनुग्रह से ही संभव है। हममें स्वयं उचित रूप से आराधना करने की क्षमता नहीं है।

परमेश्वर ने याकूब के लिए आराधना करना संभव बनाया

► उत्पत्ति 28:10-22 पढ़ें। यह कहानी आराधना में परमेश्वर की भूमिका के विषय क्या बताती है?

उत्पत्ति 28:10-22 में आराधना का एक सबसे आश्चर्यजनक बाइबल आधारित चित्र मिलता है। याकूब के अतीत में ऐसा कुछ भी नहीं है जो एक आराधक के गुणों का संकेत देता हो। वह भजन संहिता 15 की योग्यताओं को पूरा नहीं करता। वह परमेश्वर की खोज नहीं कर रहा है; वास्तव में, वह उन समस्याओं से भाग रहा है जो उसने अपने कपटपूर्ण कार्यों से उत्पन्न की हैं। आराधना पर कोई भी पुस्तक यह नहीं कहती है, "स्वीकार्य आराधना उन धोखेबाजों से आती है जो अपने पापों के परिणामों से भाग रहे हैं।"

यद्यपि, याकूब की अयोग्यता के बावजूद परमेश्वर ने स्वयं को याकूब के सामने प्रकट किया। परमेश्वर का अनुग्रह याकूब जैसे अयोग्य व्यक्ति के लिए भी आराधना को संभव बनाता है। वॉरेन विर्सबे ने लिखा, "परमेश्वर कृपापूर्वक हमारे जीवन में तब हस्तक्षेप करते हैं जब हमें इसकी सबसे कम उम्मीद होती है - या यहाँ तक कि हम इसके योग्य भी नहीं होते। **जब आराधना अनुग्रह का अनुभव नहीं रह जाती, तो यह महिमा का अनुभव भी नहीं रह जाती।**"[18]

केवल अनुग्रह के माध्यम से ही परमेश्वर हमें अपनी उपस्थिति में आमंत्रित करते हैं। हमारी आराधना उनके अनुग्रह के प्रतिफल में है। आराधना में हम जो कुछ भी करते हैं वह उनके योग्य नहीं है; केवल उनका अनुग्रह ही हमें आराधना करने की शक्ति देता है।

याकूब की कहानी यहोवा की आराधना और झूठे देवताओं की आराधना के बीच एक बड़े अंतर को दर्शाती है। झूठे देवताओं के उपासक अपने देवता की कृपा पाने के लिए वेदियाँ बनाते थे। कर्मेल पर्वत पर, बाल के भविष्यवक्ताओं ने "भोर से लेकर दोपहर तक वे यह कहकर बाल से प्रार्थना करते रहे, "हे बाल, हमारी सुन, हे बाल, हमारी सुन!" परन्तु न

> झूठी आराधना में, एक व्यक्ति मूर्ति की कृपा (कार्य) पाने के लिए एक वेदी बनाता है। सच्ची आराधना में, एक व्यक्ति परमेश्वर के अनुग्रह (अनुग्रह) का जश्न मनाने के लिए एक वेदी बनाता है।

[18] Warren W. Wiersbe, *Real Worship*, (Grand Rapids: Baker Books, 2000), 72

कोई शब्द और न कोई उत्तर देनेवाला हुआ। तब वे अपनी बनाई हुई वेदी पर उछलने कूदने लगे” (1 राजाओं 18:26)।

► सच्ची आराधना और झूठी आराधना के बीच का अंतर समझने के लिए 1 राजा 18:20-39 पढ़ें।

बाल के पुजारिओं ने बाल को अपने सामने प्रकट होने के लिए मनाने की कोशिश की। मूर्तिपूजा में यह पैटर्न बार-बार देखा जाता है। वेदियाँ और बलिदान मूर्ति की कृपा पाने का एक प्रयास हैं।

इसके विपरीत, परमेश्वर अपनी आराधना में अपने लोगों के सामने कृपापूर्वक प्रकट होते हैं। एलिय्याह ने अपनी वेदी इस पूर्ण विश्वास के साथ बनाई कि जिस परमेश्वर की वह सेवा करता है, वह उसकी प्रार्थना का उत्तर देगा।

> हे अब्राहम, इसहाक और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा! आज यह प्रगट कर कि इस्राएल में तू ही परमेश्वर है, और मैं तेरा दास हूँ, और मैं ने ये सब काम तुझ से वचन पाकर किए हैं (1 राजाओं 18:36)।

उत्पत्ति की पुस्तक में, कुलपिताओं ने वेदियाँ परमेश्वर का ध्यान आकर्षित करने के लिए नहीं, बल्कि उन स्थानों के स्मारक के रूप में बनाईं जहाँ परमेश्वर ने स्वयं को प्रकट किया था। वेदी ने परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त नहीं किया; उसने उनके अनुग्रह का उत्सव मनाया। याकूब हमें दिखाता है कि आराधना केवल अनुग्रह से ही संभव है। हमें कभी यह नहीं सोचना चाहिए कि हमारी आराधना हमें परमेश्वर के अनुग्रह के योग्य बनाती है; हम अनुग्रह के कारण ही आराधना करते हैं।

जब परमेश्वर आराधना को संभव बनाता है तो क्या होता है? याकूब का बदलाव हुआ। इस बदलाव को पूरा होने में 30 वर्ष लग गए, परन्तु यह बदलाव बेथेल से आरम्भ हुआ। आराधना (यहाँ तक कि याकूब जैसे अपूर्ण व्यक्ति की अपूर्ण आराधना भी) हमें बदल देती है और हमारे लिए वह करती है जो हम अपने लिए कभी नहीं कर सकते।

दोबारा जाँच

स्वयं से पूछें, "क्या मैं आराधना से बदल रहा हूँ, या मैं खोखलापन दिखा रहा हूँ? आराधना में परमेश्वर से मुलाकात के कारण मैंने आखिरी बार अपने कार्यों, विश्वासों या दृष्टिकोणों में कब बदलाव किया था?"

अब्राहम: आराधना के लिए आज्ञाकारिता आवश्यकता होती है

► उत्पत्ति 22:1-19 पढ़ें। इस कहानी में आराधना के लिए क्या आवश्यकताएँ हैं?

अब्राहम द्वारा अपने पुत्र का बलिदान करना आराधना का सर्वोच्च कार्य था। इस कहानी में, अब्राहम की आज्ञाकारिता पर ज़ोर दिया गया है। परमेश्वर ने कहा, “अपने पुत्र को लो... और जाओ... और उसे होमबलि चढ़ाओ...” तीन आदेश। अब्राहम ने “अपने पुत्र इसहाक को... लिया...और उठा और चल दिया...और छुरी को ले लिया कि अपने पुत्र को बलि करे।” अब्राहम प्रत्येक आदेश का पालन करता है।

अब्राहम द्वारा इसहाक का बलिदान दर्शाता है कि सच्ची आराधना पूर्ण आज्ञाकारिता की माँग करती है। आराधना केवल भावना या भाव से बढ़कर है; आराधना किसी गायक या उपदेशक को सुनने से कहीं बढ़कर है; आराधना परमेश्वर के प्रति एक सक्रिय प्रतिक्रिया है।

उत्पत्ति 18 में अब्राहम की कहानी पर वापस जाएँ। कहानी के आरम्भ में, हम आराधना को आज्ञाकारी सेवा के रूप में देखते हैं। अब्राहम तीन अजनबियों को अपने डेरे की ओर आते देखता है। वह ज़मीन पर झुककर प्रणाम करता है। उसने आराधना की।

फिर हम अब्राहम को सेवा में व्यस्त देखते हैं। उसने उनके पैर धोने के लिए जल दिया; वह सारा से रोटियाँ बनवाने के लिए तम्बू में जल्दी से गया; उसने भोजन तैयार किया और उनके सामने परोस दिया। एक सेवारत सेवक की भूमिका निभाते हुए, वह पेड़ के नीचे उनके पास खड़ा रहा जब तक वे खा रहे थे। यह सब एक सेवक की भाषा है जो अपने स्वामी की सर्वोत्तम सेवा करता है। सच्चे आराधक में स्वेच्छा से सेवा करने का भाव होता है।

आराधना में आज्ञाकारिता की आवश्यकता पूरे पुराने नियम में देखी जा सकती है। हाबिल का बलिदान स्वीकार किया गया क्योंकि यह बलिदान के लिए परमेश्वर की आशाओं को पूरा करता था। हाबिल अपनी भेड़-बकरियों के पहिलौठों में से और उनकी चर्बी वाले भागों में से कुछ लाया (उत्पत्ति 4:4)। हाबिल ने आज्ञाकारी होकर अपना सर्वश्रेष्ठ दिया। इसके विपरीत, कैन अपना कर्तव्य यथासंभव सरल तरीके से पूरा करना चाहता था।

आराधना में आज्ञाकारिता की आवश्यकता शाऊल के जीवन में देखी जा सकती है। जब शाऊल ने अमालेक के सभी जानवरों को नष्ट करने की परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया, तो उसने यह कहकर स्वयं को बचाने की कोशिश की कि सबसे अच्छे जानवरों को बलि के लिए छोड़ दिया गया था। शमूएल ने उत्तर दिया, “क्या यहोवा होमबलियों और मेलबलियों से उतना प्रसन्न होता है, जितना कि अपनी बात के माने जाने से प्रसन्न होता है? सुन, मानना तो बलि चढ़ाने से, और कान लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है” (1 शमूएल 15:22)।

► 1 शमूएल 15:1-23 पढ़ें।

परमेश्वर विद्रोही हृदय से की गयी आराधना ग्रहण नहीं करेगा।

सच्ची आराधना परमेश्वर के साथ एक गहरे सम्बन्ध को प्रेरित करती है। अब्राहम की कहानी पर एक बार फिर ध्यान करें। उत्पत्ति अध्याय 18 अब्राहम की परमेश्वर के प्रति सेवा से शुरू होती है; अध्याय सम्बन्ध के साथ समाप्त होता है। प्रभु ने पूछा, “यह जो मैं करता हूँ, उसे क्या अब्राहम से छिपा रखूँ...?” परमेश्वर की मंशा सुनने के बाद, अब्राहम ने साहसपूर्वक परमेश्वर से सदोम के अन्त पर बातचीत की। क्या हुआ? परमेश्वर का सेवक परमेश्वर का मित्र भी होता है।

आराधना में ही हम परमेश्वर को सचमुच जानते हैं । आराधना में ही हम परमेश्वर के हृदय को इस स्तर तक जानने लगते हैं कि हम साहस के साथ माँग सकें। आज्ञाकारी आराधना में परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध गहरा होता है। ग्रहणयोग्य आराधना में आज्ञाकारिता (सेवा) और सम्बन्ध दोनों शामिल हैं। अब्राहम आराधक परमेश्वर का सेवक और परमेश्वर का मित्र दोनों है।

आज बाइबल आधारित आराधना

क्या आपने सोचा है कि कुछ लोग जब किसी आराधना-सभा में जाते हैं और परमेश्वर की उपस्थिति में आते हैं, जबकि अन्य लोग उसी सभा में आते हैं और परमेश्वर के बारे में कुछ भी अनुभव नहीं करते? कुछ लोग भेंट में देते हैं और आशीषित हैं, कुछ देते हैं और दुखी होते हैं। अन्तर एक आज्ञाकारी हृदय है।

चाहे हमारी आराधना कितनी ही सुन्दर क्यों न हो, चाहे संगीतज्ञ कितने ही प्रतिभाशाली क्यों न हों, चाहे प्रवचन कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, यदि आराधना आज्ञाकारी हृदय से नहीं आती, तो यह कैन की आराधना है । कैन की आराधना कहती है, “मैं अपने तरीके से अपना बलिदान दे सकता हूं। यह पर्याप्त अच्छा है।“ सच्ची आराधना आज्ञाकारी हृदय से आती है।

दोबारा जाँच

अपने आप से पूछिए, “क्या मैं एक आज्ञाकारी उपासक हूँ? क्या मेरी आराधना हाबिल के हृदय से आती है या कैन के हृदय से?”

बलिदान: क्रिया पद्धति के रूप में आराधना

पतन से पहले, परमेश्वर और मनुष्य के बीच एक साधारण संबंध में आराधना होती थी। पाप द्वारा मनुष्य के स्वभाव को भ्रष्ट करने के बाद, मनुष्य को परमेश्वर की उपस्थिति में आने के लिए एक प्रक्रिया की आवश्यकता थी। अनुग्रह में, परमेश्वर ने बलिदान की व्यवस्था प्रदान की। बलिदान की स्थापना परमेश्वर ने वाटिका में की थी जब उसने एक जानवर को मारकर उसकी खाल से आदम और हव्वा के लिए वस्त्र बनाए थे। लैव्यव्यवस्था ने इस्राएल की आराधना के लिए बलिदान की व्यवस्था को व्यवस्थित किया (लैव्यव्यवस्था 1-7 और 16)।

जब हम निर्गमन और लैव्यव्यवस्था पढ़ते हैं तो इससे स्पष्ट हो जाता है कि आराधना के विवरण परमेश्वर के लिए महत्वपूर्ण हैं। जो लोग यह तर्क देते हैं कि "जब तक हम आराधना करते हैं, परमेश्वर को इसकी परवाह नहीं है कि हम कैसे आराधना करते हैं," उनके लिए निर्गमन और लैव्यव्यवस्था दर्शाती है कि हम कैसे आराधना करते हैं, यह परमेश्वर के लिए महत्वपूर्ण है! परमेश्वर ने आराधना के लिए स्पष्ट निर्देश दिए थे। यह, पतन के बाद आदम और हव्वा को दिए गए परमेश्वर के प्रकाशन की तरह, परमेश्वर के अनुग्रह का प्रतीक है। यहोवा ने स्पष्ट निर्देश दिए, "तुम्हें मेरे पास इसी प्रकार आना चाहिए।" यह अनुग्रह का एक कार्य था।

इस्राएलियों के लिए, परमेश्वर के भवन में प्रवेश करने से पहले ही आराधना आरम्भ हो जाती थी। आराधना की तैयारी की प्रक्रिया परमेश्वर और उसके भवन के प्रति उनका श्रद्धामयी-भय दर्शाता था। आरोहण के गीत दिखाते हैं कि यरूशलेम की यात्रा भी आराधना थी (भजन संहिता 120-134)। आराधना क्रिया पद्धतियाँ खोखली नहीं थीं; बलिदान का प्रत्येक पहलू आराधक को सच्ची आराधना के महत्व की याद दिलाता था।

बलिदान परमेश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण का प्रतिनिधित्व करते थे

कुछ मसीहियों ने पुराने नियम की बलिदान व्यवस्था को गलत समझा है। उन्होंने एक ऐसी व्यवस्था की कल्पना की है जिसमें इस्राएली जानबूझकर परमेश्वर के नियम तोड़ते थे, एक अर्थहीन बलिदान चढ़ाते थे, और फिर बिना किसी हृदय परिवर्तन के तुरंत उन्हीं पापों में लौट जाते थे।

यह सच है कि कुछ परिस्थितियों में ऐसा हुआ। इसके प्रत्युत्तर, परमेश्वर ने कहा, “मैं तुम्हारे पर्वों से बैर रखता, और उन्हें निकम्मा जानता हूँ, और तुम्हारी महासभाओं से मैं प्रसन्न नहीं। चाहे तुम मेरे लिये होमबलि और अन्नबलि चढ़ाओ, तौभी मैं प्रसन्न न होऊँगा” (आमोस 5:21-22)।

जबकि, यह मनुष्य की विफलता थी, परमेश्वर की नहीं। बलिदान व्यवस्था तब विफल हुई जब मनुष्य ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं किया। परमेश्वर की योजना ऐसे बलिदानों की थी जो सच्चे हृदय से पश्चाताप को दर्शाते हों।

पर्वों से जुड़ी क्रिया पद्धतियों ने इस्राएल को आराधना के कार्यों का महत्व समझाया। हर विवरण यहोवा के प्रति इस्राएल के श्रद्धामयी-भय को दर्शाता था। इस्राएल की आराधना खोखली रस्म नहीं थी; ये क्रिया पद्धतियाँ उनके समर्पण और आज्ञाकारिता की वास्तविकता को दर्शाती थीं। पशु के सिर पर हाथ रखकर, आराधक स्वयं को बलिदान की मृत्यु के साथ जोड़ता था। ऐसा करके, वह स्वीकार कर रहा था, "यह मुझे होना चाहिए। मेरा पाप मृत्यु के योग्य है।" (देखें लैव्यव्यवस्था 1:4)।

परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति से सच्ची आराधना का आदर किया

मंदिर के निर्माण के साथ इस्राएल की आराधना और भी संगठित हुई। तम्बू की तरह, मंदिर का प्रत्येक विवरण परमेश्वर के प्रति इस्राएल की श्रद्धापूर्ण आज्ञाकारिता का प्रतीक था (2 इतिहास 1-7)। बलिदानों की गंभीरता और मंदिर की आराधना की औपचारिकता इस्राएल को यहोवा के प्रताप और उस विनम्रता की याद दिलाती थी जिसके साथ उसके पास आना चाहिए।

मंदिर की आराधना के लिए आराधना क्रिया पद्धतियों की सावधानीपूर्वक योजना ने परमेश्वर की उपस्थिति में बाधा नहीं डाली। इतिहास की सबसे संगठित सभाओं में से एक मंदिर का समर्पण रहा होगा। दाऊद ने वर्षों पहले मंदिर की योजना बनाई थी। मंदिर के पूरा होने के बाद, सुलैमान ने 2 इतिहास 5 में वर्णित एक सुंदर सभा में समर्पण की अगुआई की। संगीतकारों ने झांझ, वीणा और वीणा बजाईं। 120 याजकों ने तुरहियां बजाईं। एक गायक मंडली ने स्तुति के गीत गाए। जैसे ही उन्होंने गाया, “तब यहोवा के भवन में बादल छा गया, और बादल के कारण याजक लोग सेवा–टहल करने को खड़े न रह सके, क्योंकि यहोवा का तेज परमेश्वर के भवन में भर गया था” (2 इतिहास 5:13-14)।

आज बाइबल आधारित आराधना

कुछ लोग आराधना में किसी भी संरचना और रूप के विरुद्ध प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। उनका मानना है कि कोई भी योजनाबद्ध आराधना-विधि हृदय से की जाने वाली आराधना में बाधा डालती है। जबकि, बाइबल की आराधना संरचित थी।

यदि हम परमेश्वर को अपना सर्वश्रेष्ठ अर्पित करने का दृढ़ निश्चय करते हैं, तो उनकी आराधना सावधानीपूर्वक योजना बनाने की आवश्यकता रखती है। हम अपनी सभा की सुंदरता से दूसरों को प्रभावित करने के लिए नहीं, परन्तु परमेश्वर को अपनी सर्वोत्तम आराधना अर्पित करने के लिए सभा की योजना बनाते हैं।

बाइबल में, सावधानीपूर्वक संरचित आराधना (जैसे मंदिर का समर्पण) और कम संरचित आराधना (जैसे पहली शताब्दी में गृह कलीसियाओं की सभा) दोनों को परमेश्वर की उपस्थिति की आशीष प्राप्त थी। और, सावधानीपूर्वक संरचित आराधना (जैसे यिर्मयाह के दिनों की मंदिर आराधना) और कम संरचित आराधना (जैसे कुरिन्थ की अव्यवस्थित आराधना) दोनों ही परमेश्वर की उपस्थिति के बिना की जा सकती थीं। मुद्दा संरचना की मात्रा का नहीं है; मुद्दा परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता और परमेश्वर की उपस्थिति की भूख का है।

दोबारा जाँच

स्वयं से पूछें, "क्या मेरी सार्वजनिक आराधना (चाहे वह कितनी भी औपचारिक या अनौपचारिक हो) एक आज्ञाकारी हृदय से आती है?"

भजन संहिता: आराधना स्तुति के रूप में

भजन संहिता पुस्तक इस्राएल की आराधना की पुस्तक थी। यह एक भजन-पुस्तक थी; यह प्रार्थनाओं का संग्रह थी; यह सही आराधना के लिए एक मार्गदर्शक थी; यह धार्मिक जीवन जीने की एक नियमावली थी। भजन संहिता पुस्तक इस्राएल की आराधना का केंद्रबिंदु थी।

आराधना में स्तुति

> "परमेश्वर में निरन्तर आनन्द बनाए रखना सुनिश्चित करें।"
> - रिचर्ड बैक्सटर

भजन संहिता पुस्तक दर्शाती है कि सच्ची आराधना में स्तुति पर बहुत ज़ोर दिया जाता है। भजन संहिता 88 को छोड़कर, प्रत्येक भजन संहिता में स्तुति का कोई न कोई कथन शामिल होता है। लैव्यव्यवस्था के अनुष्ठान हमें बाइबल की आराधना की गंभीरता की याद दिलाते हैं; भजन संहिता हमें बाइबल की आराधना के आनंद की याद दिलाती है। भजन संहिता 120-134 यहूदी तीर्थयात्रियों के उस आनंद को दर्शाते हैं जब वे आराधना के लिए यरूशलेम की यात्रा करते थे। स्तुति आराधना का केंद्रबिंदु है।

भजन संहिता पुस्तक में पाई जाने वाली स्तुति सच्ची आराधना के आनंद को दर्शाती है। स्तुति परमेश्वर में हमारे आनंद को दर्शाती है। सच्ची आराधना में परमेश्वर और उसके कार्यों का उत्सव मनाना शामिल है।

आराधना में विलाप

विलाप की भजन संहिता बाइबल आधारित आराधना का एक अन्य पहलू दर्शाती है; आराधना, आराधक और परमेश्वर के बीच पूर्ण ईमानदारी का अनुभव कराती है। विलाप की भजन संहिता में, भजनकार इस संसार के अन्याय पर अपनी निराशा व्यक्त करता है। भजन संहिता 10:1 में, भजनकार ने पूछा, "हे यहोवा, तू क्यों दूर खड़ा रहता है? संकट के समय में क्यों छिपा रहता है?" परमेश्वर दुष्टों को विद्रोह और घमंड से काम करने की अनुमति क्यों देता है? क्योंकि आराधना परमेश्वर के साथ सम्बन्ध पर आधारित है, इसलिए आराधक ईमानदारी और खुलेपन से बात कर सकता है।

भजन संहिता 10 परमेश्वर पर विश्वास की घोषणा के साथ समाप्त होता है।

> यहोवा अनन्तकाल के लिये महाराजा है; उसके देश में से जाति जाति के लोग नष्ट हो गए हैं। हे यहोवा, तू ने नम्र लोगों की अभिलाषा सुनी है; तू उनका मन तैयार करेगा, तू कान लगाकर सुनेगा कि अनाथ और पिसे हुए का न्याय करे, ताकि मनुष्य जो मिट्टी से बना है फिर भय दिखाने न पाए (भजन संहिता 10:16-18)।

यह घोषणा परमेश्वर पर भरोसे पर आधारित है। यद्यपि दुष्ट लोग अन्याय करते रहते हैं, भजनकार पूरे विश्वास के साथ कहता है कि परमेश्वर वही करेगा जो सही है।

हम अय्यूब की पुस्तक में भी यही ईमानदारी देखते हैं। यह ईमानदारी परमेश्वर के साथ एक घनिष्ठ और निकट संबंध पर आधारित है। यही सच्ची आराधना है, वह आराधना जो परमेश्वर को ग्रहणयोग्य है।

आज बाइबल आधारित आराधना

भजन संहिता में दो प्रकार की स्तुति शामिल है। हमारे कलीसिया संगीत में दोनों शामिल होने चाहिए।

	घोषणात्मक स्तुति	**वर्णनात्मक स्तुति**
परिभाषा	स्तुति या स्तुति करने का आदेश जो स्पष्ट नहीं है	परमेश्वर के चरित्र और महान कार्यों के लिए स्पष्ट स्तुति है
उदाहरणार्थ वाक्य	"याह की स्तुति करो! यहोवा के लिये नया गीत गाओ, भक्तों की सभा में उसकी स्तुति गाओ" (भजन संहिता 149:1)।	"वही हमारा परमेश्वर यहोवा है; पृथ्वी भर में उसके निर्णय होते हैं" (भजन संहिता 105:7)।
इस प्रकार की स्तुति का लाभ	आराधक को परमेश्वर की आराधना करने के लिए आमंत्रित करता है	आराधक को परमेश्वर के स्वरूप के बारे में गहन सत्य सिखाता है

आमतौर पर इस शैली को गीतों में पाया जाता है	कोरस	भजन
भजन संहिता से उदाहरण	ये भजन संहिता में बिना किसी विशेष कारण के स्तुति करने का आदेश देते है: भजन संहिता 148-150	ये भजन संहिता में स्तुति करने के कई स्पष्ट कारणों का वर्णन किया गया है: भजन संहिता 19, 105, और 136

► ऊपर सूचीबद्ध छह भजन संहिता में से प्रत्येक को देखें। प्रत्येक में दिखाई देने वाली स्तुति के प्रकारों की तुलना करें।

► अपनी भाषा में भजनों और कोरसों का संग्रह देखें। प्रत्येक प्रकार की स्तुति के 2-3 उदाहरण खोजें।

दोबारा जाँच

भजनकार की स्तुति परमेश्वर में उसके आनंद को दर्शाती है। स्वयं से पूछिए, "क्या मैं सचमुच परमेश्वर में आनंदित हूँ?"

भविष्यद्वक्ता: घोषणा के रूप में आराधना

बलिदान, निवासस्थान और मंदिर के नियम आराधना में क्रिया पद्धति के महत्व को दर्शाते हैं। यद्यपि, भविष्यद्वक्ता बताते हैं कि जो क्रिया पद्धति हृदय से आराधना के बिना होती है, वह खोखली है। जब इस्राएल के लोगों ने आज्ञाकारी हृदय के बिना क्रिया पद्धति करना शुरू की, तो भविष्यद्वक्ता परमेश्वर के न्याय का संदेश लेकर आए। उन्होंने घोषणा की कि परमेश्वर अब एक धर्मत्यागी राष्ट्र के बलिदानों को ग्रहण नहीं करता।

भविष्यद्वक्ता बताते हैं कि परमेश्वर के संदेश का प्रचार ही आराधना है। अपनी सभाओं में, हमें आराधना को संदेश से अलग नहीं करना चाहिए। वचन का प्रचार ही सत्य में आराधना है। संदेश हमारे ऊपर परमेश्वर के अधिकार और हमारे जीवन के लिए उसकी बुद्धि की पुष्टि करता है। यही आराधना है; यह परमेश्वर का सम्मान करती है।

भविष्यद्वक्ताओं का संदेश

वास्तविकता के बिना क्रियापद्धति आराधना नहीं है।

आमोस ने घोषणा की कि परमेश्वर ने इस्राएलियों के बलिदानों को अस्वीकार कर दिया है। क्यों? क्योंकि आराधकों की जीवनशैली पापपूर्ण थी (आमोस 5:21-22)। यशायाह ने घोषणा की कि इस्राएल के पर्व परमेश्वर के लिए एक थका देने वाला बोझ थे। क्यों? क्योंकि उसके हाथ खून से भरे थे।

आराधना करने से पहले, आराधकों को आदेश दिया जाता है: "अपने को धोकर पवित्र करो; मेरी आँखों के सामने से अपने बुरे कामों को दूर करो; भविष्य में बुराई करना छोड़ दो, भलाई करना सीखो; यत्न से न्याय करो, उपद्रवी को सुधारो; अनाथ का न्याय चुकाओ, विधवा का मुक़द्दमा लड़ो" (यशायाह 1:13-17)।

परमेश्वर उन रीति-रिवाजों से प्रभावित नहीं होता जो हृदय की वास्तविकता को प्रदर्शित नहीं करते।

सच्ची आराधना के लिए हमारे सर्वोत्तम प्रयास की आवश्यकता होती है।

अब्राहम ने अपने पुत्र को परमेश्वर को अर्पित किया; उसने अपना सर्वश्रेष्ठ दिया। हाबिल अपने झुंड के जेठे बच्चे को लाया; उसने अपना सर्वश्रेष्ठ दिया। लैव्यव्यवस्था के अनुसार बलिदान के लिए सर्वोत्तम जानवरों की आवश्यकता थी। दाऊद ने ऐसा चढ़ावा देने से इनकार कर दिया जिसकी उसे कोई कीमत नहीं चुकानी पड़ी (2 शमूएल 24:24)। प्रत्येक मामले में, आराधना के लिए हमारे सर्वोत्तम प्रयास की आवश्यकता होती है।

यह संदेश भविष्यद्वक्ताओं में जारी रहा। मलाकी ने बलिदान के लिए घटिया जानवरों को लाने के विरुद्ध चेतावनी दी (मलाकी 1:6-8)। हाग्गै ने न्याय की चेतावनी दी क्योंकि लोगों को परमेश्वर के घर की तुलना में अपने घरों की स्थिति की अधिक चिंता थी (हाग्गै 1:8-11)। सच्ची आराधना के लिए हमारे सर्वोत्तम प्रयास की आवश्यकता होती है।

सच्ची आराधना में सम्पूर्ण जीवन शामिल होता है।

आमोस ने इस्राएल के धर्मत्याग का व्यावहारिक जवाब दिया। इसका समाधान और ज़्यादा बलिदान नहीं, बल्कि एक धार्मिक जीवन था। "न्याय को नदी के समान, और धर्म को महानद के समान बहने दो" (आमोस 5:24)। नबी मंदिर में आराधना और बलिदान के विरोधी नहीं थे।[19] वे ऐसी आराधना के विरोधी थे जो धार्मिक जीवन से जुड़ी न हो।

सम्पूर्ण बाइबल में हम देखते हैं कि सच्ची आराधना में सम्पूर्ण जीवन शामिल होता है। पंचग्रन्थ में, आराधना संबंधी नियम नैतिक आचरण संबंधी नियमों के समान हैं; उनके बीच कोई अंतर नहीं है। ऐतिहासिक पुस्तकों में, इस्राएल के दैनिक जीवन में अवज्ञा के परिणामस्वरूप इस्राएल के आराधना स्थल, मंदिर का विनाश हुआ। भविष्यद्वक्ताओं ने घोषणा की है कि परमेश्वर ने इस्राएल की अवज्ञा के कारण उसकी आराधना को अस्वीकार कर दिया है। नए नियम में, यीशु फरीसियों को याद दिलाते हैं कि सब्त के पालन जैसी आराधना पद्धतियाँ दयापूर्ण जीवन के बिना निरर्थक हैं (मत्ती 12:7)।

---

[19] कुछ विद्वानों का कहना है कि भविष्यवक्ताओं ने मंदिर व्यवस्था को अस्वीकार कर दिया था। यद्यपि, कई भविष्यवक्ताओं का मंदिर से गहरा संबंध था। यशायाह ने मंदिर में प्रभु को देखा। येजेकेल ने परमेश्वर की महिमा से भरे एक पुनर्निर्मित मंदिर की भविष्यवाणी की। हाग्गै ने जरुब्बाबेल को मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए प्रोत्साहित किया। भविष्यवक्ताओं ने बलिदानों को अस्वीकार नहीं किया; उन्होंने बलिदानों के दुरुपयोग को अस्वीकार किया।

भविष्यद्वक्ताओं का उदाहरण: संदेश और घोषणा ही आराधना है

भविष्यद्वक्ता बताते हैं कि परमेश्वर के वचन का प्रचार ही आराधना है। ज़रा सोचिए, यिर्मयाह का मंदिर के सामने खड़े होकर यह कहना कितनी मूर्खता होगी, "मंदिर में जाकर भजन संहिता गाओ और अपना बलिदान चढ़ाओ। यही आराधना होगी। जब तुम अपना काम पूरा कर लोगे, तो मैं तुम्हें परमेश्वर का संदेश सुनाऊँगा।" नहीं! यिर्मयाह का प्रचार ही एक आराधना थी। यिर्मयाह ने प्रचार किया कि परमेश्वर ने इस्राएलियों के पापमय जीवन के कारण उनकी आराधना को अस्वीकार कर दिया था। यही आराधना थी। इसने एक पवित्र परमेश्वर की पवित्रता को पहचाना; इसने परमेश्वर के मूल्य को पहचाना।

आज बाइबल आधारित आराधना

कुछ चर्च आराधना और प्रचार को अलग-अलग करते हैं। वे घोषणा करते हैं, “हम आराधना के समय से आरम्भ करेंगे।” आराधना समाप्त होने के बाद, वे प्रचार शुरू करते हैं। इसके दो खतरे हैं।

1. इसका अर्थ है कि आराधना केवल संगीत तक सीमित है। आराधना का यह तरीका केवल भावनाओं पर केंद्रित है। सच्ची आराधना संगीत और गीत से कहीं बढ़कर होनी चाहिए।
2. यह घोषणा को आराधना से अलग करता है। कलीसिया सभा में हम जो कुछ भी करते हैं, वह आराधना ही होनी चाहिए। संगीत, प्रार्थना, बाइबल, प्रवचन और यहाँ तक कि भेंट भी, सभी आराधना का हिस्सा हैं।

दोबारा जाँच

स्वयं से पूछें, "क्या मेरा संदेश एक आराधना है? जब मैं संदेश देता हूँ, तो क्या मैं परमेश्वर के दूत के रूप में बोलता हूँ जो परमेश्वर के महत्व का सम्मान करता है?"

आराधना के खतरे: आराधना में असंतुलन

(1) अत्यधिक अनियत आराधना का ख़तरा

जब हम यह भूल जाते हैं कि बाइबल आधारित आराधना में समर्पण की आवश्यकता होती है, तो हम परमेश्वर के साथ एक ऐसे साधारण मित्र जैसा व्यवहार करने लगते हैं जिसका कोई आदर नहीं होता। आराधना के प्रति अत्यधिक अनौपचारिक दृष्टिकोण इस प्रवृत्ति को बढ़ावा दे सकता है। हमें कभी नहीं भूलना चाहिए कि परमेश्वर एक अद्भुत परमेश्वर है जो पूर्ण आज्ञाकारिता की आशा करता है। वह “सनातन राजा अर्थात् अविनाशी, अनदेखे, एकमात्र परमेश्वर” (1 तीमुथियुस 1:17)। कुछ कलीसिया परमेश्वर की महिमा को भूल जाती हैं; आराधना एक पुराने मित्र के साथ एक कप कॉफी से अधिक कुछ नहीं रह जाती।

(2) अत्यधिक दिखाऊ आराधना का ख़तरा

जब हम यह भूल जाते हैं कि बाइबल आधारित आराधना उस परमेश्वर की आराधना है जो हमारे साथ संबंध बनाना चाहता है, तो हम परमेश्वर को एक दूरस्थ देवता मानने लगते हैं। आराधना के प्रति अत्यधिक औपचारिक दृष्टिकोण इस प्रवृत्ति को बढ़ावा दे सकता है। कुछ कलीसियाएँ विश्वासियों को परमेश्वर के साथ घनिष्ठता का अनुभव करने का कोई अवसर नहीं देतीं; ज़ोर पूरी तरह से उनकी महिमा और महानता पर होता है।

आराधना में, हमें अपनी सृष्टि पर परमेश्वर के प्रतापी अधिकार और उनकी संतानों के साथ उनकी घनिष्ठता, दोनों का अनुभव करना चाहिए।

दोबारा जाँच

अपनी आज कल मे ही हुई *आराधना सभा* के बारे में सोचें। स्वयं से पूछें, "इस सभा के किन हिस्सों ने आराधकों को परमेश्वर की महिमा का सम्मान करने के लिए प्रोत्साहित किया? क्या वे हमारे महान परमेश्वर की अनुभूति के साथ सभा से विदा हुए?" फिर स्वयं से पूछें, "इस सभा के किन हिस्सों ने आराधकों को परमेश्वर की घनिष्ठ मित्रता का अनुभव करने के लिए प्रोत्साहित किया? क्या वे यह जानकर सभा से विदा हुए कि परमेश्वर उनसे गहरा प्रेम करते हैं?"

निष्कर्ष: मंदिर समर्पण के एक प्रत्यक्षदर्शी की गवाही

मंदिर के समर्पण समारोह में उपस्थित होना कैसा रहा होगा? शायद इसे इस तरह व्यक्त किया जा सकता है:

“मैं मंदिर के समर्पण सभा में वहाँ मौजूद था। मैं उस दिन को कभी नहीं भूलूँगा। हम वर्षों से उस समारोह का इंतज़ार कर रहे थे।

“वर्षों? हाँ, वर्षों! राजा दाऊद ने मंदिर निर्माण की योजनाएँ बनाकर अपनी मृत्यु से पहले सुलैमान को दे दी थीं। अब मंदिर बनकर तैयार हो गया था, और समर्पण सभा का लंबे समय से इंतज़ार हो रहा था।

“यह एक खूबसूरत माहौल और एक प्रभावशाली सभा थी। कल्पना करें..."

- 22,000 बैलों और 120,000 भेड़ों की बलि
- दाऊद के भजन संहिता का गायन करते सैकड़ों लोगों का एक समूह
- झांझ, सारंगी, वीणा और 120 तुरहियों का एक ऑर्केस्ट्रा
- उत्तम सफेद महीन कपड़ा पहने याजक और लेवी
- अब तक बनी सबसे खूबसूरत इमारतों में से एक
- प्रत्येक आराधना के लिए सोने और चाँदी के बर्तन

"यह एक खूबसूरत सभा थी, परन्तु **कार्य**क्रम की खूबसूरती मेरी यादों में सबसे ज़्यादा मायने नहीं रखती। मुझे सबसे ज़्यादा याद है कि जैसे ही संगीतकारों ने बजाना और गाना शुरू किया, 'यहोवा का तेज परमेश्वर के भवन में भर गया था।' परमेश्वर की उपस्थिति मंदिर में तब तक व्याप्त रही जब तक कि याजक अपना कर्तव्य पूरा नहीं कर पाए। परमेश्वर की सभा का भार परमेश्वर ने अपने ऊपर ले लिया था!

"उस यादगार सभा को वर्षों बीत चुके हैं। मैं यह दावा नहीं करता कि उस दिन के बाद से मैंने जितनी भी सभाओं में भाग लिया है, उनमें परमेश्वर की उपस्थिति के वही स्पष्ट संकेत दिखाई देते हैं; वह एक विशेष दिन था। यद्यपि, मैं जिस भी सेवा में जाता हूँ, उसमें परमेश्वर की उपस्थिति की अपेक्षा करता हूँ।

"कभी-कभी, उनकी उपस्थिति प्रभावशाली होती है; कभी-कभी, यह शांत होती है। कभी-कभी, उनकी उपस्थिति गायन में महसूस होती है; कभी-कभी, वे प्रवचन के माध्यम से बोलते हैं। कभी-कभी, मेरी भावनाएँ प्रभावित होती हैं; कभी-कभी, उनका सत्य मेरे मन और इच्छाशक्ति से बात करता है। कभी-कभी, मैं प्रोत्साहित होकर जाता हूँ; कभी-कभी, मैं दृढ़ विश्वास के साथ जाता हूँ।

"परमेश्वर चाहे किसी भी प्रकार उपस्थित होना चाहें, मैं उनकी उपस्थिति को महत्व देता हूँ। हो सकता है कि मैं परमेश्वर की दृश्यमान उपस्थिति का ऐसा प्रभावशाली उदाहरण फिर कभी न देखूँ, परन्तु मैं हर बार जब मैं आराधना करता हूँ, तो उनकी उपस्थिति में प्रवेश कर सकता हूँ।"

सामूहिक विचार विमर्श

► इस पाठ के व्यावहारिक लागूकरन के लिए, निम्नलिखित पर विचार विमर्श करें:

अंजलि एक सच्ची मसीही है और उन्हें अपने गाँव की प्रार्थना सभाओं में जाना बहुत पसंद है। ऊर्जावान संगीत और संगति उन्हें दैनिक जीवन की कठिनाइयों से एक सुखद बदलाव प्रदान करती है। जब वह पूरे दिल से परमेश्वर की आराधना करती हैं, तो उन्हें जो भावनाएँ और अनुभव होते हैं, वे उन्हें बहुत पसंद हैं। यद्यपि, अंजलि को अपनी शादी और दैनिक जीवन के कामों में उतनी ऊर्जा लगाना मुश्किल लगता है जितनी वह रविवार सुबह की आराधना में लगाती हैं। आप अंजलि को क्या सलाह देंगे?

पाठ 3 की समीक्षा

(1) परमेश्वर को इस बात की परवाह है कि हम किस प्रकार आराधना करते हैं क्योंकि:

- हमारी आराधना का स्वरूप परमेश्वर के बारे में हमारी समझ को प्रभावित करता है।
- हमारी आराधना का स्वरूप दर्शाता है कि हम आराधना क्यों करते हैं।

(2) आराधना एक सम्बन्ध है - परमेश्वर के साथ चलना

- परमेश्वर ने आदम और हव्वा के लिए आराधना के साधन उपलब्ध कराए।
- परमेश्वर ने अब्राहम के लिए आराधना संभव बनाने की पहल की।
- परमेश्वर के अनुग्रह ने याकूब के लिए आराधना संभव बनाई।
- जब हम परमेश्वर के साथ चलते हैं, तो हमारे जीवन बदल जाते हैं।

(3) आराधना आज्ञाकारिता से आरम्भ होती है।

- आराधना भावना या अनुभूति से कहीं बढ़कर है।
- आराधना परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति एक सक्रिय प्रतिक्रिया है।
- परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता उसके साथ हमारे सम्बन्ध को गहरा करती है।

(4) आराधना में क्रियापद्धति (पुराने नियम के बलिदान) शामिल है।

- बलिदान परमेश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण को दर्शाते थे। (रोमियों 12:1)
- परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति से सच्ची आराधना को सम्मानित किया। (2 इतिहास 5)
- सार्वजनिक क्रियापद्धति एक आज्ञाकारी हृदय से होनी चाहिए।

(5) आराधना में स्तुति शामिल होती है (भजन संहिता)।

- भजन संहिता पुस्तक दर्शाती है कि आराधना में स्तुति भी शामिल है।
- भजन संहिता पुस्तक दर्शाती है कि आराधना में विलाप भी शामिल है।

(6) आराधना में घोषणा (नबी) शामिल है।

- आराधना केवल प्रशंसा से कहीं अधिक है; यह सत्य की घोषणा भी है। संदेश देना ही आराधना है।
- भविष्यद्वक्ताओं ने सिखाया कि वास्तविकता के बिना क्रियापद्धति आराधना नहीं है।
- भविष्यद्वक्ताओं ने सिखाया कि सच्ची आराधना के लिए हमारे सर्वोत्तम प्रयास की आवश्यकता होती है।
- भविष्यद्वक्ताओं ने सिखाया कि सच्ची आराधना में सम्पूर्ण जीवन शामिल होता है।

पाठ 3 के कार्य

(1) पुराने नियम की आराधना पर इस पाठ से आपने आराधना के बारे में जो तीन सिद्धांत सीखे हैं, उन्हें सूचीबद्ध कीजिए। एक पृष्ठ लिखिए जिसमें आप अपनी कलीसिया की आराधना में प्रत्येक सिद्धांत को लागू करने के व्यावहारिक तरीकों पर विचार विमर्श करें।

(2) अगले पाठ के आरम्भ में, आप इस पाठ पर आधारित एक परीक्षा देंगे। तैयारी के लिए परीक्षा के प्रश्नों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें।

पाठ 3 परीक्षा

(1) इस पाठ से, बाइबल में दी गई आराधना के दो उदाहरण बताइए जिन्हें परमेश्वर ने अस्वीकार कर दिया था। (कोई दो)

(2) शब्द परमेश्वर *के साथ चलना* यह दिखाता है कि आराधना में परमेश्वर के साथ एक _____ शामिल है।

(3) इस पाठ से, तीन अयोग्य लोगों के नाम बताइए जिन्हें परमेश्वर ने कृपा करके अपनी आराधना करने के योग्य बनाया।

(4) अब्राहम द्वारा इसहाक की बलि चढ़ाना दर्शाता है कि सच्ची आराधना के लिए पूर्ण _____ ज़रूरी है।

(5) हाबिल की आराधना और कैन की आराधना में क्या अंतर था?

(6) आराधक द्वारा बलि दिए जाने वाले पशु के सिर पर हाथ रखने का क्या महत्व था?

(7) घोषणात्मक स्तुति और वर्णनात्मक स्तुति दोनों की परिभाषाएँ दें।

(8) भविष्यवक्ता बताते हैं कि परमेश्वर के संदेश की _____ करना ही आराधना है।

(9) आराधना के विषय भविष्यवक्ताओं के संदेश के तीन पक्ष बताएँ।

(10) आराधना मे दो खतरनाक असंतुलनों की सूची बनाएँ।

(11) याद किया हुआ मीका 6:6-8 लिखें।

पाठ 4

नया नियम में आराधना

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अन्त होने तक विद्यार्थी को नीचे दिए गए कार्य करने के योग्य होना चाहिए:

(1) यह समझना कि कैसे यीशु आराधना में हमारा आदर्श और आराधना का केंद्र दोनों हैं।

(2) सुसमाचारों, प्रेरितों और प्रकाशितवाक्य से, झूठी प्रकार की आराधना को पहचानना।

(3) आराधना और सुसमाचार प्रचार दोनों के लिए व्यक्तिगत प्रतिबद्धता बनाना।

(4) पत्रियों से, प्रारंभिक कलीसिया में आराधना के प्राथमिक तत्वों को जानना।

(5) ऐसी आराधना का अनुभव करना जो परमेश्वर पर केंद्रित हो।

इस पाठ की तैयारी

कण्ठस्थ करें रोमियों 12:1-2।

भूमिका

पास्टर सुमित, निखिल, अनुज और विवेक ने पुराने नियम से आराधना के बारे में जो कुछ सीखा था, उस पर विचार विमर्श करने के लिए फिर से मुलाकात की।

> "मसीही कलीसिया की सर्वोच्च और एकमात्र अनिवार्य गतिविधि आराधना है। जब कलीसिया की अन्य सभी गतिविधियाँ समाप्त हो जाएँगी, तब केवल यही स्वर्ग तक टिकेगी।"
> - डब्ल्यू. निकोल्स

सुमित, जो पारंपरिक आराधना को महत्व देता हैं, उसने कहा, "मुझे लगता है कि पुराना नियम प्रमाणित करता है कि मेरी कलीसिया सही तरीके से आराधना कर रही है। मंदिर में आराधना औपचारिक और व्यवस्थित थी। हम यही करने की कोशिश करते हैं।"

निखिल हँसा, "हाँ, परन्तु क्या आपने भविष्यद्वक्ताओं की कही बातें पढ़ीं? मंदिर की औपचारिक आराधना का कोई मतलब नहीं था! जो आराधना परमेश्वर को प्रसन्न करती है, वह हृदय से की गई आराधना है। हम अपनी समकालीन आराधना में यही करते हैं; हम नई पीढ़ी के दिलों को छू रहे हैं।"

निराश होकर, अनुज ने कहा, "हम आराधना के अध्ययन के आरम्भिक चरण से आगे नहीं बढ़ पाए हैं। परमेश्वर सीधे क्यों नहीं कहते, 'तुम्हें मेरी आराधना इसी तरह करनी चाहिए?'"

विवेक बोले। "हमें हार नहीं माननी चाहिए। हम नए नियम के मसीही हैं; शायद नया नियम हमारे सवालों का जवाब दे। आइए नए नियम में आराधना का अध्ययन करें और देखें कि उसमें क्या लिखा है।"

► नया नियम में आराधना कैसे बदली? प्रारंभिक कलीसिया की आराधना, तम्बू और मंदिर की आराधना से कैसे भिन्न थी? नया नियम की आराधना के विषय आप जो पहले से जानते हैं, उसका सारांश दीजिए।

सुसमाचार: यीशु—आराधना में हमारा आदर्श और वही है जिसकी हम आराधना करते हैं

नए नियम में जितनी बार *आराधना* शब्द का प्रयोग हुआ है, उनमें से आधे चारों सुसमाचारों में पाए जाते हैं। सुसमाचार हमें दिखाते हैं कि आराधना में यीशु हमारे आदर्श हैं। वे यह भी बताते हैं कि वे हमारी आराधना के योग्य हैं।

अपनी मानवता में, यीशु आराधना का सर्वोच्च आदर्श थे

यीशु ने सच्ची आराधना का आदर्श प्रस्तुत किया। यीशु ने सामरी स्त्री से कहा कि परमेश्वर उन लोगों को ढूँढ़ता है जो आत्मा और सच्चाई से उसकी आराधना करते हैं (यूहन्ना 4:24)। अपनी आराधना पद्धतियों (पवित्रशास्त्र पढ़ना, प्रार्थना, आराधनालय और मंदिर में जाना) में, यीशु ने दिखाया कि आत्मा और सच्चाई से सच्ची आराधना करने का क्या अर्थ है।

यीशु को आराधना स्थल बहुत प्रिय था

लूका ने यीशु के आराधना स्थल के प्रति प्रेम को दर्शाया है। बचपन से ही, यीशु मंदिर को अपने पिता का घर मानते थे (लूका 2:41-49)। उन्हें मंदिर की आराधना की पवित्रता का उत्साह था; उन्होंने दो बार उन लोगों को बाहर निकाला जो मंदिर का दुरुपयोग कर रहे थे।[20]

अपनी सार्वजनिक सेवकाई के आरंभ में, यीशु अपनी रीति के अनुसार सब्त के दिन नासरत के आराधनालय में गए (लूका 4:16)। अपनी सांसारिक सेवकाई के दौरान, यीशु अक्सर आराधनालयों में जाते थे।

यीशु ने परमेश्वर के अलावा किसी और की या किसी चीज़ की आराधना करने से इनकार किया।

निर्जन प्रदेश में, यीशु ने झूठी आराधना के प्रलोभन को अस्वीकार किया।

► मत्ती 4:9-10 पढ़ें।

---

[20] यूहन्ना 2:13-16 पहले शुद्धिकरण के बारे में बताता है। मत्ती 21:12-27, मरकुस 11:15-17, और लूका 19:45-46 उसकी सांसारिक सेवकाई के अंतिम सप्ताह के दौरान दूसरी शुद्धिकरण का वर्णन करते हैं।

सृष्टिकर्ता की बजाय सृष्टि की आराधना करने का प्रलोभन बाइबल में एक निरंतर विषय रहा है। पुराने नियम में मूर्तिपूजा का मूल यही है। प्रकाशितवाक्य अजगर और पशु की पूजा और परमेश्वर और मेम्ने की आराधना के बीच के अंतर को दर्शाता है। यीशु ने सृष्टि की आराधना करने से इनकार किया।[21]

यीशु आदतन प्रार्थना करते थे।

यीशु की पूरी सेवकाई में प्रार्थना का विशेष महत्व था। सुसमाचारों में पंद्रह बार यीशु के प्रार्थना करने का वर्णन मिलता है। इनमें से कुछ अवसरों पर, उन्होंने पूरी रात अपने पिता के साथ अकेले बिताई। बारह प्रेरितों को चुनने से पहले, उन्होंने पूरी रात प्रार्थना में बिताई (लूका 6:12)। अपने शिष्यों के साथ अपने अंतिम समय में, यीशु ने शिष्यों और उन सभी के लिए प्रार्थना की जो बाद में उन पर विश्वास करेंगे (यूहन्ना 17)। क्रूस का सामना करते हुए, वह प्रार्थना करने के लिए गतसमनी गए (मत्ती 26:36-42)। यीशु की आराधना में प्रार्थना का विशेष महत्व था।

यीशु ने सच्ची आराधना का व्याख्यान किया।

अपने कार्यों के माध्यम से आराधना का आदर्श प्रस्तुत करने के साथ साथ, यीशु ने लगातार आराधना के बारे में भी सिखाया। उन्होंने सामरी स्त्री को सच्ची आराधना के बारे में सिखाया। यीशु ने शिष्यों को एक आदर्श प्रार्थना सिखाई और दृष्टांतों के माध्यम से प्रार्थना के बारे में सिखाया। (लूका 11:5-8, लूका 18:1-14)।

► लूका 11:1-4 पढ़ें।

यीशु की आदर्श प्रार्थना दिखाती है कि प्रार्थना आराधना के हृदय से होनी चाहिए। प्रार्थना इस प्रकार आरम्भ होती है, "तेरा नाम पवित्र माना जाए।" प्रार्थना में हम परमेश्वर को पवित्र मानते हैं।

यीशु ने झूठी आराधना को फटकारा।

यदि सच्ची आराधना आत्मा और सच्चाई से की जाने वाली आराधना है, तो झूठी आराधना वह है जो इससे अलग है। यीशु ने इसे अस्वीकार किया:

(1) पाखंडी आराधना

पहाड़ी उपदेश में, यीशु ने चेतावनी दी थी कि सही काम गलत कारणों से भी किए जा सकते हैं। गरीबों को दान देना, प्रार्थना करना और उपवास करना, ये सभी आराधना के पहलू हैं। यीशु ने उन लोगों के विरुद्ध चेतावनी दी जो दूसरों को प्रभावित करने के लिए ये काम करते हैं; वे पाखंडी हैं (मत्ती 6:1-18)। सच्चे आराधक परमेश्वर की आराधना करने की इच्छा से ये काम करते हैं।

---

[21] यीशु रोमियों 1:25 में बताए गए लोगों के समान नहीं था।

मत्ती अध्याय 23 में, यीशु ने उन धार्मिक नेताओं की निंदा की जो आराधना के विषय सही बातें तो सिखाते हैं, परन्तु उनके हृदय परमेश्वर से दूर हैं। यीशु ने कहा कि उनकी शिक्षाएँ तो सही हैं, परन्तु उनके हृदय गलत हैं; वे पाखंडी हैं।

(2) विधिपरक आराधना

पाखंडी आराधना एक ख़तरा है; जिसका उद्देश्य परमेश्वर को प्रसन्न करने के बजाय दर्शकों को प्रभावित करना होता है। दूसरा ख़तरा विधि-विधानवाद है; जिसका उद्देश्य कुछ निश्चित आवश्यकताओं को पूरा करके परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त करना होता है। जब हम अपनी आराधना के कार्यों से परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त करने का प्रयास करते हैं, तो हम सच्ची आराधना की वास्तविकता खो देते हैं। आराधना परमेश्वर की भलाई के प्रति आनंदमय प्रतिक्रिया के बजाय, परमेश्वर का अनुमोदन प्राप्त करने के लिए किया जाने वाला कार्य बन जाती है।

यीशु ने इस्राएल के धार्मिक अगुवों को नाराज़ किया जब उन्होंने उनकी परंपराओं को तोड़ा।[22] यीशु ने व्यवस्था या व्यवस्था की मूल भावना का उल्लंघन नहीं किया; उन्होंने उन मानवीय परंपराओं का उल्लंघन किया जो वर्षों से चली आ रही फरीसी विधि-विधानवाद से विकसित हुई थीं। फरीसियों के लिए, ये परंपराएँ स्वयं व्यवस्था जितनी ही महत्वपूर्ण थीं। उनका मानना था कि व्यवस्था का पालन करने से परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त होता है। यही विधि-विधानवाद को परिभाषित करता है: आवश्यकताओं को पूरा करके परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त करने का प्रयास। यीशु ने विधि-विधानवाद को उतनी ही दृढ़ता से अस्वीकार किया जितना कि उन्होंने पाखंड को अस्वीकार किया था।

यीशु के ईश्वरीयत्व में, उसकी आराधना की जाती है

अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद, **यीशु पिता के दाहिने हाथ पर बैठा है और उचित रूप से आराधना प्राप्त करता है** (प्रकाशितवाक्य 5:12-14)। पौलुस ने फिलिप्पियों अध्याय 2 में इस परिवर्तन के बारे में लिखा है। यीशु के स्वेच्छा से स्वयं को दीन करने के कारण, अब उसे ऊंचा किया गया और उसकी आराधना की गई।

> इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान् भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है, कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें; और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकर कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है (फिलिप्पियों 2:9-11)।

मत्ती 18:20 में, यीशु ने गवाही दी कि वह आराधना के योग्य है। यहूदी परंपरा के अनुसार, आराधनालय में प्रार्थना और आराधना के लिए 10 पुरुषों का होना अनिवार्य था। यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "क्योंकि जहाँ दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठा होते हैं, वहाँ मैं उनके बीच में होता हूँ।" कलीसिया में, **यीशु की उपस्थि=ति, न कि उपस्थित लोगों की संख्या, आराधना का निर्धारण करती है।**

---

[22] मत्ती 12:1-14, लूका 13:10-17, और यूहन्ना 5:8-18, दूसरों के बीच में.

यीशु ने अपने आश्चर्यकर्म को देखने वाली भीड़ पर जो प्रभाव डाला, उससे पता चलता है कि वह आराधना के योग्य हैं। जब लोगों ने उनके आश्चर्यकर्म देखे, तो **उन्होंने परमेश्वर की महिमा की**, जो आराधना का एक कार्य था। जिन लोगों ने उनके चंगाई के कार्य देखे, वे सभी चकित रह गए (मरकुस 1:23-27)।

शिष्यों के साथ अपनी अन्तिम रात में, यीशु ने फसह का भोज खाया। यद्यपि यह भोजन यहूदियों के फसह के पारंपरिक भोजन जैसा ही था, परन्तु यीशु ने इसे एक नया अर्थ दिया जब उन्होंने अपने शिष्यों से कहा कि रोटी "यह मेरी देह है जो तुम्हारे लिये दी जाती है" और प्याला "मेरे उस लहू में...नई वाचा है" (लूका 22:19-20)।

► लूका 22:13-20 पढ़ें।

उसने उन्हें अपने स्मरण में ऐसा करने की आज्ञा दी। **प्रभु भोज मसीह पर केंद्रित है, जो फसह की पूर्ण पूर्ति है।**

आज बाइबल आधारित आराधना

यीशु द्वारा झूठी आराधना को फटकार और सच्ची आराधना का उनका अपना उदाहरण दर्शाता है कि हमारी आराधना सच्ची होनी चाहिए, दूसरों को प्रभावित करने के लिए नहीं। सच्ची आराधना का उद्देश्य पिता को प्रसन्न करना होना चाहिए, न कि दूसरों को प्रसन्न करना।

यह कलीसिया के अगुवों के लिए एक निरंतर प्रलोभन है। क्योंकि प्रचार और आराधना की अगुआई सार्वजनिक रूप से की जाती है, इसलिए हम आराधना के बजाय प्रदर्शन के लिए प्रलोभित हो सकते हैं। जब हम परमेश्वर का सम्मान करने के बजाय श्रोताओं को प्रसन्न करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो हम आराधना के बजाय प्रदर्शन करते हैं।

एक अगुवे के लिए झूठी आराधना का प्रलोभन क्या है?

- एक संदेश पाठ इसलिए चुना गया है क्योंकि हम जानते हैं कि यह श्रोताओं के बीच लोकप्रिय होगा
- एक प्रार्थना जो परमेश्वर से ज़्यादा श्रोताओं से बात करती है
- एक ऐसा दान जो देने वाले की ओर ध्यान आकर्षित करता है
- ऐसा संगीत जो परमेश्वर की बजाय कलाकार की महिमा को आकर्षित करता है

यीशु की शिक्षाएँ और उदाहरण हमें याद दिलाते हैं कि सच्ची आराधना केवल परमेश्वर की ही है। आराधना उसके विषय है, हमारे बारे में नहीं।

दोबारा जाँच

स्वयं से पूछें, "मेरी आराधना में किसका सम्मान होता है? क्या मैं परमेश्वर की महिमा के लिए प्रचार करता हूँ, गाता हूँ, प्रार्थना करता हूँ और दान देता हूँ, या अपनी पहचान के लिए? क्या मैं सचमुच आराधना कर रहा हूँ?"

प्रेरितों के काम: आराधना और सुसमाचार प्रचार

आराधना का सुसमाचार प्रचार से गहरा संबंध है। अविश्वासी लोग भी जब सुसमाचार सुनते हैं और उस पर अमल करते हैं, तो वे आराधक बन जाते हैं। प्रेरितों के काम की पुस्तक आराधना और सुसमाचार प्रचार के बीच संबंध दर्शाती हैं।

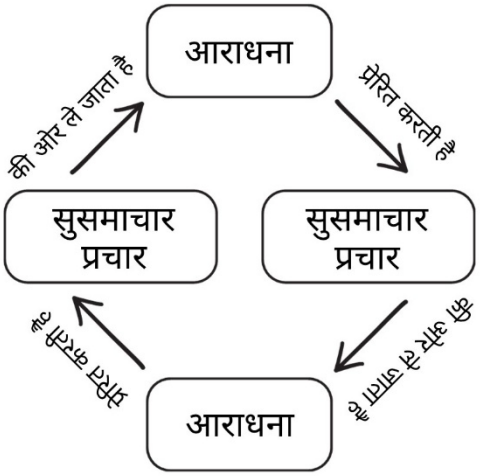

यशायाह 6:8 दर्शाता है कि आराधना का परिणाम सुसमाचार प्रचार होता है; आराधना के प्रति यशायाह की प्रतिक्रिया थी "मैं यहाँ हूँ! मुझे भेज।" जब हम सच्चे मन से आराधना करते हैं, तो हममें सुसमाचार प्रचार के लिए एक उत्साह पैदा होता है। आराधना में, हम परमेश्वर को देखते हैं और अपनी दुनिया की ज़रूरतों को परमेश्वर की नज़र से देखते हैं। आराधना से सुसमाचार प्रचारक बनते हैं।

आराधना कलीसिया को सुसमाचार प्रचार के लिए प्रेरित करती है। जब कलीसिया अविश्वासियों को मसीह के पास लेके आती है, तो नए विश्वासी आराधक बनते जाते हैं। ये नए आराधक फिर सुसमाचार प्रचार के लिए प्रेरित होते हैं।

प्रेरितों के काम की पुस्तक इस प्रक्रिया को क्रियान्वित करते हुए दिखाती है। पौलुस के इफिसुस में प्रचार करने के बाद, लोग डायना और हाथ से बनाए गए देवताओं की पूजा से विमुख होकर सच्चे परमेश्वर की आराधना की ओर मुड़ गए (प्रेरितों के काम 19:26-27)। जब हम मसीह का प्रचार करते हैं, तो नए विश्वासी राज्य की ओर खिंचे चले आते हैं; वे आराधक बन जाते हैं। सुसमाचार प्रचार आराधकों का निर्माण करता है।

सच्ची आराधना सुसमाचार प्रचार को प्रेरित करती है

प्रेरितों के काम की पुस्तक शिष्यों की आराधना से आरम्भ होती है; वे एकमत होकर स्वयं को प्रार्थना में समर्पित कर रहे थे (प्रेरितों के काम 1:14)। प्रेरितों के काम की पुस्तक रोम में पौलुस के सुसमाचार प्रचार के साथ समाप्त होती है; वह "बिना रोक–टोक बहुत निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु मसीह की बातें सिखाता रहा" (प्रेरितों के काम 28:31)।

आरंभिक मसीहियों की आराधना ने सुसमाचार प्रचार को जन्म दिया। पौलुस और बरनबास की बुलाहट आराधना के इसी परिवेश में हुई।

> जब वे उपवास सहित प्रभु की आराधना कर रहे थे, तो पवित्र आत्मा ने कहा, "मेरे लिये बरनबास और शाऊल को उस काम के लिये अलग करो जिसके लिये मैं ने उन्हें बुलाया है।" तब उन्होंने उपवास और प्रार्थना करके और उन पर हाथ रखकर उन्हें विदा किया। (प्रेरितों के काम 13:2-3)।

सच्ची आराधना सुसमाचार प्रचार को प्रेरित करती है।

प्रभावशाली सुसमाचार प्रचार आराधकों जन्म देता है

प्रेरितों के काम, की पुस्तक के दौरान, शिष्य आराधना में लगे रहे। पिन्तेकुस्त के दिन, 3,000 लोगों का उद्धार हुआ। ये नए विश्वासी आराधक बन गए; उन्होंने प्रेरितों की शिक्षाओं और संगति, रोटी तोड़ने और प्रार्थनाओं में स्वयं को समर्पित कर दिया (प्रेरितों के काम 2:42)।

► आरंभिक कलीसिया में आराधना की एक तस्वीर को देखने के लिए प्रेरितों के काम 2:42-46 पढ़ें।

यहूदी मसीही मंदिर में आराधना करते रहे।।[23] इसके अलावा, यहूदी मसीही और अन्यजाति से आए विश्वासी लोग आराधनालय में आराधना के लिए एकत्रित होते थे। अधिकांश शहरों में, पौलुस ने अपनी सेवकाई आराधनालय से आरम्भ की, और यीशु को पुराने नियम की प्रतिज्ञाओं की पूर्ति के रूप में दर्शाया।[24] आराधना निजी घरों में भी होती थी। विश्वासी संगति और आराधना के लिए घर-घर जाते थे (प्रेरितों के काम 2:46)। पौलुस की पत्रियों में घरों में एकत्रित होने वाली कलीसियाओं को शुभकामनाएँ शामिल हैं।[25] आरंभिक कलीसिया के सुसमाचार प्रचार ने आराधकों का एक नया समाज बनाया।

ऐथेंस में सुसमाचार प्रचार

ऐथेंस में पौलुस का संदेश सुसमाचार प्रचार और आराधना के बीच के संबंध को दर्शाने वाला एक उत्कृष्ट पाठ है (प्रेरितों के काम 17:16-34।) ऐथेंस में पौलुस का सामना एक ऐसी संस्कृति से हुआ जो मूर्तिपूजा से भरी हुई थी। पौलुस ने झूठी मूर्तियों की पूजा और यहोवा की सच्ची आराधना के बीच का अंतर समझाया।

ऐथेंस के लोग बहुत धार्मिक थे (प्रेरितों के काम 17:22)।

एथेंस के लोग आराधक तो थे, परन्तु वे सच्चे परमेश्वर की आराधना नहीं करते थे। उनकी आराधना झूठी थी। आराधना अपने आप में पर्याप्त नहीं है; आराधना सही उद्देश्य पर केंद्रित होनी चाहिए।

ऐथेंस के लोग अज्ञानतापूर्वक आराधना करते थे (प्रेरितों के काम 17:23)।

वे नहीं जानते थे कि वे किसकी आराधना करते हैं। पौलुस ने उस प्रभु का प्रचार किया जिसकी वे खोज कर रहे थे। उसने उनसे कहा कि परमेश्वर ने सभी राष्ट्रों को अपनी ओर आने और उसे पाने के लिए प्रेरित किया है। यह एक ऐसा वाक्यांश है जो किसी ऐसे व्यक्ति का संकेत देता है जो अँधेरे में टटोल रहा है। परमेश्वर के लिए मनुष्य की भूख ने सुसमाचार के लिए एक रास्ता प्रदान किया।

---

[23] प्रेरितों 2:46, प्रेरितों 3:1, 11-26; प्रेरितों 4:2, प्रेरितों 5:12, 42

[24] प्रेरितों 13:14-15, प्रेरितों 14:1, प्रेरितों 17:1, 10; प्रेरितों 18:4, 19; प्रेरितों 19:8

[25] रोमियों 16:5, 1 कुरिन्थियों 16:19, कुलुस्सियों 4:15, फिलेमोन 1:2

ऐथेंस के लोग एक अपर्याप्त देवता की पूजा करते थे

यहोवा की आराधना मनुष्यों के हाथों से नहीं की जाती, मानो उसे किसी चीज़ की ज़रूरत हो। वही है जो सबको जीवन, साँस और सब कुछ देता है (प्रेरितों के काम 17:25)। एथेंसवासियों की आराधना झूठी थी क्योंकि उनका ईश्वर अपर्याप्त था। सच्चा परमेश्वर सबको जीवन देता है; उसे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है। हम परमेश्वर की आराधना इसलिए करते हैं क्योंकि वह हमारी आराधना के योग्य है, इसलिए नहीं कि उसे हमारी आराधना की ज़रूरत है।

पौलुस ने मूर्तियों और सच्चे परमेश्वर के बीच अंतर बताया।

1. **परमेश्वर सृष्टिकर्ता है।** उसने संसार और उसकी हर चीज़ को बनाया है... वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी है (प्रेरितों के काम 17:24)। मनुष्यों के हाथों से बनाई गई मूर्तियों के विपरीत, परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया। वह कोई पराया देवता नहीं है (प्रेरितों के काम 17:18); वह सारे संसार का सृष्टिकर्ता है।

2. **परमेश्वर निकट है।** वह हम में से किसी से भी दूर नहीं है (प्रेरितों के काम 17:27)। यद्यपि परमेश्वर सर्वोपरि है, फिर भी वह हमारे संसार में प्रवेश कर चुका है और प्रत्येक आराधक के निकट है।

3. **परमेश्वर उनका न्याय करेगा जो पश्चाताप करने से इनकार करते हैं** (प्रेरितों के काम 17:30-31)। सच्चाई से आराधना यह मानती है कि परमेश्वर एक धर्मी न्यायाधीश है जो विद्रोह को सहन नहीं करेगा। अपनी आराधना में, हम स्वयं को उसकी संप्रभुता के अधीन कर देते हैं।

4. **परमेश्वर ने यीशु को मरे हुओं में से जीवित, यह दिखाते हुए कि यीशु आराधना के योग्य हैं** (प्रेरितों के काम 17:31)। यीशु ने स्वेच्छा से अपने आप को मृत्यु तक दीन किया; अब पिता ने उन्हें महिमा दी है, “कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें; और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकर कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है” (फिलिप्पियों 2:10-11)।

एथेन्स में पौलुस के संदेश ने यहोवा की सच्ची आराधना के सुसमाचार के साथ मूर्तियों की झूठी आराधना का सामना किया। प्रभावशाली सुसमाचार प्रचार आराधकों जन्म देता है।

आराधना के खतरे: सुसमाचार प्रचार के बिना आराधना

कई कलीसिया आराधना को मिशन और सुसमाचार प्रचार से अलग करते हैं। कुछ कलीसिया कहती हैं, "हम सुसमाचार प्रचार के लिए प्रतिबद्ध हैं। हमारा उत्साह खोए हुए लोगों तक पहुँचने का है।" ये कलीसिया आराधना पर कम ध्यान देती हैं। वे स्वयं को सुसमाचार प्रचारक कलीसिया मानते हैं। कुछ अन्य कलीसिया कहती हैं, "हमारा मानना है कि कलीसिया का प्राथमिक उद्देश्य आराधना है। दूसरे लोग सुसमाचार प्रचार कर सकते हैं; हमारा लक्ष्य आराधना है।

प्रेरितों के काम की पुस्तक दर्शाती है कि कलीसिया को आराधना और सुसमाचार प्रचार दोनों के लिए समर्पित होना चाहिए। सच्ची आराधना हमें सुसमाचार प्रचार के लिए उत्साह देती है। प्रभावी सुसमाचार प्रचार नए आराधकों का निर्माण करता है।

हमें आराधना को सुसमाचार प्रचार से अलग नहीं करना चाहिए। जो आराधना सुसमाचार प्रचार को प्रेरित नहीं करती, वह आत्म-केंद्रित आराधना बन सकती है जो मुख्य रूप से हमारी अपनी प्रेरणा के लिए की जाती है। जो सुसमाचार प्रचार आराधना की ओर नहीं ले जाता, वह ऐसे खोखले मसीहियों को जन्म देगा जो वास्तव में परमेश्वर को देखने में असफल रहते हैं।

बाइबल आधारित आराधना में, हम सुसमाचार प्रचार के लिए एक नया उत्साह प्राप्त करते हैं। यशायाह की तरह, परमेश्वर के बारे में हमारा दृष्टिकोण एक ज़रूरतमंद संसार के दृष्टिकोण के साथ होगा। यशायाह की तरह, परमेश्वर के प्रति हमारी आराधनापूर्ण प्रतिबद्धता हमें यह कहने के लिए प्रेरित करेगी, “मैं यहाँ हूँ! मुझे भेज।”

दोबारा जाँच

स्वयं से पूछें, "क्या आराधना मुझे अविश्वासियों के साथ सुसमाचार बाँटने के लिए प्रेरित करती है? क्या मुझमें नए आराधकों को परमेश्वर के पास लाने का उत्साह है?"

पत्रियाँ: आरम्भिक कलीसिया में आराधना

पुराने नियम में यहूदी आराधना के लिए स्पष्ट निर्देश दिए गए थे, परन्तु नया नियम में कलीसिया में आराधना के लिए बहुत कम निर्देश दिए गए हैं।[26] नया नियम में आराधना सभा का कोई पूर्ण विवरण नहीं है, परन्तु पत्रियाँ आरंभिक मसीही आराधना के कुछ तत्वों को दर्शाती हैं।

बाइबल पठन

आरंभिक मसीही आराधना में धर्मशास्त्र पढ़ना महत्वपूर्ण था। कुलुस्सियों 4:16 और 1 थिस्सलुनीकियों 5:27 ने कलीसियाओं को निर्देश दिए कि वे पौलुस की पत्रियों को सार्वजनिक रूप से पढ़ें। 1 तीमुथियुस 4:13 में, पौलुस तीमुथियुस को याद दिलाता है कि वे बाइबल के सार्वजनिक पठन पर ध्यान दें।

कुलुस्सियों 3:16 में, बाइबल पढ़ने के महत्व का सुझाव दिया गया है “मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो... सिद्ध ज्ञान सहित।” भजनकार ने धन्य मनुष्य का वर्णन किया; वह परमेश्वर की व्यवस्था से प्रसन्न होता है और उस पर मनन करता है (भजन संहिता 1:2)। हमारी सार्वजनिक आराधना से पता चलता है कि हम धर्मशास्त्र (बाइबल) को कितना महत्व देते हैं।

---

[26] अधिकांश सामग्री यहाँ से ली गई है Franklin M. Segler and Randall Bradely, *Christian Worship: Its Theology and Practice.* (Nashville: B&H Publishing, 2006), अध्याय 2.

परमेश्वर के वचन का प्रचार

पवित्रशास्त्र के वचन पढ़ने के साथ-साथ, एक अगुवा वचन का प्रचार करने के लिए भी ज़िम्मेदार था (2 तीमुथियुस 4:1-4, तीतुस 2:15)। एज्रा के समय से, शास्त्री लोगों के लिए शास्त्र की व्याख्या करते थे। एज्रा और उनके सहयोगी पुस्तक से, परमेश्वर की व्यवस्था से, स्पष्ट रूप से पढ़ते थे, और अर्थ बताते थे, ताकि लोग पाठ को समझ सकें (नहेम्याह 8:8)। नये नियम के युग में यहूदी आराधनालयों ने इस प्रथा को जारी रखा (प्रेरितों 13:14-15)। धर्मग्रंथ का अर्थ समझाना आरंभिक मसीही धर्मोपदेश का आधार है।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में दिए गए उपदेश आरंभिक मसीही प्रवचन की विषय-वस्तु को दर्शाते हैं।[27] इन प्रवचनों में महत्वपूर्ण विषय शामिल हैं:

- यीशु पुराना नियम की भविष्यवाणियों की पूर्ति थे।
- यीशु ने परमेश्वर की सामर्थ से महान कार्य किए।
- यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया और फिर मृतकों में से जीवित उठाया गया।
- यीशु अब महिमान्वित हैं और प्रभु बनाए गए हैं।
- जो कोई सुनता है उसे पश्चाताप करना चाहिए और बपतिस्मा लेना चाहिए।

सार्वजनिक प्रार्थना

आरंभिक मसीही आराधना में सार्वजनिक प्रार्थना महत्वपूर्ण थी (1 तीमुथियुस 2:1-3)। कई विद्वानों का मानना है कि पौलुस की पत्रियों में शामिल प्रार्थनाएँ सार्वजनिक आराधना में प्रयोग की जाती थीं। कलीसिया का "आमीन" कहना इस प्रार्थना से उनकी सहमति दर्शाता था।[28]

भजन गाना

मंदिर में गायन का विशेष महत्व था और आरंभिक मसीही आराधना में भी इसकी भूमिका रही। मसीही अपनी यहूदी आराधना से लाए गए भजन संहिता के साथ-साथ, नए भजनों में यीशु की मसीह के रूप में स्तुति की गई। इफिसियों 5:19 और कुलुस्सियों 3:16 के द्वारा सुझाव दिया गया है। कई बाइबल के विद्वान मानते हैं कि फिलिप्पियों 2:5-11 एक आरंभिक मसीही भजन था। इसके अलावा, लूका 1:46-55 में मरियम का गीत और लूका 2:29-32 में शिमोन की प्रार्थना भी आराधना सभाओं में गाई गई होगी।

---

[27] प्रेरितों के काम की पुस्तक में महत्वपूर्ण उपदेश प्रेरितों के काम 2, 7, 10, 17 में मिलते हैं।

[28] 1 कुरिन्थियों 14:16 अभ्यास पर आधारित है।

भेंट/दान देना

कुछ अवसरों पर, भेंट/दान देना सार्वजनिक आराधना का हिस्सा होता था। 1 कुरिन्थियों 16:2 और 2 कुरिन्थियों 9:6-13 कुरिंथुस में कलीसिया को यरूशलेम में पीड़ित मसीहियों के लिए भेंट एकत्र करने का निर्देश देते हैं।

बपतिस्मा और प्रभु भोज

बपतिस्मा और प्रभु भोज ये संस्कार आराधना का अंग थे। पौलुस ने कुरिन्थियों द्वारा प्रभु भोज के उत्सव में व्याप्त कुप्रथाओं को सुधारने के लिए लिखा। मसीह के बलिदान के स्मरणोत्सव के बजाय, यह एक उत्सव बन गया था। पौलुस ने प्रभु भोज की गंभीरता के प्रति सचेत किया। प्रभु भोज एक मसीही के लिए सबसे पवित्र घटना का स्मरण कराता है; इसे हल्के में नहीं लेना चाहिए।[29]

आराधना सभा के तत्वों के इन संकेतों के साथ ही साथ, हम आरंभिक मसीही आराधना के बारे में बहुत कम जानते हैं। ये पत्र आरंभिक कलीसिया में आराधना के किसी विशेष क्रम, आराधना की व्यवस्था या सार्वजनिक आराधना के बारे में कोई अन्य विवरण नहीं देते हैं। आरंभिक कलीसिया में मौजूद विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों के कारण, यह संभव है कि सार्वजनिक आराधना जगह-जगह बहुत भिन्न रही हो। यहूदी मसीही संभवतः आराधनालय की आराधना के समान ही आराधना करते रहे होंगे। गैर-यहूदी मसीही यहूदी रीति-रिवाजों से परिचित नहीं रहे होंगे और हो सकता है कि उन्होंने एक अलग तरीके से आराधना की हो। यद्यपि, यह स्पष्ट है कि प्रारंभिक कलीसिया ने धर्मग्रंथों और परमेश्वर के वचन के प्रचार और शिक्षा पर बहुत ज़ोर दिया।

आज बाइबल आधारित आराधना

कई कलीसियाओं में, सार्वजनिक रूप से बाइबल पठन दुर्लभ हो गया है। सुस्माचारीय कलीसियाओं में प्रार्थना सभा के दौरान पवित्रशास्त्र के केवल कुछ ही पद पढ़े जाते हैं, यह देखना असामान्य नहीं है। हमारी आराधना में पवित्रशास्त्र को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। पवित्रशास्त्र पर आधारित गीतों, बाइबल पाठों, या धर्मोपदेश में पवित्रशास्त्र की सावधानीपूर्वक व्याख्या के माध्यम से, हमें "बाइबल के लोग" के रूप में जाना जाना चाहिए। बाइबल को हमारी आराधना में एक मुख्य स्थान बनाए रखना चाहिए।

दोबारा जाँच

स्वयं से पूछें, “क्या मेरी आराधना में वे सभी तत्व शामिल हैं जो आरंभिक कलीसिया की आराधना का हिस्सा होते थे?”

प्रकाशितवाक्य: आराधना भक्ति के रूप में

प्रकाशितवाक्य के संदेश का केंद्र आराधना है।

- प्रभु के दिन जब यूहन्ना ने अल्फा और ओमेगा की आवाज़ सुनी, तब वह आत्मा में था (प्रकाशितवाक्य 1:10)।

---

[29] मत्ती 28:18-20, प्रेरितों 2:38-41, 1 कुरिन्थियों 11:20-34

- प्रकाशितवाक्य का एक मुख्य विषय उन लोगों के बीच का अंतर है जो सिंहासन पर विराजमान यहोवा की आराधना करते हैं और वे जो पशु की पूजा करते हैं।
- प्रकाशितवाक्य वादा करता है कि परमेश्वर अपने शत्रुओं को पराजित करेगा, और सभी राष्ट्र उसके सामने आकर उसकी आराधना करेंगे (प्रकाशितवाक्य 15:4)।

प्रकाशितवाक्य में आराधना को समझने के लिए, पुस्तक के ऐतिहासिक परिस्थिति की समीक्षा करना लाभकारी होगा। पहली शताब्दी के मसीहियों को दो परस्पर विरोधी दावों का सामना करना पड़ा। एक ओर, वे जानते थे कि यीशु मसीह प्रभु हैं (फिलिप्पियों 2:11)। मसीह में विश्वास के लिए यीशु मसीह के अधिकार और प्रभुत्व के प्रति प्रतिबद्धता आवश्यक है। दूसरी ओर, रोम अपने साम्राज्य के अधीन सभी लोगों से यह प्रमाणित करने की आशा करता था कि कैसर ही उनका प्रभु और स्वामी है।

> "अब अपनी नई सृष्टि पूरी करो,
> हम शुद्ध और निष्कलंक बनें;
> हम आपके महान उद्धार को देखें
> आपमें पूर्णतः पुनर्स्थापित:
> महिमा से महिमा में परिवर्तित,
> जब तक हम स्वर्ग में अपना स्थान ग्रहण न कर लें,
> गाएँ और अपने मुकुट आपके सामने रखें,
> आश्चर्य, प्रेम और स्तुति में खो जाएँ!"
> - चार्ल्स वेस्ली

मसीहियों के लिए परमेश्वर के अलावा किसी और के प्रति पूर्ण निष्ठा रखना असंभव था। रोम और पहली शताब्दी के मसीहियों के बीच विवाद का मूल कारण था, "हमारी आराधना के योग्य कौन है?" इस विषय, प्रकाशितवाक्य कहता है, "यीशु प्रभु हैं।" यहाँ तक कि एक ऐसे संसार में भी जो उनके अधिकार को स्वीकार नहीं करता, यीशु प्रभु हैं। वे आराधना के योग्य हैं। प्रकाशितवाक्य सच्ची आराधना का एक चित्र प्रस्तुत करता है।

स्वर्गीय आराधना का असफल आराधना के साथ विरोधाभास

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का आरम्भ एशिया माइनर की सात कलीसियाओं को दिए गए संदेशों से होता है। एशिया माइनर सम्राट-आराधना के सबसे मज़बूत केंद्रों में से एक था। प्रकाशितवाक्य में जिन शहरों को संबोधित किया गया था, उनमें से प्रत्येक में राजसी मंदिर थे। सम्राट की आराधना इस पूरे प्रांत में लगभग सर्वव्यापी थी।

सात कलीसियाओं को दिए गए संदेश कई कलीसियाओं की आराधना में विफलताओं को दर्शाते हैं। जबकि सभी सात कलीसियाएँ परमेश्वर की आराधना करती हैं, पाँच कलीसियाओं को फटकार लगाई गई है। फटकार दर्शाती है कि ये कलीसियाएँ परमेश्वर को ग्रहणयोग्य आराधना करने में विफल रहीं।

1. **प्रेम की कमी सच्ची आराधना में रुकावट डालती है।** इफिसुस की कलीसिया ने कई काम अच्छे से किए, परन्तु उन्होंने अपना पहला प्रेम छोड़ दिया था। आराधना में खालीपन इस बात का संकेत हो सकता है कि हमने उस परमेश्वर के लिए अपना प्रेम खो दिया है जिसकी हम आराधना करते हैं।
2. **झूठी शिक्षा सच्ची आराधना में रुकावट डालती है।** पिरगमुन और थुआतीरा, दोनों ने झूठी शिक्षा को सहन किया। यह खतरा उन कलीसियाओं में देखा जा सकता है जो बाइबल की सच्चाई के स्थान पर चिन्हों और चमत्कारों को अपनाती हैं।

3. **मृत-कर्म सच्ची आराधना में रुकावट डालते हैं।** सरदीस शहर दो बार पराजित हुआ था जब सोए हुए पहरेदार एक आते हुए शत्रु को देखने में असफल रहे।[30] यूहन्ना ने चेतावनी दी कि सरदीस की कलीसिया सो रही थी क्योंकि उसे अपने अच्छे कर्मों पर भरोसा था। आराधना में परमेश्वर से मुलाकात सरदीस को उसकी सुस्ती से जगा देगी।

4. **उत्साह की कमी सच्ची आराधना में रुकावट डालती है।** लौदीकिया ने वह गुनगुनापन दिखाया जो कलीसिया ने अक्सर समृद्धि के समय में देखा है। लौदीकिया के लोगों में जोश की कमी को उनके धन और आत्मनिर्भरता ने बढ़ावा दिया था। सच्ची आराधना हमें परमेश्वर पर हमारी निर्भरता की याद दिलाती है।

स्वर्गीय आराधना परमेश्वर पर केंद्रित होती है

प्रकाशितवाक्य अध्याय 4-5 दर्शाते हैं कि स्वर्गीय आराधना परमेश्वर और उसकी महिमा पर केंद्रित होती है। स्वर्गीय आराधक अनन्त राजा और जी उठे मेमने की आराधना करते हैं।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि कोई स्वर्गदूत यूहन्ना से कहे, "क्या हम कुछ ऐसा बदल सकते हैं जिससे आप आराधना में ज़्यादा सहज हो जाएँ?" बिल्कुल नहीं! आराधना परमेश्वर के विषय है, मेरे विषय नहीं। आराधना, आराधक को आशीष देती है, परन्तु यह आराधना का मुख्य उद्देश्य नहीं है। आराधना का उद्देश्य परमेश्वर का आदर करना है। परमेश्वर के सिंहासन के चारों ओर आराधक परमेश्वर की स्तुति का भजन गाते हैं:

> हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, तेरे कार्य महान् और अद्भुत हैं; हे युग–युग के राजा, तेरी चाल ठीक और सच्ची है"। "हे प्रभु, कौन तुझ से न डरेगा और तेरे नाम की महिमा न करेगा? क्योंकि केवल तू ही पवित्र है। सारी जातियाँ आकर तेरे सामने दण्डवत् करेंगी, क्योंकि तेरे न्याय के काम प्रगट हो गए हैं। (प्रकाशितवाक्य 15:3-4)।

स्वर्गीय आराधना परमेश्वर की उपस्थिति में होती है। जब से आदम और हव्वा को अदन की वाटिका से निकाला गया है, तब से मनुष्य परमेश्वर से अलग हो गया है। स्वर्ग में, आराधना फिर से परमेश्वर की उपस्थिति में, किसी भी बुराई के प्रभाव से मुक्त होकर होगी।

> देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है। वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा और उनका परमेश्वर होगा ।(प्रकाशितवाक्य 21:3)।

स्वर्गीय आराधना सच्ची वास्तविकता को दिखाती है

जब यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य लिखा, तब वह पतमुस टापू पर निर्वासन में था। पूरे रोमन साम्राज्य में मसीही लोग उत्पीड़न झेल रहे थे। सांसारिक दृष्टिकोण से, भविष्य अंधकारमय था। जबकि, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक सांसारिक घटनाओं पर एक स्वर्गीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है।[31]

---

[30] ऐसा तब हुआ जब 547 ईसा पूर्व में कुस्रू ने आक्रमण किया और फिर 214 ईसा पूर्व में एंटिओकस तृतीय ने आक्रमण किया।

[31] उदाहरण के लिए: 6:1-7:8 पृथ्वी पर; 7:9-8:6 स्वर्ग में। 8:7-11:14 पृथ्वी पर; 11:15-19 स्वर्ग में।

पृथ्वी पर, हम इतिहास का केवल एक ही पहलू देखते हैं। हम यह सोचने के लिए बहक जाते हैं कि हमारे आस-पास का संसार ही परम सत्य है। आराधना और स्वर्ग वास्तविक संसार के संघर्षों से बहुत दूर प्रतीत होते हैं। प्रकाशितवाक्य अध्याय 4, 5, और 15 में दिखाई देने वाली स्वर्गीय आराधना की झलकियाँ हमें वास्तविक संसार का एक चित्र दिखाती हैं।

मसीही सेवकों के लिए, प्रकाशितवाक्य एक विशेष चेतावनी है कि इस संसार के संघर्ष अस्थायी हैं। आराधना वास्तविकता से साप्ताहिक पलायन नहीं है; इसके बजाय, आराधना परमेश्वर के दृष्टिकोण से वास्तविकता को दर्शाती है - और यह हमारे संसार के प्रति हमारे दृष्टिकोण को बदल देती है। प्रकाशितवाक्य में, परमेश्वर कहते हैं, चीजें वैसी नहीं हैं जैसी वे दिखाई देती हैं। चीजें नियंत्रण से बाहर नहीं हैं, शैतान विजयी नहीं हुआ है, बुराई विजयी नहीं हुई है। द्वार से देखो और वास्तविकता की एक झलक पाओ। परमेश्वर अपने सिंहासन पर विराजमान हैं।"[32]

आज बाइबल आधारित आराधना

"वह जी उठा है!" "वह प्रभु है!" ये उद्घोषणाएँ आराधना का केंद्रबिंदु हैं। पुनरुत्थान ही वह था जिसने यीशु को प्रभु घोषित किया (रोमियों 1:4)।

आरम्भिक कलीसिया प्रत्येक रविवार को पुनरुत्थान के उत्सव के रूप में मान्यता देती थी; प्रत्येक रविवार ईस्टर था। मसीही रविवार को उपवास नहीं करते थे; रविवार उत्सव का दिन था।

आज, हमारी आराधना उत्सव का समय होनी चाहिए। हाँ, परमप्रधान की उपस्थिति में प्रवेश करने के साथ एक गंभीरता जुड़ी हुई है, परन्तु जब हम पुनरुत्थित प्रभु का उत्सव मनाते हैं तो आनन्द भी होता है। हमारी आराधना में उत्सव के अवसर शामिल होने चाहिए।

आराधना में स्तुति के गीत और सदस्यों के जीवन में परमेश्वर की कृपा की गवाही शामिल होती है। नाइजीरिया का एक चर्च भेंट चढ़ाकर उत्सव मनाता है। सदस्य भेंट एकत्र करते समय चर्च के चारों ओर मार्च करते हैं। ये आराधक पुनरुत्थान के आनंद को जानते हैं। आराधना में मृत्यु पर मसीह की विजय के माध्यम से हमें प्राप्त विजय का उत्सव मनाने के अवसर शामिल होने चाहिए।

दोबारा जाँच

स्वयं से पूछिए, "क्या मेरी आराधना एक उत्सव है या मात्र एक *कार्य*? क्या मैं आराधना में शामिल होकर खुशी महसूस करता हूँ, या मैं सिर्फ़ इसलिए आराधना में जाता हूँ क्योंकि एक मसीही होने के नाते यह मेरा कर्तव्य है?"

---

[32] David Jeremiah, *Worship* (CA: Turning Point Outreach, 1995), 72

व्यक्तिगत लागूकरण

जिस परमेश्वर की हम आराधना करते हैं, उस पर मनन करने के लिए समय निकालें। विचार कि बाइबल हमें उसके बारे में क्या बताती है।

पवित्रशास्त्र में परमेश्वर कौन हैं[33]	
उत्पत्ति में	वह सृष्टि का निर्माता है
निर्गमन में	वह फसह का मेम्ना है
लैव्यव्यवस्था में	वह सम्पूर्ण बलिदान है
गिनती में	वह बादल है
व्यवस्थाविवरण में	वह एकमात्र सच्चा नबी है
यहोशू में	वह परमेश्वर की सेना का कप्तान है
रूत में	वह हमारा सगा छुड़ानेवाला है।
1 और 2 शमूएल में	वह नबी है
इतिहास में	वह स्वर्गीय मंदिर है
अय्यूब में	वह मध्यस्थ है
भजन संहिता में	वह चरवाहा है
यशायाह में	वह शांति का राजकुमार है
यहेजकेल में	वह मनुष्य का पुत्र है
होशे में	वह पापी को चंगा करने वाला है
हाग्गै में	वह सभी राष्ट्रों की अभिलाषा है
मलाकी में	वह धार्मिकता का सूर्य है

[33] यह भाग यहाँ से लिया गया है Vernon Whaley, *Called to Worship.* (Nashville: Thomas Nelson, 2009), 331-333.

मत्ती में	वह वादा किया हुआ मसीह है
मरकुस में	वह सेवक है
लूका में	वह मनुष्य का पुत्र है
यूहन्ना में	वह वचन है
रोमियों में	वही है जो धर्मी ठहराता है
फिलिप्पियों में	वह हमारा आनंद है
कुलुस्सियों में	वह ईश्वरत्व की पूर्णता है
इब्रानियों में	वह महान महायाजक है
1 और 2 पतरस में	वह झुंड का प्रधान चरवाहा है
प्रकाशितवाक्य में	वह वह मेमना है जो घात किया गया, राजाओं का राजा, और प्रभुओं का प्रभु!

निष्कर्ष: प्रेरित यूहन्ना की गवाही

"मेरा नाम यूहन्ना है। आराधना ने मेरे जीवन को बदल दिया है। जब से मैं पहली बार नासरत के यीशु से मिला, मैं एक आराधक रहा हूँ।

"मैं रूपांतरण पर्वत पर था। हमने स्वर्ग से वाणी सुनी, हमने उसकी महिमा देखी, और हम मुँह के बल गिर पड़े, और भयभीत हो गए (मत्ती 17:6)। हमने अपूर्ण रूप से आराधना की। दुखभोग सप्ताह के दौरान हमारे कार्यों से पता चला कि हमने पर्वत पर जो देखा था उसे हम समझ नहीं पाए थे।

"मैं गलील के पहाड़ पर था जब यीशु पुनरुत्थान के बाद प्रकट हुए। हमने आराधना की, यद्यपि कुछ लोगों को संदेह था (मत्ती 28:17)। हमने अपूर्ण रूप से आराधना की। हम जानते थे कि वह जी उठे हैं, परन्तु हम इसका पूरा अर्थ नहीं समझ पाए।

"मैं ऊपरी कमरे में था जब हम एक मन से प्रार्थना में लगे थे (प्रेरितों 1:14)। जब हम आराधना कर रहे थे, पवित्र आत्मा हम पर उतरा। आराधना सुसमाचार प्रचार के लिए प्रेरक बन गई; हमने सुसमाचार को यरूशलेम, यहूदिया और सामरिया तक, और पृथ्वी के छोर तक पहुँचाया।

“जब मैं पतमुस में निर्वासन में था, तब प्रभु के दिन मैं आत्मा में था, जब मैंने तुरही जैसी ऊँची आवाज़ सुनी। यह अल्फा और ओमेगा की आवाज़ थी, जो पहले और आखिरी थे (प्रकाशितवाक्य 1:10-11)।

“मैं वहाँ था जब परमेश्वर ने स्वर्ग में एक द्वार खोला और मुझे परमेश्वर के सिंहासन के चारों ओर आराधना देखने की अनुमति दी।

“मैं हमेशा के लिए नए यरूशलेम में रहूँगा, स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उतरता हुआ (प्रकाशितवाक्य 21:2)। उस नगर में, हमारी आराधना अंततः सिद्ध होगी क्योंकि हम उसका चेहरा देखेंगे जिसकी हम आराधना करते हैं। स्वर्ग में, ‘परमेश्वर का निवास स्थान मनुष्यों के बीच है। वह उनके साथ वास करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर स्वयं उनके परमेश्वर के रूप में उनके साथ रहेगा।’ (प्रकाशितवाक्य 21:3)।

“मैं यूहन्ना हूँ। और मैं अपने परमेश्वर और उद्धारकर्ता की आराधना में अनंत काल बिताऊँगा!”

व्यक्तिगत लागूकरण

इस पाठ को छोड़ने से पहले, आराधना के लिए समय निकालें। प्रकाशितवाक्य अध्याय 4, 5, और 15 या भजन संहिता 19 के गीत पढ़ें। परमेश्वर की स्तुति वाला कोई गीत गाएँ। आराधना की प्रार्थना करें। परमेश्वर आपसे कैसे बात करते हैं, उसे सुनें। परमेश्वर की सच्ची आराधना के लिए समय निकालें।

सामूहिक विचार विमर्श

► इस पाठ के व्यावहारिक लागूकरण के लिए, निम्नलिखित पर विचार विमर्श करें:

रोहित एक एसी कलीसिया के पासबान हैं *जो सुसमाचार प्रचार के प्रति समर्पित हैं। हर महीने नए मसीही विश्वास में आए लोगों का बपतिस्मा होता है। यह* कलीसिया *में एक रोमांचक समय होता है।*

यद्यपि, रोहित को चिंता है कि कलीसिया *वास्तव में आराधना नहीं कर रही है। ज़्यादातर प्रचार अविश्वासियों और नए विश्वासी लोगों के लिए होता है। बेहतरीन भजनों का इस्तेमाल करना मुश्किल है क्योंकि नए लोग इन गीतों को नहीं जानते। रोहित को डर है कि उनकी कलीसिया आकार में तो बड़ी होगी लेकिन आत्मिक गहराई में उथली होगी। वह आराधना पर ज़्यादा ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं। चर्चा करें कि रोहित सुसमाचार प्रचार पर ज़ोर बनाए रखने के साथ-साथ* कलीसिया *की आराधना को और गहरा बनाने के लिए क्या कर सकते हैं।*

पाठ 4 की समीक्षा

(1) सुसमाचारों में, यीशु पिता की आराधना करते हैं और स्वयं उनकी आराधना परमेश्वर के रूप में की जाती है।

- यीशु ने आराधना के लिए एक आदर्श प्रस्तुत किया।
- यीशु ने झूठी आराधना के प्रलोभन का इनकार किया।
- यीशु ने प्रार्थना के महत्व का आदर्श प्रस्तुत किया।
- यीशु की आराधना अनंत काल तक की जाएगी।

(2) प्रेरितों के काम की पुस्तक आराधना और सुसमाचार प्रचार के बीच संबंध को दर्शाती है।

- सच्ची आराधना सुसमाचार प्रचार को प्रेरित करती है
- प्रभावशाली सुसमाचार प्रचार आराधकों को जन्म देता है
- जो आराधना सुसमाचार प्रचार की ओर नहीं ले जाती वह आत्म-केन्द्रित हो जाएगी।

(3) पत्रियाँ आरम्भिक चर्च में आराधना के महत्वपूर्ण तत्वों को दर्शाती हैं। प्रारंभिक कलीसिया में आराधना में शामिल थे:

- बाइबल पठन
- परमेश्वर के वचन का प्रचार
- सार्वजनिक प्रार्थना
- भजन गाना
- भेंट/दान देना
- बपतिस्मा
- प्रभु भोज

(4) प्रकाशितवाक्य की पुस्तक दर्शाती है कि आराधना परमेश्वर की स्तुति करना है।

- आराधना से आराधक को आशीष मिलती है, परन्तु यह आराधना का प्राथमिक उद्देश्य नहीं है।
- आराधना का प्राथमिक उद्देश्य परमेश्वर का आदर करना है।
- स्वर्गीय आराधना हमें याद दिलाती है कि जो संसार हम देखते हैं वह पूर्ण वास्तविकता नहीं है।

पाठ 4 के कार्य

(1) इस पाठ से आराधना के तीन सिद्धांत सूचीबद्ध करें। प्रत्येक सिद्धांत के लिए, एक अनुच्छेद लिखें जिसमें उस सिद्धांत को अपनी कलीसिया में लागू करने के व्यावहारिक तरीकों पर विचार विमर्श किया गया हो।

(2) अगले पाठ के आरम्भ में, आप इस पाठ पर आधारित एक परीक्षा देंगे। तैयारी के लिए परीक्षा के प्रश्नों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें।

पाठ 4 परीक्षा

(1) यीशु ने सच्ची उपासना का उदाहरण तीन प्रमुख तरीकों से प्रस्तुत किया की सूची बनाएँ

(2) यीशु की शिक्षा और उदाहरण हमें सच्ची आराधना के विषय क्या याद दिलाते हैं?

(3) कौन से दो कथन आराधना और सुसमाचार प्रचार के बीच के सम्बन्ध का सारांश प्रस्तुत करते हैं?

(4) प्रेरितों के काम अध्याय 17 में एथेंस की झूठी आराधना का वर्णन किस प्रकार किया गया है?

(5) प्रेरितों के काम अध्याय 17 में सच्चे परमेश्वर का वर्णन किस प्रकार किया गया है?

(6) पत्रियों में आरंभिक मसीही आराधना के पाँच तत्वों की सूची बनाएँ।

(7) एशिया माइनर की कलीसियाओं में आराधना में आने वाली बाधाओं के दो उदाहरण बताइए।

(8) याद किया हुआ रोमियों 12:1-2 लिखें।

पाठ 5
कलीसिया के इतिहास में आराधना

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अन्त होने तक विद्यार्थी को नीचे दिए गए कार्य करने के योग्य होना चाहिए:

(1) विभिन्न आराधना परंपराओं के बीच अंतर का आदर करना।

(2) आराधना के अपरिवर्तनीय सिद्धांतों और बदलती आराधना प्रथाओं के बीच अंतर को समझना।

(3) यह समझना कि आराधना हमारी धार्मिक मान्यताओं को प्रतिबिंबित करती है और उन मान्यताओं को प्रभावित भी करती है।

(4) विभिन्न कलीसिया परंपराओं की आराधना से सीखे गए सबक को आज की आराधना में लागू करना।

इस पाठ की तैयारी

कण्ठस्थ करें भजन संहिता 100:1-5।

भूमिका

सुमित पारंपरिक आराधना को महत्व देते हैं। उनकी मासिक बैठक में, निखिल, जो एक समकालीन आराधना सभा की अगुआई करते हैं, उसने पूछा, "आप अपनी सभाओं में कुछ नया क्यों नहीं करते?"

"हम बाइबल आधारित लोग हैं," सुमित ने उत्तर दिया। "यदि बाइबल किसी विशेष आराधना पद्धति का आदेश नहीं देती, तो हमें आरंभिक कलीसिया की आराधना पद्धतियों में कुछ जोड़ने की स्वतंत्रता नहीं है। हम कौन होते हैं बाइबल की आराधना को बदलने वाले? हमारी कलीसिया में, हम केवल भजन संहिता गाते हैं। वे गीत आरंभिक कलीसिया के गीत थे; वे हमारे लिए पर्याप्त हैं!”[34]

निखिल ने उत्तर दिया, "मुझे ऐसा लगता है कि आप सोचते हैं कि इतिहास प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अंत पर ही रुक गया। हम स्वयं को 2,000 साल पुरानी आराधना शैली तक कैसे सीमित रख सकते हैं? जब तक बाइबल किसी प्रथा का निषेध नहीं करती, और जब तक वह प्रथा कलीसिया को विभाजित नहीं करती, हमें अपनी पीढ़ी की ज़रूरतों के अनुसार आराधना को ढालना चाहिए।

---

[34] इसे आराधना का “नियामक सिद्धांत”कहा जाता है। इसे जॉन कैल्विन ने सिखाया था, और यह उन आराधना प्रथाओं को मना करता है जो बाइबल के वचनों में स्थापित नहीं हैं। आरम्भ में, इसने किसी भी वाद्य-संगीत को रोक दिया (क्योंकि नये नियम की आराधना में वाद्यों का उल्लेख नहीं मिलता) या भजनों के अतिरिक्त किसी अन्य गीत के उपयोग को अस्वीकार कर दिया। आज भी कुछ कलीसियाएँ जो इस सिद्धांत का पालन करती हैं, उन्होंने वाद्य और भजनों को अपना लिया है; परन्तु वे अब भी आराध् के नए तरीकों से दूरी बनाए रखती हैं।

मेरी कलीसिया में, हम कई नए गीत गाते हैं। यदि परमेश्वर नए गीतों पर रोक लगाना चाहता, तो बाइबल स्पष्ट रूप से उन्हें मना करती।"[35]

विवेक का उत्तर व्यावहारिक था। "हमने बाइबल में आराधना के बारे में जो कहा गया है, उसका अध्ययन किया है। हम बाइबल के वचनों से आराधना के सिद्धांतों को जानते हैं। हमें यह देखना होगा कि अन्य मसीहियों ने प्रत्येक पीढ़ी में इन सिद्धांतों को कैसे लागू किया है। कलीसिया के इतिहास में आराधना कैसी दिखाई देती है?"

विवेक आराधना पर चर्चा करते समय एक महत्वपूर्ण सिद्धांत को समझता है। जबकि आराधना के बाइबल आधारित सिद्धांत अपरिवर्तनीय हैं, फिर भी बाइबल में आराधना का प्रत्येक अनुभव अलग है। विवरण अलग-अलग हैं; आराधना के आवश्यक तत्व समान हैं। हमने पिछले दो पाठों में आराधना के आवश्यक सिद्धांतों को देखा है, परन्तु विवरण बदल गए हैं। विचार करें:

- अब्राहम अपने तम्बू के द्वार पर था जब वह आराधना कर रहा था। कोई इसे पढ़कर कह सकता है, "सच्ची आराधना तब होती है जब आप घर पर होते हैं।" परन्तु...
- यशायाह मंदिर में था जब उसने प्रभु को महिमान्वित होते देखा। कोई इसे पढ़कर कह सकता है, "सच्ची आराधना तब होती है जब आप कलीसिया में होते हैं।" परन्तु...
- अय्यूब के सिर से पैर तक फोड़ों से भरा हुआ था जब उसने कहा, “मैं ने कानों से तेरा समाचार सुना था, परन्तु अब मेरी आँखें तुझे देखती हैं” (अय्यूब 42:5)। कोई इसे पढ़कर कह सकता है, "अहा! सच्ची आराधना तब होती है जब आप दुख में होते हैं।"

क्या आप इस बात को समझ रहे हैं? आराधना कई अलग-अलग परिस्थितियों में, कई अलग-अलग तरीकों से और कई अलग-अलग विधि के अनुसार होती है। हम अक्सर आराधना की बदलती परिस्थितियों को अपरिवर्तनीय सिद्धांतों के साथ भ्रमित कर देते हैं।

इस पाठ में, हम देखेंगे कि कलीसिया ने पूरे इतिहास में आराधना के सिद्धांतों को कैसे लागू किया है। इससे आपको परमेश्वर के लोगों द्वारा आराधना के विविध तरीकों का बोध होगा। आशा है कि इससे आपको यह समझने में सहायता मिलेगी कि आराधना की कोई एक विधि नहीं है जिसका पालन सभी लोगों को हर परिस्थिति में करना चाहिए। इसके बजाय, हमें अपनी परिस्थिति में आराधना के बाइबल सिद्धांतों को कैसे लागू करें, यह निर्धारित करने के लिए परमेश्वर के आत्मा के मार्गदर्शन की तलाश करनी चाहिए।

इस पाठ में, हम यह भी देखेंगे कि हम जिस तरह से आराधना करते हैं, वह हमारी धारणाओं को दर्शाता है। हमारी आराधना पद्धतियाँ परमेश्वर के बारे में हमारी धारणाओं और उनके प्रति हमारी पहुँच से प्रभावित होती हैं।

---

[35] इसे आराधना का “मानक सिद्धांत” कहा जाता है। यह दृष्टिकोण सिखाता है कि बाइबल के वचनों में जिन आराधना प्रथाओं को मना नहीं किया गया है, वे अनुमत हैं—जब तक कि वे कलीसिया की शांति और एकता को भंग न करें।

आराधना के बारे में निर्णय लेते समय यह समझ बेहद ज़रूरी है। क्या आप अपनी आराधना सभा इस तरह से करते हैं जो आपकी धारणाओं को व्यक्त करती है, या आप बस किसी दूसरे कलीसिया के तरीके की नकल कर रहे हैं? यदि आप किसी दूसरी कलीसिया की नकल कर रहे हैं, तो आपको यह सुनिश्चित करना होगा कि आप उस कलीसिया के परमेश्वर के बारे में धारणाओं और उनके प्रति हमारी पहुँच के तरीके को साझा करें। हमारी आराधना दर्शाती है कि हम क्या विश्वास करते हैं।

► इस *पाठ* को आगे बढ़ाने से पहले, अपनी वर्तमान आराधना सभाओं पर चर्चा करें। यदि किसी व्यक्ति को आपके सिद्धांत के बारे में कुछ भी पता न हो, तो आपकी आराधना शैली उन्हें क्या बताएगी? आपकी आराधना सभा के परिणामस्वरूप वे परमेश्वर के विषय आपके दृष्टिकोण, परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध के विषय आपके दृष्टिकोण, और सुसमाचार प्रचार के विषय आपके दृष्टिकोण के बारे में क्या सीखेंगे?

दूसरी शताब्दी में आराधना का एक चित्र

नए नियम के बाद आराधना का हमारा सबसे पहला चित्र 113 ई के एक पत्र में मिलता है। बिथिनिया के गवर्नर प्लिनी ने सम्राट ट्राजन को लिखे एक पत्र में मसीही आराधना का वर्णन किया था।[36] उसने लिखा कि मसीही, "किसी निश्चित दिन सूर्योदय से पहले एकत्र होते हैं और बारी-बारी से यीशु मसीह के लिए एक भजन गाते हैं, जैसे कि वे परमेश्वर के लिए गाते हैं, और वे शपथ लेते हैं... कि वे कोई चोरी, कोई धोखाधड़ी, कोई व्यभिचार नहीं करेंगे.... उनका रिवाज है कि वे अलग हो जाते हैं और बाद में साथ मिलकर भोजन करने के लिए लौटते हैं।"

प्लिनी के अनुसार, मसीही रविवार को सूर्योदय से पहले भजन गाने और नैतिक आचरण की शपथ लेने के लिए एकत्रित होते थे, संभवतः बाइबल के पठन के बाद। बाद में, वे भोजन करते थे, जिसमें संभवतः प्रभु भोज भी शामिल होता था।

चालीस वर्ष के बाद, जस्टिन मार्टियर ने आराधना का अधिक विस्तृत विवरण दिया।[37] जस्टिन ने मसीही आराधना के बचाव में रोमन सम्राट को पत्र लिखा, क्योंकि सम्राट को मसीहियों पर अनैतिकता और साम्राज्य के प्रति विश्वासघात का संदेह था। जस्टिन ने सम्राट को आश्वस्त किया कि मसीही आराधना रोम के लिए कोई खतरा नहीं है। जस्टिन के अनुसार, मसीही आराधना में निम्नलिखित बातें शामिल थीं:

1. **पवित्रशास्त्र पढ़ना**
2. **मण्डली के अगुए के द्वारा उपदेश**

---

[36] Pliny, *Letters 10.96-97*, 26 जनवरी, 2023 https://faculty.georgetown.edu/jod/texts/pliny.html से लिया गया।
[37] Justin Martyr, मारस डोड द्वारा अनुवादित), *The First Apology of Justin* (अध्याय 67). 26जनवरी, 2023 https://en.wikisource.org/wiki/Ante-Nicene_Christian_Library/The_First_Apology_of_Justin_Martyr#Chapter_67 से लिया गया।

3. **प्रार्थना।** लोगों ने खामोशी से प्रार्थना की; फिर अगुए ने औपचारिक प्रार्थना करवाई, जिसका प्रत्युत्तर लोगों ने "आमीन" कहकर दिया। प्रार्थना के अंत में, भक्तों ने पवित्र आत्मा की उपस्थिति का प्रतीक पवित्र चुंबन के साथ एक-दूसरे का अभिवादन किया।

4. **प्रार्थना सभा का समापन प्रभु भोज के साथ हुआ।** प्रार्थना सभा के बाद, दो सेवकों ने बची हुई रोटी और दाखरस उन मसीहियों के लिए ले गए जो बीमार थे या जो जेल में बंद थे और शहादत की प्रतीक्षा कर रहे थे।

5. **प्रार्थना सभा के अंत में, जिनके पास पैसे या खाने की चीज़ें थीं, वे अपने दान अगुवे के पास लाए।** ये दान "अनाथों और विधवाओं, बीमारी या किसी और वजह से ज़रूरतमंदों, और हमारे बीच बंदियों और परदेसियों" के पास पहुँचाए गए।

दूसरी शताब्दी की आराधना की एक खूबी सामूहिक भागीदारी थी। प्लिनी और जस्टिन मार्टियर, दोनों ने एक साधारण सेवा का वर्णन किया है, जो रोम के मूर्तिपूजक रहस्यमय धर्मों में प्रचलित विस्तृत अनुष्ठानों से बिल्कुल अलग थी। आराधना घनिष्ठ होती थी, जहाँ छोटे-छोटे समूह निजी घरों में एकत्रित होते थे।

एक और खूबी आराधना और जीवन के बीच स्पष्ट संबंध था। प्लिनी के पत्र में मसीहियों के नैतिक आचरण के प्रति प्रतिबद्धता का उल्लेख है; जस्टिन मार्टियर ज़रूरतमंदों की मदद के लिए दान का उल्लेख करते हैं। आराधना में जीवन का हर पहलू शामिल था।

► दूसरी शताब्दी की आराधना के कौन-से पहलू आपकी आराधना के लिए लाभकारी हो सकते हैं? क्या आपको दूसरी शताब्दी की आराधना में कोई ख़तरा नज़र आता है?

मध्य युग की आराधना का एक चित्र

आराधना के दूसरे चित्र के लिए, 12वीं शताब्दी में जाएँ। बीच के वर्षों में, मसीही धर्म पवित्र रोमी साम्राज्य का आधिकारिक धर्म बन गया था। 313 ई। में कॉन्स्टेंटाइन के मिलान के आदेश के बाद, कलीसियाओं ने अधिकाधिक भव्य कलीसिया-भवन का निर्माण शुरू किया। इन 1000 वर्षों के दौरान कई महान यूरोपीय कलीसिया-भवनों का निर्माण हुआ।

मध्य युग में, आराधना अधिकाधिक भव्य होती गई। सकारात्मक पक्ष यह था कि कलीसिया-भवनों की आराधना परमेश्वर की महिमा को दर्शाती थी। रंगीन काँच की खिड़कियाँ उन लोगों के लिए बाइबल की घटनाओं को चित्रित करती थीं जो पढ़ नहीं सकते थे। गायक मंडलियाँ सुंदर राष्ट्रगान गाती थीं। आराधना प्रभावशाली और सुंदर होती थी।

मध्य युग की आराधना की कमजोरियाँ

आत्मिकता की तुलना में सुंदरता को अधिक महत्व दिया गया।

आराधना के लिए सुंदर चीज़ों के इस्तेमाल पर ज़ोर दिया गया: धूपबत्ती, प्रशिक्षित गायकों द्वारा गाया जाने वाला विस्तृत संगीत, घंटियाँ, और पादरियों के लिए विशेष वस्त्र। कलात्मकता आत्मिकता से अधिक महत्वपूर्ण हो गई।

लोग सभाओं को समझ नहीं पाते थे।

प्रार्थना सभाएँ लैटिन भाषा में होती थीं, एक ऐसी भाषा जिसे बहुत कम लोग समझते थे। कई स्थानीय पासबान धर्मोपदेश देने के लिए बहुत कम प्रशिक्षित थे। प्रार्थनाएँ कई अलग-अलग स्रोतों से लिए गए अंशों का मिश्रण थीं और अक्सर समझ में नहीं आती थीं।

कलीसिया केवल मूक-दर्शक थी, सक्रिय आराधक नहीं।

लोगों की भागीदारी बहुत कम थी। मण्डली दर्शकों का एक समूह थी जो एक नाटक, मास, देख रहे थे। पुरोहित आराधना की घटनाओं का अभिनय करते थे जबकि दर्शक देखते रहते थे। सेवा का केंद्र धर्मग्रंथों के बजाय प्रभुभोज था।

रोमन कैथोलिक कलीसिया सिखाती थी कि रोटी और दाखरस, मसीह के वास्तविक शरीर और रक्त में परिवर्तित हो जाते हैं। (इसे रूपांतरण का सिद्धांत कहा जाता है।) अधिकांश आम लोग केवल ईस्टर पर ही प्रभुभोज ग्रहण करते थे। पुरोहित दाखरस पीते थे और केवल रोटी ही मण्डली के साथ बाँटते थे।

सुसमाचार का स्थान परंपरागत रीतियों ने ले लिया।

हमारी आराधना हमारी धारणाओं को आकार देती है। हम इस सिद्धांत को मध्य युग में कार्य करते हुए देखते हैं; रोमन कैथोलिक आराधना ने उनके धर्मशास्त्र को आकार दिया। परमेश्वर को मानवीय सरोकारों से बहुत दूर माना जाता था। आम लोगों को यह नहीं लगता था कि वे परमेश्वर के पास जा सकते हैं; इसके बजाय, वे केवल एक पासबान के माध्यम से ही परमेश्वर से बात कर सकते थे। पासबान परमेश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थ बन गया।

मध्य युग में आराधना की शक्ति परमेश्वर के समक्ष उसकी महिमा और विस्मय की भावना थी। वास्तुकला, संगीत, प्रभाव और सुंदर कलात्मकता के माध्यम से, आराधना ने परमेश्वर की महिमा को चित्रित किया।

जबकि, मध्य युग में आराधना की कमज़ोरियाँ उसकी खूबियों पर भारी पड़ गईं। एक साधारण मसीही आराधना सभा में एक मात्र दर्शक था। मध्य युग की आराधना कई तरीकों से नए नियम की आराधना से भटक गई और यह एक दुखद बात थी।

आराधना के खतरे: निरर्थक आराधना

हमें अपनी मंडली को यह सिखाने के लिए समय निकालना चाहिए कि हम जिस तरह से आराधना करते हैं, वह क्यों करते हैं, अन्यथा सार्थक परंपराएँ आराधकों को निरर्थक लग सकती हैं।

एक नए विश्वासी ने अपने पास्टर से पूछा, "हम प्रार्थना के अंत में 'आमीन' क्यों कहते हैं? क्या 'आमीन' कोई जादुई शब्द है जो परमेश्वर को हमारी माँग पूरी करने के लिए मजबूर करता है?" पास्टर को आभास हुआ कि उन्हें आराधना की बारीकियों को समझाना चाहिए। यदि हम अपनी मंडली को आराधना के विषय नहीं सिखाते, तो "आमीन" जैसी साधारण बात भी निरर्थक हो सकती है।

आराधना से प्रतीकात्मकता और रहस्य को हटाना ज़रूरी नहीं है। इसका समाधान यह है कि हम मंडली को अपनी आराधना पद्धतियों का अर्थ सिखाएँ। उन्हें पता होना चाहिए कि हम जिस भाषा का प्रयोग करते हैं, उसका उपयोग क्यों करते हैं; उन्हें पता होना चाहिए कि मंडली का गायन मंडली के लिए क्यों महत्वपूर्ण है; उन्हें पता होना चाहिए कि बाइबल के वचनों का क्या अर्थ है।

► मध्य युग की आराधना के कौन से पहलू आपकी आराधना के लिए लाभदायक हो सकते हैं? क्या आपको मध्य युग की आराधना में कोई ख़तरा नज़र आता है?

सुधार आंदोलन में आराधना का एक चित्र

सुधारक अच्छी तरह जानते थे कि हमारी आराधना हमारे धर्मशास्त्र को आकार देती है। इसलिए, वे जानते थे कि यदि आराधना सुधारवादी धर्मशास्त्र को प्रतिबिम्बित नहीं करती, तो सुधारवाद के धर्मशास्त्रीय सत्य लुप्त हो जाएँगे।

सुधारकों का एक प्रमुख धर्मशास्त्रीय सरोकार विश्वासी का पुरोहिताई था। इसका अर्थ है कि विश्वासी सीधे परमेश्वर की आराधना करते हैं; हम किसी पुरोहित के माध्यम से नहीं जाते। सुधारकों का यह भी दृढ़ विश्वास था कि परमेश्वर का वचन प्रत्येक विश्वासी के लिए उपलब्ध होना चाहिए।

सुधारवाद में आराधना में प्रत्येक आराधक को शामिल करने का प्रयास किया गया। आराधना लैटिन में नहीं, बल्कि जनभाषा में होती थी। बाइबल का पठन और प्रचार किया जाता था ताकि सभी आराधक अपनी भाषा में परमेश्वर के वचन को समझ सकें। सामूहिक संगीत प्रत्येक आराधक को आराधना में भाग लेने की अनुमति देता था। मार्टिन लूथर एक भजन लेखक थे, और उनके भजनों को सुधारवाद के प्रसार में सहायक माना जाता है।

इन सामान्य क्षेत्रों के अलावा, सुधारकों के बीच आराधना के संबंध में बहुत मतभेद थे। लूथरन और एंग्लिकन ने रोमन कैथोलिक कलीसिया के अधिकांश अनुष्ठानों को बरकरार रखा। लूथर का मानना था कि, जब तक कि धर्मग्रंथों में उन्हें निषिद्ध न किया गया हो या कलीसिया में संघर्ष का कारण न बनाया गया हो, नई आराधना पद्धतियों को अनुमति दी जानी चाहिए।

केल्विन और उनके अनुयायियों ने कुछ रीति-रिवाजों को तो कायम रखा, परन्तु ऐसी किसी भी आराधना पद्धति को अस्वीकार कर दिया जिसका बाइबल में विशेष रूप से उल्लेख नहीं था। केल्विन ने सामूहिक गायन को प्रोत्साहित किया, परन्तु केवल भजनों के गायन को। उनका मानना था कि "केवल परमेश्वर का वचन ही परमेश्वर की स्तुति में गाए जाने योग्य है।"[38] उन्होंने प्रभु भोज में सामूहिक भागीदारी की ओर वापसी की, और सुझाव दिया कि प्रभु भोज कम से कम महीने में एक बार और अधिमानतः प्रत्येक प्रभु दिवस पर परोसा जाए।

---

[38] Donald P. Hustad, *Jubilate II* (Carol Stream: Hope Publishing Company, 1993), 194 में उल्लेख किया गया है.

एनाबैप्टिस्ट और प्यूरिटन ने अधिकांश रीति-रिवाजों को अस्वीकार कर दिया और आराधना के एक सरल रूप को अपना लिया। ये समूह कभी-कभी केवल निजी घरों में ही आराधना करते थे और स्वयं को ही एकमात्र ऐसे समूह मानते थे जो पहली शताब्दी की आराधना का सच्चा पालन करते थे।

सुधारवादी आराधना की सामर्थ सामूहिक भागीदारी की ओर उसकी वापसी थी। भले ही सुधारवादी विभिन्न कलीसियाओं में मतभेद थे, फिर भी सभी सुधारकों ने आराधना में विश्वासी के पुरोहितत्व का अनुकरण करने का प्रयास किया।

► धर्मसुधार आंदोलन में आराधना के कौन से पहलू आपकी आराधना के लिए लाभदायक हो सकते हैं? क्या आपको धर्मसुधार आंदोलन की आराधना में कोई ख़तरा नज़र आता है?

मुक्त कलीसियाओं में आराधना का एक चित्र

धर्मसुधार के बाद, कुछ कलीसियाओं ने राज्य के नियंत्रण को अस्वीकार कर दिया। इन कलीसियाओं, जिन्हें "मुक्त कलीसिया" कहा जाता था, में एनाबैप्टिस्ट, प्यूरिटन, नॉनकन्फ़र्मिस्ट, सेपरेटिस्ट और डिसेंटर्स शामिल थे। इनमें से कई ने निश्चित आंदोलन पद्धतियों और रीतियों को भी अस्वीकार कर दिया।

मुक्त कलीसिया आराधना की विशेषताएँ:

(1) प्रचार करना महत्वपूर्ण था।

(2) मण्डली की भागीदारी महत्वपूर्ण थी।

मण्डली की भागीदारी की प्रकृति एक कलीसिया से दूसरी कलीसिया की अलग-अलग थी।

- कुछ कलीसियाओं में मण्डली भजन गाती थी। अन्य कलीसियाओं में, सार्वजनिक आराधना में संगीत नहीं होता था।
- कुछ कलीसियाओं में मण्डली के सदस्य ऊँची आवाज़ में प्रार्थना करते थे। अन्य कलीसियाओं में पास्टर लोगों की ओर से प्रार्थना करते थे।

सामान्य विश्वासियों और धर्मगुरुओं के बीच बहुत कम अंतर था। अधिकांश मुक्त कलीसियाओं में धर्मगुरुओं के लिए कोई विशेष वस्त्र नहीं होते थे।

(3) सभी आराधनाएँ लोगों की भाषा में होती थीं।

1608 में एक प्रार्थना सभा की रूपरेखा में निम्नलिखित शामिल हैं (सभा चार घंटे तक चली):

- प्रार्थना
- पवित्रशास्त्र का पठन (1-2 अध्याय व्याख्या सहित)
- प्रार्थना

- उपदेश/प्रचार (एक घंटे या उससे अधिक का)
- आम लोगों द्वारा मौखिक योगदान
- प्रार्थना
- दान/भेंट अर्पण करना

आराधना में अब प्रभुभोज और पुरोहित का प्रभुत्व नहीं रहा। मुक्त कलीसियाओं की आराधना सभाएँ नए नियम के कलीसिया की आराधना जैसी ही लगती थीं।

आराधना के इस दृष्टिकोण में खतरे हैं। यद्यपि मुक्त कलीसियाएँ विश्वासी के पुरोहितत्व की शिक्षा देती थीं, व्यवहार में कभी-कभी उपदेशक, पुरोहित के स्थान पर आराधना के केंद्र बिंदु बन जाते थे। कुछ कलीसियाओं में, मण्डली की भागीदारी बहुत कम थी।

सम्भवत: मुक्त आराधना में सबसे बड़े खतरों में से एक अति व्यक्तिवाद का खतरा था। यदि विश्वासी के पुरोहितत्व के सिद्धांत के साथ कलीसिया की एकता का सिद्धांत नहीं है, तो कलीसिया आराधना में एकजुट मसीह की देह के बजाय व्यक्तियों का एक समूह बन जाता है। यह तब देखा जाता है जब आराधना केवल "यीशु और मेरे" के बारे में होती है, तथा चर्च को एक देह के रूप में देखने की भावना नहीं रहती।

► मुक्त कलीसियाओं में आराधना के कौन से पहलू आपकी आराधना के लिए लाभदायक हो सकते हैं? क्या आपको मुक्त कलीसियाओं की आराधना में कोई ख़तरा नज़र आता है?

वेस्लेयन बेदारी में आराधना का एक चित्र

जॉन वेस्ली एंग्लिकन कलीसिया से प्राप्त सामूहिक आराधना की परंपरा और एनाबैप्टिस्ट परंपरा के संपर्क से प्राप्त व्यक्तिगत आत्मिक अनुभव पर ज़ोर, दोनों से प्रभावित थे। ऐसे समय में जब एंग्लिकन आराधना मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक कलीसिया के खोखले कर्मकांडों का अनुसरण कर रही थी, वेस्ली और उनके अनुयायियों (जिन्हें मेथोडिस्ट कहा जाता है) ने आराधना की उस वास्तविकता को पुनर्जीवित किया जिसने आराधकों को परमेश्वर की उपस्थिति में ला दिया।

आरंभिक मेथोडिस्ट आराधना के मुख्य बिंदु:

1. **प्रवचन।** जॉन वेस्ले के प्रवचन प्रकाशित हुए और मेथोडिस्ट आराधकों के लिए सैद्धांतिक आधार बन गए।

मेथोडिज़्म और
18वीं शताब्दी की आराधना

मेथोडिज़्म का उदय 18वीं शताब्दी की आराधना में विफलताओं की प्रतिक्रियास्वरूप हुआ।
"जब संस्कार कलीसिया जीवन के हाशिये पर थे, आरंभिक मेथोडिज़्म ने उन्हें केंद्र में रखा; जब धार्मिक उत्साह का अपमान था, मेथोडिज़्म ने उत्साह को आवश्यक बनाया; जहाँ धर्म कलीसियाओं तक ही सीमित था, मेथोडिज़्म ने उसे खेतों और गलियों तक पहुँचाया।"
- रॉबर्ट वेबर में जेम्स व्हाइट
बीस शताब्दियों की मसीही आराधना

2. **नियमित प्रभु भोज।** जॉन वेस्ली औसतन सप्ताह में पाँच बार प्रभु-भोज ग्रहण करते थे। उन्होंने अपने अनुयायियों को सप्ताह में कम से कम एक बार प्रभु-भोज ग्रहण करने के लिए उत्साहित किया।

3. **भजन गाना।** चार्ल्स वेस्ले के भजनों ने मेथोडिस्ट सिद्धांत को ब्रिटिश द्वीपों से होते हुए नई दुनिया तक फैलाया।

4. **छोटे समूह।** कक्षा सभाएँ मेथोडिस्ट शिष्यत्व के लिए महत्वपूर्ण थीं।

5. **सामूहिक आराधना।** मेथोडिस्ट लोग अक्सर एक साथ मिलते थे, और कई एंग्लिकन पादरियों द्वारा मेथोडिस्टों को अस्वीकार करने के बाद भी, वेस्ले ने अपने अनुयायियों को एंग्लिकन आराधना में भाग लेने के लिए उत्साहित

6. **सुसमाचार प्रचार।** मेथोडिस्ट बेदारी के इंग्लैंड और अन्य स्थानों में फैलने के कारण हजारों नए लोग मसीह में शामिल हुए।

मेथोडिस्ट आराधना में परमेश्वर की महिमा करने वाले भजन, परिपक्व विश्वासियों का निर्माण करने वाली शिष्यता, तथा कलीसिया और जरूरतमंद लोगों दोनों के लिए सत्य की घोषणा करने वाला प्रवचन शामिल था।

► वेस्लीयन बेदारी में आराधना के कौन से पहलू आपकी आराधना के लिए लाभदायक हो सकते हैं? क्या आपको वेस्लीयन बेदारी की आराधना में कोई ख़तरा दिखाई देता है?

आरंभिक अमेरिका में आराधना का एक चित्र

अंग्रेज़ लोग सबसे पहले उस भूमि के पूर्वी तट पर बसे जिसे अब संयुक्त राज्य अमेरिका कहा जाता है। 1700 के दशक के उत्तरार्ध और उसके बाद, लोग ज़मीन ढूँढ़ने और घर बनाने के लिए पश्चिम में अविकसित क्षेत्रों की ओर बढ़ते रहे। जैसे-जैसे कलीसिया, स्कूल और कानून प्रवर्तन धीरे-धीरे विकसित हुए, लोगों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इतिहास में, धीरे-धीरे बसे इस क्षेत्र को अमेरिकी सीमांत क्षेत्र कहा जाता है।

अमेरिका के प्रारंभिक इतिहास में आराधना का अध्ययन करने का उद्देश्य अमेरिकी मॉडल को सभी आराधनाओं के लिए एक प्रतिमान के रूप में प्रस्तावित करना नहीं है, अपितु इसकी तुलना अन्य स्थानों पर नई कलीसियाओं में विकसित हो रही आराधना से करना है। कई देशों में नव स्थापित कलीसियाओं को भी इन्हीं चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

आरंभिक अमेरिका में आराधना की विशेषताएँ:

1. **संप्रदायों और आराधना के औपचारिक रूपों से स्वतंत्रता।** अमेरिकी सीमांत कलीसिया संप्रदायों के नियंत्रण से स्वतंत्र थे। वे अनुष्ठानों और आराधना के निश्चित क्रमों पर कम से कम ध्यान देते थे (यद्यपि जॉन वेस्ली ने उपनगरों में उपयोग के लिए अपनी आराधना पद्धति को अनुकूलित किया था)। कलीसिया की इमारतें और आराधना सभाएँ सरल और सादी थीं।

2. **प्रभु भोज के दुर्लभ अवसर।** इंग्लैंड में, वेस्ली दंपत्ति ने नियमित प्रभुभोज के महत्व पर ज़ोर दिया था। अमेरिकी सीमांत पर, नियुक्त पादरियों की कमी का अर्थ था कि विश्वासियों को प्रभु भोज का अभ्यास करने का बहुत कम अवसर मिलता था।

3. **वचन का प्रचार।** आराधना सभाओं में उपदेश पर ही मुख्य ज़ोर रहा। यहाँ तक कि अप्रशिक्षित प्रचारक भी वेस्ली दंपत्ति और अन्य पासबानों के उपदेश पढ़ते थे। कलीसिया का केंद्र बिंदु उपदेश मंच था, प्रभुभोज की मेज़ नहीं। मुख्य ज़ोर वचन के प्रचार पर था।

4. **उत्साहपूर्ण गायन।** गायन उत्साहपूर्ण था। अमेरिकी कलीसियाओं में चार्ल्स वेस्ली के भजनों को गवाही के सरल गीतों के साथ ऐसी शैली में गाया जाता था जिसे एक अशिक्षित मण्डली भी आसानी से सीख सकती थी।

5. **प्रार्थना, सुसमाचार प्रचार और बेदारी।** प्रार्थना अनौपचारिक थी और अक्सर आम लोगों द्वारा संचालित की जाती थी। सुसमाचार प्रचार महत्वपूर्ण था, और अमेरिका में बेदारी के दौर में हज़ारों लोग विश्वास में आए। प्रवचन के बाद आमतौर पर अपरिवर्तित लोगों को आगे आकर पश्चाताप की प्रार्थना करने का निमंत्रण दिया जाता था। जैसे-जैसे मसीही पवित्रता पर ज़ोर पूरे अमेरिका में फैला, इस निमंत्रण ने अविश्वासियों को विश्वास और विश्वासियों को पूर्ण समर्पण के लिए प्रेरित किया।

अन्य परंपराओं की तरह, इस आराधना में भी खूबियाँ और खतरे थे। खूबियों में व्यक्तिगत जुड़ाव और उत्साह शामिल था। खतरों में व्यक्तिगत अनुभव पर ज़ोर और सिद्धांतों पर कम ज़ोर शामिल था। सीमावर्ती क्षेत्रों में झूठी शिक्षाओं का फैलना आसान था क्योंकि इसमें जवाबदेही बहुत कम थी।

► अमेरिकी सीमांत क्षेत्र में आराधना के कौन से पहलू आपकी आराधना के लिए लाभदायक हो सकते हैं? क्या आपको अमेरिकी सीमांत क्षेत्र की कलीसिया की आराधना में कोई ख़तरा दिखाई देता है?

आराधना के खतरे: बदलती रीतिओं को अपरिवर्तनीय सिद्धांतों के साथ भ्रमित करना

हम अक्सर बदलती आराधना पद्धतियों को बाइबल आधारित आराधना के अपरिवर्तनीय सिद्धांतों के साथ भ्रमित करने के प्रलोभित हो जाते हैं। ज़रा निम्न बातों पर विचार करें:

- कुछ कलीसियाओं में, प्रार्थना करते समय आराधक विनम्रता दिखाने के लिए घुटनों के बल झुकते हैं। अन्य कलीसियाओं में, प्रार्थना करते समय आराधक पवित्र हाथ उठाते हैं।

- कुछ कलीसियाओं में, प्रार्थना के दौरान ऑर्गन धीमी आवाज़ में बजता है। अन्य कलीसियाओं में, पासबान द्वारा प्रार्थना की अगुआई करते समय मौन रखा जाता है। अन्य कलीसियाओं में, सभी लोग ऊँची आवाज़ में प्रार्थना करते हैं।

- कुछ कलीसियाओं में, ऊपर की स्क्रीन पर गीत लिखे दिखाई देते हैं। अन्य कलीसियाओं में, लोग भजन-पुस्तक से गाते हैं।

- कुछ कलीसियाओं में, पासबान अपने उपदेश की शुरुआत में बाइबल पढ़ते हैं। अन्य कलीसियाओं में, पासबान के संदेश देने से पहले एक आम व्यक्ति बाइबल पढ़ता है। अन्य कलीसियाओं में, दो या तीन बार बाइबल अंश पढ़े जाते हैं।

इनमें से कुछ भी ग़लत नहीं है; ये अभ्यास के विषय हैं, सिद्धांत के नहीं। हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि हमारा तरीका ही एकमात्र बाइबलीय तरीका है। सच्ची आराधना शैली का विषय नहीं है; यह परमेश्वर की उपस्थिति है।

कुछ सिद्धांत ऐसे हैं जो अपरिवर्तनीय हैं। हमने बाइबल में आराधना के पाठों में इन सिद्धांतों को देखा है। ये सिद्धांत वैकल्पिक नहीं हैं। मसीही होने के नाते, ये सिद्धांत हमें परमेश्वर के प्रति हमारे दृष्टिकोण में मार्गदर्शन करते हैं।

अगले कुछ पाठों में, हम आराधना के तरीकों पर विचार करेंगे। सिद्धांत नहीं बदलते; अलग-अलग स्थानों और समयों में तरीके अलग-अलग होते हैं। इसलिए, हमें उन लोगों के प्रति सहनशील होना चाहिए जो हमारी आराधना से अलग तरीके से आराधना करते हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि अभ्यास महत्वहीन है; बल्कि इसका अर्थ यह है कि सिद्धांतों की तुलना में अभ्यास के संबंध में अधिक लचीलापन होगा।

ओसवाल्ड चेम्बर्स ने हमारे जीवन में परमेश्वर के लिए जगह बनाने के बारे में लिखा है। यह आराधना पर लागू होता है:

> परमेश्वर के सेवक होने के नाते, हमें उनके लिए जगह बनाना सीखना चाहिए... हम योजना तो बनाते हैं, परन्तु परमेश्वर के लिए जगह बनाना भूल जाते हैं ताकि वह अपनी मर्ज़ी से आ सकें। क्या हमें आश्चर्य होगा यदि परमेश्वर हमारी सभाओं में या हमारे प्रचार में उस तरह आएँ जिसकी हमने कभी उम्मीद भी नहीं की थी? परमेश्वर के किसी खास तरीके से आने की उम्मीद मत कीजिए, परन्तु उनकी तलाश कीजिए। उनके लिए जगह बनाने का तरीका है कि आप उनके आने की आशा करें, परन्तु किसी खास तरीके से नहीं।...
>
> अपने जीवन को परमेश्वर के साथ इतना निरंतर जोड़े रखें कि उनकी अद्भुत शक्ति किसी भी मोड़ पर आपको प्रभावित कर सके। निरंतर आशा की स्थिति में जीवन व्यतीत करें, और परमेश्वर के लिए अपनी मर्ज़ी से आने की जगह छोड़ दें।[39]

निष्कर्ष: वर्तमान काल की आराधना का एक चित्र

21वीं शताब्दी में आराधना कैसी दिखाई देती है? यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका उत्तर सरलता से नहीं दिया जा सकता। 21वीं शताब्दी में आराधना कई अलग-अलग रूपों में होती है। कुछ कलीसिया अनुष्ठान और परंपरा को महत्व देती हैं; जबकि अन्य कलीसिया आराधना में व्यक्तिगत स्वतंत्रता के पक्ष में रीति को अस्वीकार करती हैं।

► आपकी कलीसिया में आराधना कैसी होती है? यदि आप किसी समूह में अध्ययन कर रहे हैं, तो अपने समूह की कलीसियाओं में आराधना के बीच अंतर और समानताओं पर चर्चा करें।

कोर्स के इस बिंदु पर, इस विवरण का उद्देश्य मूल्यांकन नहीं है। प्रश्न यह नहीं है कि, "हम सही हैं या गलत?" प्रश्न केवल यह है कि, "हम अपनी आराधना सभा में क्या करते हैं?"

---

[39] Oswald Chambers, *My Utmost for His Highest* (January 25 entry). Retrieved from https://utmost.org/leave-room-for-god/ on July 22, 2020.

इस विवरण के उद्देश्य का कारण निम्नलिखित पाठों की नींव रखना है। एक बार जब आपको यह पता चल जाए कि आप वर्तमान में आराधना में क्या करते हैं, तो आप पूछना शुरू कर सकते हैं, "हम जो करते हैं वह क्यों करते हैं?" और "हम इसे और बेहतर कैसे कर सकते हैं?"

आराधना के विषय निर्णय धार्मिक मान्यताओं को दर्शाते हैं। हमारी आराधना के तत्व दर्शाते हैं कि हम परमेश्वर के विषय क्या विश्वास करते हैं और हम उसके साथ कैसे संबंध रखते हैं; हमारी आराधना के तत्व दर्शाते हैं कि हम कलीसिया के विषय क्या विश्वास करते हैं और हम एक-दूसरे के साथ कैसे संबंध रखते हैं; हमारी आराधना के तत्व दर्शाते हैं कि हम खोए हुए लोगों के विषय क्या विश्वास करते हैं और आराधना उन तक कैसे पहुँच सकती है।

आइये एक उदाहरण लेते हैं – सामूहिक गायन।

- रोमन कैथोलिक कलीसिया में सामूहिक गायन का अभाव इस विश्वास को दर्शाता था कि आम लोग वचन (गाए गए वचन सहित) को नहीं समझ सकते। जिस प्रकार एक आम व्यक्ति को स्वयं वचन पढ़ने की अनुमति नहीं थी, उसी प्रकार एक आम व्यक्ति को आराधना के गीत गाने की भी अनुमति नहीं थी। आराधना एक पादरी द्वारा की जाती थी।
- धर्मसुधार आंदोलन में सामूहिक गायन पर ज़ोर लूथर के इस विश्वास को दर्शाता था कि प्रत्येक मसीही मसीह की देह के अंग के रूप में आराधना कर सकता है।
- भजनों के अलावा अन्य भजनों की अनुमति देने से केल्विन का इनकार उनके इस विश्वास को दर्शाता था कि आराधना में केवल परमेश्वर का वचन ही स्वीकार्य है।
- सामूहिक गायन और भजनों के माध्यम से सिद्धांत सिखाने पर मेथोडिस्टों का ज़ोर वेस्ली के इस विश्वास को दर्शाता था कि प्रत्येक विश्वासी को गाना चाहिए और हम जो गाते हैं उसका हमारे विश्वास पर प्रभाव पड़ता है।
- सीमांत गायन की सरलता मेथोडिस्टों के इस विश्वास को दर्शाती थी कि उद्धार सभी लोगों के लिए है। इसी विश्वास के कारण, उन्होंने सभी को उत्साहपूर्वक गायन में शामिल किया।

जैसे-जैसे हम इस कोर्स को आगे बढ़ाएँगे, हम आराधना के कई पहलुओं पर विचार करेंगे। आराधना के विषय आपका पहला प्रश्न शायद यह होगा, "क्या मुझे यह पसंद है?" यह महत्वपूर्ण प्रश्न नहीं है। ज़्यादा महत्वपूर्ण यह है, "मेरी आराधना मेरे विश्वास के बारे में क्या कहती है? क्या यह परमेश्वर और उसके साथ मनुष्य के रिश्ते की सही समझ दर्शाती है?"

हमारी आराधना हमारे विश्वास को आकार देती है, परन्तु इसका विपरीत भी सत्य है: हमारे विश्वास हमारी आराधना के तरीके को आकार देते हैं।

पाठ 5 की समीक्षा

(1) आरम्भिक कलीसिया मे:

- आराधना अनौपचारिक और घनिष्ठ थी।
- आराधना में आम लोगों की भागीदारी पर ज़ोर दिया गया।
- आराधना में जीवन का हर पहलू शामिल था।

(2) मध्य युग की आराधना में:

- आत्मिकता की तुलना में सुंदरता को अधिक महत्व दिया गया।
- लोग सभाओं को समझ नहीं पाते थे।
- कलीसिया केवल मूक-दर्शक थी, सक्रिय आराधक नहीं।
- सुसमाचार का स्थान परंपरागत रीतियों ने ले लिया।

(3) सुधार आन्दोलन में:

- आराधना विश्वासी के पुरोहितत्व को प्रदर्शित करती थी।
- आराधना लोगों की भाषा में होती थी।
- लूथर केल्विन और प्यूरिटन आराधना में रीति-तिवाज की भूमिका पर असहमत थे।

(4) सुधार के बाद मुक्त कलीसियाओं में:

- प्रचार करना महत्वपूर्ण था।
- मण्डली की भागीदारी महत्वपूर्ण थी।
- सभी आराधनाएँ लोगों की भाषा में होती थीं।

(5) आरंभिक मेथोडिस्ट आराधना की विशेषता थी:

- प्रवचन पर ज़ोर
- नियमित प्रभु भोज पर ज़ोर
- भजन गाना पर ज़ोर
- छोटे समूह पर ज़ोर
- सामूहिक आराधना पर ज़ोर
- सुसमाचार प्रचार पर ज़ोर

(6) आरम्भिक अमेरिका में आराधना:

- व्यक्तिगत सहभागिता और सुसमाचार प्रचार के प्रति उत्साह को बढ़ावा दिया
- कभी-कभी सैद्धांतिक निष्ठा की कीमत पर व्यक्तिगत अनुभव पर ज़ोर दिया जाता था

(7) आज हमारी आराधना परमेश्वर के विषय हमारी धारणाओं और उसके साथ हमारे संबंधों को प्रतिबिम्बित करती है।

पाठ 5 के कार्य

(1) जस्टिन मार्टियर ने दूसरी शताब्दी की कलीसिया की आराधना का वर्णन कुछ अनुच्छेदों में किया था। वह किसी ऐसे व्यक्ति को लिख रहे थे जिसने कभी मसीही आराधना सभा नहीं देखी थी। अपनी आराधना सभा का वर्णन किसी ऐसे व्यक्ति को करने के लिए 2-3 अनुच्छेद लिखें जिसने कभी मसीही कलीसिया में भाग नहीं लिया हो। ध्यान से विचार करें कि आपकी आराधना में सबसे महत्वपूर्ण क्या है। आप अपनी आराधना सभाओं को किस तरह समझा सकते हैं जिससे मसीही आराधना का मूल भाव स्पष्ट हो?

यदि आप किसी समूह में अध्ययन कर रहे हैं, तो अपनी अगली कक्षा में समूह के प्रत्येक सदस्य के उत्तरों पर विचार विमर्श करें।

(2) अगले पाठ के आरम्भ में, आप इस पाठ पर आधारित एक परीक्षा देंगे। तैयारी के लिए परीक्षा के प्रश्नों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें।

पाठ 5 परीक्षा

(1) जस्टिन मार्टियर द्वारा वर्णित दूसरी शताब्दी की आराधना के तीन तत्वों की सूची बनाएँ।

(2) मध्य युग में आराधना की तीन कमजोरियाँ बताइए।

(3) विश्वासियों के पुरोहिताई से संबंधित धर्मसुधार की दो मुख्य चिंताएँ क्या थीं?

(4) सुधार आंदोलन में उस समूह (समूहों) की पहचान करें जो प्रत्येक विवरण से सबसे अच्छी तरह मेल खाता हो।

- बाइबल में निषिद्ध न की गई किसी भी आराधना पद्धति की अनुमति: _____
- ऐसी किसी भी आराधना पद्धति को अस्वीकार कर दिया जिसका बाइबल में विशेष रूप से उल्लेख नहीं किया है: _____ _____
- अधिकांश रीति-रिवाजों को अस्वीकार कर दिया। कभी-कभी केवल निजी घरों में ही आराधना करते थे: _____

(5) मुक्त-चर्च आराधना की तीन विशेषताओं की सूची बनाएँ।

(6) आरंभिक मेथोडिस्ट आराधना के तीन प्रमुख पहलुओं की सूची बनाएँ।

(7) आरंभिक अमेरिका में आराधना की तीन विशेषताएँ बताइए।

(8) याद किया हुआ भजन संहिता 100:1-5 लिखें।

पाठ 6

आराधना में संगीत

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अन्त होने तक विद्यार्थी को नीचे दिए गए कार्य करने के योग्य होना चाहिए:

(1) आराधना में संगीत के लिए बाइबल आधारित, धार्मिक और व्यावहारिक कारणों को पहचानना।

(2) यह समझना कि संगीत मन, हृदय, शरीर और इच्छाशक्ति से जुड़ता है।

(3) आराधना में संगीत के चुनाव में मार्गदर्शन देने वाले बाइबल आधारित सिद्धांतों के प्रति समर्पित रहना।

(4) आराधना में संगीत से संबंधित व्यावहारिक प्रश्नों पर बाइबल आधारित सिद्धांतों को लागू करना।

इस पाठ की तैयारी

कण्ठस्थ करें कुलुस्सियों 3:15-17।

भूमिका

अमित अपनी कलीसिया में पासबान के पद से त्याग-पत्र देना चाहता है। वह मेथोडिस्ट कलीसिया में बड़े उत्साह और उम्मीद के साथ पहुँचा था। उसे अध्ययन और प्रवचन तैयार करने का शौक़ है। उन्हें लोगों से मिलना और दुःखी लोगों को सांत्वना देना अच्छा लगता है। अविश्वासियों के साथ सुसमाचार बाँटने का अवसर पाकर वह बहुत खुश हैं। उनकी कलीसिया के सदस्यों को उनके प्रवचन बहुत पसंद हैं। नए लोग आ रहे हैं। एक पासबान के तौर पर अमित को उत्साहित होना चाहिए। परन्तु कुछ तो गड़बड़ है। आखिरकार यह सब संगीत को लेकर होने वाले विवाद पर आकर ठहर जाता है।

हर सोमवार सुबह, संजय कलीसिया के कार्यालय में फ़ोन करता है। " पासबान जी, कल का संगीत बहुत बुरा था! आखिरी गाना तो मुझे बिलकुल भी नहीं आता था। कीबोर्ड बहुत तेज़ था। मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता। आपको इस कलीसिया के संगीत के बारे में कुछ करना होगा!"

फिर हर मंगलवार, अमित अपने संगीत निर्देशक, अनिल से मिलते हैं। अनिल की एक अलग शिकायत होती है। " पासबान जी, हम अब भी इतने पुराने भजन क्यों गा रहे हैं? गायक मंडली इन गीतों से थक गई है। रविवार को हमने दो पुराने भजन और सिर्फ़ एक नया गीत गाया। हम इन भजनों से छुटकारा क्यों नहीं पा सकते? सभी बड़ी कलीसिया बदल गई हैं। कृपया मुझे संगीत बदलने दीजिए!"

मंगलवार की रात तक, अमित का मन कर रहा था कि वह कलीसिया छोड़ दे। मेथोडिस्ट कलीसिया का एक हिस्सा पुराने भजनों से प्यार करता है; हर बार जब कोई नया गीत आता है तो वे शिकायत करते हैं। मेथोडिस्ट कलीसिया का एक हिस्सा पुराने भजनों को पसंद नहीं करता; वे सिर्फ़ स्तुति और आराधना के गीत ही गाना चाहते हैं। अमित को कोई समाधान नहीं मिल रहा।

► आप पास्टर अमित को क्या सलाह दे सकते हैं? उनकी कलीसिया का संगीत उनकी मंडली के हर समूह को कैसे संदेश दे सकता है?

आराधना में संगीत के महत्वपूर्ण होने के कारण

कलीसिया में संगीत के विषय एक साक्षात्कार में, एक पासबान ने कहा, "हमें आराधना में संगीत की ज़रूरत नहीं है। यदि मैं परमेश्वर के वचन का प्रभावी ढंग से प्रचार करूँ, तो गायन ज़रूरी नहीं है।" इस पास्टर को आराधना में संगीत का कोई महत्व नज़र नहीं आया।

► आप इस पासबान को क्या उत्तर देंगे? हमारी आराधना में संगीत क्यों ज़रूरी है?

मसीही लोग गानेवाले लोग हैं। मुसलमान गायन के लिए इकट्ठा नहीं होते। बौद्ध गायन के लिए इकट्ठा नहीं होते। हिंदू गायन के लिए इकट्ठा नहीं होते। मसीही गायन के लिए इकट्ठा होते हैं। हर मसीही उपदेश नहीं देता, प्रार्थना में अगुवाई नहीं करता, या सार्वजनिक रूप से बाइबल नहीं पढ़ता। सभी मसीही गायन कर सकते हैं और उन्हें ऐसा करना भी चाहिए। मसीही आराधना में संगीत के महत्व के कुछ कारण यहां दिए गए हैं।

आराधना में संगीत का एक बाइबलीय कारण

आराधना में संगीत का महत्व है क्योंकि बाइबल में भी संगीत का महत्व है। बाइबल के वचनों में गायन और संगीत के लगभग 600 संदर्भ हैं। बाइबल की 44 पुस्तकों में संगीत का उल्लेख है।

विभिन्न प्रकार की घटनाओं से संबंधित बाइबल आधारित गीत:

- इस्राएल ने फिरौन की सेना पर विजय के लिए परमेश्वर की स्तुति की (निर्गमन 15)।
- दबोरा की याबीन पर विजय के बाद इस्राएल ने परमेश्वर की स्तुति की (न्यायियों 5)।
- गायकों ने मंदिर के समर्पण के समय आराधना की (2 इतिहास 5:11-14)।
- गायकों ने मंदिर के पुनर्निर्माण के समय आराधना की अगुआई की (एज्रा 3:10-12)।
- भजन संहिता की पुस्तक यहूदी और मसीही आराधना के लिए भजनों का एक संग्रह है।
- यीशु और शिष्यों ने अंतिम भोज के समय एक भजन गाया (मत्ती 26:30)।
- पौलुस और सीलास ने जेल में स्तुति गाई (प्रेरितों 16:22-25)।
- यूहन्ना ने देखा कि गायन स्वर्ग में आराधना का एक हिस्सा है (प्रकाशितवाक्य अध्याय 4 और 5)।

आराधना में संगीत के लिए धर्मशास्त्रीय कारण

यहूदी आराधक आराधना करते समय गीत गाते थे। प्रारंभिक मसीही हृदय में प्रभु के प्रति कृतज्ञता के साथ गाते थे (कुलुस्सियों 3:16)। संगीत मसीही आराधना का एक महत्वपूर्ण अंग था।

दुख की बात है कि मध्य युग में, आराधना में संगीत की भूमिका बदल गई। कलीसियाओं ने मण्डली को भजन गाने की अनुमति बहुत कम दी। इसके बजाय, मण्डली प्रशिक्षित गायक मंडलियों द्वारा जटिल स्तुति गाते हुए देखती और सुनती थी।

मार्टिन लूथर ने आराधना संगीत को कलीसिया में वापस लौटाया। कलीसिया संगीत, **विश्वासी के पुरोहितत्व** के धार्मिक सिद्धांत को व्यक्त करता है। इस सिद्धांत ने सिखाया कि प्रत्येक मसीही सीधे परमेश्वर के पास आ सकता है; हमें मध्यस्थ के रूप में किसी पुरोहित की आवश्यकता नहीं है। इसका अर्थ है कि प्रत्येक विश्वासी के पास निम्नलिखित विशेषाधिकार और ज़िम्मेदारियाँ हैं:

- परमेश्वर से सीधे प्रार्थना करना।
- परमेश्वर को उसके वचन के द्वारा बोलते हुए सुनना।
- आराधना में गाना।

मार्टिन लूथर ने बाइबल पढ़ने और गायन के बीच एक संबंध देखा। उन्होंने कहा, "परमेश्वर बाइबल के वचनों के द्वारा अपने लोगों से सीधे बात करे, और उसके लोग कृतज्ञतापूर्वक स्तुति के गीतों के साथ उसका उत्तर दें।"[40]

संगीत द्वारा व्यक्त दूसरा धार्मिक सिद्धांत **कलीसिया की एकता** है। गायन के अधिकांश बाइबल आधारित संदर्भ सामूहिक गायन, अर्थात सभी लोगों का गायन हैं। पौलुस ने प्रारंभिक मसीहियों को गीत गाकर एक-दूसरे को सिखाने और चेतावनी देने का आदेश दिया था (कुलुस्सियों 3:16)। जब कलीसिया एक साथ गाती है, तो हम कलीसिया की एकता को व्यक्त करते हैं।

आराधना के खतरे: सामूहिक गीत का नुकसान

आइज़ैक वॉट्स के महान भजन में कहा गया है,

> "जो लोग हमारे परमेश्वर को कभी नहीं जानते, वे गाने से इनकार करें।
>
> परन्तु स्वर्गीय राजा की संतानें अपनी खुशियाँ दूसरों तक पहुँचाएँ!"[41]

---

[40] David Jeremiah, *Worship* (CA: Turning Point Outreach, 1995), 52 में वर्णन किया गया है।

[41] इस पुस्तक के लिए अनुवाद किया गया. Isaac Watts, "We're Marching to Zion." 12 जनवरी 2023 को लिया गया. https://library.timelesstruths.org/music/Were_Marching_to_Zion/

मार्टिन लूथर ने कहा, "यदि कोई मसीह ने हमारे लिए जो किया है उसके बारे में नहीं गाता और बात नहीं करता, तो वह दिखाता है कि वह वास्तव में विश्वास नहीं करता।"[42] मध्य युग में लुप्त हो चुके सामूहिक गायन के विशेषाधिकार को सुधारकों ने पुनः स्थापित किया। उनका मानना था कि गायन द्वारा आराधना मण्डली की अपनी आराधना है। दुख की बात है कि कई कलीसियाओं में यह विशेषाधिकार फिर से लुप्त होता जा रहा है।

विश्वासी के पुरोहितत्व की संगीतमय अभिव्यक्ति उस संगीत से ख़तरे में है जो सामान्य गायक की पहुँच से बाहर है। ऐसा तब होता है जब प्रशिक्षित गायक मंडलियाँ ऐसा संगीत गाती हैं जो ज़्यादातर लोगों के लिए बहुत कठिन होता है। ऐसा तब होता है जब स्तुति समूह नए गीत गाते हैं जिन्हें बहुत कम लोग सीख पाते हैं। हमें कभी भी छोटे समूहों को सामूहिक गीतों की जगह लेने की अनुमति नहीं देनी चाहिए।

कलीसिया की एकता की संगीतमय अभिव्यक्ति उन कलीसियाओं में ख़तरे में है जो कलीसिया को अलग-अलग आराधना शैलियों या पीढ़ीगत अंतरों के आधार पर अलग-अलग सभाओं में विभाजित करती हैं। कलीसिया को एक देह के रूप में देखना मुश्किल है जब कलीसिया के वृद्ध सदस्य कभी भी युवा सदस्यों को नहीं देखते।

इफिसियों की कलीसिया को दिए गए पौलुस के निर्देशों की कल्पना कीजिए, जिनका कुछ आधुनिक कलीसियाओं के लिए पुनः अनुवाद किया गया है:

- भजन गाने वाले रविवार को सुबह 8:30 बजे मिलेंगे।
- पुराने भजन गाने वाले रविवार को सुबह 11:00 बजे मिलेंगे।
- आत्मिक गीत गाने वाले शनिवार को शाम 7:00 बजे मिलेंगे।

नहीं! पौलुस सभी कलीसिया सदस्यों से बात कर रहा था जब उसने उनसे आत्मा से परिपूर्ण होने का आग्रह किया, एक दूसरे को भजन, स्तुति और आत्मिक गीतों से संबोधित करते हुए, प्रभु के लिए गीत गाते और भजन गाते हुए। (इफिसियों 5:18-19)।

व्यवहार में, इसका अर्थ यह है कि मसीह की देह का प्रत्येक अंग देह की एकता के लिए अपनी कुछ प्राथमिकताओं का त्याग करता है। एक किशोर एक भजन गाता है जिसकी धुन बहुत रोमांचक नहीं है। क्यों? क्योंकि वह देह का एक अंग है, और देह एक पुराना भजन गा रही है। एक वृद्ध संत एक नए स्तुति गीत में शामिल होता है जिसका उसे आनंद नहीं आता। क्यों? क्योंकि वह देह का एक अंग है, और देह एक नया गीत गा रही है।

एक छोटी सी ग्रामीण कलीसिया में एक प्रशिक्षित संगीतकार ऐसे गीत गाता है जो संगीत की दृष्टि से चुनौतीपूर्ण नहीं हैं। क्यों? क्योंकि वह देह का एक अंग है, और देह में ऐसे सदस्य शामिल हैं जो महान संगीत की सराहना नहीं करते हैं। एक अप्रशिक्षित कलीसिया

---

[42] Ronald Allen and Gordon Borror, *Worship: Rediscovering the Missing Jewel* (Colorado Springs: Multnomah Publishers, 1982), 165 में वर्णन किया गया है।

सदस्य एक ऐसे गीत के अंत में "आमीन" कह सकता है जिसे ऐसी शैली में गाया जाता है जिसकी वह पूरी तरह सराहना नहीं करता है। क्यों? क्योंकि वह देह का एक अंग है, और देह में ऐसे सदस्य शामिल हैं जो उसकी समझ से परे संगीत गाते हैं।

यह सिद्धांत संगीत से भी आगे जाता है। एक पास्टर अपने प्रवचन को बच्चों और नए विश्वासियों के लिए समझने योग्य बनाने के लिए सरल बनाता है। नए विश्वासी ऐसे प्रवचन को समझने के लिए अध्ययन करते हैं जो बाइबल के उनके सीमित ज्ञान को बढ़ाता है।

किशोर एक ऐसी सभा में बैठते हैं जो बहुत लंबी लगती है। क्यों? क्योंकि वे देह का हिस्सा हैं और जानते हैं कि सभा के कुछ पहलू उनकी समझ से परे हो सकते हैं। वृद्ध संत उस शिशु का स्वागत करते हैं जो सभा में ज़ोर से रोता है। क्यों? क्योंकि वे देह का हिस्सा हैं, और वे इस बात पर प्रसन्न होते हैं कि देह में युवा, शोरगुल वाला जीवन शामिल है।

क्या यह आराधना का हिस्सा है? “बिल्कुल! आराधना के बाइबल आधारित समझ में कलीसिया की एकता के प्रति सराहना शामिल है।” इसका अर्थ है देह की खातिर व्यक्तिगत प्राथमिकताओं को त्यागना। इसका अर्थ है ऐसा गीत गाना जो आपको पसंद न हो। अगुओं के लिए, इसका अर्थ है ऐसे गीतों का चयन करना जो देह के सभी अंगों की सेवा करें, न कि केवल पसंदीदा भजनों की। कलीसिया के गीतों को पूरे कलीसिया की सेवा करनी चाहिए, न कि सीमित समूहों की।

► पिछले चार सप्ताह में आपने आराधना में जिस संगीत का इस्तेमाल किया है, उसके बारे में सोचिए। क्या आपने ऐसे गीत गाए जो आपकी कलीसिया के हर सदस्य को प्रभावित करते हैं? एक अगुवे के तौर पर, क्या आपने स्वेच्छा से ऐसे गीत चुने हैं जो आपको पसंद नहीं हैं, परन्तु जो कलीसिया को प्रभावित करते हैं? क्या आपका संगीत कलीसिया के हर सदस्य की भागीदारी को प्रोत्साहित करके विश्वासी के पुरोहितत्व और कलीसिया की एकता को प्रदर्शित करता है?

आराधना में संगीत के महत्वपूर्ण होने के कारण (जारी है)

आराधना में संगीत के व्यावहारिक कारण

बाइबल आधारित और धर्मशास्त्रीय कारणों के साथ-साथ, आराधना में संगीत को महत्व देने के व्यावहारिक कारण भी हैं। संगीत की शक्ति हमारे अस्तित्व के सभी पहलुओं से जुड़ने की उसकी क्षमता से आती है।

संगीत मन से बात करता है।

स्कूल के शिक्षक जानते हैं कि व्याकरण के नियम को सरल धुन पर सुनाने से बच्चों के लिए उसे याद करना आसान हो जाता है। बाइबल के वचनों को गाने से सीखना आसान हो जाता है। कुछ लोग जो कहते हैं, "मुझे बाइबल याद नहीं आती", वे पहले से ही बाइबल के कई पद जानते हैं; वे उन्हें स्तुति-गीतों में गाते हैं। कुछ बेहतरीन स्तुति-गीत यादगार धुनों पर रचे गए बाइबल के पद होते हैं।

संगीत और मन से जुड़े दो सिद्धांत महत्वपूर्ण हैं।

(1) संगीत को केवल भावनाओं से ही नहीं, बल्कि मन से भी बात करनी चाहिए।

संगीत भावनात्मक होता है; यही इसकी शक्ति का एक हिस्सा है। संगीत की भावनात्मक शक्ति में कोई बुराई नहीं है, परन्तु संगीत को हमारे मन से भी बात करनी चाहिए।

कुछ आराधक सोचते हैं कि गाते समय वे अपना मन शांत कर सकते हैं। गिटार तेज़ है, ताल तेज़ है, संगीत भावनात्मक है, इसलिए वे मान लेते हैं कि वे आराधना कर रहे हैं। हमें पौलुस की यह बात कभी नहीं भूलनी चाहिए जो उसने कहा, "मैं आत्मा से गाऊँगा, और बुद्धि से भी गाऊँगा" (1 कुरिन्थियों 14:15)।

जब हमारा संगीत मन से बात किए बिना भावनाओं से बात करता है, तो हम झूठी आराधना के खतरे में पड़ जाते हैं। भावनाओं से बात करने वाले संगीत में कुछ भी गलत नहीं है; खतरा उस संगीत से है जो मन से बात किए बिना भावनाओं से बात करता है। बुद्धिमान पास्टर यह सुनिश्चित करेंगे कि आराधना संगीत मन की उपेक्षा न करे।

(2) जो संदेश हम गाते हैं वह सच्चा होना चाहिए।

संगीत मन से बात करता है। इसलिए गीत सिद्धांत सिखाने के लिए एक प्रभाशाली साधन हैं।

> विश्वासियों को गाना चाहिए: परमेश्वर के प्रति उनकी भक्ति को जगाने के लिए, उनके विश्वास को मजबूत करने के लिए, उनकी आशा को प्रेरित करने के लिए, और परमेश्वर तथा दूसरों के प्रति उनके प्रेम को बढ़ाने के लिए।
> - जॉन वेस्ली से लिया गया

18वीं शताब्दी में, परमेश्वर ने दो भाइयों, चार्ल्स और जॉन वेस्ली, को बाइबल की उन सच्चाइयों का प्रचार करने के लिए इस्तेमाल किया जिन्हें बहुत से लोगों को सुनने की ज़रूरत थी: सभी लोगों को पाप से बचाया जा सकता है, और सभी लोगों को उद्धार का व्यक्तिगत आश्वासन मिल सकता है। भाइयों ने इस सच्चाई को दो तरीकों से फैलाया: जॉन ने प्रचार में सच्चाई बताई जबकि चार्ल्स ने भजन लिखे जो सच्चाई की व्याख्या करते थे। उनके भजन किसी के लिए भी गाना आसान था क्योंकि उनका संगीत जटिल नहीं था। जो लोग चार्ल्स के भजन सुनते और गाते थे, वे परमेश्वर की सच्चाई को समझ और याद रख सकते थे, भले ही वे पढ़ नहीं सकते थे। आज हमारे गीतों को भी गायकों और श्रोताओं को ठोस बाइबल की सच्चाइयाँ सिखाने की ज़रूरत है।

पासबानों, यदि आप बाइबल के विरुद्ध गीतों को जगह देते हैं, तो आप अपनी सेवकाई की प्रभावशीलता को कमज़ोर करते हैं। लोग आपके प्रवचन की रूपरेखा भूलने के बहुत बाद तक भी गीत को याद रखेंगे। सभाओं के लिए संगीत की योजना बनाने में समय लगाएँ। सुनिश्चित करें कि गीत प्रवचन की सच्चाई का समर्थन करते।

दोबारा जाँच

क्या आपके आराधना गीत बाइबल के सिद्धांतों के अनुरूप हैं? कई कलीसियाएँ ऐसे गीत गाती हैं जो या तो भ्रम की शिक्षा देते हैं या कुछ भी नहीं सिखाते (शब्द खोखले हैं)। क्या आपके गीत पाप पर विजय की वास्तविकता सिखाते हैं? क्या आपके गीत यह सिखाते

हैं कि उद्धार सभी के लिए उपलब्ध है? क्या आपके गीत यह सिखाते हैं कि परमेश्वर प्रत्येक विश्वासी को एक शुद्ध हृदय देना चाहता है?

संगीत हृदय से बात करता है।

जोनाथन एडवर्ड्स ने कहा कि हमें परमेश्वर की स्तुति गाने की आज्ञा दी गई है क्योंकि गाना "हमारी भावनाओं को प्रभावित करता है"[43] भले ही भावनाओं पर सिर्फ़ अपनी भावनाओं पर ध्यान केंद्रित करना ख़तरनाक है, परन्तु भावनाएँ संगीत के प्रति एक सामान्य और सार्थक प्रतिक्रिया हैं। गायन सत्य के प्रति एक भावनात्मक प्रतिक्रिया लाता है। संगीत मन और हृदय, दोनों से बात करता है।

कुछ पश्चिमी मसीही ऐसे संगीत से डरते हैं जो भावनाओं को गहराई से छूता है, परन्तु बाइबल में जिन लोगों ने परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश किया, उन्होंने हमेशा एक भावनात्मक प्रतिक्रिया महसूस की। सर्वोत्तम आराधना संगीत मन से बात करता है और हृदय से प्रतिक्रिया की माँग करता है।

► अपनी भाषा में भजनों और कोरसों का संग्रह देखें। ऐसे किसी गीत का उदाहरण ढूँढ़ें जो परमेश्वर के प्रति समर्पण की व्यक्तिगत प्रार्थना के रूप में लिखा गया हो।

संगीत शरीर से बात करता है।

किसी संगीत समारोह में किसी बच्चे को देखिए; यदि संगीत में लय है, तो वह ज़रूर थिरकेगा। संगीत शरीर से बात करता है।

जो संगीत सिर्फ़ शरीर से बात करता है, वह कामुक होता है। जबकि, जब बाइबल आराधना की बात करती है, तो वह अक्सर आराधकों की शारीरिक मुद्रा का ज़िक्र करती है: उठे हुए हाथ, झुके हुए घुटने, साष्टांग प्रणाम और शारीरिक गति। हमारी मुद्रा और शारीरिक हाव-भाव कभी-कभी हमारे शब्दों से भी ज़्यादा प्रभावशाली ढंग से संवाद करते हैं।

भजन संहिता 149:3 में, इस्राएल को बुलाया गया है "नाचते हुए उसके नाम की स्तुति करें,और डफ और वीणा बजाते हुए उसका भजन गाएँ।" यद्यपि कुछ आधुनिक संस्कृतियाँ केवल कामुक गति के संदर्भ में ही नृत्य करती हैं, बाइबल आराधना में किसी भी शारीरिक गति का वर्णन करने के लिए नृत्य शब्द का प्रयोग करती है। भजनकार ने माना कि स्तुति में भौतिक शरीर भी शामिल होता है।

यह नाइट क्लब का कामुक नृत्य नहीं है, परन्तु यह औपचारिक बेंचों पर चुपचाप बैठने जैसा भी नहीं है। बाइबल के नृत्य में आराधना के गीतों के दौरान कुछ हद तक गति शामिल होती है। जब हम स्तुति में अपने हाथ उठाते हैं या संगीत के साथ किसी तरह से गति करते हैं, तो यह बाइबल के शब्द नृत्य के अनुरूप है।

---

[43] Bob Kauflin, *Worship Matters* (Wheaton: Crossway Books, 2008), 98 से संक्षिप्त अनुवाद

यद्यपि शारीरिक हाव-भाव का अर्थ संस्कृति दर संस्कृति और पीढ़ी दर पीढ़ी भिन्न होता है, फिर भी हमें कभी भी परमेश्वर की पवित्र आराधना को अपने आस-पास की संस्कृति की अपवित्र प्रथाओं के अनुरूप नहीं बनने देना चाहिए।

► निर्गमन 32 की समीक्षा उस आराधना के लिए करें जिसमें एक पवित्र तथाकथित "यहोवा के लिए पर्व" (32:5) को मिस्र की आराधना की अपवित्र छवियों (32:4) और मूर्तिपूजक संस्कृति की शर्मनाक प्रथाओं (32:25) के साथ जोड़ा गया है। हमारी आराधना को सुसमाचार प्रचार के माध्यम से आसपास की संस्कृति को प्रभावित करना चाहिए। आसपास की संस्कृति को हमारी आराधना प्रथाओं को निर्धारित नहीं करना चाहिए।

बुद्धिमान पासबान और अगुवे ऐसा संगीत खोजेंगे जो ना सिर्फ आराधना को अपवित्र करने से बचाता है, बल्कि पूरे व्यक्ति से बात भी करता है, जिससे मण्डली वास्तव में गीतों के माध्यम से आराधना कर पाती है।

दोबारा जाँच

क्या आपका आराधना संगीत शरीर से उस तरह बात करता है जो आराधना के लिए उपयुक्त है? क्या आपके आराधक अपनी स्तुति और आराधना को कामुक क्रियाओं से अपवित्र किए बिना शारीरिक रूप से व्यक्त करते हैं?

संगीत इच्छाशक्ति से बात करता है।

संगीत अक्सर इच्छा के द्वारा की जाने वाली प्रतिक्रिया की मांग करता है। पौलुस ने कुलुस्सियों को भजन, स्तुतिगान, और आत्मिक गीतों के माध्यम से एक-दूसरे को चिताने का आदेश दिया (कुलुस्सियों 3:16)। चिताने का अर्थ है किसी गलती को सुधारना है। फटकार प्रतिक्रिया की मांग करती है; सुधार किसी व्यक्ति से उसके व्यवहार में बदलाव करने की माँग करता है। पौलुस की आशा थी कि संगीत परिवर्तन का कारण बने। संगीत इच्छा को प्रतिक्रिया में बदलने की माँग करता है।

► अपनी भाषा में भजनों और कोरसों का संग्रह देखें। परमेश्वर के प्रति व्यक्तिगत समर्पण और वचनबद्धता के एक गीत का उदाहरण ढूँढ़ें।

आराधना में संगीत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह पूरे व्यक्ति से बात करता है। इसीलिए, संगीत मूल्यवान भी है और खतरनाक भी। यह मूल्यवान है क्योंकि यह सत्य को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर सकता है। यह खतरनाक भी है क्योंकि यह झूठी शिक्षाओं को आकर्षक बना सकता है। वॉरेन विर्सबे ने चेतावनी दी, "मुझे पूरा विश्वास है कि मण्डलियाँ अपने द्वारा गाए जाने वाले गीतों से ज़्यादा बाइबल (अच्छा और बुरा) सीखती हैं, बजाय उनके द्वारा सुने गए उपदेशों के... [संगीत] आत्मा के हाथों में एक अद्भुत उपकरण या शैतान के हाथों में एक भयानक हथियार बन सकता है। **भोले-भाले लोग यह समझने से पहले ही कि क्या हो रहा है, विधर्म के गीत गाकर अपनी राह बना लेते हैं।**"[44]

[44] Warren Wiersbe, *Real Worship* (Grand Rapids: Baker Books, 2000), 136. emphasis added

संगीत शक्तिशाली है; इसका बुद्धिमानी से उपयोग करें।

दोबारा जाँच

पिछले चार सप्ताह में आपने जो गाने गाए हैं, उनके बारे में सोचिए। क्या आपने ऐसे गाने गाए जो पूरे व्यक्तित्व को छू गए हों?

- एक ऐसे गीत का नाम बताइए जिसने आपकी कलीसिया को सिद्धांत सिखाया हो।
- एक ऐसे गीत का नाम बताइए जिसने आपकी कलीसिया की भावनाओं को गहराई से छुआ हो।
- एक ऐसे गीत का नाम बताइए जिसने आपकी कलीसिया को परमेश्वर के प्रति गहरे समर्पण के लिए प्रेरित किया।

आराधना के लिए संगीत चुनने के सिद्धांत

हमने इस पाठ का आरम्भ आराधना संगीत को लेकर संघर्ष की एक कहानी से किया था। यदि आप एक पासबान हैं और इस तरह के संघर्ष का सामना कर रहे हैं, तो जान लें कि यह कोई नई समस्या नहीं है! हर पीढ़ी में, चर्च को आराधना के लिए उपयुक्त संगीत का प्रकार निर्धारित करने में संघर्ष करना पड़ा है। कई चर्चों के लिए, संगीत सच्ची आराधना का साधन होने के बजाय संघर्ष का एक स्रोत बन गया है।

संगीत आराधना सभाओं का केंद्रबिंदु है। कई कलीसियाओं में, आधी सेवा संगीत से जुड़ी होती है: प्रस्तावना संगीत, सामूहिक गायन, विशेष गीत, उपसंहार, और प्रार्थना के दौरान मधुर संगीत। चूँकि आराधना में संगीत महत्वपूर्ण है, इसलिए संगीत को लेकर संघर्ष गंभीर हो जाता है।

लोगों की संगीत शैलियों के प्रति गहरी पसंद होती है। बहुत से लोग ऐसी संगीत शैलियों को बर्दाश्त नहीं करना चाहते जो उन्हें पसंद नहीं आतीं।

संघर्ष संगीत शैलियों की नैतिकता के बारे में मतभेदों से उत्पन्न होता है। यहाँ तीन सामान्य दृष्टिकोण दिए गए हैं:

1. कुछ लोग मानते हैं कि कुछ संगीत शैलियाँ बुरी होती हैं। वे उन संगीत शैलियों का उपयोग करना चुनते हैं जिन्हें वे शुद्ध मानते हैं।

2. कुछ लोग मानते हैं कि संगीत शैलियाँ अच्छी या बुरी नहीं हो सकतीं, इसलिए हर शैली स्वीकार्य है। ये लोग आमतौर पर आराधना के लिए सांस्कृतिक संगीत शैलियों का उपयोग करना चाहते हैं।

3. कुछ लोग मानते हैं कि संगीत शैलियाँ नैतिक रूप से अपक्षपाती होती हैं, फिर भी उनमें भावनात्मक और सांस्कृतिक जुड़ाव होते हैं जो आराधना के लिए उनकी उपयोगिता को प्रभावित करते हैं। ये लोग प्रत्येक शैली का मूल्यांकन यह विचार करने के लिए करते हैं कि क्या यह मण्डली को परमेश्वर का आदर करने वाले तरीके से आराधना करने में सहायता करेगी।

इस भाग में हम बाइबल के उन सिद्धांतों पर विचार करेंगे जो हमारी आराधना में संगीत के बारे में बताते हैं।

आराधना के गीत का शब्द-संदेश स्पष्ट रूप से सत्य को प्रकट करना चाहिए।

पवित्रशास्त्र का प्राथमिक ध्यान गीत के शब्द-संदेश के विषय-वस्तु पर होता है, न कि संगीत की शैली पर। संगीत शैली चाहे जो भी हो, झूठे संदेश (या बिना संदेश वाले) वाले गीत आराधना के लिए उपयुक्त नहीं हैं। वॉरेन विर्सबे चेतावनी देते हैं कि कई शब्द "अस्पष्ट और भावुक हैं, धर्मशास्त्रीय नहीं।"[45] हमारे संगीत के संदेश की एक परीक्षा यह है, "क्या कोई आस्तिक, हिंदू या मुसलमान इन गीतों के शब्दों को बदले बिना गा सकता है?" यदि आप गीत के संदेश को बदले बिना बुद्ध का नाम बदल सकते हैं, तो वह आराधना के लिए उपयुक्त नहीं है। यदि कोई गीत स्पष्ट रूप से सत्य नहीं कहता है, तो हमें आराधना में उसके महत्व पर प्रश्न-चिह्न लगाना चाहिए। हमारे गीतों को हमारी आस्था को व्यक्त करना चाहिए। यदि वे ऐसा नहीं करते हैं, तो हमारे गीत आराधकों को परमेश्वर की ओर नहीं ले जाएँगे।

बीस वर्षीय नियम

"यदि कोई बीस वर्ष तक हमारे गीत गाता रहे, तो वह परमेश्वर को कितनी अच्छी तरह जान पाएगा? क्या वह जान पाएगा कि परमेश्वर पवित्र, बुद्धिमान, सर्वशक्तिमान और सर्वोच्च है? क्या वह सुसमाचार की महिमा और उसकी महत्वता को समझ पाएगा?"

- बॉब कॉफलिन

वर्शिप मैटरज़

बाइबल से एक गीत सुनें:

> याह की स्तुति करो!
> यहोवा की स्तुति स्वर्ग में से करो;
> उसकी स्तुति ऊँचे स्थानों में करो!
> हे उसके सब दूतो, उसकी स्तुति करो;
> हे उसकी सबसेना उसकी स्तुति करो!
> हे सूर्य और चंद्रमा उसकी स्तुति करो,
> हे सब ज्योतिमय तारागण उसकी
> स्तुति करो! हे सबसे ऊँचे आकाश,
> और हे आकाश के ऊपरवाले जल,तुम दोनों उसकी स्तुति करो!
> वे यहोवा के नाम की स्तुति करें!
> क्योंकि उसी ने आज्ञा दी और ये सिरजे गए।
> और उसने उनको सदा सर्वदा के लिये स्थिर किया है... (भजन संहिता 148)।

[45] Warren Wiersbe, *Real Worship* (Grand Rapids: Baker Books, 2000), 137

इसकी तुलना हाल ही के एक लोकप्रिय गीत से करें:

"जब आप यीशु के नाम पर नाचते हैं तो नाचना ठीक है

जब आप प्रभु के लिए नाचते हैं तो नाचना ठीक है ..."[46]

कौन-सा गीत परमेश्वर के वचन का प्रचार करता है? पौलुस ने ऐसी आराधना के विरुद्ध चेतावनी दी जो समझ से परे हो। उसने कहा, "मैं आत्मा से गाऊँगा, और बुद्धि से भी गाऊँगा" (1 कुरिन्थियों 14:15)। हम पवित्रशास्त्र के गीतों का अध्ययन करते हैं, तो हम पाते हैं कि वे स्पष्टता से शिक्षा देते हैं। हमारे आराधना संगीत के शब्द में बाइबल आधारित सच्चाई को प्रकट होना चाहिए।

गीत मूल्यांकन प्रपत्र [47]

	कमज़ोर	**मध्यम**	**सशक्त**
क्या शब्द सैद्धांतिक रूप से सत्य है?			
क्या यह शब्द मसीही अनुभव के प्रति विश्वसनीय है?			
क्या मण्डली शब्दों को समझ पाएगी?			
क्या संगीत की शैली शब्दों के अनुरूप है?			
क्या यह धुन मण्डली के लिए गाना आसान है?			

दोबारा जाँच

क्या आपके आराधना गीत सचमुच बाइबल आधारित हैं? क्या कोई नया विश्वासी *आपकी कलीसिया* के गीतों में बाइबल के परमेश्वर को पहचान पाएगा?

---

[46] James Roberson, "Everybody Dance!" 10 जनवरी 2023 को लिया गया. https://genius.com/James-roberson-everybody-dance-lyrics

[47] Constance M. Cherry, *The Worship Architect.* (Grand Rapids: Baker Academic, 2010), 202-203 से लिया गया है।

आराधना संगीत की शैलियाँ भिन्न हो सकती हैं।

परमेश्वर अनंत विविधताओं का परमेश्वर है। उसने नए नियम में एक नहीं, बल्कि चार सुसमाचारों को प्रेरित किया। उसने प्रत्येक लेखक के अनोखे व्यक्तित्व के माध्यम से बात की। उसने मछलियों की हज़ारों प्रजातियाँ बनाईं, एक नहीं। उसने मानव आँख को अस्सी लाख रंगों में अंतर करने की क्षमता के साथ बनाया। सृष्टि अपनी विविधता और सुंदरता में परमेश्वर की महिमा को प्रदर्शित करती है। उसने अनोखे व्यक्तियों की रचना की, न कि केवल एक व्यक्तित्व प्रकार की। परमेश्वर अनंत विविधता प्रदर्शित करता है।

हमारे संगीत में उस परमेश्वर की रचनात्मक विविधता झलकनी चाहिए जिसकी हम आराधना करते हैं। कुलुस्सियों 3:16 में पौलुस ने तीन प्रकार के गीतों की सूची दी है जिनका उपयोग आराधना के लिए किया जाना चाहिए: भजन, स्तुतिगान, और आत्मिक गीत (इफिसियों 5:19 भी देखें)। पौलुस ने इन तीन शैलियों की परिभाषा नहीं दी। कई लेखकों ने इन्हें इस प्रकार परिभाषित किया है:

- *भजन* संभवतः भजन संहिता की पुस्तक का उल्लेख करती है।
- *स्तुतिगान* संभवतः मानव रचित गीत होते हैं। कई लेखक इस शब्द को परमेश्वर के लिए या परमेश्वर के विषय गाए जाने वाले गीतों तक सीमित रखते हैं। इसमें भजन संहिता के अलावा बाइबल के अन्य गीत भी शामिल हो सकते हैं।
- *आत्मिक गीत* को परिभाषित करना सबसे कठिन है। कुछ लेखक इन्हें अनौपचारिक गीत मानते हैं; जबकि अन्य आत्मिक गीतों को मसीही जीवन के विषय गीत और व्यक्तिगत गवाही के गीत मानते हैं।

परिभाषा चाहे जो भी हो, ये वचन दर्शाते हैं कि कलीसिया ने अपने आरंभिक दिनों से ही विभिन्न प्रकार के संगीत पर गाया।

वॉरेन विर्सबे प्रामाणिकता के सिद्धांत की बात करते हैं। वे लिखते हैं, "लोगों की सांस्कृतिक भिन्नताओं को प्रकट करती हुई, आराधना की अभिव्यक्तियाँ प्रामाणिक होनी चाहिए।"[48] प्रामाणिक आराधना प्रत्येक संस्कृति की भाषा में परमेश्वर के जीवंत वचन का उच्चारण करती है। प्रत्येक पीढ़ी में, मसीहियों ने अपनी संस्कृति की संगीत शैली में परमेश्वर की स्तुति के गीत लिखे हैं। हमें यह नहीं मान लेना चाहिए कि हमारी संस्कृति का संगीत ही एकमात्र प्रामाणिक पवित्र संगीत है। इसके बजाय, जब तक कोई शैली शास्त्र के स्पष्ट सिद्धांतों का खंडन न करे, हमें प्रत्येक संस्कृति और प्रत्येक पीढ़ी को अपनी भाषा में परमेश्वर की स्तुति करने की अनुमति देनी चाहिए।

दोबारा जाँच

क्या आपके चर्च का संगीत हमारे परमेश्वर की रचनात्मक विविधता को दर्शाता है?

---

[48] Warren Wiersbe, *Real Worship* (Grand Rapids: Baker Books, 2000), 139

प्रत्येक शैली प्रत्येक परिस्थिति के लिए उपयुक्त नहीं होती।

भले ही कई लोगों ने बाइबल की संगीत शैली को परिभाषित करने का प्रयास किया है, परन्तु बाइबल किसी विशेष संगीत शैली का निर्देश नहीं देती। संगीत शैलियों के पीछे के दर्शन का अध्ययन करने के बाद, फ्रांसिस शेफ़र ने लिखा, "मैं दृढ़ता से कहूँगा कि ईश्वरीय शैली जैसी कोई चीज़ नहीं होती..."[49]

संगीत की ध्वनियाँ नैतिक संदेश नहीं देतीं। संगीत का कोई भी राग न तो ईश्वरीय होता है और न ही अधार्मिक। क्या इसका मतलब यह है कि हर संगीत शैली आराधना के लिए उपयुक्त है? नहीं। कुछ शैलियाँ पापी संस्कृति से इतनी जुड़ी होती हैं कि वे आराधना में ईश्वरीय संदेश नहीं पहुँचा पातीं।

संगीतकारों और मिशनरियों ने एक ही बात पाई है: लोग संगीत की ध्वनियों पर अलग-अलग तरह से प्रतिक्रिया करते हैं। यदि दो लोग एक ही संगीत सुन रहे हैं, तो उनमें से एक उस गीत के प्रभाव के कारण रोने लग सकता है। हो सकता है कि दूसरे व्यक्ति को संगीत के प्रति कोई प्रतिक्रिया न मिले।[50]

आराधना संगीत की अंतिम परीक्षा यह नहीं हो सकती कि, "क्या मुझे यह पसंद है?" या "क्या यह मुझे प्रेरित करता है?" अंतिम परीक्षा परमेश्वर की महिमा है। इसका अर्थ है कि हमें यह मूल्यांकन करना चाहिए कि कोई संगीत शैली हमारे सांस्कृतिक संदर्भ में क्या संदेश देती है। हमें पूछना चाहिए, **"क्या मेरे सांस्कृतिक संदर्भ में यह संगीत शैली परमेश्वर की महिमा करती है?"**

चाहे सब कुछ उचित भी हो, फिर भी सब कुछ उन्नति नहीं करता (1 कुरिन्थियों 10:23)। यदि आराधना संगीत का एक लक्ष्य विश्वासियों को उत्साहित करना है, तो हम जिस शैली का उपयोग करते हैं, वह इस उद्देश्य में बाधा नहीं डालनी चाहिए। एक ही संगीत एक संस्कृति में आराधना में सहायक हो सकता है, और दूसरी संस्कृति में बाधा। एक सतर्क आराधना अगुआ ऐसा संगीत चुनेगा जो उसके अगुआई वाले लोगों के लिए उपयुक्त हो।

हम कैसे निर्धारित करें कि संगीत की कोई विशेष शैली उपयुक्त है या नहीं? एक अगुए के रूप में, आपकी ज़िम्मेदारी है कि आप अपने लोगों को अपनी सांस्कृतिक परिवेश में इस प्रश्न का उत्तर देने में सहायता करें। एक संस्कृति में जो उपयुक्त है, वह दूसरी संस्कृति में उपयुक्त नहीं भी हो सकता है। किसी विशेष शैली के धार्मिक अर्थों के कारण या क्योंकि कोई शैली आसपास की संस्कृति की पापपूर्ण प्रथाओं से जुड़ गई है, इसलिए कोई संगीत शैली आराधना के लिए उपयुक्त नहीं हो सकती है। आपको अपनी परिस्थिति के लिए संगीत की उपयुक्तता के आधार पर उसका मूल्यांकन करना चाहिए।

पौलुस ने हमें हर चीज़ को परखने और फिर जो अच्छा है उसे थामे रहने की आज्ञा दी है (1 थिस्सलुनीकियों 5:21)। हमें बिना परखे और सिद्ध किए किसी भी बात को स्वीकार नहीं करना चाहिए। इसमें वह संगीत भी शामिल होता है जो हम गाते हैं।

---

[49] Francis Schaeffer, *Art and the Bible* (Downers Grove: InterVarsity Press, 1973), 51

[50] Gerardo Marti, *Worship across the Racial Divide: Religious Music and the Multiracial Congregation*. (England: Oxford University Press, 2012)

दोबारा जाँच

क्या आप ऐसे गीत गाते हैं जो आपकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुकूल नहीं हैं? क्या संगीत **आपकी संस्कृति में** किसी कामुक या सांसारिक शैली का संचार करता है? क्या संगीत का संदेश शब्दों के संदेश के विपरीत है?

हमारे आराधना संगीत में संतुलन होना चाहिए।

भजन संहिता पुस्तक दर्शाती है कि परमेश्वर आराधना में विविधता को महत्व देता है। भजन संहिता पुस्तक में स्तुति, विलाप, सहायता के लिए पुकार और उद्धार के लिए धन्यवाद शामिल हैं। भजन संहिता सभी आराधकों की आराधना संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करती है।

कलीसिया में परिपक्वता का एक चिह्न विविधता है (1 कुरिन्थियों 12:4-6)। मसीह की देह में विभिन्न संस्कृतियाँ, विभिन्न भाषाएँ, विभिन्न व्यक्तित्व और विभिन्न वरदान शामिल हैं। हमारी आराधना, जिसमें हमारा संगीत भी शामिल है, इसको मसीह की देह के सभी सदस्यों से बात करनी चाहिए। वास्तव में, हमारी आराधना को कलीसिया से आगे बढ़कर अविश्वासियों तक सुसमाचार पहुँचाना चाहिए। बाइबल में गीत तीन प्रकार के श्रोताओं से बात करते हैं।[51]

संगीत को परमेश्वर की स्तुति प्रकट करनी चाहिए: "प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते" (इफिसियों 5:19)।

► भजन संहिता 92:1-4 पढ़ें।

भजन संहिता 92 दर्शाता है कि हम प्रभु के लिए गाते हैं। संगीत में परमेश्वर की स्तुति होनी चाहिए। निर्गमन 15 में वर्णित स्तुति गीत से लेकर प्रकाशितवाक्य में वर्णित स्वर्गीय गीतों तक, बाइबिल के गीत परमेश्वर की महानता के लिए उनकी स्तुति करते हैं। बाइबल में संगीत का मुख्य विषय स्तुति है। विलाप, विनती या स्तुति के भजन अक्सर परमेश्वर को संबोधित होते हैं।

भजन संहिता की पुस्तक में से गाओ और आप गाओगे:

- "मैंने परमेश्वर को पुकारा...।"
- "हे मेरे धर्ममय परमेश्वर, जब मैं पुकारूँ तब तू मुझे उत्तर दे!"
- "हे यहोवा परमेश्वर, मैं अपने पूर्ण मन से तेरा धन्यवाद करूँगा।"
- "मैं...यहोवा का गीत गाता रहूँगा।"
- "हे परमेश्वर... मैं तुझ से प्रेम करता हूँ।"

---

[51] यह यहाँ से लिया गया है Herbert Bateman, editor. *Authentic Worship* (Grand Rapids: Kregel Publications, 2002), 150-155.

संगीत को कलीसिया के सामने सत्य को घोषित करना चाहिए: "एक दूसरे को सिखाओ और चिताओ" (कुलुस्सियों 3:16)।

कई आराधना अगुओं ने कहा है, "हमें दूसरे श्रोताओं के लिए नहीं गाना चाहिए; हमें सिर्फ़ परमेश्वर के लिए गाना चाहिए।" भले ही, कई भजन संहिता इस्राएल के लिए गाए गए हैं। जबकि यह सच है कि कई बाइबल आधारित गीत परमेश्वर से बात करते हैं, यह भी सच है कि कई बाइबल आधारित गीत मण्डली से बात करते हैं।

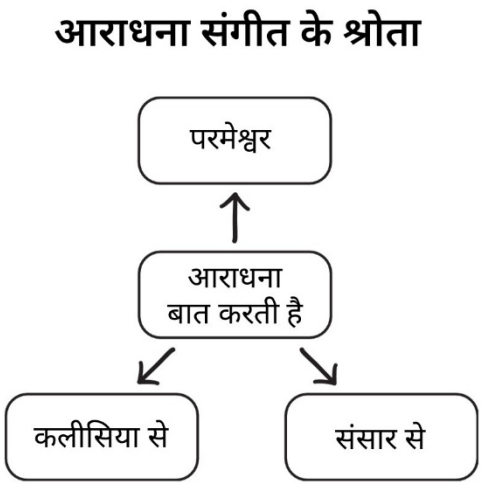

इफिसियों 5:19 विश्वासियों **को एक दूसरे** से भजन, स्तुतिगान, और आत्मिक गीत में बात करने का निर्देश देता है। कुलुस्सियों 3:16 हमारे गायन के उद्देश्य के बारे में अधिक स्पष्ट है: "मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो, और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ और चिताओ, और अपने अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिये भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ।"

पौलुस बताते हैं कि मसीह का वचन कलीसिया के गायन के माध्यम से प्रचारित होता है। जब हम गाते हैं, तो हम अपने साथी आराधकों को परमेश्वर के सत्य को बताते हैं। गीतों के माध्यम से, कलीसिया एक-दूसरे को सिखाती है। गीतों के माध्यम से, विश्वासियों का निर्माण होता है और मसीह की देह की उन्नति होती है।

संगीत को संसार के सामने सुसमाचार को घोषित करना चाहिए: "अन्य जातियों में उसकी महिमा का...वर्णन करो..." (भजन संहिता 96:3)।

भजनकार ने हमें जातियों के लिए गवाही के रूप में गाने के लिए बुलाया:

> यहोवा के लिये एक नया गीत गाओ, हे सारी पृथ्वी के लोगो, यहोवा के लिये गाओ! यहोवा के लिये गाओ, उसके नाम को धन्य कहो; दिन प्रतिदिन उसके किए हुए उद्धार का शुभसमाचार सुनाते रहो। अन्य जातियों में उसकी महिमा का, और देश देश के लोगों में उसके आश्चर्यकर्मों का वर्णन करो।(भजन संहिता 96:1-3)।

► 1 राजाओं 8:41-43 पढ़ें।

जब परमेश्वर की स्तुति की जाती है, तो सुसमाचार जातिओं में घोषित किया जाता है। मंदिर के समर्पण के समय, सुलैमान ने प्रार्थना की कि पराए लोग भी मंदिर में आराधना करें; उसने प्रार्थना की कि प्रभु का नाम पृथ्वी के सभी लोगों को ज्ञात हो। जब हम आराधना करते हैं, तो सुसमाचार एक देख रहे संसार में घोषित किया जाता है।

हमारे आराधना संगीत को परमेश्वर से और परमेश्वर के विषय बात करनी चाहिए; हमारे आराधना संगीत को कलीसिया से बात करनी चाहिए; हमारे आराधना संगीत को संसार में सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए।

जब हम इनमें से किसी एक श्रोता को भूल जाते हैं, तो हमारी आराधना कलीसिया के लिए परमेश्वर के पूर्ण उद्देश्य को प्राप्त करने में विफल हो जाती है। जब हम भूल जाते हैं कि परमेश्वर ही आराधना के लिए अंतिम श्रोता हैं, तो हमारी आराधना मुख्य रूप से परमेश्वर से बात करने में विफल हो जाती है। जब हम भूल जाते हैं कि कलीसिया आराधना के लिए एक श्रोता है, तो हम आराधना में एक-दूसरे को सिखाने और चेतावनी देने में विफल हो जाते हैं। जब हम भूल जाते हैं कि आराधना को संसार में सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए, तो हम सुसमाचार प्रचार करने और महान आदेश को पूरा करने में विफल हो जाते हैं।

दोबारा जाँच

क्या आप अपने गीतों में परमेश्वर से, कलीसिया से, और अविश्वासियों से बात करते हैं? हर गीत इनमें से हर एक से बात नहीं करता; परन्तु पूरी सभा के दौरान, हमें इनमें से हर एक श्रोता से बात करनी चाहिए।

इसे व्यवहार में लाना

हमने देखा है कि आराधना में संगीत क्यों महत्वपूर्ण है। हमने आराधना में संगीत के लिए बाइबल आधारित सिद्धांतों की जाँच की है। हम इस **पाठ** का समापन आराधना में संगीत के व्यावहारिक विचारों पर विचार करके करेंगे। आप इन्हें अपनी कलीसिया और चर्च की परिस्थितियों के अनुसार ढाल सकते हैं।

ऊपर सूचीबद्ध सिद्धांतों के उत्तर में, एक छात्र ने पूछा, "यदि आराधना संगीत की शैलियाँ भिन्न हैं और यदि संगीत शैलियाँ स्वाभाविक रूप से अच्छी या बुरी नहीं हैं, तो क्या ऐसे कोई दिशानिर्देश हैं जो हमें अपने चर्च के लिए संगीत चुनने में मदद कर सकते हैं?"

हाँ, कुछ व्यावहारिक दिशानिर्देश हैं जो हमारी मदद कर सकते हैं। आपको यह तय करना होगा कि इन्हें अपनी विशिष्ट परिस्थिति में कैसे लागू किया जाए, परन्तु कलीसिया संगीत के बारे में हमारे निर्णयों का मार्गदर्शन कुछ बुनियादी सिद्धांतों से होना चाहिए।

कलीसिया का सबसे महत्वपूर्ण संगीत सामूहिक गायन है।

क्योंकि कलीसिया का संगीत कलीसिया की एकता और विश्वासियों के पुरोहितत्व को व्यक्त करता है, इसलिए हमारा सबसे महत्वपूर्ण संगीत कलीसिया का गायन है। यद्यपि गायक-मंडली, एकल, स्तुति-मंडली, वाद्य-समूह और अन्य विशेष संगीत मूल्यवान हैं, फिर भी मसीही आराधना में कलीसिया का संगीत सबसे महत्वपूर्ण संगीत है। कलीसिया के गायन को विकसित करने के लिए हम कुछ व्यावहारिक कदम उठा सकते हैं।

याद रखें:

1. **संगत इतनी विस्तृत या तेज़ नहीं होनी चाहिए कि वह गायन से ध्यान भटका दे।** नया नियम में, गायन कलीसिया का प्राथमिक संगीत है। ऑर्गन वादक, पियानो वादक, गिटार वादक और ढोल वादक कलीसिया के प्राथमिक संगीत नहीं हैं। कलीसिया को गाने दो!

2. **कुछ गीत बिना किसी वाद्य यंत्र के गाए सबसे अच्छे लगते हैं।** प्रार्थना गीत कभी-कभी शांत गायन और बिना किसी वाद्य यंत्र के सबसे अच्छे ढंग से व्यक्त किए जा सकते हैं। इससे कलीसिया बिना किसी विकर्षण के शब्दों के संदेश पर ध्यान केंद्रित कर पाती है।

3. **संगीत इतना कठिन या नया नहीं होना चाहिए कि कलीसिया उसमें भाग न ले सके।** नए गीत अच्छे हैं, परन्तु हमें नए गीत जोड़ने से पहले कलीसिया को नया गीत अच्छी तरह सीखने का समय देना चाहिए। नए गीतों का लगातार प्रयोग तब तक भारी पड़ सकता है जब तक कि हम संदेश को आत्मसात नहीं कर लेते। एक अच्छा सामान्य तरीका यह है कि परिचित गीतों को बनाए रखते हुए नए गीत जोड़े जाए।

4. **पासबानों को कलीसिया के साथ गाना चाहिए।** यदि कलीसिया का गायन आराधना है, तो आपको भी आराधना करनी चाहिए। जब पासबान मण्डली के गायन के दौरान अन्य कार्य करता है, तो उसके कार्य यह दर्शाते हैं कि, "आराधना सभा में केवल मेरा प्रवचन ही महत्वपूर्ण है।" पासबान को शेष मण्डली के लिए आराधना का आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए।

संगीत को शब्दों के साथ मेल खाना चाहिए

क्योंकि आराधना संगीत का उद्देश्य परमेश्वर की स्तुति का प्रचार करना, मण्डली से सत्य बोलना और संसार को सुसमाचार का प्रचार करना है, इसलिए शब्द-संदेश सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। संगीत की शैली चाहे जो भी हो, यदि संगीत शब्द-संदेश के संप्रेषण में बाधा डालता है, तो हम भजन, स्तुतिगान, और आत्मिक गीत में एक-दूसरे को संबोधित नहीं कर रहे हैं।

इसका अर्थ यह नहीं कि वाद्य संगीत महत्वहीन है। वाद्य संगीत हमें अपने मन, भावनाओं और इच्छाशक्ति को आराधना पर केंद्रित करने में सहायता कर सकते हैं। आराधना में वाद्य संगीत मूल्यवान हो सकता है, परन्तु सामूहिक गायन में मुख्य ध्यान शब्द-संदेश पर होना चाहिए।

अगुए को मण्डली की सहायता करनी चाहिए कि वे शब्दों के अर्थ पर ध्यान केंद्रित करें।

अगुए अपनी अगुआई से शब्दों को और अधिक सार्थक बना सकते हैं। दो उदाहरण दिखाएँगे कि एक अगुआ गीत के संदेश को कैसे प्रभावित करता है।

आकाश मण्डली के गीतों के संदेश के बारे में ध्यान से नहीं सोचते। पिछले सप्ताह, आकाश ने त्रिएकत्व के बारे में दो गीतों की अगुआई की। पहले गीत के प्रत्येक पद अलग-अलग बातों पर केंद्रित हैं: पद 1 पिता से प्रार्थना है; पद 2 पुत्र से प्रार्थना है; पद 3 पवित्र आत्मा से प्रार्थना है; और पद 4 त्रिएकत्व से प्रार्थना है।

गाने से पहले, आकाश ने कहा, "हम पद 1, 2 और 4 गाएँगे।"

पद 3 को छोड़ देने में क्या ग़लत है? यह त्रिएकत्व के बारे में एक गीत है; यदि आप एक पद छोड़ देते हैं तो संदेश कमज़ोर हो जाता है।

दूसरे गीत में, तीनों पद त्रिएकत्व के एक विशिष्ट व्यक्ति की आराधना और स्तुति हैं। आकाश ने कहा, "आओ दो पद गाएँ।" फिर से, आकाश यह भूल गया कि त्रिएकत्व के लिए एक गीत में तीनों व्यक्ति शामिल होने चाहिए। शब्दों पर ध्यान दिए बिना भजन के कुछ अंश छोड़ देने से मण्डली की आराधना में बाधा आती है।

राहुल जानता है कि आराधना में मण्डली का गायन महत्वपूर्ण है। रविवार को, उसने एक अपरिचित भजन की अगुआई की। उसने यह कहकर आरम्भ किया, "यह गीत हमारे लिए नया है। भजन संहिता 150 सुनिए, जिस भजन पर यह भजन आधारित है।" कुछ शब्दों के साथ, राहुल ने मण्डली को एक नए गीत के अर्थ पर ध्यान केंद्रित करने में मदद की।

बाद में सभा में, राहुल ने एक गीत प्रस्तुत किया जिसमें राजा के रूप में परमेश्वर की महानता का वर्णन किया गया। उनके गाने से पहले राहुल ने पढ़ा 1 तीमुथियुस 1:17; “अब सनातन राजा अर्थात् अविनाशी, अनदेखे, एकमात्र परमेश्वर का आदर और महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।” एक गीत जो मण्डली ने कई बार गाया था, वह उस समय और भी ताज़ा हो गया जब आराधकों ने उस पवित्रशास्त्र को सुना जिससे वह गीत प्रेरित हुआ था। किसी भजन को उसके बाइबल के आधार से जोड़ने से मण्डली की आराधना को प्रोत्साहन मिलता है।

► अपनी भाषा में भजनों और कोरसों का संग्रह देखें। एक गीत और एक बाइबल अंश चुनें जो इसका परिचय दे सके।

यदि आप प्रोजेक्टर का उपयोग करते हैं, तो प्रोजेक्टर को चलानेवाला व्यक्ति आराधना अगुआई का हिस्सा होता है।

स्क्रीन पर दिखाई देने वाले शब्द आराधकों का ध्यान शब्दों पर केंद्रित करने में सहायता कर सकते हैं या शब्द से ध्यान भटका सकते हैं। प्रोजेक्टर को चलानेवाला व्यक्ति को अपने **कार्य** में सावधानी बरतनी चाहिए। इन समस्याओं से बचना चाहिए:

- शब्दों की गलत वर्तनी
- शब्द में गलत विराम चिह्न लगाना
- गीत की पंक्तियों को वाक्यांशों के बीच की बजाय बीच में बाँटना
- स्लाइड्स को गलत क्रम में रखना
- स्लाइड्स को सही समय पर न बदलना

ये सभी समस्याएँ आराधना से ध्यान भटकाती हैं। जब गलतियाँ होती हैं, तो लोग आराधना पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, उनके बारे में सोचते रहते हैं। स्क्रीन पर शब्दों का दिखना मण्डली के गायन को प्रभावित करता है।

आराधना संगीत में, संगीत शब्दों का सार प्रस्तुत करता है। चूँकि यह सत्य है, इसलिए आराधना के अगुवों को मण्डली को अर्थपूर्ण गायन में सहायता करनी चाहिए। इनमें से कोई भी आराधना को **जन्म** नहीं देता; आराधना हृदय से होती है। यद्यपि, ध्यान भटकाने वाली चीज़ों को दूर करने से आराधकों को आराधना के सच्चे उद्देश्य, परमेश्वर, पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रोत्साहन मिलता है।

मंडलीय गायन को सुधारने के व्यावहारिक कदम

1. **गीतों के द्वारा आराधना के महत्व को सिखाएँ।** जिस प्रकार मसीहियों को प्रार्थना और अन्य आत्मिक अनुशासनों का महत्व सिखाया जाना चाहिए, उसी प्रकार उन्हें यह भी सीखना चाहिए कि परमेश्वर उन्हें किस प्रकार गाने के लिए प्रेरित करता है।

2. **सुनिश्चित करें कि मण्डली के लोगों को पता हो कि वे गीत क्यों गा रहे हैं।** यदि यह प्रार्थना है, तो उन्हें याद दिलाएँ। यदि यह प्रतिबद्धता का गीत है, तो इस ओर ध्यान दिलाएँ। यदि यह प्रचारित संदेश को प्रकट करता है, तो उसे स्पष्ट करें। यदि लोगों को पता होगा कि वे गीत क्यों गा रहे हैं, तो वे अधिक उत्साह से गाएँगे।

3. **प्रदर्शन गीतों के बजाय सामूहिक गीतों का चयन करें।** सामूहिक गीतों में गायन योग्य और यादगार धुनें होती हैं। यदि आप चाहते हैं कि सभी लोग गाएँ, तो विचार करें, "क्या बच्चे घर जाते समय यह गीत गा सकते हैं?"

4. **संगीत की आवाज़ कम कर दें।** गिटार, ऑर्गन, ड्रम या गायक मंडली को मण्डली की आवाज़ को दबाने न दें। कमरे में सबसे तेज़ आवाज़ मण्डली की आवाज़ होनी चाहिए।

5. **नए और पुराने गीतों के बीच संतुलन बनाए रखें।**

6. **ऐसे गीतों का प्रयोग करें जो मसीही अनुभव की एक विस्तृत श्रृंखला का प्रतिनिधित्व करते हों।** यदि सारा संगीत आनंदमय है, तो आप मण्डली के पीड़ित सदस्यों के लिए नहीं बोल रहे हैं। भजन संहिता की तरह, हमारे भजनों में खुश मसीहियों, दुखी मसीहियों, परीक्षा में पड़े मसीहियों और पीड़ित मसीहियों के लिए शब्द होने चाहिए।

7. **पासबान और कलीसिया के अगुओं को उत्साहपूर्ण गायन का उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए,** भले ही उन्हें लगे कि वे अच्छा नहीं गाते। बेसुरा गाना, बिना गाए गाने से बेहतर है। गायन के दौरान प्रवचन के नोट्स देख रहे पासबान कह रहा है, "आराधना में गाना बहुत महत्वपूर्ण नहीं है।"

8. **मण्डली को याद दिलाएँ कि वे सामूहिक आराधना में प्राथमिक साधन हैं।** यदि लोग उत्साह से नहीं गाते हैं, तो मण्डली का संगीत अपने उद्देश्य में विफल हो जाता है। मण्डलियों को यह सिखाया जाना चाहिए कि आराधना के एक कार्य के रूप में गाना उनका विशेषाधिकार और जिम्मेदारी है।

निष्कर्ष: श्याओ-हान की गवाही

क्या परमेश्वर आराधना संगीत के माध्यम से बातचीत करते हैं? ताइवान के एक पासबान की गवाही सुनें।

जब श्याओ-हान चलकर हमारी कलीसिया में आईं, तो उन्होंने कभी सुसमाचार नहीं सुना था। वह किसी प्रवचन की तलाश में नहीं थीं; उन्हें मसीही बनने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। श्याओ-हान परमेश्वर की तलाश में नहीं थीं, बल्कि परमेश्वर श्याओ-हान की तलाश में थे!

श्याओ-हान अपनी अंग्रेज़ी सुधारने के लिए हमारी कलीसिया आई थीं। उन्होंने सुना था कि हमारी कलीसिया मुफ़्त अंग्रेज़ी कक्षाएं प्रदान करती है, इसलिए वह अंग्रेज़ी सीखने आईं। अपनी पहली मुलाक़ात में, श्याओ-हान देर से पहुँचीं। जब वह पवित्र स्थान में आईं, तो कलीसिया में भजन संहिता 42:1 पर आधारित एक सरल कोरस गाया जा रहा था भजन संहिता 42:1, “जैसे हरिणी नदी के जल के लिये हाँफती है, वैसे ही, हे परमेश्वर, मैं तेरे लिये हाँफता हूँ।”

एक वर्ष बाद अपने बपतिस्मा के समय श्याओ-हान ने यह गवाही दी:

“मुझे उस सभा के विषय कुछ भी याद नहीं है, सिवाय उस गीत के जो आप गा रहे थे जब मैं बैठी थी। गीत सुनते ही मैं रोने लगी। 30 सालों से, मैं परमेश्वर के लिए वैसे ही प्यासी रही हूँ जैसे हिरण पानी के लिए प्यासी होती है, परन्तु मुझे कभी पता नहीं चला कि मैं किस चीज़ के लिए प्यासी हूँ। मैंने शिक्षा की कोशिश की; मैंने पैसा आज़माया; मैंने मनोरंजन की कोशिश की; मैंने सब कुछ आज़माया - और फिर भी मैं खाली थी। मैंने अंग्रेजी आज़माने का फैसला किया, इसलिए मैं आपकी कलीसिया आई।

"अंग्रेजी की बजाय, मुझे वह पानी मिल गया जिसकी मुझे ज़रूरत थी। जब मैं सभा में बैठी, तो मैं यह महसूस करके रो पड़ी कि परमेश्वर ही मेरे दिल की इच्छा पूरी करते हैं। वही असली आनंद देने वाले हैं। उस दिन, मैंने अपना हृदय परमेश्वर को देने का फैसला किया। आज, वही मेरी आँखों का तारा हैं।"

पाठ 6 की समीक्षा

(1) हमारी आराधना में संगीत महत्वपूर्ण है

- क्योंकि बाइबल में आराधना में संगीत का विशेष महत्त्व बताया गया है।
- क्योंकि यह विश्वासी के पुरोहितत्व के धार्मिक सिद्धांत को व्यक्त करता है।
- क्योंकि यह कलीसिया की एकता के धार्मिक सिद्धांत को व्यक्त करता है।

(2) संगीत

- संगीत मन से बात करता है। इसलिए हम जो संदेश गाते हैं वह सत्य होना चाहिए।
- संगीत हृदय से बात करता है और भावनाओं को छूता है।
- संगीत शरीर से बात करता है और इसे अपवित्र प्रथाओं के अनुरूप नहीं बनाया जाना चाहिए।
- संगीत इच्छाशक्ति से बात करता है और प्रतिक्रिया की मांग करता है।
- यह पूरे व्यक्ति से बात करता है। जब यह सत्य सिखाता है तो यह मूल्यवान होता है और जब यह झूठी शिक्षा सिखाता है तो यह खतरनाक होता है।

(3) आराधना संगीत के लिए बाइबल आधारित सिद्धांतों में शामिल हैं:

- आराधना के गीत का शब्द-संदेश स्पष्ट रूप से सत्य को प्रकट करना चाहिए।
- आराधना संगीत की शैलियाँ भिन्न हो सकती हैं। पौलुस भजन, स्तुतिगान, और आत्मिक गीत का उल्लेख करता है। अपने आरंभिक दिनों से ही, कलीसिया ने विभिन्न प्रकार के संगीत गाए।
- प्रत्येक शैली प्रत्येक परिस्थिति के लिए उपयुक्त नहीं होती। *हमें पूछना चाहिए, "मेरे सांस्कृतिक संदर्भ में, क्या यह संगीत शैली परमेश्वर की महिमा करती है?"*

(4) संगीत को तीन प्रकार के श्रोताओं से बात करनी चाहिए:

- संगीत को परमेश्वर की स्तुति प्रकट करनी चाहिए
- संगीत को कलीसिया के सामने सत्य को घोषित करना चाहिए
- संगीत को संसार के सामने सुसमाचार को घोषित करना चाहिए

(5) कलीसिया संगीत के सिद्धांतों में शामिल हैं:

- कलीसिया का सबसे महत्वपूर्ण संगीत सामूहिक गायन है
- संगीत को शब्दों के साथ मेल खाना चाहिए

पाठ 6 के कार्य

(1) आराधना के लिए उपलब्ध संगीत की विविधता का आनंद लेने के लिए, निम्नलिखित विषयों पर केंद्रित चार या अधिक गीतों की सूची बनाएँ। आपकी सूची का उपयोग अगले **पाठ** में **आराधना सभा** की योजना बनाते समय किया जाएगा। ऐसे गीतों की तलाश करें जो मन, हृदय और इच्छाशक्ति को छूते हों।

- परमेश्वर के स्वभाव पर 4 गीत
- यीशु और उनकी मृत्यु व पुनरुत्थान पर 4 गीत
- पवित्र आत्मा और कलीसिया पर 4 गीत
- 4 गीत जो परमेश्वर के लोगों को समर्पित, पवित्र जीवन जीने की बुलाहट प्रदान करते हैं
- सुसमाचार प्रचार और मिशन के लिए 4 गीत

यदि आप समूह में अध्ययन कर रहे हैं, तो अपनी सूचियाँ बाँटें और फिर विचार विमर्श करें, "पिछले वर्ष हमने इनमें से कितने गीत गाए हैं? क्या हम अपने गायन में संपूर्ण सुसमाचार का प्रचार कर रहे हैं?"

(2) अगले पाठ के आरम्भ में, आप इस पाठ पर आधारित एक परीक्षा देंगे। तैयारी के लिए परीक्षा के प्रश्नों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें।

पाठ 6 परीक्षा

(1) बाइबल से किन्हीं तीन गीतों की सूची बनाएँ।

(2) दो धर्मज्ञान सिद्धांतों की सूची बनाइए जिन्हें हमारे आराधना संगीत में प्रदर्शित किया जाना चाहिए।

(3) आराधना में संगीत के चार व्यावहारिक कारण बताएँ।

(4) चार सिद्धांतों की सूची बनाएँ जो आराधना के लिए संगीत के चयन में हमारी सहायता करेंगे।

(5) कुलुस्सियों 3:16 में पौलुस ने कौन से तीन प्रकार के गीतों की सूची दी है?

(6) हमारे आराधना संगीत की अंतिम परीक्षा क्या है?

(7) बाइबल में वर्णित गीतों के आधार पर, तीन तरीके बताइए जिनसे संगीत को अलग-अलग श्रोताओं से बात करनी चाहिए।

(8) कुलुस्सियों 3:16 आराधना संगीत के उद्देश्य के विषय क्या सिखाता है?

(9) याद किया हुआ कुलुस्सियों 3:15-17 लिखें।

पाठ 7

आराधना में पवित्रशास्त्र और प्रार्थना

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अन्त होने तक विद्यार्थी को नीचे दिए गए कार्य करने के योग्य होना चाहिए:

(1) आराधना में पवित्रशास्त्र के महत्व को समझना।

(2) आराधना में पवित्रशास्त्र का उपयोग करने के व्यावहारिक चरणों को जानना।

(3) प्रवचन को आराधना का एक भाग समझना।

(4) आराधना में प्रार्थना के महत्व को समझना।

(5) कलीसिया की सार्थक सामूहिक प्रार्थना में अगुवाई करना।

(6) यह समझना कि दान/भेंट इकट्ठा करना भी आराधना का एक कार्य है।

(7) प्रभु भोज को एक आनंदमय उत्सव और श्रद्धापूर्ण स्मृति के रूप में मनाना।

इस पाठ की तैयारी

कण्ठस्थ करें मत्ती 6:5-8।

भूमिका

एक अज्ञात (XYZ) कलीसिया अपनी आराधना के समय के लिए प्रसिद्ध है। उनकी सभाएँ इस प्रकार हैं:

एक अज्ञात (XYZ) चर्च का सभा क्रम:	
आरंभिक वादन और सूचनाएँ	
आराधना समय (स्तुति गान)	30 मिनट
दान(भेंट)/विशेष गीत/प्रार्थना	15 मिनट
प्रवचन	30 मिनट
आराधना समय (स्तुति गान)	15 मिनट

लोगों को अज्ञात (XYZ) कलीसिया का संगीत पसंद आता है। आनेवाले लोग इस ऊर्जावान सभा की प्रशंसा करते हैं। जबकि, पासबान रोहन अपनी सेवा के दीर्घकालिक परिणामों को लेकर चिंतित हो गए हैं। नए विश्वासी लोग जल्द ही दूसरी कलीसियाओं में चले जाते हैं। इससे भी बुरी बात यह है कि लंबे समय से कलीसिया में आने वाले लोगों के एक सर्वेक्षण में पाया गया कि कलीसिया "यीशु मसीह के मजबूत शिष्य नहीं पैदा कर रही है। संख्याएँ तो हैं, परन्तु शिष्य नहीं।"[52]

रोहन का मानना है कि समस्या का एक हिस्सा कलीसिया की आराधना की समझ है। अज्ञात (XYZ) कलीसिया में, आराधना संगीत के बराबर है। पासबान रोहन पूछने लगे हैं, "क्या सच्ची आराधना में संगीत से ज़्यादा कुछ शामिल होता है? क्या हम परमेश्वर के वचन और प्रार्थना को आराधना से अलग कर रहे हैं? क्या इससे प्रवचन का प्रभाव कम हो जाता है?"

► कृपया पासबान रोहन की चिंताओं का प्रत्युत्तर दें। क्या आराधना और प्रवचन में कोई अंतर है? अज्ञात (XYZ) कलीसिया आराधना सभा के सभी पहलुओं को आराधकों के मन में कैसे जोड़ सकता है?

आराधना में पवित्रशास्त्र की महत्वता

सुसमाचारवादी होने के नाते हम सिखाते हैं कि हमारे सिद्धांत और आराधना पवित्रशास्त्र द्वारा निर्देशित हैं। हमारा मानना है कि बाइबल को हमारी आराधना में मुख्य स्थान प्राप्त होना चाहिए। परमेश्वर अपने लोगों से वचन के पठन के माध्यम से बात करते हैं। पुराने नियम के समय से ही, पवित्रशास्त्र आराधना का केंद्र रहा है।

दुःख की बात है भले ही हम कहते हैं कि बाइबल हमारी आराधना का मूल है, फिर भी कई कलीसियाएँ अपनी सभा में पवित्रशास्त्र को बहुत कम शामिल करती हैं। कुछ कलीसियाओं में किसी सभा में शामिल होने पर पवित्रशास्त्र के कुछ ही पद सुनने को मिलते हैं। यह आराधना के बाइबल आधारित आदर्श से कोसों दूर है।

बाइबलीय आराधना में वचन का पढ़ा जाना महत्वपूर्ण था

► निर्गमन 24:1-12 पढ़ें।

निर्गमन 24:7 में, मूसा ने वाचा की पुस्तक ली और लोगों को पढ़कर सुनाई। लोगों ने परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने का वादा किया:“जो कुछ यहोवा ने कहा है उस सब को हम करेंगे, और उसकी आज्ञा मानेंगे।” इसके बाद, परमेश्वर ने पत्थर की पटियाओं पर वाचा (दस आज्ञाएँ) का सारांश लिखा। इस्राएल, पवित्र पुस्तक के लोग थे। यह लिखित वाचा इस्राएल की आराधना का केंद्रबिंदु थी।

[52] यह अमेरिका की एक सबसे बड़ी कलीसिया द्वारा किए गए सर्वेक्षण से लिया गया है। उन्होंने पाया कि उनके ज़्यादातर नव-विश्वास में आए लोग कभी भी सच्चे शिष्यत्व के मुकाम तक नहीं पहुँच पाए थे।

परमेश्वर के वचन का तम्बू और मंदिर में मुख्य स्थान था। यहूदी वर्ष में वार्षिक पर्व सबसे महत्वपूर्ण घटनाएँ थीं। फसह, प्रथम फल के पर्व और झोपड़ियों के पर्व पर परमेश्वर के वचन के अंश सार्वजनिक रूप से पढ़े जाते थे। हर सात वर्ष में, राष्ट्र व्यवस्था को सुनने के लिए इकट्ठा होता था, और वाचा का नवीनीकरण होता था।[53]

नया नियम में, पौलुस ने मसीहियों को सार्वजनिक रूप से पवित्रशास्त्र पढ़ने का आदेश दिया। इसमें पुराना नियम, पौलुस के पत्र, और पवित्रशास्त्र के रूप में वर्गीकृत अन्य लेख शामिल थे।[54] उन्होंने एक युवा सेवक को निर्देश दिया कि वह स्वयं को सार्वजनिक रूप से पवित्रशास्त्र पढ़ने, उपदेश देने और शिक्षा देने में समर्पित करे (1 तीमुथियुस 4:13)। नया नियम की आराधना में परमेश्वर के वचन का मुख्य स्थान था।

बाइबलीय आराधना में वचन का प्रचार महत्वपूर्ण था

► नहेम्याह 8:1-18 पढ़ें।

निर्वासन से लौटने के बाद, एज्रा ने लोगों को व्यवस्था पढ़कर सुनाई। जब एज्रा ने पुरुषों, स्त्रियों और समझने वालों की उपस्थिति में व्यवस्था पढ़ी, तो लोग सुनने के लिए एकत्रित हुए; और सभी लोगों के कान व्यवस्था की पुस्तक पर लगे रहे (नहेम्याह 8:3)। प्रत्युत्तर में, लोगों ने "आमीन" कहा और दण्डवत् प्रणाम करने के लिए मुँह के बल गिर पड़े। एज्रा और उनके साथियों ने पढ़ते हुए, पवित्रशास्त्र की व्याख्या की और श्रोताओं को पाठ को समझने में सहायता की। यह लोगों की आवश्यकताओं के अनुसार परमेश्वर के वचन का प्रचार करने, उसे समझाने और लागू करने का एक बाइबल आधारित उदाहरण है। सच्चा बाइबल-आधारित प्रचार वचन के प्रति प्रतिक्रिया स्वरूप आराधना को प्रेरित करता है।

यीशु अपनी रीति के अनुसार सब्त के दिन आराधनालय में आए और यशायाह पुस्तक से पढ़ा। जब उन्होंने अपना पठन पूरा किया, तो यीशु ने एक उपदेश दिया जिसमें उन्होंने बताया कि वे यशायाह की प्रतिज्ञा को पूरा करने आए हैं (लूका 4:16-29)।

पिन्तेकुस्त के दिन अपने उपदेश में, पतरस ने दिखाया कि पुराने नियम की प्रतिज्ञाएँ यीशु की सेवकाई और पवित्र आत्मा के आगमन में पूरी हुईं। उन्होंने पवित्रशास्त्र की अपनी व्याख्या का समापन पश्चाताप करने और बपतिस्मा लेने के निमंत्रण के साथ किया (प्रेरितों 2:14-41)। बाइबल आधारित उपदेश श्रोताओं से प्रतिक्रिया की आशा करता था। उपदेश मन से बात करता है, परन्तु उसे हृदय से भी बात करनी चाहिए। उपदेश के लिए इच्छाशक्ति से प्रतिक्रिया की आशा करनी चाहिए। जब यीशु ने इम्माऊस के मार्ग पर पवित्रशास्त्र से बोला, तो श्रोताओं के हृदय भीतर ही भीतर जल उठे (लूका 24:32)।

> **बाइबलीय प्रचार**
> सच्ची बाइबल-व्याख्या की आशीष प्रज्वलित हृदय है, न कि घमंड से फूला हुआ मन।
> - वॉरेन विर्सबे

---

[53] Timothy J. Ralston, "Scripture in Worship" in *Authentic Worship.* Edited by Herbert Bateman. (Grand Rapids: Kregel, 2002), 201

[54] 1 तीमुथियुस 4:13, 1 थिस्सलुनीकियों 5:27, कुलुस्सियों 4:16, 2 पतरस 3:16

प्रारंभिक कलीसिया के प्रसार में प्रवचन का महत्वपूर्ण स्थान था। प्रेरितों के काम की पुस्तक में, परमेश्वर के वचन का 20 से अधिक बार उल्लेख किया गया है। प्रेरितों ने प्रभु के वचन का प्रचार किया; उन्होंने साहस के साथ परमेश्वर का वचन सुनाया; उन्होंने परमेश्वर के वचन की शिक्षा दी। प्रत्युत्तर में, बहुत से लोगों ने परमेश्वर के वचन को ग्रहण किया; परमेश्वर का वचन बढ़ता और फैलता गया; परमेश्वर का वचन प्रबल हुआ; और अन्यजातियों ने प्रभु के वचन की महिमा की। परमेश्वर का वचन प्रेरितों के संदेश का आधार था।

भले ही प्रचार ही एकमात्र माध्यम नहीं है जिसके द्वारा पवित्रशास्त्र बोलता है, यह परमेश्वर के वचन को परमेश्वर के लोगों तक पहुँचाने का प्राथमिक साधन है। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए, एक पास्टर को यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि परमेश्वर का वचन मुख्य स्थान पर होना चाहिए। बाइबल आधारित प्रचार परमेश्वर के वचन से आरम्भ होना चाहिए, परमेश्वर के वचन की व्याख्या करनी चाहिए, और परमेश्वर के वचन के प्रति व्यक्तिगत प्रतिक्रिया का आह्वान करना चाहिए।

कलीसिया के इतिहास में वचन का प्रचार महत्वपूर्ण था

कलीसिया की प्रारंभिक शताब्दियों में, प्रवचन आराधना का केंद्रबिंदु था। दूसरी शताब्दी में, जस्टिन मार्टियर ने लिखा कि मसीही रविवार को पत्रियों और भविष्यवक्ताओं को पढ़ने और उनकी व्याख्या सुनने के लिए एकत्रित होते थे। तीसरी शताब्दी तक, बाइबल के प्रत्येक प्रमुख भाग के अंश आराधना के दौरान पढ़े जाने लगे।

मध्य युग के दौरान, कैथोलिक कलीसिया ने प्रवचन की भूमिका को कम कर दिया, परन्तु सुधारकों ने प्रवचन को आराधना में मुख्य स्थान दिलाया। सुधारवादी प्रवचन का लक्ष्य मनोरंजन, प्रचारक का व्यक्तिगत उद्देश्य या समाज की सांस्कृतिक माँगें नहीं थीं। प्रवचन का लक्ष्य परमेश्वर के वचन की सावधानीपूर्वक व्याख्या करना था; पवित्रशास्त्र की व्याख्या इस प्रकार करना कि श्रोताओं पर प्रभाव पड़े और जीवन बदल देने वाली प्रतिक्रिया की अपेक्षा करे।”

आराधना में पवित्रशास्त्र को मुख्य-बिन्दु बनाना

यदि परमेश्वर का वचन हमारी आराधना का केंद्रबिंदु होना चाहिए, तो हम इस सिद्धांत को व्यवहार में कैसे लाएँ? पवित्रशास्त्र को अपनी आराधना का केंद्रबिंदु बनाने के व्यावहारिक कदम ये हैं:

आराधना के सभी भागों में पवित्रशास्त्र को शामिल किया जाना चाहिए

हमें आराधना में पवित्रशास्त्र सुनने के लिए प्रचार तक प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए। आराधना आरम्भ करने का परमेश्वर के वचन से बेहतर कोई तरीका नहीं है।

आराधना के दो अवसरों पर विचार करें। परमेश्वर की उपस्थिति में आने का कौन सा आमंत्रण ज़्यादा प्रभावी है?

1. "आज कलीसिया आने के लिए आपका धन्यवादप। बरसात के कारण से आपमें से कुछ लोगों के लिए सफ़र मुश्किल हो गया था, परन्तु मुझे खुशी है कि आप आए। आइए हम अपना ध्यान परमेश्वर और आराधना पर केंद्रित करें, क्या आप खड़े हो सकते हैं जब हम गाएँ, ‘पवित्र, पवित्र, पवित्र’?”

2. “जब लोगों ने मुझ से कहा, 'आओ, हम यहोवा के भवन को चलें,' तब मैं आनन्दित हुआ। परमेश्वर के घर में आपका स्वागत है! मंदिर में, यशायाह ने प्रभु को ऊँचा और ऊपर उठा हुआ देखा। उसने स्वर्गदूतों को गाते हुए सुना ‘सेनाओं का यहोवा पवित्र, पवित्र, पवित्र है; सारी पृथ्वी उसके तेज से भरपूर है।’ जब हम गाते हैं तो आप स्तुति में शामिल हो, ‘पवित्र, पवित्र, पवित्र।’”

पहले अगुए ने हमें यात्रा की कठिनाइयों की याद दिलाई; दूसरे अगुए ने हमें आराधना के आनंद की याद दिलाई। पहले अगुए ने सामान्य शब्दों से आरम्भ किया; दूसरे अगुए ने परमेश्वर के वचन से आरम्भ किया। पहले अगुए ने एक साधारण भजन की घोषणा की; दूसरे अगुए ने हमें याद दिलाया कि स्वर्गदूत परमेश्वर की स्तुति में यह भजन गाते हैं। कौन सी कलीसिया ज़्यादा उत्साह से गाएगी ?

संयुक्त राज्य अमेरिका में 11 सितंबर, 2001 के आतंकवादी हमलों के बाद, रविवार को लोग हमेशा की तरह आराधना के लिए अपनी कलीसियाओं में एकत्रित हुए। इन दोनों कलीसियाओं में **आराधना सभाओं** के आरंभ की तुलना करें:

1. “आज हमारे साथ जुड़ने के लिए धन्यवाद। हमारे देश में यह एक दुखद सप्ताह रहा है। हममें से कई लोग दुख में हैं। इस कठिन समय में भी आराधना में आने के लिए धन्यवाद। हम 'द ओल्ड रग्ड क्रॉस' (आह वो प्यारी सलीब) गाकर आरम्भ करेंगे।”

2. “परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट में अति सहज से मिलनेवाला सहायक। इन कठिन समयों में, हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि वह हमारी आशा है; वह हमारा आश्रय है। आइए हम सब मिलकर याद करें कि 'हमारा परमेश्वर एक शक्तिशाली गढ़ है, एक ऐसा गढ़ जो कभी नहीं टूटता।'”

पहले अगुए ने मण्डली को उनके दुःख की याद दिलाई; दूसरे अगुए ने उन्हें याद दिलाया कि परमेश्वर ही उनकी आशा है। पवित्रशास्त्र और उस पर आधारित एक भजन ने उस सप्ताह में एक ठोस आधार प्रदान किया जब लोगों के आत्मविश्वास की **परीक्षा** हो रही थी।

आराधना सभा के कई भागों में पवित्रशास्त्र का उपयोग किया जा सकता है:

- सभा के आरंभिक शब्द
- दान/भेंट के लिए आमंत्रण
- संगीत के शब्द
- प्रार्थना

हमारी आराधना परमेश्वर के वचन से परिपूर्ण होनी चाहिए। आराधना, परमेश्वर द्वारा अपने वचन में स्वयं को प्रकट करने की प्रतिक्रिया है। आराधना सभा के सभी भागों में पवित्रशास्त्र का ही आधार होना चाहिए।

आराधना में पवित्रशास्त्र के पढ़े जाने को मुख्य स्थान मिलना चाहिए

क्या आपने कभी किसी पास्टर को यह कहते सुना है, "आज हमारे पास समय कम है और मेरा प्रचार लंबा है, इसलिए मैं बाइबल से अंश नहीं पढ़ूँगा?" कौन ज़्यादा महत्वपूर्ण है, परमेश्वर का वचन या हमारे शब्द? हमें आराधना में पवित्रशास्त्र को समय देना चाहिए।

क्योंकि पवित्रशास्त्र का पढ़ा जाना आराधना है, इसलिए हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि हम इसे कैसे पढ़ते हैं। इसे स्पष्ट और सुस्पष्ट रूप से पढ़ा जाना चाहिए। पढ़नेवाले (चाहे वह पास्टर हो या कोई आम व्यक्ति) को सभा से पहले अभ्यास करना चाहिए। कलीसिया की पहली तीन शताब्दियों में, पवित्रशास्त्र के पाठक का पद एक पवित्र दायित्व था। पाठक अपनी निर्धारित पुस्तकें घर पर रखते थे और पाठ का अभ्यास करते थे। जब वे आराधना में पढ़ते थे, तो वे स्पष्ट और भावपूर्ण ढंग से पढ़ने के लिए तैयार रहते थे।[55]

याद रखें, यह परमेश्वर का वचन है जो परमेश्वर के घर में परमेश्वर के लोगों के लिए आराधना के एक कार्य के रूप में पढ़ा जा रहा है। यदि आराधना संगीत अभ्यास के योग्य है, तो परमेश्वर का वचन भी अभ्यास के योग्य है। यह हमारी क्षमताओं पर गर्व करने की बात नहीं है; यह सुनिश्चित करने की बात है कि परमेश्वर का वचन श्रोताओं तक पहुँचाया जाए। यह परमेश्वर का वचन है; यह महत्वपूर्ण है!

हमें पठन को अर्थपूर्ण बनाना चाहिए। विभिन्न प्रकार के पठनों का प्रयोग करने से श्रोताओं के कानों में पवित्रशास्त्र ताज़ा रहेगा।

(1) कभी-कभी अगुए द्वारा पवित्रशास्त्र पढ़ा जा सकता है जबकि मण्डली परमेश्वर की वाणी सुन रही होती है। इस प्रकार का पठन अधिकांश पंचग्रंथों और अधिकांश नबूवतीय पुस्तकों के लिए उपयुक्त है।

(2) कभी-कभी अगुए और मण्डली बारी-बारी से पठन कर सकते हैं। कई भजन संहिताएँ इस प्रकार के प्रतिक्रियात्मक पठन के लिए उपयुक्त हैं।

► भजन संहिता 136 पढ़ें। कक्षा अगुए से प्रत्येक पद की आरम्भ करवाएं; कक्षा को प्रत्येक पद के दूसरे भाग के साथ प्रतिक्रिया देनी चाहिए, “उसकी करुणा सदा की है।”

धन्य वचन प्रतिक्रियात्मक पठन के लिए उपयुक्त हैं (मत्ती 5:1-10):

अगुआ: धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं,
मण्डली: क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।
अगुआ: धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं,
मण्डली: क्योंकि वे शांति पाएँगे।

---

[55] Keith Drury, *The Wonder of Worship,* (Fishers, IN: Wesleyan Publishing House, 2002), 35

(3) पवित्रशास्त्र के कुछ भागों को कलीसिया द्वारा एक स्वर में पढ़ा जा सकता है। कलीसिया के संगीत की तरह, एक समूह के रूप में पवित्रशास्त्र का पठन कलीसिया की एकता को प्रदर्शित करता है। पूरी कलीसिया परमेश्वर के वचन को बोलने में शामिल होती है। भजन संहिता 124 जैसी प्रार्थनाएँ एक स्वर में पढ़ने के लिए उपयुक्त हैं।

एज्रा द्वारा व्यवस्था के पठन का नहेमायाह द्वारा दिया गया वृत्तांत दर्शाता है कि जब पवित्रशास्त्र हमारी आराधना का केंद्रबिंदु होता है, तो इसका क्या प्रभाव पड़ता है।

► यदि आपको इस विवरण की समीक्षा करने की आवश्यकता है तो नहेम्याह 8 को फिर से पढ़ें।

पठन के विवरण पर ध्यान दें।

- एज्रा ने सब लोगों के सामने पुस्तक खोली। वचन के साथ एक दृश्य जुड़ाव था।
- वह सब लोगों से ऊपर खड़ा था। पाठक को साफ़-साफ़ देखा और सुना जा सकता था।
- जब उसने पढ़ना आरम्भ किया, तो सभी लोग खड़े हो गए। वचन के प्रति शारीरिक प्रतिक्रिया हुई।
- जब वह पढ़ रहा था, तो सब लोग हाथ उठाकर "आमीन, आमीन" कहते हुए, सिर झुकाकर, मुँह ज़मीन पर टेककर प्रभु की आराधना करते हुए, परमेश्वर के वचन के प्रति अपनी समर्पण भावना प्रकट कर रहे थे।
- लेवियों ने परमेश्वर की व्यवस्था को स्पष्ट रूप से पढ़ा और उसका अर्थ समझाया, ताकि लोग उसे समझ सकें। उन्होंने परमेश्वर के वचन को समझने पर ध्यान दिया। यही आज प्रचार का लक्ष्य है।
- जब लोगों ने व्यवस्था के वचन सुने, तो वे रो पड़े। तब नहेम्याह ने उन्हें आनन्दित होने की आज्ञा दी "क्योंकि यहोवा का आनन्द तुम्हारा दृढ़ गढ़ है।" परमेश्वर के वचन ने पश्चाताप और आनन्द दोनों को प्रेरित किया।

भले ही इस खास अवसर की हर बात हमारी प्रार्थना सभाओं में दोहराई नहीं जाएगी, फिर भी यह वृत्तांत पवित्रशास्त्र की शक्ति को दर्शाता है। हमें अपनी आराधना में पवित्रशास्त्र को मुख्य स्थान में रखना चाहिए।

दोबारा जाँच

क्या आपकी कलीसिया आराधना में बाइबल पठन के महत्व को समझती है? पवित्रशास्त्र के पठन के दौरान कलीसिया में चारों ओर देखने पर आपको जो व्यवहार और प्रतिक्रियाएँ दिखाई देती हैं, उनका वर्णन करें।

औसतन रविवार को आपकी कलीसिया कितने अलग-अलग पवित्रशास्त्र के अंश सुनती है? क्या आराधक जानते हैं कि प्रत्येक अंश क्यों शामिल किया गया है?

वचन का प्रचार हमारी आराधना का मुख्य भाग होना चाहिए

जिस तरह से हर पीढ़ी में संगीत की शैलियाँ बदलती हैं, उसी तरह से प्रत्येक पीढ़ी की आवश्यकताओं के अनुसार प्रचार की शैलियाँ भी बदलती हैं। बाइबल किसी एक संगीत शैली को आराधना संगीत की बाइबल-शैली के रूप में परिभाषित नहीं करती; बाइबल किसी एक प्रचार पद्धति को प्रचार की बाइबल-शैली के रूप में परिभाषित नहीं करती।

शैली पीढ़ी-दर-पीढ़ी और संस्कृति-दर-संस्कृति बदल सकती है; विषय-वस्तु नहीं बदलनी चाहिए। बाइबल संगीत शैली को परिभाषित नहीं करती, परन्तु वह विषय-वस्तु को परिभाषित करती है। उसी प्रकार, प्रचार की शैलियाँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी बदल सकती हैं, परन्तु विषय-वस्तु कभी नहीं बदलनी चाहिए।

बाइबल में दिए गए उपदेश दर्शाते हैं कि परमेश्वर के वचन का प्रचार करना उस उपदेशक की प्राथमिक ज़िम्मेदारी है जो किसी मण्डली के समक्ष खड़ा होता है। समकालीन प्रचार में परमेश्वर के वचन पर ध्यान केंद्रित रहना चाहिए। बदलती तकनीक और सीखने की शैलियाँ प्रचार की शैली को प्रभावित कर सकती हैं; विषय-वस्तु बाइबल के साथ जुड़ी रहनी चाहिए।

आराधना के रूप में प्रचार करना: व्यावहारिक महत्व

प्रचार को आराधना मानने के व्यावहारिक महत्व क्या हैं? यह प्रचार के प्रति हमारे दृष्टिकोण को कैसे प्रभावित करेंगे?

> "यदि प्रचार करना आराधना का कार्य नहीं है, तो हो सकता है कि कलीसिया परमेश्वर की आराधना करने के बजाय प्रचारक की आराधना करने लगे।"
> - वॉरेन विर्सबे

प्रचार के लिए सावधानीपूर्वक तैयारी की ज़रूरत होती है।

यदि प्रचार करना आराधना है, तो हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम सावधानीपूर्वक तैयारी करें। हमें परमेश्वर की वेदी पर अपनी सर्वोत्तम भेंट चढ़ानी चाहिए। दाऊद ने वह भेंट नहीं दी जिसकी उसे कोई कीमत नहीं चुकानी पड़ी; हमें बिना तैयारी के प्रवचन परमेश्वर को भेंट नहीं चढ़ाने चाहिए। हमें सभा से पहले अपने उपदेश की सावधानीपूर्वक तैयारी करनी चाहिए (2 शमूएल 24:24)।

> "यदि प्रचार करना आराधना नहीं है, तो वह अपवित्र है... एक सच्चा प्रवचन परमेश्वर का कार्य है, न कि मनुष्य द्वारा किया गया मात्र प्रदर्शन।"
> - जे.आई. पैकर से लिया गया

प्रचार के लिए मण्डली से प्रतिक्रिया की आवश्यकता होती है।

यदि प्रचार आराधना है, तो इसके लिए कलीसिया की प्रतिक्रिया आवश्यक है। आराधना में हम परमेश्वर को देखते हैं, स्वयं को देखते हैं, और अपने संसार की आवश्यकताओं को देखते हैं (यशायाह 6:1-8; पाठ 1 देखें)। हमारे प्रचार से श्रोता के सामने परमेश्वर का प्रकटीकरण होना चाहिए, हमारे प्रचार से श्रोता को किसी जरुरत का बोध होना चाहिए, और हमारे प्रचार से कलीसिया को एक खोई हुई दुनिया तक पहुँचने के लिए प्रेरित होना चाहिए। आराधना के रूप में प्रचार करने से पापियों को बोध होगा और विश्वासियों को सुसमाचार प्रचार के लिए प्रेरित किया जाएगा।

प्रचार करने के लिए प्रचारक की ओर से प्रतिक्रिया की आवश्यकता होती है।

यदि प्रचार करना आराधना है, तो हम यह समझेंगे कि प्रचार करने के लिए हमारी प्रतिक्रिया आवश्यक है। यदि हम प्रचार करने की तैयारी बलिदानपूर्ण आराधना के रूप में करते हैं, तो हम परमेश्वर को देखेंगे; हम अपने जीवन के उन क्षेत्रों में अपने पाप का एहसास महसूस करेंगे जहाँ सुधार की आवश्यकता है; और हम अपने चारों ओर दुनिया की आवश्यकताओं को देखेंगे। इसके प्रत्युत्तर में, हम यशायाह कि तरह कहकर पुकारेंगे, "मैं यहाँ हूँ! मुझे भेजें।" सच्चा प्रचार प्रचारक को बदल देता है। हमें अपनी सभाओं में परमेश्वर का संदेश तब तक नहीं लाना चाहिए जब तक कि परमेश्वर ने हमसे व्यक्तिगत रूप से बात न की हो और हमने इसके प्रति प्रतिक्रिया न दी हो।

यीशु ने अपने समय के शास्त्रियों (प्रचारकों) को उनके बुरे प्रवचनों के लिए नहीं डाँटा; उन्होंने उन्हें उनके प्रवचनों के अनुसार जीवन न जीने के लिए डाँटा। वे शास्त्र जानते थे और शास्त्र की व्याख्या करना जानते थे, परन्तु शास्त्र ने उन्हें नहीं बदला। यीशु ने कहा, "वे कहते तो हैं पर करते नहीं" (मत्ती 23:3)। यदि प्रचार करना ही आराधना है, तो हम पासबान होने के नाते, उन सच्चाइयों से बदल जाएँगे जिनका हम प्रचार करते हैं। बदले में, परमेश्वर हमारे द्वारा उन लोगों के दिलों और ज़िंदगी को बदलने के लिए बोलेगा जिन्हें हम प्रचार करते हैं।

प्रचारक को पवित्र आत्मा द्वारा सामर्थी होना चाहिए।

यदि प्रचार करना आराधना है तो प्रचारक को पवित्र आत्मा द्वारा सामर्थी होना चाहिए। जिस प्रकार आराधना के अन्य सभी क्षेत्र सच्ची सामर्थ के लिए पवित्र आत्मा पर निर्भर करते हैं, उसी प्रकार एक प्रचारक को प्रभावशाली होने के लिए परमेश्वर के आत्मा से अभिषिक्त होना आवश्यक है।

► 2 कुरिन्थियों 3:3-18 पढ़ें।

हम प्रवचन के लिए अपनी तैयारी का सर्वोत्तम बलिदान देते हैं; भले ही, हमारी तैयारी पूरी होने के बाद, प्रचार में शक्ति पवित्र आत्मा के द्वारा आती है। पवित्र आत्मा की शक्ति के बिना, हम मन की बात कह सकते हैं, हम मण्डली को प्रभावित कर सकते हैं, और हमारे पास अच्छी सामग्री हो सकती है, परन्तु हम जीवन नहीं बदल सकते।

दोबारा जाँच

क्या आपका प्रचार बाइबल आधारित आराधना का एक कार्य है? यदि कोई व्यक्ति नियमित रूप से आपका प्रचार सुनता है, तो क्या वह संतुलित बाइबल आधारित सत्य को सुन पाएगा?

आराधना के खतरे: वचन की गिरावट

बाइबल ने कई काल्पनिक विश्वासियों के दैनिक जीवन में अपना स्थान खो दिया है। दुःख की बात है कि इसने कई कलीसियाओं की साप्ताहिक आराधना में भी अपना स्थान खो दिया है। जहाँ प्रारंभिक कलीसिया भजन संहिता गाती थी, वहीं आज कुछ कलीसियाएँ

ऐसे गीत गाती हैं जिनमें बाइबल की कोई सामग्री नहीं होती। जहाँ प्रारंभिक कलीसिया बाइबल के लंबे अंश पढ़ती थी, वहीं आज कुछ कलीसियाएँ प्रवचन से पहले केवल कुछ पद ही पढ़ती हैं। कई सभाओं में, बाइबल की जगह गीतों और प्रवचन ने ले ली है जो परमेश्वर के वचन पर बहुत कम ध्यान देते हैं।

समकालीन आराधना आंदोलन के कुछ अगुए इस बात पर ज़ोर देते हैं कि बाइबल का सार्वजनिक पठन अब आधुनिक ज़रूरतों के अनुरूप नहीं है। एक प्रसिद्ध पासबान ने हाल ही में अपनी कलीसिया के कर्मचारियों से अपने संदेश का मूल्यांकन करने के लिए कहा। उन्होंने उससे कहा कि वह बहुत ज़्यादा बाइबल का इस्तेमाल कर रहे हैं! "आपके लिए अपने संदेश को बाइबल पर आधारित करना अच्छा है, परन्तु बेहतर होगा कि आप जल्दी से किसी उपयुक्त विषय पर पहुँच जाएँ, वरना हम सुनना बंद कर देंगे।" इस कलीसिया के कर्मचारियों को नहीं लगता था कि बाइबल आज के लोगों के लिए उपयुक्त है!

आराधना अगुओं के रूप में, हमें आराधना में बाइबल की केंद्रता बनाए रखनी चाहिए। आराधना में, हम प्रार्थना और स्तुति गीतों के द्वारा परमेश्वर से बात करते हैं। आराधना में, हम वचन के पठन और घोषणा के द्वारा परमेश्वर को हमसे बात करते हुए सुनते हैं। हमारी आराधना शैली चाहे जो भी हो, हमें आराधना में परमेश्वर के वचन के मुख्य स्थान को कभी नहीं खोना चाहिए।

► नहेम्याह 8 की समीक्षा करें। उन सभी वाक्यांशों की सूची बनाएँ जो दर्शाते हैं कि लोग व्यवस्था के पठन को कितना महत्व देते हैं। इसकी तुलना आज अपनी आराधना में पवित्रशास्त्र के पठन से करें। एक व्यावहारिक कदम पर विचार विमर्श करें जो आपकी आराधना में पवित्रशास्त्र के प्रभाव को बढ़ा सकता है।

आराधना में प्रार्थना की महत्वता

पल्लवी[56] एक समर्पित मसीही है। यहाँ तक कि जब वह स्कूल में भी थी तो वह हर सुबह अकेले में परमेश्वर के साथ समय बिताती थी। नाश्ते से पहले, वह बाइबल पढ़ने और प्रार्थना में समय बिताती थी।

परन्तु अब जब वह चार बच्चों की माँ है, तो प्रार्थना और बाइबल पढ़ना उसके लिए और भी मुश्किल होता जा रहा है। एक बच्चा तो शिशु है और रात में पल्लवी को जगा देता है। पल्लवी को अक्सर सुबह बच्चों के जागने से पहले बिस्तर से उठने में दिक्कत होती है। रात होते-होते वह इतनी थक जाती है कि प्रार्थना और बाइबल पर ध्यान नहीं दे पाती।

रविवार आने पर पल्लवी खुश होती है। हर रविवार, उसे आराधना के दौरान आत्मिक प्रोत्साहन मिलता है, परन्तु सप्ताह के दौरान वह निराश हो जाती है। उसे लगता है कि उसका आत्मिक जीवन पूरी तरह से विफल हो गया है।

► कृपया पल्लवी को उसके भक्ति जीवन के लिए व्यावहारिक सलाह दें।

---

[56] पल्लवी की कहानी यहाँ से ली गई है Keith Drury, *The Wonder of Worship,* (Fishers, IN: Wesleyan Publishing House, 2002), 17.

हमने इस पाठ का आरम्भ आराधना में बाइबल के अध्ययन से किया था। हम आराधना में प्रार्थना के अध्ययन के साथ आगे बढ़ेंगे। बाइबल के द्वारा परमेश्वर हमसे बात करते हैं; प्रार्थना में, हम परमेश्वर को उत्तर देते हैं। बाइबल और प्रार्थना को हमारी आराधना में परिपूर्ण होना चाहिए।

बाइबल आधारित आराधना में सार्वजनिक और व्यक्तिगत प्रार्थना

हमने देखा है कि भजन संहिता यहूदी आराधना के लिए भजन पुस्तक थी। यह यहूदी आराधना के लिए प्रार्थना पुस्तक भी थी। भजन संहिता में सार्वजनिक और व्यक्तिगत प्रार्थना दोनों शामिल थीं। यहूदी आराधना के लिए सार्वजनिक और व्यक्तिगत प्रार्थना दोनों ही महत्वपूर्ण थीं।

घर पर, वफादार यहूदी दिन में तीन बार प्रार्थना करते थे (दानिय्येल 6:10)।[57] कई भजन संहिता व्यक्तिगत प्रार्थनाएँ हैं। इन्हें प्रार्थना में "हम" के बजाय "मैं" के प्रयोग से पहचाना जा सकता है। व्यक्तिगत प्रार्थना के लिए भजनों के उदाहरणों में शामिल हैं:

- भजन संहिता 18 – धन्यवाद का एक गीत
- भजन संहिता 32 – क्षमा के आनन्द की एक प्रार्थना[58]
- भजन संहिता 38 – पश्चाताप की एक प्रार्थना
- भजन संहिता 41 – दया के लिए एक प्रार्थना
- भजन संहिता 51 – पश्चाताप की एक प्रार्थना
- भजन संहिता 88 – दुख के समय एक विलाप गीत
- भजन संहिता 116 – परमेश्वर की देखभाल के लिए धन्यवाद करने का एक गीत

मंदिर में, यहूदी आराधक सामूहिक प्रार्थना में शामिल हुए। मंदिर के समर्पण के अवसर पर, सुलैमान ने लोगों पर परमेश्वर की कृपा के लिए राष्ट्रीय प्रार्थना की अगुआई की (2 इतिहास 6)। यशायाह ने यहूदा को परमेश्वर का संदेश पहुँचाया; “मेरा भवन सब देशों के लोगों के लिये प्रार्थना का घर कहलाएगा” (यशायाह 56:7)। निर्वासन के बाद, आराधनालय की आराधना व्यवस्था के पठन और प्रार्थना पर केंद्रित थी। आराधनालय में सभाएँ प्रार्थनाओं की एक श्रृंखला के साथ आरम्भ होती थीं।

प्रार्थना का इब्रानी तरीका प्रारंभिक कलीसिया में भी जारी रहा। पहली शताब्दी के मसीही घर पर दिन में तीन बार प्रार्थना करते थे। जब मसीही आराधना के लिए इकट्ठा होते थे, तो वे एक समूह के रूप में प्रार्थना करते थे। प्रभु की प्रार्थना प्रत्येक आराधना सभा का एक हिस्सा थी। प्रत्येक आराधना सभा के दौरान अन्य प्रार्थनाएँ भी की जाती थीं।

---

[57] दानिय्येल का यह अभ्यास वफादार यहूदियों में आम था।

[58] यह भजन संभवतः भजन संहिता 51 में दाऊद के पश्चाताप के तुरंत बाद रचा गया था।

आज की आराधना में प्रार्थना

यदि बाइबल आधारित आराधना में प्रार्थना महत्वपूर्ण थी, तो आज हमारी आराधना में भी प्रार्थना महत्वपूर्ण होनी चाहिए। सार्वजनिक और व्यक्तिगत, दोनों तरह की प्रार्थनाएँ महत्वपूर्ण हैं।

व्यक्तिगत प्रार्थना हमें दाखलता से जोड़ती है और हमारे आत्मिक जीवन को पोषण प्रदान करती है। व्यक्तिगत प्रार्थना का अभाव कई कलीसियाओं में आत्मिक सामर्थ की कमी का कारण हो सकता है। यदि यीशु को अपनी सांसारिक सेवकाई के दौरान व्यक्तिगत प्रार्थना के समय की आवश्यकता थी, तो हमें सेवकाई में आत्मिक पोषण और सामर्थ के लिए प्रार्थना पर कितना अधिक निर्भर होना हैं।

> "कई मसीही व्यक्तिगत भक्तिमय जीवन में विश्वास तो करते हैं, पर वास्तव में उसे निभाते कम हैं।"
> - कीथ ड्रूरी

सार्वजनिक प्रार्थना आराधना का एक महत्वपूर्ण तत्व है। कुछ कलीसिया प्रार्थना पर कम ध्यान देती हैं। एक पासबान ने अपनी कलीसिया में सार्वजनिक प्रार्थना की कमी का बचाव करते हुए कहा, "जब लोगों की आँखें बंद हों, तो आप उनकी रुचि नहीं बनाए रख सकते।"[59] उसका मानना था कि दर्शकों को प्रसन्न करना परमेश्वर को प्रसन्न करने से अधिक महत्वपूर्ण है।

सामूहिक प्रार्थना इस गलत धारणा को सही करती है कि मसीही धर्म केवल मेरे और परमेश्वर के साथ मेरे सम्बन्ध के विषय है; हम एक देह का हिस्सा हैं। जब हम प्रार्थना निवेदन सुनते हैं और सामूहिक प्रार्थना में शामिल होते हैं, तो हम एक साथी मसीही की बीमारी, भावनात्मक पीड़ा और जीवन की परिस्थितियों के प्रति जागरूक होते हैं। सामूहिक प्रार्थना हमें याद दिलाती है कि कलीसिया के सदस्य एक देह हैं। सामूहिक प्रार्थना हमें याद दिलाती है कि परमेश्वर कलीसिया की एक देह के रूप में देखभाल करते हैं।

जिस प्रकार पूरी आराधना सभा में बाइबल के वचनों का प्रयोग किया जाना चाहिए, उसी प्रकार पूरी आराधना सभा में प्रार्थना की जानी चाहिए। आराधना में परमेश्वर की उपस्थिति का स्वागत करने वाली आरंभिक प्रार्थना से लेकर, लोगों की ज़रूरतों के लिए प्रार्थना के केंद्रित समय तक, और सदस्यों के संसार में सेवा करने के लिए प्रस्थान करते समय आशीर्वाद की समापन प्रार्थना तक, प्रार्थना को हमारी आराधना पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

आराधना में प्रार्थना को केंद्र में रखना

प्रार्थना को सार्वजनिक आराधना का एक ज़्यादा सार्थक हिस्सा बनाने के कुछ व्यावहारिक तरीके क्या हैं? यहाँ छह व्यावहारिक सुझाव दिए गए हैं।

---

[59] Keith Drury, *The Wonder of Worship,* (Fishers, IN: Wesleyan Publishing House, 2002), 28 में दर्शाया गया है.

अपने व्यक्तिगत प्रार्थना जीवन को विकसित करें प्रार्थना को हमारी आराधना पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

कोई भी व्यक्ति दूसरों की आराधना में तब तक अगुवाई करने के लिए तैयार नहीं होता जब तक वह पहले आराधना न कर ले। कोई भी व्यक्ति सार्वजनिक प्रार्थना में तब तक अगुवाई करने के लिए तैयार नहीं होता जब तक वह पहले व्यक्तिगत तौर पर प्रार्थना न कर ले। जब हम व्यक्तिगत प्रार्थना जीवन अपना लेते हैं, तभी हम सार्वजनिक प्रार्थना में अगुवाई करने के लिए तैयार होते हैं। एक आराधना अगुए के रूप में, प्रतिदिन व्यक्तिगत प्रार्थना के अनुशासन के लिए स्वयं को समर्पित करें।

> "मसीही जीवन का मुख्य तत्व हमारे व्यक्तिगत अस्तित्व के केंद्र के रूप में परमेश्वर की आराधना और आराधना का दैनिक अनुभव है।"
> - डेनिस किनलॉ

प्रार्थना करना सीखें

यीशु के शिष्यों ने पूछा, "हमें प्रार्थना करना सिखाओ" (लूका 11:1)। प्रत्युत्तर में, यीशु ने आदर्श प्रार्थना सिखाई जिसे प्रभु की प्रार्थना कहा जाता है। प्रार्थना सीखी जा सकती है।

कुछ हद तक, परमेश्वर की हर संतान के लिए प्रार्थना स्वाभाविक है; भले ही, प्रार्थना सीखी जा सकती है। एक छोटा बच्चा बिना बातचीत की शिक्षा लिए भी बोलना सीख जाता है। जबकि, जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है, वह भाषा, शब्दावली और उचित बातचीत के विषय और अधिक सीखता है। उसी तरह, एक युवा मसीही स्वाभाविक रूप से परमेश्वर से बात करने की इच्छा रखता है, परन्तु जैसे-जैसे हम विश्वास में परिपक्व होते हैं, प्रार्थना के प्रति हमारी समझ और प्रशंसा गहरी होती जाती है।

प्रार्थना पर आधारित पुस्तकें प्रार्थना के बारे में आपकी समझ को गहरा कर सकती हैं। प्रार्थना पर कुछ उत्कृष्ट पुस्तकें जो हर मसीह के लिए लाभकारी हो सकती हैं, वे हैं:

- *Power Through Prayer* by E.M. Bounds
- *With Christ in the School of Prayer* by Andrew Murray
- *Mighty Prevailing Prayer* by Wesley Duewel

बाइबल के वचनों से प्रार्थना करें

प्रार्थना सीखने के लिए बाइबल के वचनों से बेहतर कोई जगह नहीं है। प्रार्थना की पहली पाठशाला बाइबल है। भजन संहिता और अन्य बाइबल आधारित प्रार्थनाएँ हमें प्रभावी ढंग से प्रार्थना करना सिखाती हैं। कलीसिया के इतिहास में, महान मसीहियों ने अपनी प्रार्थनाओं को बाइबल के वचनों से से भरा है। बाइबल में कुछ महान प्रार्थनाएँ इस प्रकार हैं:

- ***स्तुति की प्रार्थनाएँ***/ निर्गमन 15:1-18, 1 शमूएल 2:1-10, 1 इतिहास 29:11-20, लूका 1:46-55, लूका 1:68-79, 1 तीमुथियुस 6:15-16, और प्रकाशितवाक्य 4:8-5:14।

- ***अंगीकार की प्रार्थनाएँ***/ एज्रा 9:5-15, भजन संहिता 51, और दानिय्येल 9:4-19।

- ***मध्यस्थी की प्रार्थनाएँ***/ उत्पत्ति 18:23-33, निर्गमन 32:11-14, इफिसियों 1:15-23, और फिलिप्पियों 1:9-11।

परमेश्वर के साथ बातचीत करने पर ध्यान केंद्रित करें

कई बार, हमारी प्रार्थनाएँ परमेश्वर से मात्र माँगने तक ही सीमित रह जाती हैं। कुछ लोग परमेश्वर को माँगों की एक सूची देते हैं, कल की माँगों के उत्तर के लिए उनका धन्यवाद करते हैं, और फिर "आमीन" कहते हैं। सच्ची प्रार्थना माँगों की एक सूची से कहीं बढ़कर होनी चाहिए; प्रार्थना परमेश्वर के साथ बातचीत करना है।

प्रभु की प्रार्थना, प्रार्थना के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करती है (मत्ती 6:9-13)। प्रभु की प्रार्थना में शामिल थे:

- **स्तुति**: "हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए।"
- **आत्मसमर्पण**: "तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।"
- **विनती**: "हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे।"
- **अंगीकार**: "और जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर।"
- **मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना**: "और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा:"
- **गुणगान**: "क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं। आमीन।"

कई मसीही चार-भाग वाले नमूने का पालन करते हैं जिसमें यीशु की आदर्श प्रार्थना के प्रत्येक तत्व शामिल होते हैं: आराधना, अंगीकार, धन्यवाद और विनती।

आराधना

प्रार्थना में आराधना और स्तुति का कभी भी अभाव नहीं होना चाहिए। स्तुति से आरम्भ करके, हम यह सुनिश्चित करते हैं कि हमारी प्रार्थना सहायता के लिए माँगों की एक सूची से कहीं बढ़कर हो। भजन संहिता, स्तुति पर आधारित प्रार्थना का एक आदर्श प्रस्तुत करती है। यहाँ तक कि विलाप की भजन संहिता में भी स्तुति शामिल है। यदि प्रार्थना सच्ची आराधना है, तो उसमें परमेश्वर की आराधना भी शामिल होगी।

अंगीकार

यशायाह 6 दर्शाता है कि जब हम परमेश्वर (आराधना) को देखेंगे, तो हम स्वयं को भी देखेंगे। जब हम स्वयं को परमेश्वर की पूर्ण शुद्धता के प्रकाश में देखते हैं, तो हम अंगीकार की आवश्यकता को समझते हैं। कोई भी मसीही, चाहे वह कितना भी परिपक्व क्यों न हो, चाहे उसका परमेश्वर के साथ संबंध कितना भी गहरा क्यों न हो, उसे ऐसी स्थिति में नहीं पहुँचना चाहिए जहाँ वह कहे, "मुझे अंगीकार की कोई आवश्यकता नहीं है। मेरी पूर्णता परम है।" यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "जब तुम प्रार्थना करो तो कहो...और हमारे पापों को क्षमा कर, क्योंकि हम भी अपने हर एक अपराधी को क्षमा करते हैं" (लूका 11:4)। सच्ची आराधना में अंगीकार भी शामिल है।

कृतज्ञता (धन्यवाद देना)

आराधना परमेश्वर की स्तुति इस बात के लिए करती है कि वह कौन है; और कृतज्ञता परमेश्वर के उन कार्यों के लिए जो वह हमारी दुनिया में कर रहा है। कृतज्ञता यह पहचानती है कि हर अच्छा वरदान और हर पूर्ण दान ऊपर से आता है (याकूब 1:17)। कृतज्ञता में, हम परमेश्वर का धन्यवाद उस चीज़ के लिए करते हैं जो उसने हमारे जीवन में की है। 10 कोढ़ियों की कहानी कृतज्ञता के महत्व को दर्शाती है (लूका 17:12-19)।

विनती।

प्रभु की प्रार्थना में, यीशु ने दिखाया कि परमेश्वर अपने बच्चों की प्रार्थनाओं को महत्व देता है। परमेश्वर किसी सांसारिक शासक की तरह नहीं है जो इतना व्यस्त हो कि एक साधारण नागरिक की ज़रूरतों की परवाह न कर सके। इसके बजाय, परमेश्वर एक सिद्ध पिता है जो अपने बच्चों को अच्छी चीज़ें देने में प्रसन्न होता है। प्रभु की प्रार्थना में, हमें साधारण ज़रूरतों के लिए प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है ("हमारी दिन भर की रोटी...हमें दे") और आत्मिक मार्गदर्शन भी दिया जाता ("हमें परीक्षा में न ला")।

प्रभु की प्रार्थना में, जब हम प्रार्थना करते हैं, तो हम अपनी इच्छा परमेश्वर के सामने समर्पित करना सीखते हैं। भरोसेमंद बच्चों की तरह, हम सीखते हैं कि उनकी इच्छा सिद्ध है; उनकी "ना" हमारे भले के लिए है। प्रार्थना कोई जादुई हथियार नहीं है जिससे हम परमेश्वर को अपनी इच्छा के लिए मजबूर कर सकें। प्रार्थना एक आत्मिक अनुशासन है जो हमें परमेश्वर की इच्छा के प्रति आनंदपूर्वक समर्पित होने में सहायता करता है।

अपनी प्राथमिकताओं को परमेश्वर की प्राथमिकताओं के साथ मिलाएँ।

प्रार्थना अक्सर यह दर्शाती है कि हमारे लिए सबसे ज़रूरी क्या है। हमारी सबसे गंभीर प्रार्थना किससे प्रेरित होती है, भौतिक ज़रूरतें या आत्मिक ज़रूरतें?

थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के लिए अपनी प्रार्थना मे, पौलुस ने कहा, "हम सदा तुम्हारे लिये प्रार्थना भी करते हैं कि हमारा परमेश्वर तुम्हें इस बुलाहट के योग्य समझे, और भलाई की हर एक इच्छा और विश्वास के हर एक काम को सामर्थ्य सहित पूरा करे, ताकि...हमारे प्रभु यीशु का नाम तुम में महिमा पाए, और तुम उस में..." (2 थिस्सलुनीकियों 1:11-12)। पौलुस की सबसे बड़ी चिंता यह थी कि परमेश्वर उनके जीवन में अपना उद्देश्य पूरा करे। ये मसीही सताए जा रहे थे, परन्तु पौलुस की प्रार्थना यह नहीं थी कि परमेश्वर उन्हें कष्टों से बचाए। इसके बजाय, उसने प्रार्थना की कि उनमें प्रभु यीशु के नाम की महिमा हो।

जिस प्रकार हमारी प्रार्थनाएँ हमारी प्राथमिकताओं को दर्शाती हैं, उसी प्रकार हमारा धन्यवाद भी हमारी प्राथमिकताओं को दर्शाता है। यदि हमारा अधिकांश धन्यवाद भौतिक आशीषों के लिए है, तो भौतिक आशीषें ही हमारे लिए सबसे अधिक मूल्यवान हो सकती हैं। यदि हमारा अधिकांश धन्यवाद हमारे आत्मिक जीवन में परमेश्वर की सहायता के लिए है, तो आत्मिक विकास ही हमारे लिए सबसे अधिक मूल्यवान है।

थिस्सलुनीकियों के लिए अपनी प्रार्थना में, पौलुस ने परमेश्वर को धन्यवाद दिया क्योंकि उनका विश्वास अधिकाधिक मात्रा में बढ़ रहा था, और एक-दूसरे के लिए उनका प्रेम बढ़ता जा रहा था (2 थिस्सलुनीकियों 1:3)। उसका सबसे बड़ा धन्यवाद सांसारिक आशीषों के लिए नहीं था; उसका सबसे बड़ा धन्यवाद उनके आत्मिक विकास के लिए था। आपके लिए धन्यवाद का सबसे बड़ा कारण क्या है, आर्थिक आशीषें या आपके जीवन में आत्मिक विकास का प्रमाण?

परमेश्वर से बात करें, मंडली से नहीं।

बाइबल के वचनों के द्वारा, परमेश्वर मण्डली से बात करते हैं। प्रार्थना में, मण्डली परमेश्वर से बात करती है। सार्वजनिक प्रार्थना का समय अगुए के लिए लोगों को (प्रार्थना के द्वारा) यह बताने का अवसर नहीं है कि वह उनसे क्या कहना चाहता है! प्रार्थना परमेश्वर से बात करती है।

यीशु ने अपने शिष्यों को बताया कि सच्ची आराधना की भावना से कैसे प्रार्थना करनी चाहिए:

> जब तू प्रार्थना करे, तो कपटियों के समान न हो, क्योंकि लोगों को दिखाने के लिये आराधनालयों में और सड़कों के मोड़ों पर खड़े होकर प्रार्थना करना उनको अच्छा लगता है। मैं तुम से सच कहता हूँ कि वे अपना प्रतिफल पा चुके। परन्तु जब तू प्रार्थना करे, तो अपनी कोठरी में जा; और द्वार बन्द कर के अपने पिता से जो गुप्त में है प्रार्थना कर। तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा। प्रार्थना करते समय अन्यजातियों के समान बक–बक न करो, क्योंकि वे समझते हैं कि उनके बहुत बोलने से उनकी सुनी जाएगी। इसलिये तुम उन के समान न बनो, क्योंकि तुम्हारा पिता तुम्हारे माँगने से पहले ही जानता है कि तुम्हारी क्या–क्या आवश्यकताएँ हैं (मत्ती 6:5-8)।

सच्ची प्रार्थना परमेश्वर या कलीसिया को प्रभावित करने का प्रयास नहीं करती; यह हमारे स्वर्गीय पिता से सरलता और स्पष्टता से बात करती है।

► आप अपने व्यक्तिगत प्रार्थना जीवन को विकसित करने के लिए क्या करेंगे? आप अपनी कलीसिया में सार्वजनिक आराधना में प्रार्थना को अधिक सार्थक कैसे बनाएँगे?

परमेश्वर के वचन के प्रति प्रत्युत्तर स्वरूप भेंट

प्रार्थना परमेश्वर के वचन के प्रति एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। इसलिए, हमें बाइबल पठन और प्रवचन के बाद प्रार्थना करनी चाहिए। प्रार्थना में, हम परमेश्वर के वचन से प्राप्त सत्य का उत्तर देते हैं; हम आज्ञाकारिता के लिए स्वयं को समर्पित करते हैं।

भेंट भी परमेश्वर के वचन का प्रत्युत्तर है। पुराना नियम में, बलिदान (भेंट) व्यवस्था (परमेश्वर के वचन) के प्रति आराधक का प्रत्युत्तर था। नया नियम में, भेंट हमारे संपूर्ण अस्तित्व के परमेश्वर के प्रति समर्पण का प्रतीक है।

भेंट अर्पण करना आराधना का एक हिस्सा है। भजनकार ने आराधकों को भेंट लाने और अपने आँगन में आने के लिए कहा (भजन संहिता 96:8)। इब्रानियों के लेखक ने आराधना को भेंट देने के साथ जोड़ा; “भलाई करना और उदारता दिखाना न भूलो, क्योंकि

परमेश्वर ऐसे बलिदानों से प्रसन्न होता है" (इब्रानियों 13:16)। पौलुस ने फिलिप्पियों से कहा कि उनकी भेंट एक सुगन्धित भेंट है, एक ऐसा बलिदान जो परमेश्वर को ग्रहणयोग्य और प्रसन्न करता है (फिलिप्पियों 4:18)।

आराधनापूर्ण दान का बाइबल आधारित सिद्धांत

कई कलीसिया जाने वाले लोग दान को मुख्यतः कलीसिया के बिलों के भुगतान का एक तरीका मानते हैं। इससे यह दान एक आत्मिक आराधना के बजाय एक धन का लेन-देन बन जाता है। मसीही प्रबंधन को आराधना का एक हिस्सा समझा जाना चाहिए। निम्नलिखित सिद्धांतों में से प्रत्येक को हमारे दान के बाइबल आधारित सिद्धांत का हिस्सा होना चाहिए।

आराधनापूर्ण दान दिया जाना अनुग्रह से प्रेरित हो किसी भय से नहीं।

आराधना के एक कार्य के रूप में दान करना परमेश्वर के अनुग्रह के प्रति धन्यवाद से प्रेरित होता है। पौलुस ने कुरिन्थियों से यरूशलेम के ज़रूरतमंद मसीहियों की मदद के लिए दान देने का आग्रह किया। उसने उन्हें यह धमकी नहीं दी, "तुम्हें दान करना होगा क्योंकि किसी दिन तुम्हें मदद की ज़रूरत पड़ सकती है।" इसके बजाय, उसने अपनी अपील का समापन स्तुति के साथ किया, "परमेश्वर का, उसके उस दान के लिये जो वर्णन से बाहर है, धन्यवाद हो" (2 कुरिन्थियों 9:15)। उनका दान परमेश्वर के अनुग्रह के वरदान के लिए धन्यवाद से प्रेरित होगा। यदि कोई भेंट सच्ची आराधना है, तो वह एक इच्छुक हृदय से आती है।

आराधनापूर्ण दान दिया जाना प्रेम से प्रेरित हो कुछ पाने की इच्छा से नहीं।

सच्ची आराधना **परमेश्वर के प्रति प्रेम** से प्रेरित होती है, न कि कुछ पाने की इच्छा से। पैसों के दान, हमारे आत्मसमर्पण का प्रतीक हैं, जो हम परमेश्वर को अर्पित करते हैं। पौलुस ने मकिदुनिया के मसीहियों की प्रशंसा इसलिए की क्योंकि "उन्होंने प्रभु को फिर परमेश्वर की इच्छा से हम को भी अपने आपको दे दिया" (2 कुरिन्थियों 8:5)। उनके दान परमेश्वर और उनके क्षेत्र में सुसमाचार लाने वाले प्रेरितों के प्रति उनके प्रेम का प्रतीक थे।

जिस प्रकार संगीत या कोई अन्य आराधना गतिविधि गलत कारणों से की जा सकती है, उसी प्रकार दान भी परमेश्वर के प्रति प्रेम के बजाय कुछ पाने की इच्छा से प्रेरित हो सकता है। कुछ प्रचारक वादा करते हैं कि परमेश्वर आर्थिक दान के बदले में आर्थिक आशीष देंगे। बाइबल के संदर्भ से हटकर, वे परमेश्वर को दिए गए दान के लिए सौ गुना प्रतिफल देने का वादा करते हैं। ऐसा दान प्रेमपूर्ण आराधना का कार्य नहीं होगा, बल्कि एक विराट लॉटरी टिकट खरीदने जैसा होगा जिसमें देने वाला जैकपॉट जीतने की उम्मीद करता है! बाइबल कहीं भी इस प्रकार के दान की सराहना नहीं करती।

बजाय इसके कि बाइबल मरियम के दान की सराहना करती है। जब उसने यीशु का अभिषेक किया, तो उसे कोई प्रतिफल नहीं मिला। उसने बिना बदले की चिंता किए अपनी बचत उड़ेल दी। यहाँ तक कि शिष्य भी उसके व्यर्थ खर्च से क्रोधित थे। केवल यीशु ने ही उसके दान को देखा और उसकी प्रशंसा की, एक ऐसा दान जो पूरी तरह से प्रेम से प्रेरित था (मत्ती 26:6-13)।

आराधनापूर्ण दान न केवल परमेश्वर के प्रति प्रेम से, बल्कि **दूसरों के प्रति प्रेम** से प्रेरित होता है। यूहन्ना ने अपने पाठकों को याद दिलाया कि सच्चा प्रेम केवल शब्दों से बढ़कर है; यह कर्म है। फिलिप्पियों का पौलुस के प्रति प्रेम उनके दान में देखा जा सकता था। एक विश्वासी का दूसरों के प्रति प्रेम दान में देखा जा सकता है।

> पर जिस किसी के पास संसार की संपत्ति हो और वह अपने भाई को कंगाल देखकर उस पर तरस खाना न चाहे, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम कैसे बना रह सकता है? हे बालको, हम वचन और जीभ ही से नहीं, पर काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें (1 यूहन्ना 3:17-18)।

आराधनापूर्ण दान दिया जाना उदारता से हो कंजूसी से नहीं।

पौलुस ने कुरिन्थ की कलीसिया को उदारतापूर्वक दान देने के लिए चुनौती दी जब उसने कहा, "तुम हर बात में सब प्रकार की उदारता के लिये जो हमारे द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करवाती है, धनवान किए जाओ।" उनकी उदारता परमेश्वर के प्रति उनके धन्यवाद की अभिव्यक्ति थी। "क्योंकि इस सेवा के पूरा करने से न केवल पवित्र लोगों की आवश्यकताएँ पूरी होती हैं, परन्तु लोगों की ओर से परमेश्वर का भी बहुत धन्यवाद होता है" (2 कुरिन्थियों 9:11-12)। सच्ची आराधना के रूप में देने के लिए, खुले दिल से देना चाहिए।

आराधनापूर्ण दान दिया जाना विनम्रता से हो घमण्ड से नहीं।

► मत्ती 6:1-4 पढ़ें।

पहाड़ी उपदेश में, यीशु ने दान देने के गलत इरादों के विषय चेतावनी दी थी। कुछ लोग दूसरों से प्रशंसा पाने के लिए देते हैं; परन्तु उनका प्रतिफल प्रशंसा ही है। "वे अपना प्रतिफल पा चुके।" कुछ लोग चुपचाप दान देते हैं, और अपनी विनम्रता की तारीफ़ करते हैं; उनका प्रतिफल आत्म-संतुष्टि है। यीशु ने कहा, "जो तेरा दाहिना हाथ करता है, उसे तेरा बायाँ हाथ न जानने पाए।" अपनी उदारता पर स्वयं की प्रशंसा मत कीजिए। इसके बजाय, अपने स्वर्गीय पिता को अपनी इच्छानुसार आपको देखने और प्रतिफल देने दीजिए।

हर्ष के साथ देने की एक कहानी

जॉन वेस्ली ने अभी-अभी अपने कमरे के लिए तस्वीरें ख़रीदी ही थीं कि एक नौकरानी उनके दरवाज़े पर आई। ठंड का दिन था और उन्होंने देखा कि उसने सिर्फ़ एक पतला गाउन पहना हुआ था। उन्होंने कोट के लिए कुछ पैसे देने के लिए अपनी जेब में हाथ डाला, और पाया कि उनके पास बहुत कम पैसे बचे हैं। वे चिल्लाए, "मैंने अपनी दीवारों को उन पैसों से सजाया है जो शायद इस बेचारी को ठंड से बचा सकते थे!"

वेस्ली ने अपने ख़र्चों को कम करना आरम्भ कर दिया ताकि उनके पास ग़रीबों को देने के लिए पैसे हों। अपनी डायरी में, उन्होंने दर्ज किया कि एक वर्ष उनकी आय £30 थी, और उनका जीवन-यापन का ख़र्च £28 था, इसलिए उनके पास देने के लिए £2 थे। अगले वर्ष, उनकी आय दोगुनी हो गई, परन्तु वे अब भी £28 पर गुज़ारा करते थे और £32 दान कर देते थे। तीसरे वर्ष, उनकी आय बढ़कर

£90 हो गई; फिर से वे £28 पर गुज़ारा करते थे और £62 दान कर देते थे। चौथे वर्ष, उन्होंने £120 कमाए, फिर से £28 पर गुज़ारा करते थे, और ग़रीबों को £92 दान कर देते थे।

वेस्ली का उपदेश था कि मसीहियों को केवल दशमांश ही नहीं, बल्कि अतिरिक्त दान भी देना चाहिए। उनका मानना था कि बढ़ती आय के साथ, हमारा दान भी बढ़ना चाहिए। उन्होंने जीवन भर इसी का पालन किया। यहाँ तक कि जब उनकी आय हज़ारों पाउंड तक पहुँच गई, तब भी उन्होंने सादगी से जीवन बिताया और अतिरिक्त धन दान कर दिया। एक वर्ष उनकी आय £1,400 से अधिक थी; उन्होंने £30 को छोड़कर बाकी सब दान कर दिया।[60] उन्होंने कहा कि उन्होंने कभी भी £100 से ज़्यादा नहीं रखा। उन्होंने अपने जीवनकाल में कमाए गए £30,000 में से अधिकांश दान कर दिया।[61]

इस कहानी का सार गरीबी के लिए कोई कानूनी आदेश नहीं है! बल्कि सार है परमेश्वर के प्रति आनंदपूर्वक और स्वेच्छा से आज्ञाकारिता। परमेश्वर सभी को जॉन वेस्ली जितनी आय नहीं देते; परमेश्वर सभी को जॉन वेस्ली जितनी दर से दान करने के लिए नहीं कहते। परीक्षा यह नहीं है कि, "क्या मैं किसी और के बराबर दे रहा हूँ?" परीक्षा यह है कि, "क्या मैं परमेश्वर की आज्ञाकारिता में आनंदपूर्वक दे रहा हूँ?" परमेश्वर हमें त्यागपूर्ण दान के साथ आराधना करने के लिए बुलाते हैं।

दान देने की आदत

क्योंकि दान देना एक आराधना का कार्य है, इसलिए दान ऐसे तरीकों से इकट्ठा किया जाना चाहिए जो आराधना की भावना को बढ़ावा दें। निम्नलिखित व्यावहारिक विचारों पर विचार करें।

दान देने मे आराधना पर ज़ोर होना चाहिए, आवश्यकता पर नहीं।

सम्भवत: यही कारण है कि कई मसीही कलीसिया के बिलों का भुगतान करने के लिए दान को मुख्य रूप से एक तरीका मानते हैं, क्योंकि दान में बिलों का भुगतान करने पर ज़ोर दिया जाता है! यह तब और भी बदतर हो जाता है जब आर्थिक संकट के कारण हम कहते हैं, "कलीसिया बंद हो जाएगी " या "हम एक मिशनरी नहीं भेज सकते" यदि उदार दान नहीं दिया जाता। कभी-कभी पासबान दान माँगने के लिए माफ़ी माँगता है; "काश हमें आपसे पैसे माँगने की ज़रूरत न पड़ती।" इसके बजाय, दान खुशी से धन्यवाद देने का एक तरीका होना चाहिए।

---

[60] तुलना के लिए, आज यह 1,77,32,500 ₹कमाने और 4,43,312 ₹ को छोड़कर बाकी सब दान करने के बराबर है। अपने जीवनकाल में, वेस्ली ने आज के हिसाब से लगभग 26,59,87,500 ₹ के बराबर की कमाई की और दान कर दिया।

[61] इस कहानी को यहाँ से लिया गया Charles Edward White, “Four Lessons on Money from One of the World’s Richest Preachers” Christian History 19 (Summer 1988): 24. यहाँ पर उपलब्ध है https://christianhistoryinstitute.org/uploaded/50cf76d05900d6.14390582.pdf 22 जुलाई 2020.

जब हम दान देने की बात कर रहे हैं तो ज़ोर आराधना पर होना चाहिए। दान का आरम्भ किसी ऐसे वचन से किया जा सकता है जो आराधकों को दान के उद्देश्य की याद दिलाए। 2 कुरिन्थियों 8:9 और 2 कुरिन्थियों 9:7, निर्गमन 25:2, प्रेरितों 20:35, और यहाँ तक कि यूहन्ना 3:16 जैसे वचन दान देने की सच्ची प्रेरणा की ओर संकेत करते हैं।

दान अपने आप में आराधना सभा का एक भाग होना चाहिए।

कुछ संस्कृतियों में लोगों को सेवा के अलावा भी अपना चढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित करना आम बात है। भले ही यह दिखावे से बचने या सेवा में समय बचाने की इच्छा से प्रेरित हो सकता है, परन्तु यह दान को आराधना से अलग कर देता है। भेंट को आराधना सभा का एक हिस्सा मानने से आराधकों को यह समझने में मदद मिलती है कि दान करना आराधना का एक कार्य है।

क्योंकि दान देना परमेश्वर के प्रति हमारा प्रत्युत्तर है, इसलिए आप प्रवचन से पहले की बजाय बाद में भेंट लेने पर विचार कर सकते हैं। इसका अर्थ है, "हम परमेश्वर को उनके वचन के जवाब स्वरूप दे रहे हैं।"

माता-पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चों को आराधना में दान देना सिखाएँ।

जिस तरह हम अपने बच्चों को गाना, प्रार्थना करना और बाइबल पठन और प्रवचन सुनना सिखाते हैं, उसी तरह हमें अपने बच्चों को खुशी से देना भी सिखाना चाहिए। जैसे-जैसे हमारे बच्चे सीखते हैं कि देना आराधना का एक आनंददायक कार्य है, वे भी आराधक बन जाते हैं।

दान के समय बजने वाला संगीत आराधना को दर्शाना चाहिए।

यदि दान देना आराधना है, तो दान देने के दौरान संगीत भी आराधना ही होना चाहिए। यह संगीत वाद्य या गायन हो सकता है; यह एकल या सामूहिक हो सकता है; यह शांत और चिंतनशील या आनंदमय और उल्लासमय हो सकता है; शैली चाहे जो भी हो, यह आराधना का एक अंग होना चाहिए। दान देने के दौरान संगीत प्रस्तुत करने वालों को आत्मिक मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करनी चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे आराधना का अगुआ आत्मिक मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करता है। आराधना के किसी भी भाग को हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए।

दान लेने के बाद समर्पण की प्रार्थना की जानी चाहिए।

क्योंकि भेंट परमेश्वर को समर्पित है, इसलिए भेंट के बाद समर्पण की प्रार्थना अवश्य करनी चाहिए। इससे आरधकों को दान के उद्देश्य की याद आती है और दान को आराधना के रूप में दर्शाने का प्रत्यक्ष प्रमाण मिलता है।

कलीसिया के अगुए लोगों द्वारा दिए गए दानों के अच्छे प्रबंधक होने चाहिए।

दान देने में, आराधक अपनी भेंटों को कलीसिया के अगुवों के प्रबंधन में सौंप रहे हैं। कलीसिया के अगुवों को भेंटों की अच्छी देखभाल करनी चाहिए। कलीसिया को धन के उपयोग का लेखा-जोखा देना यह दर्शाता है कि भेंटों का उपयोग परमेश्वर के कार्य के लिए किया

जा रहा है। यह दान देने को प्रोत्साहित करता है और कलीसिया की अगुआई में बेईमानी के प्रलोभन को कम करता है। ऐसे संसार में जहाँ मसीही अगुवों को अविश्वास की दृष्टि से देखा जाता है, हमें स्वयं को निर्दोष साबित करने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए।

भेंट, बिल चुकाने का एक तरीका मात्र नहीं है; यह आराधना का एक कार्य है। अपने वचन के माध्यम से, परमेश्वर स्वयं को आराधकों के सामने प्रकट करते हैं। हम हर्षित हृदय से दिए गए बलिदानात्मक भेंटों के साथ जवाब देते हैं। यही सच्ची आराधना है।

दोबारा जाँच

क्या आपकी कलीसिया के लोग दान देते समय यह महसूस करते हैं कि वे आराधना कर रहे हैं, या वे बस बिल चुका रहे हैं? आप दान को आराधना का *कार्य* बनाने के लिए कौन से व्यावहारिक कदम उठा सकते हैं?

प्रभु भोज

► अपनी कलीसिया में प्रभु भोज के पालन पर चर्चा करें। आप कितनी बार प्रभु भोज मनाते हैं? जब आप प्रभु भोज मनाते हैं, तो क्या यह सभा का एक मुख्य अंग होता है?

जिस प्रकार परमेश्वर **लिखित** वचन (पवित्रशास्त्र का पठन) और **बोले गए** वचन (उसके वचन का प्रचार) में प्रकट होता है, उसी प्रकार वह प्रभु भोज के **प्रदर्शित** वचन में भी प्रकट होता है।[62] प्रभु भोज यीशु की प्रायश्चित मृत्यु की याद दिलाता है और उनके पुनरुत्थान का उत्सव है। अंतिम भोज फसह से संबंधित था, परन्तु इसने नई वाचा का भी उद्घाटन किया।

► मत्ती 26:17-30 और 1 कुरिन्थियों 11:17-34 पढ़ें।

नया नियम में प्रभु भोज के संदर्भ में सुसमाचारों के वृत्तांत और कुरिन्थ की कलीसिया को पौलुस के निर्देश शामिल हैं।

प्रभु भोज के पालन से संबंधित तीन प्रश्न अक्सर पूछे जाते हैं।

- प्रभु भोज का क्या अर्थ है?
- प्रभु भोज कितनी बार किया जाना चाहिए?
- प्रभु भोज कैसे किया जाना चाहिए?

> "प्रभु भोज, प्रभु की अपने लोगों के साथ नियुक्ति है। जो लोग मसीह के साथ इस नियुक्ति को निभाते हैं, वे पूरे विश्वास के साथ आशा कर सकते हैं कि वह उनसे मिलने ज़रूर आएंगे।"
> - फ्रैंकलिन सेगलर और
> रान्डेल ब्रैडली

[62] Franklin M. Segler and Randall Bradley, *Christian Worship: Its Theology and Practice* (Nashville: B&H Publishing, 2006), 178

प्रभु भोज का क्या अर्थ है?

प्रभु भोज का पालन आराधना का एक सार्थक हिस्सा है।[63] कुरिन्थ की कलीसिया को लिखते हुए पौलुस ने प्रभु भोज में यह दर्शाया:

1. हम मसीह की मृत्यु की ओर देखते हैं ("प्रभु की मृत्यु को...प्रचार करते हो")।
2. हम मसीह की वापसी की प्रतीक्षा करते हैं ("जब तक वह न आए")।

प्रभु भोज करते समय, हम उनके बलिदान को याद करते हैं और उनके वादा किए आगमन की प्रतीक्षा करते हैं। ये तत्व मसीह की देह और रक्त का प्रतिनिधित्व करते हैं और हमें प्रभु की मृत्यु में हमारी भागीदारी की याद दिलाते हैं। "वह धन्यवाद का कटोरा, जिस पर हम धन्यवाद करते हैं; क्या मसीह के लहू की सहभागिता नहीं? वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं, क्या वह मसीह की देह की सहभागिता नहीं?" (1 कुरिन्थियों 10:16)। प्रभु भोज क्रूस पर चढ़े और फिर जी उठे प्रभु की निरन्तर उपस्थिति का एक सशक्त प्रतीक है।

प्रभु भोज कितनी बार किया जाना चाहिए?

न तो पवित्रशास्त्र और न ही कलीसिया का इतिहास इस प्रश्न का कोई निश्चित उत्तर देता है। ऐसा प्रतीत होता है कि आरंभिक कलीसिया में प्रभु भोज प्रत्येक रविवार को लिया जाता था। आज, कुछ कलीसिया साप्ताहिक रूप से प्रभु भोज मनाते हैं, जबकि अन्य इसे वर्ष में केवल एक या दो बार ही करते हैं।

जब तक प्रभु भोज आराधना का एक श्रद्धापूर्ण पहलू है, तब तक बार-बार इसका पालन करने से प्रभु भोज का महत्व कम नहीं होता, ठीक उसी तरह जैसे साप्ताहिक बाइबल पठन आराधना में बाइबल के वचनों के महत्व को कम नहीं करता।

प्रभु भोज कैसे किया जाना चाहिए?

पौलुस ने कुरिन्थियों को खाने-पीने के बारे में चेतावनी दी "अनुचित रीति से" (1 कुरिन्थियों 11:27)।[64] कुछ व्यावहारिक कदम हमें प्रभु भोज को मसीहियों के लिए उसके महत्व के अनुरूप मनाने में मदद कर सकते हैं।

---

[63] चित्र: "The Lord's Supper" द्वारा लिया गया है Allison Estabrook 14 अक्टूबर, 2022, को से लियागया https://www.flickr.com/photos/sgc-library/52476662295/, इस लाइसेंस के अन्तर्गत CC BY 4.0.

[64] इस पद की व्याख्या कभी-कभी उस व्यक्ति के प्रभु भोज के अयोग्य होने के संदर्भ में की गई है। यद्यपि, "अनुचित रीति से" एक बेहतर अनुवाद प्रतीत होता है। कोई भी यीशु के बलिदान के योग्य नहीं है। कुरिन्थ में सुधार की जाने वाली समस्या आराधक की अयोग्यता नहीं थी, बल्कि जिस अपमानजनक और अयोग्य तरीके से वे इस पवित्र भोज का पालन कर रहे थे, वह थी।

प्रभु भोज आराधना सभा का मुख्य भाग होना चाहिए, न कि उसका एक अतिरिक्त भाग।

प्रभु भोज का स्वाभाविक समय प्रवचन के बाद का होता है। ऐसे में, प्रवचन हमें प्रभु भोज की गहरी समझ की ओर ले जाना चाहिए। यह प्रभु भोज से सीधे संबंधित प्रवचन के माध्यम से, या किसी संबंधित विषय (छुटकारा, प्रायश्चित, अनुग्रह, शिष्यत्व) पर प्रवचन के द्वारा किया जा सकता है। जिन कलीसियाओं में प्रभु भोज अक्सर किया जाता है, उनके लिए हर सभा का विषय प्रभु भोज पर केंद्रित करना उचित नहीं है। यद्यपि, प्रभु भोज के पालन और उससे पहले की सभा के बीच एक स्पष्ट संबंध होना चाहिए।

प्रभु भोज एक पवित्र और आनन्ददायक अवसर दोनो ही है।

प्रभु भोज एक गंभीर आत्म-परीक्षण और परमेश्वर की अनुग्रहपूर्ण कृपा के आनन्दमय उत्सव का समय है। इस गंभीरता का प्रदर्शन इस स्मरण में होता है कि यह भोज प्रभु की मृत्यु की स्मृति में खाया जाता है। इस आनन्द का प्रदर्शन प्रभु की वापसी के वायदे में होता है।

कभी-कभी, प्रभु भोज में पुनरुत्थान का उत्सव और मसीह के आगमन की प्रत्याशा पर विशेष बल दिया जा सकता है। अन्य समयों में, यीशु की मृत्यु की गंभीरता और आत्म-परीक्षण के महत्व पर विशेष बल दिया जा सकता है। दोनों ही पहलू इस विधि का हिस्सा हैं।

हम प्रभु भोज में आनंदित होते हैं क्योंकि प्रभु भोज परमेश्वर की कृपा से संभव हुआ है। प्रभु भोज में, हमें याद दिलाया जाता है कि केवल अनुग्रह ही हमारा उद्धार प्रदान करता है। हम प्रभु भोज की गंभीरता को इसलिए समझते हैं क्योंकि हम याद रखते हैं कि प्रभु भोज में हमारी भागीदारी पाप से दूर भागने के समर्पण का प्रतीक है। प्रभु की मेज़ पर, प्रत्येक आराधक को स्वयं की जाँच करनी चाहिए।

प्रभु-भोज में कलीसिया की एकता दिखाई देनी चाहिए।

यह दुख की बात यह है कि प्रभु भोज, एक ऐसा विधान जिसका उद्देश्य कलीसिया की एकता को प्रकट करना था, कभी-कभी विभाजन का कारण बन गया है। प्रभु भोज कैसे परोसा जाए (व्यक्तिगत प्याले, एक ही प्याला, प्याले में रोटी डुबोना) और कौन इसमें भाग ले सकता है (सभी घोषित विश्वासी, केवल बपतिस्मा प्राप्त लोग, केवल स्थानीय कलीसिया के सदस्य) इस पर मतभेदों ने कलीसियाओं के बीच विभाजन को जन्म दिया है।

पौलुस ने कुरिन्थ की कलीसिया को याद दिलाया कि जैसे वे एक रोटी आपस में बाँटते हैं, वैसे ही उन्हें एक देह होना चाहिए। "इसलिये कि एक ही रोटी है तो हम भी जो बहुत हैं, एक देह हैं : क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में भागी होते हैं" (1 कुरिन्थियों 10:17)।

हमें याद रखना चाहिए कि प्रभु भोज में, आराधना प्राथमिक है जबकि प्रक्रियाएँ सहायक हैं। कलीसिया को ऐसी प्रक्रियाओं का पालन करना चाहिए जो सुसमाचार और 1 कुरिन्थियों के प्रति निष्ठावान हों। यद्यपि, प्रभु भोज चाहे किसी भी तरीके से परोसा जाए, उसे विभाजनकारी नहीं बनना चाहिए। प्रभु भोज में, हम परमेश्वर के परिवार की एकता का उत्सव मनाते हैं।

निष्कर्ष: आराधना का सशक्त प्रभाव

क्या आराधना ज़रूरी है? यहाँ 1945 की एक गवाही दी गई है जो दिखाती है कि जब एक साधारण व्यक्ति प्रार्थना के द्वारा आराधना करता है, तो क्या हो सकता है।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, बेलर विश्वविद्यालय में एक धर्मांतरित बौद्ध जापानी-अमेरिकी छात्र पुनरुत्थान का माध्यम बन गया। रेजी होशिजाकी स्कूल की फीस भरने के लिए चौकीदार का काम करता था। कक्षाओं की सफ़ाई करते हुए, वह हर मेज़ के पास प्रार्थना करने लगा।

एक दिन, सप्ताहों की प्रार्थना के बाद, रेजी कक्षा में बैठा था, तभी वह अपने सहपाठियों के लिए इतना बोझिल हो गया कि वह घुटनों के बल गिर पड़ा और रोने लगा और प्रार्थना करने लगा। छात्रों ने पूछा, "रेजी को क्या हो गया है?" रेजी को कुछ भी नहीं हुआ था; उसकी कुर्सी उसकी वेदी बन गई थी।

रेजी की मध्यस्थता से, पुनरुत्थान बेलर विश्वविद्यालय और फिर टेक्सास राज्य में फैल गया। दर्जनों छात्र प्रचारकों ने पूरे दक्षिण-पश्चिमी संयुक्त राज्य अमेरिका में पुनरुत्थान को फैलाने के लिए बेलर परिसर छोड़ दिया। प्रार्थना आराधना का एक अनिवार्य हिस्सा है। जब हम आराधना करते हैं, तो हमारा संसार परमेश्वर की शक्ति से बदल जाता है।

पाठ 7 की समीक्षा

(1) हम अपनी आराधना के सभी भागों में बाइबल के वचनों को शामिल करके उन्हें आराधना का मुख्य स्थान बना सकते हैं।

(2) क्योंकि बाइबल आराधना का मुख्य स्थान है, इसलिए हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि इसे स्पष्ट, भावपूर्ण और विविधतापूर्ण ढंग से पढ़ा जाए जिससे पठन ताज़ा रहे।

(3) क्योंकि प्रचार आराधना का एक अंग है:

- प्रचार के लिए सावधानीपूर्वक तैयारी की ज़रूरत होती है।
- प्रचार के लिए मण्डली से प्रतिक्रिया की आवश्यकता होती है।
- प्रचार करने के लिए प्रचारक की ओर से प्रतिक्रिया की आवश्यकता होती है।
- प्रचारक को पवित्र आत्मा द्वारा सामर्थी होना चाहिए।

(4) प्रार्थना को सार्वजनिक आराधना का एक सार्थक हिस्सा बनाने के व्यावहारिक तरीके:

- अपने व्यक्तिगत प्रार्थना जीवन को विकसित करें
- प्रार्थना करना सीखें
- बाइबल के वचनों से प्रार्थना करें
- परमेश्वर के साथ बातचीत करने पर ध्यान केंद्रित करें
- अपनी प्राथमिकताओं को परमेश्वर की प्राथमिकताओं के साथ मिलाएँ।
- परमेश्वर से बात करें, मंडली से नहीं।

(5) क्योंकि दान आराधना का एक भाग है:

- दान दिया जाना अनुग्रह से उत्प्रेरित हो किसी भय से नहीं।
- दान दिया जाना प्रेम से उत्प्रेरित हो कुछ पाने की इच्छा से नहीं।
- दान दिया जाना उदारता से हो कंजूसी से नहीं।
- दान दिया जाना विनम्रता से हो घमण्ड से नहीं।
- जिस तरह से हम दान इकट्ठा करते हैं, उससे आराधना की भावना को बढ़ावा मिलना चाहिए।

(6) प्रभु भोज

- मसीह की मृत्यु की ओर देखते हैं
- मसीह की वापसी की प्रतीक्षा करते हैं
- इसे आदरणीय तरीके से किया जाना चाहिए।
- इसे गंभीरता और आनंद दोनों तरह से किया जाना चाहिए।
- इसे ऐसे तरीके से किया जाना चाहिए जो कलीसिया की एकता को दर्शाता हो।

पाठ 7 के कार्य

(1) पाठ 6 में, आपने पाँच अलग-अलग विषयों से संबंधित गीत चुने थे। इन पाँचों विषयों में से प्रत्येक के लिए, उस विषय से संबंधित 3-4 बाइबल संदर्भ ढूँढ़िए। आपकी सूचियों का उपयोग अगले पाठ में आराधना सभा की योजना बनाते समय किया जाएगा।

- परमेश्वर के स्वभाव पर 3-4 पद
- यीशु और उनकी मृत्यु तथा पुनरुत्थान पर 3-4 पद
- पवित्र आत्मा और कलीसिया पर 3-4 पद
- परमेश्वर के लोगों को समर्पित, पवित्र जीवन जीने की बुलाहट देनेवाले 3-4 पद
- सुसमाचार प्रचार और मिशन पर 3-4 पद

(2) अगले पाठ के आरम्भ में, आप इस पाठ पर आधारित एक परीक्षा देंगे। तैयारी के लिए परीक्षा के प्रश्नों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें।

पाठ 7 परीक्षा

(1) आराधना में पवित्रशास्त्र के महत्व को दर्शाने वाले तीन उदाहरण की सूची बनाएँ।

(2) आराधना सभा के तीन भागों के नाम बताइए जिनमें पवित्रशास्त्र का उपयोग किया जा सकता है।

(3) प्रवचन को आराधना मानने के सिद्धांत की चार व्यावहारिक अर्थपूर्ण बातों की सूची बनाएँ।

(4) प्रार्थना को सार्वजनिक आराधना का एक सार्थक हिस्सा बनाने के लिए तीन व्यावहारिक सुझाव बताएँ।

(5) आराधनापूर्ण दान के बाइबल आधारित चार सिद्धांतों की सूची बनाएँ।

(6) दान को आराधना का कार्य बनाने के लिए चार व्यावहारिक विचार बताइए। (कोई चार)

(7) 1 कुरिन्थियों में स्वीकार किए गए प्रभु भोज के दो पहलुओं की सूची बनाएँ।

(8) याद किया हुआ मत्ती 6:5-8 लिखें।

पाठ 8

आराधना की योजना बनाना और उसकी अगुआई करना

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अन्त होने तक विद्यार्थी को नीचे दिए गए कार्य करने के योग्य होना चाहिए:

(1) आराधना की अगुआई करने के लिए आत्मिक रूप से तैयार होने के महत्व को पहचानना।

(2) आराधना सभाओं में संरचना और विषय की भूमिका को समझना।

(3) संतुलित आराधना सभाओं की योजना बनाना जो मसीह की पूरी देह से बात करे।

(4) एक आराधना अगुए में आवश्यक गुणों की सराहना करना।

(5) आराधना की अगुआई और चालाकी से प्रभावित के बीच अंतर करना।

(6) प्रभावशाली आराधना की अगुआई के लिए व्यावहारिक कदम लागू करना।

इस पाठ की तैयारी

कण्ठस्थ करें 2 इतिहास 5:13-14।

भूमिका

► आप हर सप्ताह की आराधना सभा की योजना बनाने में कितना समय लगाते हैं? क्या आप गीतों को प्रवचन के साथ मिलाते हैं? क्या इस तरह की योजना बनाना ज़रूरी है या पहले से योजना बनाना आराधना में पवित्र आत्मा की स्वतंत्रता में बाधा डालता है?

कल्पना करें कि एक महिला खास मेहमानों के लिए खाना बना रही है। जैसे ही मेहमान खाने के लिए आते हैं, मेज़बान कहती है, मुझे खाना पकाने में ज़्यादा समय लगाने का शौक़ नहीं। ये रही बची हुई रोटी, मांस और सब्ज़ियाँ। जैसे चाहो, इन्हें मिलाकर खा लो। क्या आप खास मेहमानों के लिए ऐसा करेंगे? बिलकुल नहीं! आप अपने मेहमानों को अपना सर्वश्रेष्ठ देना चाहते हैं।

कल्पना करें कि एक ऐसे पासबान हैं जो परमेश्वर के लिए भेंट के रूप में आराधना ला रहे हैं। पासबान कहता है, "मैं आराधना की योजना बनाने में ज़्यादा समय नहीं लगाता। मैं पवित्र आत्मा को अपने माध्यम से बोलने की आज़ादी देना चाहता हूँ, इसलिए मैं कोई योजना नहीं बनाऊँगा। मैं आत्मा को अपना मार्गदर्शन करने दूँगा।"

कुछ अगुवों का मानना है कि पवित्र आत्मा एक अच्छी तरह से तैयार किए गए प्रवचन या सुनियोजित सभा के माध्यम से काम नहीं कर सकता। जबकि, बाइबल आराधना की योजना बनाने के महत्व को दर्शाती है। मंदिर की आराधना के लिए संगीतकारों की सावधानीपूर्वक तैयारी से लेकर कुरिन्थ की कलीसिया के लिए आराधना के संबंध में पौलुस के निर्देशों तक, पवित्रशास्त्र दर्शाता है कि

सेवकाई में अगुआई के लिए योजना बनाना ज़रूरी है। हमें ऐसी भेंट नहीं लाना चाहिए जिसकी हमें कोई क़ीमत न चुकानी पड़े। क्योंकि आराधना हमारे परमेश्वर के लिए बलिदान है, इसलिए परमेश्वर हमारे सर्वोत्तम भेंट के योग्य है।

इस पाठ में हम आराधना की अगुआई के दो पहलुओं पर विचार करेंगे। सबसे पहले, हम आराधना की योजना बनाने के महत्व का अध्ययन करेंगे। फिर, हम आराधना सभा में प्रभावशाली अगुआई पर विचार करेंगे।

आराधना सभा की तैयारी करना

► निर्गमन 28-29 पढ़ें। इस्राएल की आराधना में अगुवाई करनेवालों की सावधानीपूर्वक तैयारी पर ध्यान दीजिए। आप आराधना की अगुवाई करने के लिए आत्मिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से कैसे तैयारी करते हैं?

आराधना अगुए को तैयार करना

आराधना सभा की योजना बनाना और उसकी तैयारी करना महत्वपूर्ण है; **आराधना अगुवे** को तैयार करना और भी ज़रूरी है। हम लोगों की अगुआई उन जगहों पर नहीं कर सकते जहाँ हम पहले नहीं गए हैं। इसलिए, आराधना में दूसरों की अगुआई करने से पहले हमें अपने हृदय को तैयार करना होगा।

पाठ 2 में, हमने आराधना करने वालों के लिए परमेश्वर की अपेक्षाओं को देखा। परमेश्वर अपने आराधकों से कहता है कि उनके हाथ साफ़ और हृदय शुद्ध हों। आराधना सभा की तैयारी शुरू करने से पहले, हमें आराधना अगुवे के रूप में स्वयं को तैयार करना चाहिए। हमें आराधना की अगुआई करने के लिए आत्मिक रूप से तैयार होना चाहिए।

आराधना की योजना प्रार्थना और बाइबल पठन से आरम्भ करें। अपने आत्मिक विकास के लिए परमेश्वर के वचन में समय बिताएँ। आराधना अगुवों के लिए एक निरंतर ख़तरा यह है कि वे सेवकाई की तैयारी को व्यक्तिगत आत्मिक विकास का स्थान लेने दें। हम दूसरों के लिए प्रवचन तैयार करने के लिए बाइबल का अध्ययन कर सकते हैं, जबकि अपने स्वयं की आत्मिक जरुरतों के लिए परमेश्वर के वचन को बोलने की अनुमति नहीं देते।

> "जो व्यक्ति दूसरों को राजा की उपस्थिति में ले जाता है, उसे स्वयं राजा के देश में दूर तक यात्रा करनी चाहिए और बार-बार उसके मुख को निहारा होना चाहिए।"
> - चार्ल्स स्पर्जन

मण्डली को परमेश्वर का वचन बताने वाले वचनों और गीतों को चुनने से पहले, परमेश्वर के वचन और परमेश्वर की आत्मा को एक व्यक्ति के रूप में आपसे बात करने का समय दें। फिर जब आप रविवार की सभा की योजना बनाना शुरू करें, तो परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको बाइबल वचन, प्रवचन का विषय और संगीत के बारे में मार्गदर्शन दे, जो लोगों की आवश्यकताओं के अनुसार हो।

दोबारा जाँच

आप अपने जीवन में व्यक्तिगत आराधना का एक सशक्त नमूना कैसे विकसित करते हैं? आपको किन बाधाओं का सामना करना पड़ता है? आप उन बाधाओं का सामना कैसे करते हैं?

आराधना सभा की योजना बनाना[65]

फ्रेड बॉक ने उस पासबान, लॉयड जॉन ओगिल्वी, जिनके अधीन उन्होंने सेवा की थी, की तैयारी का वर्णन किया। डॉ. ओगिल्वी ने अपने प्रवचनों की योजना पूरे एक साल के लिए बनाई थी। कई बार, जनवरी में चुना गया प्रवचन का विषय जुलाई में प्रचार के समय कलीसिया की ज़रूरतों के लिए बिल्कुल उपयुक्त होता था। क्यों? "हमारा परमेश्वर कल, आज और आने वाले कल का परमेश्वर है। वह हमारी ज़रूरतों को हमसे बहुत पहले से जानता है। ...और जब हम तैयार और संगठित होते हैं, तो यह हमें पवित्र आत्मा के लिए एक अधिक उपयोगी और सीधा-सादा साधन बनाता है।"[66] पवित्र आत्मा जानता है कि आपकी सभा में कौन होगा; वह आपको उन गीतों और वचनों की ओर मार्गदर्शन कर सकता है जो उनकी ज़रूरतों को पूरा करेंगे।

हो सकता है कि आपको एक बार में एक वर्ष की योजना न बनानी पड़े, परन्तु आराधना की योजना बनाना ज़रूरी है। सावधानीपूर्वक योजना बनाने से हम आराधना के दौरान "आगे क्या होगा?" की चिंता करने के बजाय आराधना पर ध्यान केंद्रित कर पाते हैं। जब हम योजना नहीं बनाते, तो हम पिछले सप्ताह जो किया था, उसी पर निर्भर हो जाते हैं। योजना बनाने से हम रचनात्मक होने के लिए स्वतंत्र होते हैं।

एक संरचना से आरम्भ करें।

हममें से ज़्यादातर लोग जीवन में व्यवस्था पसंद करते हैं। हम सुबह नाश्ता और शाम को खाना खाना पसंद करते हैं। हम आमतौर पर किताबों के पहले अध्याय से अंत तक पढ़ते हैं, बजाय इसके कि हम बेतरतीब ढंग से पन्ने पढ़ें। कोई भी यात्री अंतरराष्ट्रीय उड़ान में सवार होकर पायलट को यह कहते हुए नहीं सुनना चाहेगा, "हमने अभी तय नहीं किया है कि आज कौन सा रास्ता अपनाना है। हम बस उड़ान भरेंगे और देखेंगे कि क्या होता है।" हमें संरचना पसंद है।

आराधना में संरचना, पवित्र आत्मा द्वारा हमारी योजनाओं में बदलाव किए जाने पर उसका अनुसरण करने की हमारी स्वतंत्रता को सीमित नहीं करती! संरचना, आराधना को मार्गदर्शन प्रदान करती है, साथ ही साथ यदि पवित्र आत्मा हमारी संरचना को बदल देता है, तो हम उसकी अगुआई के लिए भी तैयार रहते हैं। मंदिर के समर्पण के समय, एक सुनियोजित संरचना थी, परन्तु परमेश्वर की उपस्थिति ने सभा के क्रम को बदल दिया (2 इतिहास 5:13-14)।

> "व्यवस्था के बिना सहजता अव्यवस्थित हो सकती है,
> और सहजता के बिना व्यवस्था बेजान हो सकती है।"
> - फ्रैंकलिन सेगलर और
> रान्डेल ब्रैडली

---

[65] आराधना की योजना बनाने से संबंधित अधिकांश सामग्री यहाँ से ली गई है "The Nuts and Bolts of Worship Planning" जो यहाँ उपलब्ध है। http://worship.calvin.edu/resources/resource-library/the-nuts-and-bolts-of-worship-planning 22 जुलाई, 2020 को लिया गया।

[66] Lois and Fred Bock, *Creating Four-Part Harmony*, (Carol Stream: Hope Publishing, 1989), 43

परिशिष्ट A में कुछ रूपरेखाएँ दी गई हैं जिनका उपयोग कुछ अगुवे आराधना की योजना बनाने के लिए करते हैं। आपको अपनी सभाओं के लिए इनमें से किसी एक को अपनाना सहायक लग सकता है। ये कोई कठोर प्रारूप नहीं हैं, बल्कि एक ऐसी संरचना प्रदान कर सकते हैं जिसे आप अपनी आवश्यकताओं के अनुसार ढाल सकते हैं।

आराधना की योजना बनाने के लिए कुछ सामान्य संरचनाएं शामिल हैं:[67]

(1) प्रवचन पर केंद्रित संरचना

- सत्य की घोषणा: भजन, बाइबल वचन, प्रवचन
- सत्य के प्रति प्रतिक्रिया: आमंत्रण, दान, समापन भजन

(2) आराधना में परमेश्वर के लोगों की गतिविधि पर आधारित संरचना

- परमेश्वर के लोग एकत्रित होते हैं: आराधना के लिए बुलाहट, स्तुति-गीत, प्रार्थना
- परमेश्वर के लोग वचन सुनते हैं: बाइबल पठन और प्रवचन
- परमेश्वर के लोग वचन का उत्तर देते हैं: आमंत्रण-गीत, प्रार्थना, दान
- परमेश्वर के लोगों को भेजा जाता है: समापन-भजन, आशीर्वाद

(3) संरचना परमेश्वर और उसके लोगों के बीच वार्तालाप को दर्शाती (यशायाह 6 के आधार पर)

- परमेश्वर स्वयं को प्रकट करते हैं (पद 1): आराधना के लिए बुलावा
- परमेश्वर के लोग स्तुति और अंगीकार के साथ प्रत्युत्तर देते हैं (पद 3-5): भजन और प्रार्थना
- परमेश्वर अपने लोगों से बात करते हैं (पद 6-8): बाइबल पठन और प्रवचन
- परमेश्वर के लोग समर्पण के साथ प्रत्युत्तर देते हैं (पद 8): आमंत्रण भजन और दान
- परमेश्वर अपने लोगों को आदेश देते हैं (पद 9): आशीर्वाद

(4) भजन संहिता 95 पर आधारित संरचना

- हर्ष और धन्यवाद के साथ प्रवेश करो (पद 1-5): आराधना के लिए बुलावा, स्तुति के भजन
- श्रद्धापूर्ण आराधना जारी रखें (पद 6-7): समर्पण के भजन, प्रार्थना
- परमेश्वर की आवाज़ सुनें (पद 7-11): बाइबल पठन और प्रवचन

---

[67] यहाँ शामिल संरचनाएँ सम्पूर्ण सभा के लिए हैं। कुछ आराधना अगुए केवल सभा के संगीत भाग के लिए संरचनाओं का उपयोग करते हैं। इन्हें यहाँ शामिल नहीं किया गया है क्योंकि ये आराधना को बाकी सभा से अलग करती हैं। बाइबल में, आराधना में सम्पूर्ण सभा शामिल होती है, न कि प्रवचन से अलग कोई विशेष संगीत आराधना समूह।

एकता से भरे प्रवचन का प्रचार करो

आराधना परमेश्वर से बात करती है, परन्तु यह मण्डली से भी बात करती है। आराधना में, हम परमेश्वर का वचन को आराधकों तक पहुँचाते हैं। किसी सभा की योजना बनाते समय, यह पूछना उपयोगी होता है, "परमेश्वर इस सभा में अपने लोगों तक क्या संदेश पहुँचाना चाहते हैं?"

क्या आपने कभी इस तरह की सभा में भाग लिया है?

सभा का क्रम	विषय
सामूहिक भजन 1	प्रार्थना के लाभ
सामूहिक भजन 2	परमेश्वर की स्तुति
सामूहिक भजन 3	हमारी स्वर्गिक आशा
एकल गीत/समूह गान	हमारे जीवनों में पवित्रात्मा को आमंत्रित करना
प्रवचन	“योना का नीनवे के लिए बुलावा” – सुसमाचार के लिए चुनौती
सामूहिक भजन 4	परमेश्वर की स्तुति

आराधकों के मन में कौन सा संदेश बना रहेगा? उन्होंने प्रार्थना, परमेश्वर, स्वर्ग और पवित्र आत्मा की स्तुति के बारे में गीत गाए हैं, और फिर एक बिल्कुल अलग विषय पर उपदेश सुना है। अगले सप्ताह, क्या लोग सुसमाचार प्रचार की चुनौती को याद रखेंगे? सम्भवत:, परन्तु सभा की संरचना ने इस विषय की पुष्टि नहीं की।

अब सुसमाचार प्रचार के विषय पर आयोजित एक सभा पर विचार करें:

सभा का क्रम	विषय
सामूहिक भजन 1	परमेश्वर की स्तुति
सामूहिक भजन 2	स्तुति और सुसमाचार प्रचार
सामूहिक भजन 3	हमारे सुसमाचारीय संदेश का सारांश
सामूहिक भजन 4	सुसमाचार प्रचार की ज़रूरत
प्रवचन	"योना का नीनवे के लिए बुलावा" – सुसमाचार के लिए चुनौती
एकल गीत/समूह गान	सुसमाचार प्रचार के लिए आदेश
सामूहिक भजन 5	आदेश के प्रति प्रत्युत्तर

क्योंकि अगुवों ने एक ही विषय पर संदेश देने के लिए प्रार्थना सभा की योजना बनाई है, इसलिए लोगों को पूरे सप्ताह परमेश्वर की आवाज़ सुनाई देगी, जो उन्हें सुसमाचार प्रचार के बुलावे की याद दिलाएगी। जब वे उन लोगों के पास से गुज़रेंगे जिनके जीवन में कुछ भी नहीं है, तो शायद उन्हें वे गीत याद आएँगे जो बताते हैं कि लोगों को प्रभु की कितनी ज़रूरत है। मंगलवार को अपना काम अथवा अपनी नौकरी करते हुए, शायद वे इस बात पर खुश होंगे कि यीशु बचाता है और याद रखेंगे कि क्योंकि यीशु ने हमें बचाया है, इसलिए हमें इस खुशी को दूसरों के साथ साझा करना चाहिए।

क्या परमेश्वर बिना किसी मुख्य विषय के प्रार्थना सभा के द्वारा काम कर सकता है? बिल्कुल! यद्यपि, यदि हम समय निकालकर सावधानीपूर्वक योजना बनाएँ, तो हम अपनी मण्डली की संदेश पर ध्यान केंद्रित करने में सहायता कर सकते हैं। क्या यह हमेशा ज़रूरी है? नहीं। कभी-कभी एक प्रार्थना सभा में कई विषय होते हैं जिनका प्रयोग परमेश्वर मण्डली की अलग-अलग ज़रूरतों को पूरा करने के लिए करता है। हमें कभी भी इस सोच के जाल में नहीं फँसना चाहिए कि परमेश्वर सिर्फ़ एक ही व्यवस्था के द्वारा काम करता है। जबकि, एक एकीकृत विषय अक्सर आराधकों को प्रार्थना सभा के संदेश पर ध्यान केंद्रित करने में सहायता करता है।

आराधना में संतुलन बनाए रखें।

हम सभी की अपनी-अपनी पसंद की चीज़ें होती हैं: पसंद का खाना, पसंद का संगीत, पसंद की किताबें, पसंद का खेल और पसंद की बाइबल की किताबें। आराधना की योजना बनाते समय, यह ज़रूरी है कि एक अगुवा अपने पसंद के गीतों, बाइबल के वचनों और प्रवचन के विषयों के अलावा और भी कुछ शामिल करे। संतुलित आराधना पूरी कलीसिया को संपूर्ण सुसमाचार सुनाएगी।

(1) संतुलित आराधना परमेश्वर की महिमा और हमारे साथ उसकी उपस्थिति दोनों को दर्शाती है।

परमेश्वर एक सर्वोच्च परमेश्वर है जो सारी पृथ्वी पर राज्य करता है; परमेश्वर एक विद्यमान परमेश्वर भी है जो अपने लोगों के बीच निवास करता है। हम पूरी बाइबल में इस संतुलन को देखते हैं।

लाल सागर पार करने के बाद, इस्राएल के लोगों ने परमेश्वर की शक्ति के गीत गाए, "हे यहोवा, देवताओं में तेरे तुल्य कौन है? तू तो पवित्रता के कारण महाप्रतापी, और अपनी स्तुति करने वालों के भय के योग्य, और आश्चर्यकर्म का कर्ता है।" उन्होंने परमेश्वर की देखभाल के विषय गाया, "अपनी करुणा से तू ने अपनी छुड़ाई हुई प्रजा की अगुवाई की है, अपने बल से तू उसे अपने पवित्र निवास–स्थान को ले चला है" (निर्गमन 15:11-13)।

यशायाह ने प्रभु परमेश्वर को एक ऊँचे और ऊँचे सिंहासन पर विराजमान देखा। वह प्रतापी थे और पृथ्वी से बहुत ऊँचे थे। प्रभु परमेश्वर ऊँचे थे, परन्तु उन्होंने स्वयं यशायाह को भेजने के लिए कहा "जा, और इन लोगों से कह..." (यशायाह 6:1-13)।

भजनकार ने महान परमेश्वर की स्तुति की, "हे यहोवा हमारे प्रभु, तेरा नाम सारी पृथ्वी पर क्या ही प्रतापमय है! तू ने अपना वैभव स्वर्ग पर दिखाया है।" यह महान परमेश्वर मानवजाति के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ने के लिए नीचे आ गया है; "तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले?" (भजन संहिता 8)।

आराधना में, हम परमेश्वर के ऐश्वर्य और हमारे साथ उनकी उपस्थिति, दोनों पर ध्यान देते हैं। जब हमारी आराधना परमेश्वर के ऐश्वर्य को भूल जाती है, तो वह एक साधारण मित्र बन जाता है जिसे आज्ञाकारिता और सेवा की आवश्यकता नहीं रह जाती। जब हमारी आराधना परमेश्वर के हमारे साथ वर्तमान जुड़ाव को भूल जाती है, तो हम उसकी आराधना एक ऐसे दूरस्थ परमेश्वर के रूप में करते हैं जिसे हमारी चिंताओं की थोड़ी भी परवाह नहीं है। आराधना की योजना बनाते समय, हमें मानवजाति के साथ परमेश्वर के सम्बन्ध के दोनों पहलुओं पर ध्यान देना चाहिए। हमें आराधकों को याद दिलाना चाहिए कि हम परमेश्वर का भय मानते हैं; हमें यह भी याद रखना चाहिए कि हम परमेश्वर में आनंदित होते हैं। प्रार्थना में, हम परमेश्वर के महान कार्यों के लिए उसकी स्तुति करते हैं; हम अपनी अति व्यक्तिगत ज़रूरतें भी उसके सामने रखते हैं।

► अपनी भाषा में भजनों और कोरसों का संग्रह देखें। ऐसे किसी गीत का उदाहरण ढूँढ़िए जो परमेश्वर की महिमा को दर्शाता हो। हमारे साथ उनके घनिष्ठ संबंध के बारे में एक और गीत ढूँढ़िए।

(2) संतुलित आराधना सामूहिक और व्यक्तिगत दोनों होती है।

भजन संहिता की पुस्तक में सामूहिक स्तुति और व्यक्तिगत स्तुति दोनों शामिल हैं। कुछ भजन संहिताएँ "हमारी" स्तुति की बात करती हैं; कुछ भजन संहिताएँ "मेरी" स्तुति की बात करती हैं। मंदिर में, इब्रानी आराधक एक साथ आराधना करते थे; घर पर, वे व्यक्तिगत रूप से प्रार्थना करते थे। यीशु अक्सर सामूहिक आराधना के लिए आराधनालय जाते थे; वह अपने पिता के साथ अकेले समय बिताने के लिए एकांत स्थान पर भी जाते थे (लूका 4:16 और मरकुस 1:35)। बाइबल की आराधना सामूहिक और व्यक्तिगत

दोनों थी। आराधना में हमें यह अवसर देने चाहिए कि पूरी मंडली एक देह के रूप में आराधना करे, और साथ ही व्यक्तिगत आराधकों को यह अवसर मिले कि वे परमेश्वर के प्रति अपनी व्यक्तिगत भक्ति प्रकट करें।

इसे व्यवहार में लाना

सामूहिक और व्यक्तिगत दोनों प्रकार की आराधना, सभा के सभी क्षेत्रों को प्रभावित करेगी। हम मिलकर पूरी मण्डली के लिए गीत गाएँगे; हम मिलकर व्यक्तिगत आराधना के गीत गाएँगे। हम प्रार्थना करेंगे, "हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है"; हम सामूहिक प्रार्थना के समय रखेंगे जिससे प्रत्येक सदस्य मण्डली के भीतर एक देह रूप से प्रार्थना कर सके।

इतिहास में किसी भी समय की तुलना में, सामूहिक आराधना एक चुनौती है। मोबाइल फ़ोन, टैबलेट, टेक्स्टिंग और निरंतर इंटरनेट के युग में, हम भावनात्मक और आत्मिक रूप से अलग रहते हुए भी आराधना सभा में भाग ले सकते हैं। सामूहिक आराधना के प्रति प्रतिबद्धता के लिए आवश्यक है कि हम स्वयं को ध्यान भटकाने वाली चीज़ें से अलग करें और देह के साथ आराधना करें।

► अपनी भाषा में भजनों और कोरसों का संग्रह देखें। ऐसे गीत का उदाहरण खोजें जिसके बोल किसी सामूहिक दृष्टिकोण से लिखे गए हों। इसमें "हमारा", "हम", "हमें" जैसे सर्वनाम या "सभी लोग" जैसे शब्द शामिल हो सकते हैं। इसके बाद, ऐसे गीत का उदाहरण खोजें जिसके बोल किसी एक व्यक्ति के दृष्टिकोण से लिखे गए हों। इसमें "मेरा", "मैं", "मुझे" जैसे सर्वनाम शामिल हो सकते हैं।

(3) संतुलित आराधना में परिचित और नया दोनों शामिल हैं।

यह संतुलन धर्म या सिद्धांत की बजाए वास्तविक जीवन के उपयोग और व्यवहार पर आधारित है।, परन्तु यदि हम मण्डली को आराधना में सक्रिय रूप से शामिल करना चाहते हैं, तो यह ज़रूरी है। आराधना की योजना बनाते समय, हमें परिचित और नए का संतुलन बनाए रखना चाहिए।

ज़रूरत से ज़्यादा नयापन मण्डली को आराधक के बजाय दर्शक बना देता है; वे भाग नहीं ले पाते क्योंकि उन्हें गीत नहीं आते। सी.एस. लुईस ने एक बार शिकायत की थी कि कई पासबान यह भूल जाते हैं कि "यीशु ने पतरस से कहा था 'मेरी भेड़ों को चराओ,' न कि 'मेरे कुत्तों को नए करतब सिखाओ।'" बहुत ज़्यादा नयापन आराधना पर ध्यान केंद्रित करना मुश्किल बना देता है।

ज़रूरत से ज़्यादा सुपरिचित एक खाली दिनचर्या का कारण बनती है। एक ऐसी सभा जो पूरी तरह से पूर्वसूचनीय हो गई है, मण्डली का ध्यान भटका देती है और आराधना से विमुख हो जाती है।

आराधना की योजना में परिचित और नए, दोनों को शामिल करना चाहिए। उदाहरण के लिए, एक आराधना अगुए ने प्रायश्चित के बारे में एक नए भजन में मण्डली की अगुआई करने का फैसला किया। भजन प्रायश्चित की कीमत दर्शाता है। उस गीत के गाए जाने के बाद, आराधना अगुए ने एक पुराना, ज़्यादा जाना-पहचाना गीत गाया जिसमें मण्डली को यीशु के बलिदान का जवाब देने के लिए कहा गया।

परिचित और नये का संतुलन मण्डली को सक्रिय आराधना के लिए प्रोत्साहित करता है।

इसे व्यवहार में लाना

परिचित और नए के बीच संतुलन बनाने वाली आराधना में पुराने और नए दोनों भजन शामिल होंगे। इसमें परिचित और कम परिचित, दोनों तरह के बाइबल पठन शामिल होगा। यूहन्ना 3:1-21 जैसे किसी परिचित अंश को पढ़ने से पहले, जिसमें यीशु नए जन्म के बारे में सिखाते हैं, हम यहेजकेल 36:16-38 जैसे किसी कम परिचित अंश को पढ़ सकते हैं, जिसमें परमेश्वर इस्राएल को जल से धोने और अपने लोगों को एक नया हृदय देने का वादा करता है। ये दोनों बाइबल अंश विषयवस्तु में एक-दूसरे से निकटता से जुड़े हुए हैं। इन्हें एक साथ पढ़ने से कलीसिया की यूहन्ना अध्याय 3 में यीशु की शिक्षाओं की समझ गहरी होगी।

यदि आप किसी नए गीत का परिचय दे रहे हैं, तो नए गीत के साथ परिचित गीत भी शामिल करें। जब हम आराधना का आरम्भ किसी अपरिचित गीत से करते हैं, तो सभा एक अनिश्चित स्वर से आरम्भ होती है। किसी परिचित गीत से आरम्भ करना और फिर नए गीत का परिचय देना बुद्धिमानी है।

ताइवान की एक कलीसिया में गीतों का परिचय देने का एक रचनात्मक तरीका था। उनकी कलीसिया के ज़्यादातर लोग नए विश्वासी थे और गाए जाने वाले कई गीतों को नहीं जानते थे। इस कलीसियामें हर सभा से पहले एक पूर्वाभ्यास होता था। आराधना से बीस मिनट पहले, लोगों ने वे गीत गाए जो आराधना सभा का हिस्सा थे। पियानो वादक ने धुन बजाई ताकि सभी उसे सीख सकें। चूँकि यह एक पूर्वाभ्यास था, इसलिए अगुआ रुककर एक वाक्यांश दोहरा सकता था जब तक कि मण्डली उसे अच्छी तरह से सीख न ले। 10 बजे तक, लोगों ने नए गीत भी पूरे आत्मविश्वास के साथ गाए।

► अपनी भाषा में भजनों और कोरसों का संग्रह देखें। एक ही विषय पर आधारित दो गीत या ऐसे दो गीत खोजें जिनका विषय एक जैसा हो। दोनों गीतों के बीच एक स्पष्ट संबंध होना चाहिए। एक गीत बहुत जाना-पहचाना होना चाहिए और एक नया। यदि आपको किसी आराधना सभा में इन दोनों गीतों का प्रयोग करना हो तो आप पहले कौन सा गीत गाएँगे? आप दूसरे गीत पर कैसे जाएँगे?

एक टीम के रूप में योजना बनाएं।

सभोपदेशक यह व्यावहारिक सलाह देता है, "एक से दो अच्छे हैं, क्योंकि उनके परिश्रम का अच्छा फल मिलता है" (सभोपदेशक 4:9)। आराधना की योजना एक सामूहिक गतिविधि होनी चाहिए। आराधना सभा की अगुआई में शामिल प्रत्येक व्यक्ति की योजना बनाने में भूमिका होनी चाहिए।

जब पासबान, गीतकार और अन्य कलीसिया अगुआ आराधना सभा के लिए परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए एकत्रित होते हैं, तो प्रत्येक व्यक्ति की प्रतिभाएँ एक साथ जुड़ जाती हैं। एक टीम के रूप में काम करके, कलीसिया की अगुआई के प्रत्येक सदस्य की क्षमताएँ आराधना में योगदान देती हैं।

लम्बे समय के लिए योजना बनाएं।

किसी भी एक सभा में बाइबल का संपूर्ण संदेश शामिल नहीं होता, परन्तु समय के साथ हमें अपने आराधकों को सुसमाचार के सभी पहलुओं से अवगत कराना चाहिए। हम सभी के अपने पसंद के विषय होते हैं; हमें उन विषयों पर भी प्रचार करने और गाने के लिए स्वयं को प्रेरित करना चाहिए जो हमें पसंद नहीं हैं।

कुछ पासबान और आराधना अगुआ एक कैलेंडर का उपयोग करते हैं जो तीन वर्षों में बाइबल के माध्यम से शिक्षण के लिए विषयों को निर्धारित करता है।[68] अन्य लोग साप्ताहिक योजना बनाते हैं, परन्तु एक निश्चित समयावधि में बाइबल के संपूर्ण संदेश पर काम करने का ध्यान रखते हैं।

भले ही आप एक सख्त शिक्षण कैलेंडर का पालन न करें, फिर भी मसीही वर्ष के प्राथमिक सुअवसरों के विषय जागरूकता आपको सुसमाचार के महत्वपूर्ण पहलुओं के माध्यम से मार्गदर्शन करेगी। मसीही वर्ष में महत्वपूर्ण सुअवसर हैं:

- **आगमन** (क्रिसमस से पहले के चार रविवार): मसीह के पहले और दूसरे आगमन, दोनों पर ध्यान केंद्रित।
- **क्रिसमस**: मसीह के देह-धारण और जन्म पर ध्यान केंद्रित।
- **रोज़े** (ईस्टर से पहले के छह रविवार): यीशु के दुख और मृत्यु पर ध्यान केंद्रित, साथ ही प्रत्येक विश्वासी के लिए शिष्यत्व की माँगों पर भी ध्यान केंद्रित।
- **ईस्टर**: मसीह के पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण पर ध्यान केंद्रित।
- **पिन्तेकुस्त**: पवित्र आत्मा और कलीसिया पर ध्यान केंद्रित।

चाहे आप एक औपचारिक क्रम का पालन करें या साप्ताहिक आधार पर योजना बनाएँ, सुनिश्चित करें कि आपकी मण्डली आराधना के भाग के रूप में **पूरा सुसमाचार** सुने।

शांतिपूर्वक योजना बनाएं।

आराधना हमारे विषय नहीं है; आराधना परमेश्वर के प्रति हमारा बलिदान है। हमारी आराधना की योजना उस अर्पण का एक हिस्सा है। हम आराधना की योजना इस अपराधबोध से प्रेरित दबाव के बिना बनाते हैं कि "क्या यह पर्याप्त है?" हम अनुग्रह के परमेश्वर की आराधना करते हैं। हमारी भेंट इसलिए स्वीकार नहीं की जाती क्योंकि वह पर्याप्त है, परन्तु इसलिए कि परमेश्वर अपनी संतानों की स्वेच्छा से दी गई भेंट स्वीकार करते हैं।

---

[68] ओन लाईन पर उपलब्ध http://lectionary.library.vanderbilt.edu/calendar.php 22 जुलाई, 2020.

यह इस दबाव से बचने के लिए ज़रूरी है कि "हमें किसी क ख ग कलीसिया के साथ बने रहना चाहिए।" आज की तकनीक और मल्टीमीडिया की दुनिया में, कई कलीसिया के अगुए अन्य कलीसियाओं की तरह स्थाई रहने का निरंतर दबाव महसूस करते हैं। पासबान नवीनतम तकनीक पाने के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। संगीत निर्देशक नवीनतम गीत गाने के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। आराधक ऐसी कलीसिया की तलाश में खरीदार बन जाते हैं जो नवीनतम आकर्षण प्रदान करता हो।

अपने दान भेंट से परमेश्वर को प्रभावित करने के प्रलोभन में न पड़ें। संगीत और तकनीक जैसे आराधना के साधनों को वास्तविक आराधना का स्थान न लेने दें। यह जानते हुए कि अनुग्रह के परमेश्वर आपके बलिदान की मीठी सुगंध से प्रसन्न होते हैं, उन्हें अपना सर्वश्रेष्ठ दें। उन्हें अपना सर्वश्रेष्ठ दें, और फिर उन पर भरोसा करें कि वे आपकी भेंट स्वीकार करेंगे। आराधना अन्य कलीसियाओं के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं है; यह परमेश्वर को दी गई भेंट है।

आराधना सभा की अगुआई करना

सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न: श्रोता कौन है?

► आराधना में कलीसिया की क्या भूमिका है? आराधना के अगुवों की क्या भूमिका है? परमेश्वर की क्या भूमिका है?

कई लोग आराधना को एक संगीत समारोह की तरह देखते हैं। मण्डली पासबान और संगीतकारों के प्रदर्शन को सुनती है। पवित्र स्थान एक संगीत समारोह हॉल है।

बैरी लिश ने आराधना के इस दृष्टिकोण को फुटबॉल खेल जैसा बताया है:[69]

- आराधना के अगुवे, आराधना करने वाले खिलाड़ी हैं।
- मण्डली, स्टैंड में बैठकर खेल देखने वाले दर्शक हैं।
- परमेश्वर वह कोच हैं जो आराधना के अगुवों को बताते हैं कि उन्हें क्या करना है।

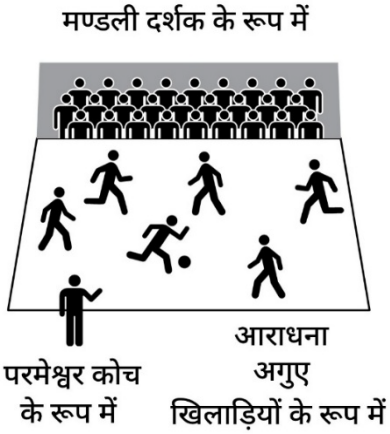

बाइबल में आराधना का चित्रण बहुत अलग है। बाइबल की आराधना में, मण्डली आराधना करती है जबकि आराधना के अगुवे, आराधना का मार्गदर्शन करने वाले कोच की भूमिका निभाते हैं:

- आराधना का अगुवा, मण्डली का मार्गदर्शन करने वाला कोच है।
- आराधना करने वाले, आराधना करने वाले खिलाड़ी हैं।
- परमेश्वर वह श्रोता हैं जो हमारी आराधना ग्रहण करते हैं।

[69] Barry Liesch, *The New Worship*, 2nd edition (Grand Rapids: Baker Books, 2001), 123

नाटक के प्रदर्शन में, आप निर्देशक पर कभी ध्यान नहीं देते। निर्देशक नाटक की हर पंक्ति जानता है और प्रत्येक अभिनेता को प्रवेश का संकेत देता है। यदि वह अपना काम अच्छी तरह से करता है, तो दर्शक उस पर कभी ध्यान नहीं देते। यही आराधना अगुओं की भूमिका है। हमारा काम लोगों के लिए आराधना करना नहीं है; हमारा काम आराधना में मण्डली का मार्गदर्शन करना है। मण्डली, पासबान और संगीत अगुआ के साथ, परमेश्वर की उपस्थिति में आराधना करती है। आराधना में हमारा लक्ष्य परमेश्वर को प्रसन्न करना है। आराधना के बाइबल मॉडल में, परमेश्वर हमारी आराधना के श्रोता हैं।

जबकि, परमेश्वर एक दर्शक से कहीं बढ़कर हैं; आराधना में हम जो कुछ भी करते हैं, परमेश्वर उसे सशक्त बनाते हैं। और, आराधना अगुआ कोच या निर्देशक से कहीं बढ़कर है। आराधना अगुआ एक निर्देशक और एक आराधक दोनों होता है। आराधना में कई रिश्ते शामिल होते हैं:

- परमेश्वर आराधकों को आमंत्रित करता है, उनकी आराधना स्वीकार करता है, और कलीसिया की सेवा करते समय आराधना अगुवों का मार्गदर्शन करता है।
- आराधना अगुवे आराधना में कलीसिया का मार्गदर्शन करते हैं, परमेश्वर की वाणी सुनते हैं, और आराधकों के रूप में भाग लेते हैं।
- कलीसिया परमेश्वर की आराधना करती है, परमेश्वर के वचन को सुनती है, और आराधना में एक-दूसरे से बातें करती है।

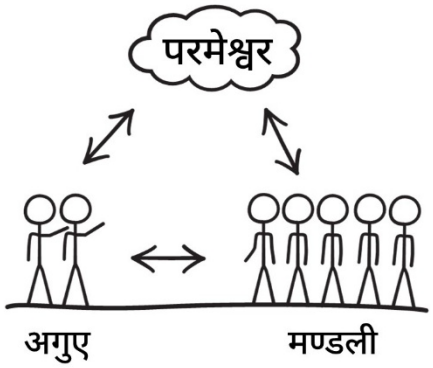

आराधना को प्रदर्शन के रूप में देखने से कैसे बचें [70]

1. ऐसे गीत गाएँ जिन्हें लोग जानते हों या आसानी से सीख सकें। उन्हें मण्डली के सुरों में गाएँ। नए गीतों का प्रयोग संयम से करें।
2. परमेश्वर की शक्ति, महिमा और उद्धार का गान करें और उसका उत्सव मनाएँ। अपनी मण्डली की सेवा करें। उन्हें परमेश्वर के वचन से भरें। घटिया बोल या कमज़ोर धर्मज्ञान वाले गीत न गाएँ।
3. रोशनी जलाए रखें। ज़्यादा बोलना बंद करें। सुसमाचार की केंद्रीयता की कीमत पर लूप/रोशनी/दृश्यों को अपनी रचनात्मकता का माध्यम न बनने दें।
4. अपनी आराधना की अगुवाई और चुने हुए गीतों को अपनी मण्डली के अधिकांश लोगों के अनुकूल बनाएँ। पास्टर के रूप में अगुआई करें।

---

[70] Jamie Brown, "Are We Headed For A Crash? Reflections on the Current State of Evangelical Worship." से लिया गया है। Available at https://worthilymagnify.com/2014/05/19/crash/ 22 जुलाई, 2020.

5. यीशु की ओर संकेत करें। अपनी ओर ध्यान आकर्षित न करें।

आराधना अगुए के गुण

आपकी पदवी चाहे जो भी हो, एक आराधना अगुए के रूप में आप एक पासबान की भूमिका निभाते हैं। यदि आप पासबान हैं, तो आप इसे पहले से ही समझते हैं। यदि आप एक आम अगुए हैं, तो आपको यह समझना चाहिए कि आपकी भूमिका आपको आत्मिक अगुआई के पद पर रखती है।

एक आराधना अगुए का चुनाव करते समय, हमें आत्मिक योग्यताओं पर विचार करना चाहिए, न कि केवल संगीत या व्यक्तिगत योग्यताओं पर। जब प्रेरितों ने यूनानी विधवाओं की देखभाल के लिए सेवकों को चुना, तो उन्होंने अच्छी प्रतिष्ठा वाले, आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण पुरुषों की तलाश की (प्रेरितों 6:3)। नैतिक, आत्मिक और नैतिक योग्यताएँ पहले स्थान पर थीं।

कुछ कलीसियाओं में, गीत अगुओं की पसंद, संगीतकारों और अन्य अगुआई भूमिकाओं का चयन लोकप्रियता के आधार पर होता है। यदि भोजन परोसने वाले सेवकों को उनकी आत्मिक योग्यताओं के आधार पर चुना गया था, तो निश्चित रूप से आराधना अगुओं को आत्मिक गुणों के आधार पर चुना जाना चाहिए।

यदि आप अपने कलीसिया में आराधना की अगुआई करते हैं (पासबान, संगीतकार, या आराधना में अन्य अगुए के रूप में), तो आपको ऐसे गुण विकसित करने का प्रयास करना चाहिए जो एक प्रभावशाली आराधना अगुआ बनाते हों।

- **आत्मिक परख**। “क्या मैं पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन के प्रति संवेदनशील हूँ?”
- **संवेदनशीलता**। “क्या मैं कलीसिया की ज़रूरतों के प्रति संवेदनशील हूँ? क्या मैं ऐसे गीत और वचन का चुनाव करता हूँ जो उन ज़रूरतों को पूरा करते हों?”
- **सहयोग**। “क्या मैं एक टीम में प्रभावशाली ढंग से सेवा करता हूँ? जब पास्टर मुझसे समापन गीत बदलने के लिए कहता है, तो क्या मैं सहयोग करता हूँ? क्या मैं पूरी टीम की ज़रूरतों को पूरा करता हूँ?”
- **ज्ञान**। “क्या मैं परमेश्वर के वचन के अपने ज्ञान में बढ़ रहा हूँ? क्या मैं परमेश्वर के वचन को आराधना में मुख्य स्थान देता हूँ?”
- **बुद्धिमता**। “क्या मैं आराधना को लेकर होने वाले विवादों को समझने और उनका जवाब देने की बुद्धिमता में बढ़ रहा हूँ? क्या मैं सुनने में तत्पर और बोलने में धीमा होने के लिए स्वयं को अनुशासित करता हूँ?” (याकूब 1:19)
- **धीरज**। “क्या मैं धीरज रखता हूँ जब कलीसिया सभा के लिए मेरी योजना पर प्रतिक्रिया देने में धीमी होती है?”
- **विनम्रता**। "क्या मैं ऐसा गीत गाने को तैयार हूँ जो मेरी कलीसिया के कम प्रशिक्षित सदस्यों की ज़रूरतों को पूरा करे? क्या मैं एक सरल शैली में प्रचार करने को तैयार हूँ जो मेरी कलीसिया के अशिक्षित सदस्यों की ज़रूरतों को पूरा करे? क्या मैं

विनम्रता से अगुवाई करता हूँ, या क्या मैं स्वयं को उस कलीसिया से श्रेष्ठ समझता हूँ जहाँ परमेश्वर ने मुझे रखा है?" एक आराधना अगुए के रूप में, आपकी रचनात्मकता को आपकी पासबानीय ज़िम्मेदारी के आगे झुकना होगा। आपकी पहली जिम्मेदारी लोगों की सेवा करना है।

- **रचनात्मकता।** "क्या मैं आराधना को सार्थक बनाने के तरीके खोजता हूँ? क्या मैं उस दोहराव वाले ढर्रे में पड़ने से बचता हूँ जिसमें हर सभा एक जैसी होती है?"
- **अनुशासन।** "क्या मैं आराधना से ध्यान भटकने से बचने के लिए अपनी रचनात्मकता को अनुशासित करता हूँ? क्या मैं हर सभा को इतना नया बनाने से बचता हूँ कि लोग अपना ध्यान परमेश्वर पर केंद्रित न कर सकें?"
- **उत्तमता।** "क्या मैं हर सप्ताह अपनी सर्वश्रेष्ठ भेंट लाता हूँ? क्या मैं एक आराधना अगुए के रूप में निरंतर विकास कर रहा हूँ?"[71]

आराधना की अगुआई करने के लिए व्यावहारिक कदम

एक अगुआ लोगों को आराधना करने के लिए मजबूर नहीं कर सकता; फिर भी, एक अगुआ मण्डली के लिए आराधना पर ध्यान देना आसान बना सकता है।

उदाहरण के द्वारा अगुआई करना

आराधना में अगुआई करने का एक विशेषाधिकार मण्डली के साथ आराधना करने का अवसर है। मण्डली की आराधना में अगुआई करते हुए, अगुए को भी आराधना करनी चाहिए।

दुख की बात है कि आराधना, आराधना अगुए के लिए एक चुनौती हो सकती है। हम आराधना की अगुआई करने में इतने व्यस्त हो सकते हैं कि हम आराधना ही नहीं कर पाते! यदि आप संगीत निर्देशक हैं, तो आप स्वयं को आराधना करते हुए ऐसे विचार सोचते हुए पा सकते हैं:

- “विशेष गीत गानेवाली को आने में देर हो गई है। मुझे उम्मीद है कि वह विशेष गीत के लिए समय पर पहुँच जाएगी!”
- “लोगों ने पहला भजन ठीक से नहीं गाया। क्या वह गीत हमारी कलीसिया के लिए गाना बहुत कठिन है?”
- “ऐसा लगता है हम बहुत धीरे गा रहे हैं। क्या मुझे अगले पद की लय बढ़ा देनी चाहिए?”

यदि आप पासबान हैं, तो आप स्वयं को आराधना करते हुए यह सोचते हुए पाएँगे:

---

[71] गुणवत्ता का अर्थ यह नहीं है कि केवल सिद्धहस्त रूप से प्रशिक्षित अगुए ही आराधना का नेतृत्व कर सकते हैं। हेरोल्ड बेस्ट गुणवत्ता को "अपने पहले से बेहतर बनने की प्रक्रिया" के रूप में परिभाषित करते हैं। चूँकि आराधना परमेश्वर को हमारा अर्पण है, इसलिए हम निरंतर अपने पहले से बेहतर बनने का प्रयास करते हैं। Harold Best, *Music through the Eyes of Faith* (San Francisco: Harper Books, 1993), 108

- “पिछले सप्ताह की तुलना में हमारे यहाँ 10 लोग कम हैं। वे कहाँ हैं?”
- “क्या मुझे प्रवचन को निमंत्रण के साथ समाप्त करना चाहिए?”
- “वह गीत मेरे संदेश के साथ मेल नहीं खाता! मैं स्वर्ग पर आधारित गीत से न्याय पर आधारित प्रवचन पर कैसे जा सकता हूँ?”

हमें अपने जीवन में आराधना का स्थान सभा की अगुआई करने की प्रक्रिया को नहीं लेने देना चाहिए। जब हम आराधना की अगुआई करते हैं, तो हमें आराधना ही करनी चाहिए। इससे मण्डली को आराधना की प्रेरणा मिलती है। एक वक्ता ने कहा, "आराधना के अगुवों के रूप में, हम **भेड़चाल के कुत्ते** नहीं हैं जो मण्डली को अपनी मनचाही दिशा में ले जाने के लिए मजबूर करने के लिए उसकी एड़ी पर काट रहे हों। हम ऐसे **आराधक** हैं जो मण्डली को अपने साथ परमेश्वर की उपस्थिति में आने के लिए आमंत्रित करते हैं।" मण्डली तब आराधना नहीं करती जब अगुवा उन्हें आराधना करने के लिए कहता है; वे तब आराधना करते हैं जब अगुवा आराधना करता है। आराधना का अगुवा उदाहरण प्रस्तुत करके अगुआई करता है।

उत्साह के साथ अगुआई करना

रश्मि सुबह 3:00 बजे तक एक बीमार बच्चे की देखभाल में लगी रही। तीन घंटे सोने के बाद, वह नाश्ता बनाने और कलीसिया जाने के लिए उठी। वह नींद की कमी से थकी हुई, निराश थी क्योंकि उसने अपने बेटे को खिलौना रखना भूल जाने पर कड़ी फटकार लगाई थी, और आत्मिक रूप से भी थकी हुई थी क्योंकि इस सप्ताह उसे परमेश्वर के साथ अकेले समय व्यतीत करनी का बहुत कम समय मिला था।

पासबान संदीप चाहते हैं कि आराधना में ज़्यादा से ज़्यादा लोग शामिल हों। पहले गीत के बाद, वह मंच पर आते हैं, "तुम लोगों को क्या हो गया है? हम परमेश्वर की उपस्थिति में हैं। हम राजा की आराधना कर रहे हैं, और तुममें से कुछ लोग ऐसे लग रहे हो जैसे तुम घर पर सोना पसंद करोगे! तुम्हें शर्म आनी चाहिए। आराधना में शामिल हो जाओ!"

पासबान संदीप के इरादे सही हैं। वह चाहते हैं कि उनकी मंडली सक्रिय रूप से आराधना करे, परन्तु रश्मि क्या सुनती है? "मैं एक माँ के रूप में असफल रही हूँ; मैं अपने बेटे के साथ बहुत ज़्यादा सख़्त रही। मैं एक मसीही के रूप में असफल रही हूँ; कल मैं न तो प्रार्थना कर पाई और न ही वचन का अध्ययन कर पाई। मैं कलीसिया जाने में भी असफल रही हूँ; परमेश्वर नाराज़ हैं क्योंकि मैंने गाना नहीं गाया।" अपराधबोध को प्रेरणा के रूप में प्रयोग करके, पासबान संदीप ने रश्मि के लिए आराधना को और भी कठिन बना दिया है।

आराधना के अगुवों के रूप में, हमें आराधना को प्रोत्साहित करना चाहिए; हमें अपने जीवन में आराधना का आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए; फिर हम परिणाम परमेश्वर पर छोड़ सकते हैं। परमेश्वर की कृपा ही आराधना को संभव बनाती है; परमेश्वर की कृपा ही सच्ची आराधना को सशक्त बनाती है; परमेश्वर की कृपा ही एक आराधक के हृदय को आकर्षित करती है।

हमें सकारात्मक शब्दों से आराधना को प्रोत्साहित करना चाहिए, परन्तु हमें आराधकों को अपराधबोध से भरकर या उनकी भावनाओं को कृत्रिम रूप से भड़काकर उन्हें प्रभावित करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। हमारा लक्ष्य आराधकों को परमेश्वर की ओर इंगित

करना है। वह आराधना को प्रेरित करते हैं; आराधना हमारी प्रेरक तकनीकों या भावनात्मक हेरफेर पर निर्भर नहीं है। आराधना के अगुवों के रूप में जो काम परमेश्वर का है हमें उस काम को करने की ज़रूरत नहीं है!

यह भाग रश्मि की कहानी से शुरू हुआ। आइए एक विनम्र और उत्साहवर्धक आराधना अगुवे की सच्ची कहानी के साथ समाप्त करें। अभिषेक को युवाओं को आराधना में सक्रिय बनाने के लिए संघर्ष करना पड़ा। उसने पाया कि वे आराधना से ज़्यादा टेक्स्ट मैसेजिंग पर ध्यान केंद्रित कर रहे थे। कुछ अगुवे आराधना सभा का आरम्भ कुछ इस तरह से करते: "बच्चों, हम यहाँ आराधना करने आए हैं। अपने फ़ोन दूर रखो और आराधना पर ध्यान दो। आप परमेश्वर का अनादर कर रहे हो!"

अभिषेक ने कुछ बिल्कुल अलग किया। जैसे ही गिटारवादक ने आराधना का एक शांत गीत बजाया, अभिषेक ने धीरे से कहा, "जैसे ही हम परमेश्वर की उपस्थिति में आते हैं, मुझे पता है कि आप अपने पड़ोसी का ध्यान आराधना से भटकाना नहीं चाहेंगे। आइए हम सब अपने फ़ोन दूर रखें और आज सुबह परमेश्वर की वाणी सुनें।" कमरे में मौजूद हर व्यक्ति ने अपने फ़ोन दूर रख दिए। अभिषेक ने विनम्रतापूर्वक अपने युवाओं को आराधना करना सिखाया।

अगुआई करना या नियंत्रण करना?

एक आधुनिक आराधना अगुए की गवाही सुनिए:

“जब मैं नया-नया था, तब मैं अपने विश्वविद्यालय के पास एक कलीसिया में गया था; उसकी... चमकदार रोशनी और तेज़ संगीत रोमांचक थे। आराधना अगुए ने अपने बालों को स्टाइल किया हुआ था, जींस पहनी हुई थी और एक महँगा गिटार था। सभा की शुरुआत में, मैंने देखा कि उसकी कमर के स्तर पर एक अप्रयुक्त माइक्रोफ़ोन लगा हुआ था। ‘इसका क्या उद्देश्य हो सकता है?’ मैंने सोचा, और फिर मैंने अपने हाथ ऊपर उठाए और गीतों की धुन में खो गया।

“साऊँड सिस्टम अद्भुत था, स्तुति मण्डली लाजवाब थी, और संगीत को अंतिम गीत तक ले जाने के लिए सावधानीपूर्वक योजनाबद्ध किया गया था। जैसे ही अगुए ने अंतिम शब्द गाए (‘मैं अपने घुटनों पर गिर रहा हूँ, अपना सब कुछ अर्पित कर रहा हूँ’), वह घुटनों के बल गिर पड़ा। यहीं पर मुझे अप्रयुक्त माइक्रोफ़ोन का उद्देश्य समझ आया। इसे बिल्कुल सही ऊँचाई पर रखा गया था ताकि अगुआ घुटनों के बल बैठकर गा सके और गिटार बजा सके। मैं इस कलीसिया के इरादों पर कोई राय नहीं बनाना चाहता, परन्तु मैं यह महसूस करने से स्वयं को नहीं रोक पाया कि इस भावुक क्षण पर प्रतिक्रिया देने के लिए मुझे बहकाया जा रहा था, जिसकी स्पष्ट रूप से पहले से योजना बनाई गई थी।”[72]

[72] Joel Wentz, “Confessions of a Former Worship Leader.” पर उपलब्ध है https://relevantmagazine.com/life5/1301-confessions-of-a-former-worship-leader/ 22 जुलाई 2020.

यह उदाहरण आधुनिक आराधना से लिया गया है, परन्तु हम पारंपरिक आराधना के उदाहरणों का भी उपयोग कर सकते हैं। नियंत्रण करने की समस्या किसी एक आराधना शैली तक सीमित नहीं है। हमारी संगीत शैली या सही इरादों के बावजूद, हम मण्डली को कठपुतलियों की तरह समझ सकते हैं जिन्हें हम एक विशेष भावनात्मक प्रतिक्रिया के लिए नियंत्रण करते हैं।

क्या आराधना में भावनाएँ गलत हैं? नहीं; हम आराधना के भावनात्मक प्रभाव के कई बाइबल उदाहरण देखते हैं। क्या भावनात्मक प्रतिक्रिया को प्रेरित करने का प्रयास करना गलत है? नहीं; अच्छा संवाद मन और भावनाओं, दोनों को प्रभावित करता है। हालाँकि, यदि हम सतर्क नहीं होते हैं, तोभी हम पवित्र आत्मा के कार्य के अलावा, एक विशेष भावनात्मक प्रभाव उत्पन्न करने का प्रयास कर सकते हैं।

हम आराधना अगुआई करने और नियंत्रण करने के बीच अंतर कैसे बता सकते हैं? नियंत्रण करना तब होता है जब मण्डली की प्रतिक्रिया पवित्र आत्मा की शक्ति के बजाय अगुओं के कार्यों की प्रभावशीलता पर निर्भर करती है। हो सकता है कि हम कभी भी अगुआई करने और नियंत्रण करने के बीच पूरी तरह से अंतर नहीं कर पाएँगे, परन्तु कुछ संकेत हैं जो बताते हैं कि हम नियंत्रण करने की सीमा पार कर रहे हैं।

1. **जब हम भावना को आराधना के साथ मिला देते हैं, तो हम आराधना को मनमाने तरीके से करने के खतरे में पड़ जाते हैं।** हम यह महसूस करने लगते हैं कि भावनात्मक प्रतिक्रिया उत्पन्न करना हमारी ज़िम्मेदारी है। कुछ आराधना अगुओं ने तो यहाँ तक कहा है, "जब तक यह वास्तविक न हो जाए, तब तक इसे दिखावटी बनाओ। भावना को तब तक दिखावटी बनाओ जब तक लोग इसे वास्तविक रूप से महसूस न करें।" यह मानकर चला जाता है कि हमारा काम भावनाओं का उपयोग करके आराधना उत्पन्न करना है। आराधना अगुए आराधना की अगुआई करते हैं; हम आराधना उत्पन्न नहीं करते।

2. **जब हम यह मान लेते हैं कि हृदय परिवर्तन के लिए उच्च भावना की स्थिति आवश्यक है, तो हम आराधना में नियंत्रण करने के खतरे में पड़ जाते हैं।** परमेश्वर भावनाओं से भरी कलीसिया सभा में कार्य कर सकते हैं, परन्तु वे घर पर शांत क्षणों में भी कार्य कर सकते हैं। यदि हम यह मानते हैं कि केवल हमारे प्रयासों से ही परमेश्वर उन लोगों के हृदय में परिवर्तन ला सकते हैं जिनकी हम सेवा करते हैं, तो हम मण्डली में नियंत्रण करने का प्रयास करने के खतरे में पड़ जाते हैं।

3. **जब हम किसी विशेष शारीरिक क्रिया को आराधना के बराबर मान लेते हैं, तो हम आराधना में नियंत्रण करने के खतरे में पड़ जाते हैं।** कभी-कभी कोई अगुआ चाहता है कि लोग प्रतिक्रिया दें, इसलिए वह कहता है, "यदि आप यीशु से प्रेम करते हैं, तो आप अपने हाथ उठाएँगे।" प्रत्यक्ष है, यह पूरी तरह संभव है कि कलीसिया में कोई ऐसा व्यक्ति जो यीशु से सच्चा प्रेम नहीं करता, उसके हाथ ऊपर उठे हों! या, कलीसिया में कोई ऐसा व्यक्ति जो यीशु से प्रेम करता है, उसके हाथ ऊपर न उठे हों। आराधना को किसी विशेष शारीरिक क्रिया के बराबर नहीं माना जाता। गाते समय ताली बजाना यह प्रमाणित नहीं करता कि हम आराधना कर रहे हैं, ठीक उसी तरह जैसे प्रार्थना के दौरान चुपचाप बैठना यह प्रमाणित नहीं करता कि

हम प्रार्थना कर रहे हैं। केवल परमेश्वर ही आराधक के हृदय को देखता है। **"जब आराधना के अगुवे बाहरी कार्यों को आंतरिक दृष्टिकोण की मुख्य परीक्षा बनाते हैं, तो वे खतरनाक ज़मीन पर कदम रख रहे होते हैं।"**.[73]

4. **जब हम किसी अन्य समय या स्थान पर परमेश्वर द्वारा किए गए कार्यों की नकल करने का प्रयास करते हैं, तो हम आराधना में नियंत्रण करने के खतरे में होते हैं।** हमें यह नहीं मान लेना चाहिए कि क्योंकि परमेश्वर ने पिछले सप्ताह किसी विशेष गीत को आशीषित किया था, इसलिए वह इस सप्ताह भी उसी गीत को आशीषित करेंगे। जब परमेश्वर कार्य करते हैं, तो वह अपने तरीके से कार्य करते हैं। आराधना के अगुवों को परमेश्वर को अपनी इच्छानुसार आने की स्वतंत्रता देनी चाहिए। ऐसा कोई जादुई नुस्खा नहीं है जो हर परिस्थिति में एक ही आत्मिक प्रतिक्रिया उत्पन्न करे।

5. **जब हम अपनी सेवकाई को लोगों से प्रतिक्रिया प्राप्त करने की अपनी क्षमता से मापते हैं, तो हम आराधना में नियंत्रण करने के खतरे में होते हैं।** किसी भी सार्वजनिक वक्ता या संगीतकार को श्रोताओं से प्रतिक्रिया पाना अच्छा लगता है; यह स्वाभाविक है। परन्तु जब हम अपनी सेवकाई की प्रभावशीलता को इन प्रतिक्रियाओं से मापते हैं, तो हम पवित्र आत्मा के बजाय अपने कौशल पर भरोसा करने के खतरे में पड़ जाते हैं।

यह विषय कठिन है। कई बार दो अलग-अलग परिस्थितियों में कहे गए एक ही शब्द बहुत अलग-अलग प्रेरणाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। एक ओर, यदि हम लापरवाह हैं तो हम आराधना में नियंत्रण करना आरम्भ कर सकते हैं। दूसरी ओर, यदि हम भावनाओं से बहुत ज़्यादा डरते हैं तो हम कोई अगुआई प्रदान ही नहीं कर पाएँगे!

इस कारण, हमें दूसरों की आराधना में अगुआई की समीक्षा करने में धीमा होना चाहिए, परन्तु अपनी अगुआई का मूल्यांकन करने में शीघ्रता करनी चाहिए। हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हमें अगुआई करने के हमारे उद्देश्य बताए। हमें सावधान रहना चाहिए कि हम आराधना में अगुवाई तो करें, परन्तु आराधकों को अपनी इच्छित प्रतिक्रिया देने के लिए नियंत्रण न करें।

व्यावहारिक प्रश्न

हम अपनी सभा का आरम्भ कैसे करते हैं?

एक बुरा उदाहरण:

सुबह के दस बजे, प्रार्थना सभा आरम्भ होने का समय हो गया है। पासबान मुख्य-गायक को ढूँढ़ने का प्रयास कर रहे हैं। तीन महिलाएँ एक व्यंजन विधि पर बात कर रही हैं। चार पुरुष फसलों के लिए बारिश की कमी के बारे में बात कर रहे हैं। हम इन सब गतिविधियों से हटकर आराधना की ओर कैसे बढ़ें?

---

[73] Warren Wiersbe, *Real Worship* (Grand Rapids: Baker Books, 2000), 215

आराधना अगुवे की एक महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है सभा का आरम्भ करना। हम परमेश्वर के लोगों को उसकी उपस्थिति में कैसे आमंत्रित करते हैं?

- **कुछ कलीसियाओं का आरम्भ एक क्षण की खामोशी के साथ होता है।** अगुआ बस इतना ही कहता है, "परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करते हुए, खामोशी की प्रार्थना के एक क्षण में हमारे साथ शामिल हों।"

- **कुछ कलीसियाओं का आरम्भ एक संगीतमय "आराधना की बुलाहट" से होता है।** इसे एक गायक मंडली या व्यक्तिगत रूप से गाया जा सकता है, या यह मण्डली के लिए एक कोरस भी हो सकता है। कुछ **कलीसियाओं** में, पासबान आगे आकर एक कोरस गाना शुरू करते हैं, जैसे, "उसके फाटकों में प्रवेश करूँगा धन्यवाद के साथ...।"

- **कुछ कलीसिया बाइबल के किसी पद से आरंभ करते हैं,** जो प्रायः भजन संहिता से लिया जाता है।

  > आओ हम यहोवा के लिये ऊँचे स्वर से गाएँ, अपने उद्धार की चट्टान का जयजयकार करें। हम धन्यवाद करते हुए उसके सम्मुख आएँ, और भजन गाते हुए उसका जयजयकार करें। (भजन संहिता 95:1-2)।

  भजन संहिता जो आराधकों को परमेश्वर की उपस्थिति में आमंत्रित करती हैं, उनमें शामिल हैं भजन संहिता 15, भजन संहिता 66:1-4, भजन संहिता 96:1-4, भजन संहिता 100, भजन संहिता 105:1-3, भजन संहिता 107:1-3, भजन संहिता 149:1-2, और भजन संहिता 150।

क्या घोषणाएँ आराधना हैं?

एक स्पेनिश पासबान ने पूछा, "घोषणाएँ आराधना में कहाँ फिट बैठती हैं? हम अपनी कलीसिया में आराधना और परमेश्वर की उपस्थिति पर ध्यान केंद्रित करने का प्रयास करते हैं। हमारी सभा बहुत अच्छी होती है और फिर उबाऊ घोषणाओं की एक लंबी सूची के साथ समाप्त होती है। इससे सभा की भावना प्रभावित होती है। हम घोषणाओं को आराधना का हिस्सा कैसे बना सकते हैं?"

हम घोषणाओं को चाहे कहीं भी रखें, वे आराधना में बाधा डाल सकती हैं। घोषणाएँ कभी-कभी आराधना नहीं होतीं; परन्तु, वे आराधना में बाधा डालती हैं। आप क्या कर सकते हैं? इसका कोई सटीक उत्तर नहीं है, परन्तु कुछ सुझाव सहायक हो सकते हैं:

- जहाँ तक हो सके, घोषणाओं को ज़ोर से पढ़ने के बजाय, उन्हें प्रिंट करें। जब आपको सार्वजनिक घोषणाएँ करनी ही हों, तो उन्हें संक्षिप्त रखें।

- सभा आरम्भ होने से पहले घोषणाओं को प्रोजेक्ट करने के लिए ओवरहेड प्रोजेक्टर का इस्तेमाल करें।

- कुछ **कलीसियाओं** में घोषणाएँ, प्रार्थना का समय होता है, और फिर सभा आरम्भ होती है। एक कलीसिया ऐसी है जो अपनी सभा सुबह 10:00 बजे आरम्भ करता है। यह **कलीसिया** 9:50 बजे घोषणाएँ करती है। पासबान ने कहा, "इससे दो फ़ायदे होते हैं। पहला, यह लोगों को जल्दी आने के लिए प्रोत्साहित करता है क्योंकि यदि वे 9:50 बजे तक नहीं पहुँचेंगे,

तो वे घोषणाएँ नहीं सुन पाएँगे। दूसरा, यह हमें सभा के आरम्भिक शब्दों से ही पूरी तरह से आराधना पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति देता है।"

- घोषणाओं को आराधना की भावना में बाधा न बनने दें। इसके बजाय, घोषणाओं को **कलीसिया** की सेवकाई को पूरा करने के एक हिस्से के रूप में देखें, घोषणाएँ करें, और आगे बढ़ें। जब हम यह समझते हैं कि कलीसिया की गतिविधियाँ (प्रार्थना संगति, समुदाय की सेवा, आउटरीच कार्यक्रम और कलीसिया परियोजनाएँ) आराधना का हिस्सा हैं, तो इन गतिविधियों की घोषणाएँ भी कलीसिया की आराधना का हिस्सा हैं। जिस प्रकार एक पिता परिवार की प्रार्थनाओं का समापन सप्ताह की योजनाओं की याद दिलाकर कर सकता है, उसी प्रकार पासबान भी आराधना सभा का समापन कलीसिया परिवार को सप्ताह की गतिविधियों की याद दिलाकर कर सकता है। कलीसिया की गतिविधियों की घोषणाएँ हमें याद दिलाती हैं कि हम एक परिवार हैं; परिवार की संगति आराधना का एक महत्वपूर्ण पहलू है।

आराधना के खतरे: “हम ऐसा करते हैं क्योंकि...”

एक नई दुल्हन रविवार के खाने के लिए हैम पका रही थी। हैम को ओवन में डालने से पहले, उसने सावधानी से हैम का एक सिरा काटकर एक छोटे बर्तन में रख दिया। उसके पति ने पूछा, "तुम ऐसा क्यों करती हो?"

"हैम ऐसे ही पकाना चाहिए। मेरी माँ हमेशा हैम पकाने से पहले उसका एक सिरा काट देती हैं। मुझे लगता है इससे स्वाद बढ़ता है।" युवा दुल्हन सोचने लगी, "हैम का सिरा काटने से स्वाद में क्या आता है?" उसने अपनी माँ को बुलाकर पूछा, "तुम हैम का एक सिरा क्यों काटती हो?"

उसकी माँ ने कहा, "क्योंकि तुम्हारी नानी, मेरी माँ, खाना पकाने से पहले हमेशा हैम का एक सिरा काट देती थीं। इससे स्वाद बढ़ता होगा। चलो उनसे पूछते हैं।"

युवती ने बूढ़ी नानी को बुलाया। नानी अब खाना नहीं बनाती थीं, परन्तु उसने उनके सवाल का जवाब दिया। "हाँ, मुझे याद है कि मैंने हैम का सिरा क्यों काटा था। जब तुम्हारे नानाजी और मेरी शादी हुई थी, तो हम ज़्यादा बर्तन नहीं खरीद सकते थे। मेरा पास सिर्फ़ भूनने का तवा छोटा था। जब तक मैं उसका एक सिरा न काट दूँ, हैम मेरे तवे में नहीं समाता था!"

उस महिला की बेटी और फिर पोती ने 50 सालों तक एक ऐसी "परंपरा" को जारी रखा जिसका कोई अर्थ नहीं बनता था। उन्होंने कभी "क्यों?" नहीं पूछा।

आराधना के अगुवे होने के नाते, हम कभी-कभी "क्यों?" सोचे बिना ही काम कर देते हैं।

कलीसियाओं के कुछ खास तरीकों से काम करने के कारण:

1. **अतीत में कलीसियाएँ ऐसा करती थीं।** परंपरा का अपना महत्व है। यदि अतीत में कलीसियाओं ने कुछ किया है, तो हमें यह पूछे बिना उसे त्यागना नहीं चाहिए, "उन्होंने ऐसा क्यों किया?" हमें परंपरा को बनाए रखने के लिए अच्छे कारण मिल सकते हैं; परन्तु यदि "अतीत में कलीसियाओं ने ऐसा किया था" ही *एकमात्र* कारण है, तो यह पर्याप्त नहीं हो सकता।

2. **बड़ी कलीसियाएँ ऐसा करती हैं।** दूसरों से सीखना आदर की बात है। यदि कोई प्रथा दूसरे कलीसियाओं में कारगर है, तो हमें पूछना चाहिए, "क्या यह प्रथा हमारे लिए लाभदायक है? वे ऐसा क्यों करते हैं?" हमें लग सकता है कि किसी आराधना पद्धति की नकल करने का कोई अच्छा कारण है; परन्तु यदि "बड़ी कलीसियाएँ ऐसा करती हैं।" यही *एकमात्र* कारण है, तो यह हमारी स्थिति के लिए सहायक नहीं हो सकता।

3. **लोगों को यह पसंद है।** ऐसी आराधना का महत्व है जो लोगों की भागीदारी को प्रोत्साहित करती है। बाइबल के वचनों में ऐसा कुछ भी नहीं है जो कहता हो, "तुम्हारी आराधना उबाऊ होनी चाहिए!" हमें लग सकता है कि हमारे लोगों का कोई पसंदीदा गीत सच्चा और भक्तिपूर्ण है। यदि ऐसा है, तो यह बहुत अच्छी बात है; परन्तु यदि लोगों को कोई ऐसा गीत पसंद है जो झूठी शिक्षा सिखाता है, तो हमें उसे नहीं गाना चाहिए।

4. **यह हमें आत्मा और सच्चाई से परमेश्वर की आराधना करने का अवसर देता है।** यही हमारे कार्य का मूल कारण है। आराधना की योजना बनाते और आराधना की अगुआई करते समय, हमें यह पूछना चाहिए, "क्या यह गीत हमें परमेश्वर की बेहतर आराधना करने में मदद करता है? क्या आराधना का यह क्रम हमें परमेश्वर की उपस्थिति में ले जाता है? क्या इस संदेश पर प्रतिक्रिया प्राप्त करने के लिए एक निमंत्रण सबसे अच्छा तरीका होगा, या हमें स्तुति गीत के साथ समाप्त करना चाहिए? इस सप्ताह हम आत्मा और सच्चाई से परमेश्वर की आराधना कैसे करें?"

निष्कर्ष: जब हम आराधना में असफल हो जाते हैं

मण्डली ने आरम्भिक भजन आधे मन से गाया। गायक मंडली ने अभ्यास किया था, परन्तु उस सुबह उन्होंने ठीक से नहीं गाया। एकल गायिका अपने शब्द भूल गई। पियानो वादक ने गलत सुर बजाए। पासबान का प्रवचन लोगों से जुड़ता हुआ नहीं लग रहा था। प्रार्थना सभा एक मुसीबत थी। क्या आपके साथ भी कभी ऐसा हुआ है? जब आप आराधना की अगुआई करने में असफल होते हैं तो आप क्या करते हैं?

(1) याद रखें, सभी आराधनाएँ पूर्वाभ्यास हैं।

हमारी आराधना स्वर्गीय आराधना का पूर्वाभ्यास है। हम अपूर्ण लोग हैं, और हमारी आराधना हमेशा अपूर्ण ही रहेगी। "हमें आराधना में अपना सर्वश्रेष्ठ देने के लिए बुलाया गया है, पूर्णता प्रदान करने के लिए नहीं।"[74]

---

[74] यह उद्धरण और इस खंड में दिए गए सुझाव से लिए गए हैFranklin Segler and Randall Bradley, *Christian Worship* (Nashville: B&H Publishing, 2006), 274-275.

(2) अगला सप्ताह आ रहा है।

सोमवार को हार मत मानिए। सभा का विश्लेषण करने के लिए मंगलवार तक प्रतीक्षा कीजिए। असफलता से सीखिए और आगे बढ़िए। अभी वर्णित सभा में, आरंभिक भजन मण्डली के लिए अपरिचित था। संचालक को लगा कि वे उस भजन को जानते हैं; परन्तु वे नहीं जानते थे। उन्होंने अपने भजन-पुस्तिका में एक नोट लिखा, "इस भजन को गायक-मंडली को सिखाएँ, इससे पहले कि मण्डली इसे दोबारा गाए।" अपनी गलतियों से सीखें, परमेश्वर की सहायता माँगें, और अगले रविवार को परमेश्वर को अपने माध्यम से कार्य करने दें।

(3) याद रखें, आराधना अनुग्रह के बारे में है।

कई आराधना अगुए पूर्णतावादी होते हैं; हम कभी संतुष्ट नहीं होते। आराधना पूर्णता के बारे में नहीं है; आराधना अनुग्रह के बारे में है। परमेश्वर अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए हमारी असफलताओं के माध्यम से भी कार्य करते हैं। ऐसा ही होना चाहिए! जब हम यह समझ जाते हैं कि परमेश्वर ही आराधना को सशक्त बनाते हैं, तो हम विनम्रता और समर्पण की स्थिति में पहुँच जाते हैं।

(4) यदि हमने अपना सर्वश्रेष्ठ दिया है, तो हम असफल नहीं हुए हैं।

उस रविवार, आराधना अगुआ निराश होकर कलीसिया से बाहर चला गया। जब वह कलीसिया से बाहर निकला, तो दीपक उसका इंतज़ार कर रहा था। दीपक शर्मीला था और कम ही बोलता था, परन्तु उस सुबह उसने कहा, "आपने भेंट के लिए 'यीशु मुझको करता प्यार' बजाया था।" (हाँ, आराधना अगुआ जानता था कि उसने क्या बजाया था - उसने गड़बड़ कर दी थी!) परन्तु दीपक ने आगे कहा, "मुझे वह गाना सुनने की ज़रूरत थी। इस सप्ताह डॉक्टर ने मुझे बताया कि मुझे कैंसर है; मुझे यह याद दिलाने की ज़रूरत थी कि यीशु मुझसे प्यार करते हैं।"

यदि हमने अपना सर्वश्रेष्ठ दिया है, तो हम असफल नहीं हुए हैं। परमेश्वर हमारे कमज़ोर प्रयासों के द्वारा उन लोगों तक अपना वचन पहुँचाता है जिनकी हम सेवा करते हैं।

► सामूहिक विचार विमर्श। "पाठ 8 की समीक्षा" देखिए। क्या कोई ऐसे बिंदु हैं जिनसे आप असहमत हैं? आपको कौन से बिंदु सबसे ज़रूरी लगते हैं जो आपके लिए तुरंत उपयोगी हों?

पाठ 8 की समीक्षा

(1) हम आराधना सभा की तैयारी कैसे करते हैं?

- आराधना सभा की तैयारी, परमेश्वर के साथ समय बिताकर आराधना अगुवे की तैयारी से आरम्भ होती है।
- योजना बनाने का एक तरीका आराधना सभा को एक संरचना प्रदान करने में मदद करता है।
- आराधना सभा का एक विषय, एक मुख्य संदेश पहुँचाने में करने में सहायता करता है।
- संतुलन यह सुनिश्चित करता है कि हमारी आराधना, पूरी कलीसिया को संपूर्ण सुसमाचार बताए।
    - संतुलित आराधना परमेश्वर की महिमा और हमारे साथ उसकी उपस्थिति दोनों को दर्शाती है।
    - संतुलित आराधना सामूहिक और व्यक्तिगत दोनों होती है।
    - संतुलित आराधना में परिचित और नया दोनों शामिल हैं।
- आराधना की योजना में कलीसिया की पूरी अगुआई टीम को शामिल किया जाना चाहिए।
- आराधना की योजना दीर्घकालिक दृष्टिकोण से बनाई जानी चाहिए।
- हम बिना किसी दबाव के योजना बना सकते हैं क्योंकि आराधना हमारे बारे में नहीं है; यह परमेश्वर के बारे में है।

(2) आराधना सभा की अगुआई करने में क्या महत्वपूर्ण है?

- आराधना में सबसे महत्वपूर्ण श्रोता परमेश्वर हैं।
- आराधना सभा में मण्डली, आराधना अगुए और परमेश्वर, सभी एक-दूसरे के साथ बातचीत करते हैं। अगुए श्रोताओं के लिए आराधना नहीं करते।
- आराधना अगुए को आराधना करनी चाहिए। वह उदाहरण प्रस्तुत करके अगुआई करता है।
- आराधना अगुए को प्रोत्साहित करना चाहिए, किसी की निंदा नहीं।
- आराधना अगुए को अगुआई करनी चाहिए, नियंत्रण नहीं।
- घोषणाएँ इस तरह करनी चाहिए कि आराधना में कोई अनावश्यक बाधा न पड़े।
- आराधना की योजना बनाने के बाद, हमें यह परमेश्वर पर छोड़ देना चाहिए कि वह जिस प्रकार आना चाहे, हमारी सभाओं में प्रवेश करे।

पाठ 8 के कार्य

(1) पाठ 6 और 7 में, आपने पाँच अलग-अलग विषयों पर गीत और बाइबल वचन चुने हैं। पाँचों विषयों पर आधारित एक सभा की योजना बनाएँ। एक संयुक्त सभा की योजना बनाते समय यथासंभव विस्तृत रहें, जिसमें सामूहिक गीत, वचन, संदेश का विषय और पठन, साथ ही आपकी सभा के लिए उपयुक्त अन्य विषय शामिल हों। इस कार्य के लिए परिशिष्ट A में दी गई एक या अधिक रूपरेखाओं का उपयोग करें।

(2) अगले पाठ के आरम्भ में, आप इस पाठ पर आधारित एक परीक्षा देंगे। तैयारी के लिए परीक्षा के प्रश्नों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें।

पाठ 8 परीक्षा

(1) प्रवचन पर केन्द्रित आराधना संरचना में दो मुख्य भागों की सूची बनाएँ।

(2) परमेश्वर के लोगों की आराधना में गतिविधि के आधार पर आराधना संरचना में चार मुख्य भागों की सूची बनाएँ।

(3) भजन संहिता 95 पर आधारित आराधना संरचना में तीन मुख्य वर्गों की सूची बनाएँ।

(4) संतुलित आराधना के विषय हमें कौन सी तीन बातें याद रखनी चाहिए?

(5) बाइबल आधारित आराधना के आदर्श में, हमारी आराधना के दर्शक कौन हैं?

(6) एक प्रभावशाली आराधना अगुए के तीन गुण बताइए।

(7) वे तीन चिन्ह क्या हैं जिनसे पता चलता है कि हम आराधना को नियंत्रण कर रहे हैं?

(8) याद किया हुआ 2 इतिहास 5:13-14 लिखें।

पाठ 9

अन्य प्रश्न

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अन्त होने तक विद्यार्थी को नीचे दिए गए कार्य करने के योग्य होना चाहिए:

(1) आराधना में सांस्कृतिक भिन्नताओं का सम्मान करते हुए पवित्रशास्त्र के प्रति निष्ठावान रहने के महत्व को पहचानना।

(2) पवित्रशास्त्र और संस्कृति, दोनों के संदर्भ में आराधना का मूल्यांकन करना।

(3) संगीत शैली के मूल्यांकन की विशेष चुनौतियों को समझना।

(4) रोमियों 14 के सिद्धांतों को आराधना में लागू करना।

(5) आराधना में बच्चों और युवाओं की सहभागिता के महत्व को सराहना और स्वीकार करना।

(6) आराधना में भावनाओं पर अत्यधिक ज़ोर देने या भावनाओं को अनदेखा करने से सावधान रहना।

इस पाठ की तैयारी

कण्ठस्थ करें 1 कुरिन्थियों 14:15-17।

भूमिका

वॉरेन विर्सबे ने एक कलीसिया में अपने अनुभव के बारे में लिखा जो आराधना को समझने में विफल रहा:

> "शाम की प्रार्थना सभा के लिए ज़रूर वापस आना," आराधना अगुए ने किसी टेलीविज़न गेम शो के संचालक जैसी आवाज़ और मुस्कान के साथ कहा। "हम खूब मज़े करेंगे।"
>
> रविवार की दोपहर के समय मैं सोच रहा था कि इस कथन का क्या मतलब है। "हम खूब मज़े करेंगे" जन्मदिन की पार्टी के निमंत्रण पर तो समझ में आता है, परन्तु महिमा के प्रभु की आराधना करने के लिए एकत्रित हुए मसीही विश्वासियों के समूह से इसका क्या संबंध है? मूसा और इस्राएल के लोगों ने जब सिनाई पर्वत पर इकट्ठा हुए थे, तब उन्होंने कोई मज़ेदार समय नहीं बिताया था...

पतमोस द्वीप पर यूहन्ना के कुछ प्रभावशाली अनुभव हुए, परन्तु यह संदेह है कि वह मज़ेदार समय बिता रहे थे।[75]

इन पाठों में, हमने देखा है कि आराधना केवल एक मनोरंजन, एक विशेष संस्कार और रविवार की सुबह की गतिविधि से कहीं बढ़कर है। आराधना, परमेश्वर को वह महिमा देना है जो उसे मिलनी चाहिए। कागज़ पर, यह आसान है; परन्तु व्यावहारिक जीवन में, यह एक चुनौती हो सकती है। इस पाठ में, हम आराधना से जुड़े प्रश्नों पर विचार करेंगे। इन प्रश्नों का अध्ययन करते समय, याद रखें कि मूल प्रश्न यह नहीं है कि, "मुझे क्या पसंद है?" आराधना का मूल प्रश्न यह है कि, "परमेश्वर को क्या पसंद है? कौन सी बात उन्हें सम्मान और महिमा देती है?"

आराधना और संस्कृति

► अपनी कलीसिया की आराधना शैली पर विचार विमर्श करें। आपकी आराधना के किन पहलुओं का आदेश बाइबल में दिया गया है और किन पहलुओं का निर्धारण संस्कृति द्वारा होता है?

"मेरे देश में आराधना का सबसे कठिन मुद्दा सांस्कृतिक प्रासंगिकता है। ज़्यादातर कलीसिया विदेशों से आराधना की एक शैली अपना रही हैं—चाहे वह आधुनिक हो या पारंपरिक। हमारे लोग पश्चिमी शैली को सिर्फ़ इसलिए अपनाते हैं क्योंकि वे आधुनिक बने रहना चाहते हैं, परन्तु न तो 'पारंपरिक' और न ही ' आधुनिक ' आराधना लोगों से जुड़ पाती है क्योंकि दोनों ही विदेशी हैं। हम किस तरह से आराधना करें जिससे परमेश्वर का सम्मान हो और उस संसार से संवाद करे जिसमें हम सेवा करते हैं?"

संस्कृति या बाइबल?

एक दूल्हा और दुल्हन दो बिल्कुल अलग संस्कृतियों से थे। शादी की दावत में, दुल्हन की संस्कृति के व्यंजन परोसे गए। जैसे ही एक व्यंजन परोसा गया, दूल्हे ने पूछा, "यह क्या है?" दुल्हन ने उसे बताया और फिर कहा, "मेरे देश में, यह एक स्वादिष्ट व्यंजन है।" उसने भौंहें चढ़ाकर जवाब दिया, "मेरे देश में, यह घिनौना है!" सांस्कृतिक अंतर चुनौतीपूर्ण हो सकते हैं।

हम सभी अपनी संस्कृति से प्रभावित होते हैं। कुछ मसीही चॉपस्टिक की बजाय कांटे से खाना इसलिए नहीं खाते क्योंकि कांटे ज़्यादा बाइबल-आधारित या ज़्यादा कारगर होते हैं। वे कांटे से इसलिए खाते हैं क्योंकि वे ऐसी संस्कृति में पले-बढ़े हैं जहाँ कांटे का इस्तेमाल होता है। दुनिया के दूसरे हिस्सों में उनके मसीही दोस्त चॉपस्टिक को कांटे से ज़्यादा उपयोगी पाते हैं।

हमारी आराधना हमारी संस्कृति से प्रभावित होती है। हमारी आराधना के कई पहलू संस्कृति से जुड़े होते हैं। कोई व्यक्ति जो किसी पारंपरिक अमेरिकी कलीसिया में पला-बढ़ा हो, उसे कलीसिया के ऑर्गन की आवाज़ पसंद आ सकती है। कलीसिया का ऑर्गन गिटार से ज़्यादा बाइबल-आधारित नहीं है; यह संस्कृति का एक पहलू है।

लेसोथो में, एक कलीसिया में एक अगुआ और मण्डली के बीच एक आह्वान और प्रतिक्रिया गायन होता है। इस शैली में, अगुआ एक वाक्य गाता है और फिर मण्डली अगला वाक्य गाती है। गायन की यह सुंदर शैली शायद किसी अमेरिकी कलीसिया में कभी नहीं सुनी

---

[75] Warren Wiersbe, *Real Worship* (Grand Rapids: Baker Books, 2000), 169-170

जाती। यदि किसी अमेरिकी कलीसिया के संगीत निर्देशक ने इसे आज़माया होता, तो मण्डली भ्रमित हो जाती। *एक स्वर बनाम आह्वान/प्रतिक्रिया* गायन संस्कृति का विषय है, बाइबल के सिद्धांत का नहीं।

जब हम आराधना शैली का परीक्षण कर रहे हैं, तो हमें तीन प्रश्न पूछने चाहिए:

1. क्या हम संस्कृति और बाइबल को गड़बड़ा रहे हैं?
2. क्या हमारी संस्कृति बाइबल के विपरीत है?
3. हमारी आराधना उस संस्कृति के लोगों से सबसे प्रभावी ढंग से कैसे जुड़ सकती है जहाँ परमेश्वर ने हमें रखा है?

क्या हम संस्कृति और बाइबल को गड़बड़ा रहे हैं?

यह प्रश्न तब महत्वपूर्ण होता है जब हम किसी ऐसी आराधना पद्धति का मूल्यांकन कर रहे हों जो हमारी अपनी आराधना पद्धति से भिन्न हो। ऐसी स्थिति में, हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम संस्कृति और बाइबल के वचनों को एक-दूसरे से न मिलाएँ। हमारे लिए बाइबल में अपने सांस्कृतिक मूल्यों को शामिल करना और फिर यह आग्रह करना आसान होता है कि बाकी सभी लोग भी बाइबल को उसी तरह पढ़ें। हम अक्सर यह मान लेते हैं कि हमारा तरीका ही बाइबल आधारित तरीका है।

कोई कह सकता है, "कलीसिया के संगीत के लिए ऑर्गन ही सही वाद्य है। आराधना में गिटार का कोई स्थान नहीं है।" यद्यपि, दुनिया के कई हिस्सों में ऑर्गन अव्यावहारिक है, जबकि पोर्टेबल गिटार गायन के लिए बहुत उपयोगी है। कोई यह तर्क नहीं दे सकता कि दूसरी शताब्दी के गृह कलीसियाओं में ऑर्गन का इस्तेमाल होता था! किसी को ऑर्गन पसंद हो सकता है, परन्तु उन्हें अपनी सांस्कृतिक प्राथमिकताओं को बाइबल आधारित सिद्धांतों के साथ नहीं मिलाना चाहिए।

पॉल ब्रैडशॉ, एक आराधना इतिहासकार ने दर्शाया है कि कलीसिया के आरम्भिक दो शताब्दियों में भी, आराधना के कई रूप थे। जैसे-जैसे कलीसियका विस्तार हुआ, यह असंभव है कि हर जगह आराधना एक जैसी रही हो।[76]

इस प्रश्न का व्यावहारिक प्रभाव क्या है? दूसरों की आराधना शैलियों का मूल्यांकन करते समय या अपनी कलीसियाओं के भीतर से नए विचारों पर प्रतिक्रिया देते समय, हमें संस्कृति और बाइबल के वचनों को एक-दूसरे से नहीं मिलाना चाहिए। हमें किसी विचार को सिर्फ़ इसलिए अस्वीकार नहीं करना चाहिए क्योंकि वह हमारी सांस्कृतिक प्राथमिकताओं को ठेस पहुँचाता है। यदि कोई आराधना पद्धति बाइबल के सिद्धांतों के विपरीत नहीं है, तो **हमें दूसरों को उनकी पसंद के अनुसार आराधना करने की अनुमति देनी चाहिए।**

इसका अर्थ यह नहीं है कि हर आराधना शैली हर कलीसिया के लिए उपयुक्त होती है। एक बुद्धिमान आराधना अगुआ उस शैली में अगुआई करेगा जो उन लोगों के अनुकूल हो जिनकी वह सेवा करता है।

---

[76] Paul Bradshaw, “The Search for the Origins of Christian Worship” in Robert Webber, *Twenty Centuries of Christian Worship* (Nashville: Star Song Publishing, 1994), 4

दोबारा जाँच

क्या ऐसी कोई आराधना पद्धतियाँ हैं जिन्हें आपने अपनी सांस्कृतिक प्राथमिकताओं के कारण अस्वीकार किया है, न कि बाइबल के सिद्धांतों के कारण? यदि हाँ, तो क्या आप दूसरे विश्वासियों को अपनी रीति से आराधना करने की आज़ादी देने को तैयार हैं, बशर्ते वह बाइबल के नियमों का उल्लंघन न करे?

क्या हमारी संस्कृति बाइबल के विपरीत है?

यह प्रश्न तब महत्वपूर्ण हो जाता है जब हम किसी आराधना पद्धति का सिर्फ़ इसलिए बचाव करने के लिए लालायित हो जाते हैं क्योंकि वह हमारी संस्कृति में सामान्य है। यदि हमें लगता है कि हमारी संस्कृति में जो सामान्य है वह पवित्रशास्त्र के विपरीत है, **तो हमें अपनी संस्कृति की आशाओं के बजाय पवित्रशास्त्र का पालन करना चाहिए।**

सुधारकों को इस समस्या का सामना तब करना पड़ा जब उन्होंने आराधना में बड़े बदलाव किए। मध्ययुगीन संस्कृति कहती थी, "आम लोगों को बाइबल नहीं पढ़नी चाहिए; वे इसे समझ नहीं सकते।" विक्लिफ, हस, लूथर और अन्य सुधारकों को यह आभास हुआ कि पवित्रशास्त्र सभी लोगों के लिए है। उनकी मध्ययुगीन संस्कृति पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं का खंडन करती थी। सुधारकों ने अपनी संस्कृति का सामना पवित्रशास्त्र की सच्चाई से कराने के लिए अपनी जान खतरे में डाल दी।

यदि संस्कृति पवित्रशास्त्र के विपरीत है, तो हमें अपनी संस्कृति को अस्वीकार करना होगा! परमेश्वर का वचन हमारा अंतिम अधिकार है; हम अपने आस-पास की दुनिया में ढलने के लिए पवित्रशास्त्र के प्रति अपनी निष्ठा से समझौता नहीं कर सकते। रोमियों 12:2 का एक भावार्थ इस प्रकार है, "अपनी संस्कृति के साथ इतने घुल-मिल न जाओ कि बिना सोचे-समझे उसमें ढल जाओ।"[77] हम संसार को उसके ढांचे में ढालने की इजाज़त नहीं दे सकते।

दोबारा जाँच

क्या ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ आपकी आराधना बाइबल के सिद्धांतों के विपरीत है?

हमारी आराधना उस संस्कृति के लोगों से सबसे प्रभावी ढंग से कैसे जुड़ सकती है जहाँ परमेश्वर ने हमें रखा है?

यह प्रश्न हमारे संसार तक सुसमाचार पहुँचाने के लिए महत्वपूर्ण है। यदि हम अपने आस-पास के संसार को सुसमाचार से जोड़ना चाहते हैं, तो हमारी आराधना ऐसी भाषा में होनी चाहिए जिसे वे समझते हों।

जॉन वेस्ली को इस प्रश्न का सामना तब करना पड़ा जब उन्होंने क्षेत्रों में प्रचार करना आरम्भ किया। अपने एंग्लिकन साथियों की तरह, वेस्ली का भी आरम्भ में यही मानना था कि प्रचार के लिए कलीसिया ही एकमात्र उचित स्थान है। जॉर्ज व्हाइटफ़ील्ड के प्रभाव में, वेस्ली को यह समझ में आने लगा कि महान आदेश के अनुसार उन्हें कलीसिया के बाहर प्रचार करना आवश्यक है।[78] वेस्ली को यह

---

[77] E. H. Peterson, *The Message* (Colorado Springs: NavPress, 2002)

[78] यह प्रश्न 2 की ओर संकेत करता है – "क्या हमारी संस्कृति बाइबल के विपरीत है?"

सोचने पर मजबूर होना पड़ा, "मैं उन कोयला खनिकों तक सुसमाचार का सबसे प्रभावी ढंग से प्रचार कैसे कर सकता हूँ जो शादियों और अंत्येष्टि के अलावा कभी कलीसिया में प्रवेश नहीं करते?" इसका उत्तर था क्षेत्रों में प्रचार करना।

2 अप्रैल, 1739 को, वेस्ली शहर के बाहर गए और एक क्षेत्र में एकत्रित लगभग 3,000 लोगों को प्रचार किया। इस प्रकार एक ऐसी सेवा का आरम्भ हुआ जिसने 18वीं सदी के अंग्रेजी-भाषी विश्व को बदल दिया।

वेस्ली ने क्षेत्र प्रचार का इतना कड़ा विरोध किया था कि उन्होंने एक बार कहा था, "यदि यह कलीसिया में न किया जाता, तो मैं आत्माओं को बचाना लगभग पाप समझता।" जब उन्हें आभास हुआ कि उनके सांस्कृतिक पूर्वाग्रह सुसमाचार के मार्ग में बाधा बन रहे हैं, तो वेस्ली अपनी प्रथाओं को बदलने के लिए तैयार हो गए। उनके कई एंग्लिकन साथियों ने इस बदलाव को अस्वीकार कर दिया। बाहरी प्रचार आरम्भ करने के एक महीने के भीतर ही, एक बिशप ने वेस्ली से कहा कि अब एंग्लिकन कलीसियाओं में उनका प्रचार करने का स्वागत नहीं है। अपनी संस्कृति के बारे में बात करने के लिए तैयार रहना महंगा पड़ सकता है; इसकी कीमत वेस्ली को अपने कई साथी एंग्लिकनों का सम्मान गँवाना पड़ा। यीशु का प्रकाश और नमक बनने का बुलावा व्यक्तिगत सुविधा से कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण है।

माइकल कॉस्पर हमारी आराधना और आसपास की संस्कृति के बीच के संबंध को समझने के लिए तीन प्रश्न सुझाते हैं।[79]

(1) यहाँ कौन है?

यह प्रश्न हमारी कलीसिया से संबंधित है; "हमारी आराधना सभाओं में कौन आता है?" कभी-कभी हम संसार तक पहुँचने के बारे में इतने चिंतित हो जाते हैं कि हम कलीसिया की सेवा करने में असफल हो जाते हैं। जब हम कोई ऐसा व्यक्ति बनने का प्रयास करते हैं जो हम नहीं हैं, तो हमारी आराधना नकली हो जाती है। क्योंकि आराधना को कलीसिया से बात करनी चाहिए, इसलिए हमें पूछना चाहिए, "यहाँ कौन है? परमेश्वर ने हमारी कलीसिया में किसे रखा है?"

(2) यहाँ कौन था?

यह प्रश्न हमारी विरासत को दर्शाता है। विश्वासियों के रूप में, हमारी विरासत आरंभिक कलीसिया से लेकर संसार भर में फैली हुई है।

इसका अर्थ है कि हम अपनी पीढ़ी को अतीत के महान भजनों से परिचित कराने का प्रयास करेंगे। इसका अर्थ है कि हम आज के लोगों को कलीसिया के इतिहास से जोड़ेंगे। युवा मसीहियों को यह जानने की ज़रूरत है कि वे उस विरासत का हिस्सा हैं जो हमारे जन्म से बहुत पहले आरम्भ हुई थी और हमारे जाने के बाद भी लंबे समय तक जारी रहेगी। हम सभी पीढ़ियों के विश्वासियों से बनी सार्वभौमिक कलीसिया का हिस्सा हैं।

---

[79] Michael Cosper, *Rhythms of Grace: How the Church's Worship Tells the Story of the Gospel* (Wheaton: Crossway Books, 2013), 176-179

हमारी आराधना विरासत पिन्तेकुस्त से, सिनाय पर्वत पर मूसा को परमेश्वर के प्रकाशन से, और अंततः अदन की वाटिका में आदम और हव्वा को परमेश्वर के प्रकाशन से जुड़ी है। हमारी आराधना को उस इतिहास का उत्सव मनाना चाहिए। जब हम "हमारा परमेश्वर एक शक्तिशाली गढ़ है" गाते हैं, तो हम धर्मसुधार की आराधना में शामिल होते हैं। जब हम प्रेरितों के धर्म-कथन का पठन करते हैं, तो हम दूसरी शताब्दी की आराधना में शामिल होते हैं। आराधना में हम पूछते हैं, "हमसे पहले यहाँ कौन था?"

(3) यहाँ किसे होना चाहिए?

यह प्रश्न हमारे समुदाय से संबंधित है। जब हम पूछते हैं, "वे कौन लोग हैं जिन्हें हमारी कलीसिया का हिस्सा होना चाहिए," तो हम इस तरह के प्रश्न पूछते हैं:

- हम सुसमाचार के साथ किस तक पहुँचने का प्रयास कर रहे हैं?
- यदि हमारा समुदाय कलीसिया में आए, तो हमारी आराधना सभा कैसी होगी?[80]
- हम आराधना करते समय अपने संदेश के प्रति कैसे सच्चे रह सकते हैं ताकि वह उन लोगों से बात करे जिन तक हम पहुँचने का प्रयास कर रहे हैं?

ये प्रश्न कागज़ पर लिखे प्रश्नों से ज़्यादा वास्तविक जीवन में कठिन हैं! चार परिदृश्यों पर ध्यान दें। प्रत्येक कलीसिया को समुदाय से बात करने की चुनौती का सामना करना पड़ा है।

कलीसिया अ: एक कलीसिया जो यह पूछने में विफल रही है, "यहाँ कौन है?"

कलीसिया अ एक वृद्धावस्था समुदाय में स्थित है। समुदाय में औसत आयु 70 वर्ष है, और कलीसिया में भी औसत आयु 70 वर्ष है। दो साल पहले, उनके पासबान ने युवा परिवारों तक पहुँचने का निश्चय किया। दो महीने की अवधि में, उन्होंने ऑर्गन, गायन मंडली और भजनों की जगह गिटार, एक स्तुति मंडली और एक ओवरहेड स्क्रीन लगा दिया।

दुख की बात यह है कि पासबान यह पूछना भूल गया, "यहाँ कौन है?" परिणामस्वरूप, 100 वरिष्ठ नागरिकों वाली कलीसिया की गिनती कम होकर 35 वरिष्ठ नागरिक रह गई है, जो ऐसा संगीत गाते हैं जो उन्हें पसंद नहीं है, ऐसा स्क्रीन देखते हैं जो उन्हें पसंद नहीं है, और तेज़ गिटार के बारे में शिकायत करते हैं।

क्या कलीसिया अ को बाहर पहुँचना चाहिए? बिल्कुल! परन्तु जिन लोगों तक यह सबसे प्रभावी ढंग से पहुँच सकता है, वे उनके वृद्धावस्था समुदाय के गैर-चर्चीय वरिष्ठ नागरिक हैं। कलीसिया में पहले से मौजूद लोगों की अनदेखी करके, वे उस तरह से आराधना

---

[80] जॉन वेस्ली को भी इसी समस्या का सामना करना पड़ा। एंग्लिकनों को आभास हुआ कि कोयला खनिकों, धर्मांतरित वेश्याओं और अनपढ़ दुकानदारों द्वारा की जाने वाली आराधना सभा उच्च वर्ग के एंग्लिकनों की औपचारिक आराधना से बहुत अलग होगी। कई याजकों ने तय किया कि वे निम्न वर्ग के लोगों द्वारा अपनी आराधना में बाधा डालने को तैयार नहीं हैं। इसी के परिणामस्वरूप मेथोडिस्ट समाजों का गठन हुआ।

करने में विफल हो रहे हैं जो न तो कलीसिया से और न ही आसपास के समुदाय से जुड़ते हैं। कलीसिया अ यह पूछने में विफल रहा, "यहाँ कौन है?"

कलीसिया ब: एक कलीसिया जो यह पूछने में विफल रहा है, "यहाँ कौन था?"

कलीसिया ब एक तेज़ी से बढ़ते शहर में स्थित है जहाँ कई युवा परिवार रहते हैं। कलीसिया अपने समुदाय की भाषा बोलता है; उनकी आराधना रोमांचक और उत्साहपूर्ण है।

कलीसिया ब में सुसमाचार प्रचार का जोश है। दुख की बात है कि कलीसिया ने यह नहीं पूछा है कि, "यहाँ कौन था?" कलीसिया ब अपनी उस विरासत को भूल गया है जिसने शुद्ध हृदय और विजयी मसीही जीवन का संदेश दिया था। पासबान सिद्धांतों का प्रचार करने से बचता है क्योंकि वह सोचता है, "लोग सिद्धांत नहीं सुनना चाहते; वे व्यावहारिक प्रवचन चाहते हैं।" संगीत निर्देशक बाइबल की गहराई वाले गीतों से बचता है क्योंकि वह सोचता है, "लोगों को कठिन शब्दों वाले गीत पसंद नहीं आते; उन्हें सरल गीत पसंद हैं।" परिणामस्वरूप, कलीसिया में "बपतिस्मा प्राप्त ग़ैर मसीहियों" की एक पीढ़ी पैदा हो गई है।"[81]

कलीसिया ब की संख्या बढ़ रही है, परन्तु उसके बहुत कम सदस्य ईश्वरीय भक्ति में बढ़ रहे हैं। बहुत से लोग इसलिए आते हैं क्योंकि यह एक मनोरंजक कलीसिया है जिसमें कम प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है। क्योंकि कलीसिया ब को अपनी विरासत का कोई ज्ञान नहीं है, इसलिए कई नये विश्वासी लोग जल्द ही दूसरी कलीसियाओं की ओर चले जाते हैं जो और भी बेहतर मनोरंजन प्रदान करते हैं। कलीसिया ब यह पूछने में विफल रहा कि, "यहाँ कौन था?"

कलीसिया स: एक कलीसिया जो यह पूछने में विफल रही है, "यहाँ किसे होना चाहिए?"

कलीसिया स का आरम्भ लगभग 100 वर्ष पहले एक छोटे से ग्रामीण समुदाय में हुआ था। इसकी आराधना, संदेश और संगीत उस कस्बे में रहने वाले लोगों तक पहुँचते थे। बीच के वर्षों में, समुदाय पूरी तरह से बदल गया है। कलीसिया स अब आंतरिक शहर से घिरा हुआ है, परन्तु इसकी आराधना अभी भी ग्रामीण मध्यम वर्ग को आकर्षित करने के लिए तैयार की गई है।

दुख की बात है कि कलीसिया स के आस-पास रहने वाले कई लोग हर सप्ताह उसके पास से गुज़रते हैं, यह जाने बिना कि कलीसिया के पास उनकी गहरी भूख का समाधान है। कलीसिया स के पास वह संदेश है जिसकी उसके समुदाय को ज़रूरत है, परन्तु वह समुदाय को स्पष्ट रूप से **संवाद** नहीं करती है। यदि कलीसिया स इस तरह से आराधना कर सके जो परमेश्वर और ज़रूरतमंद संसार, दोनों तक पहुँचे, तो वह अपने समुदाय को बदल सकता है। इसके बजाय, कलीसिया स इसलिए मर रही है क्योंकि वह यह पूछने में विफल रही, "यहाँ कौन होना चाहिए?"

---

[81] मार्क डेवर का यह शब्द उन तथाकथित मसीहियों के लिए है जिनका कोई बाइबल आधारित आधार नहीं है।

कलीसिया द : एक ऐसी कलीसिया जो समुदाय से बात करती है

कलीसिया द में पिछले तीन कलीसियाओं की कई विशेषताएँ मौजूद हैं। 40 साल पहले चर्च की स्थापना के बाद से समुदाय में प्रभावशाली बदलाव आया है। इस सर्वेक्षण में शामिल अन्य कलीसियाओं के विपरीत, कलीसिया द ने अपने समुदाय के साथ अच्छी तरह से बातचीत करना सीख लिया है।

जब पासबानीय कर्मचारियों को आभास हुआ कि कई युवा विश्वासी रविवार को प्रचारित सिद्धांत को नहीं समझते, तो उन्होंने नए विश्वासियों को परिपक्वता की ओर लाने के लिए शिष्यत्व समूह बनाए। जब संगीत अगुए को आभास हुआ कि संगीत उनके समुदाय के कई लोगों को प्रभावित नहीं करता, तो उन्होंने ऐसे गीत शामिल करना आरम्भ कर दिया जो सैद्धांतिक रूप से सत्य और संगीत की दृष्टि से आकर्षक दोनों हों।

जैसे-जैसे कलीसिया का विकास हुआ, उन्होंने आसपास के शहरों में सहायक कलीसिया स्थापित की और इन कलीसियाओं को अपने समुदायों की ज़रूरतों के अनुसार ढलने दिया। इन कलीसियाओं का पासबान कलीसिया द के सदस्य रहे युवा पुरुष हैं। प्रत्येक सहायक कलीसिया अलग है, परन्तु प्रत्येक कलीसिया सुसमाचार के प्रति वफ़ादार है। कलीसिया द इसलिए फल-फूल रही है क्योंकि उसने पूछना सीखा है कि "यहाँ कौन है, यहाँ कौन था, और यहाँ किसे होना चाहिए?" उसने उस समुदाय को बाइबल की सच्चाई बताना सीखा है जिसमें परमेश्वर ने उसे रखा था।

दोबारा जाँच

क्या आपकी आराधना आपकी कलीसिया में आने वाले लोगों से बात करती है? क्या आपकी आराधना मसीही कलीसिया की विरासत को दर्शाती है? क्या आपकी आराधना उन लोगों से बात करती है जिन तक परमेश्वर आपकी कलीसिया के द्वारा पहुँचना चाहता है?

संगीत के विषय क्या है?

संसार के कई हिस्सों में **कलीसिया** के संगीतकारों को ऐसे गीत खोजने की चुनौती का सामना करना पड़ता है जो बाइबल के अनुरूप हों और सांस्कृतिक रूप से ग्रहणशील हों। हम ऐसे संगीत की तलाश करते हैं जो उस समुदाय की हृदयस्पर्शी भाषा को व्यक्त करे जहाँ हम पहुँचना चाहते हैं। विदेशी संगीत सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक नहीं हो सकता है, और कुछ स्थानीय सांस्कृतिक गीत बाइबल से मेल नहीं खाते। हम ऐसा संगीत कैसे चुनें जो पवित्रशास्त्र के प्रति आस्थावान हो और उस संस्कृति के प्रति ग्रहणशील हो जिसमें हम पासबान हैं? इस समस्या का सामना करने वाले पासबानों के उत्तर इस प्रकार हैं:

जब कलीसिया के लिए गीतों का चयन करने की बात आती है, तो किसी को बाइबल के प्रति आस्थावान होने और सांस्कृतिक रूप से ग्रहणशील होने के बीच चयन करने की आवश्यकता नहीं होती। "बाइबल के प्रति आस्थावान" होने से मेरा तात्पर्य ऐसे गीतों से है जो सच्चे और स्पष्ट हों। "सांस्कृतिक रूप से ग्रहणशील" होने से मेरा तात्पर्य ऐसे गीतों से है जो मण्डली के लिए गाने योग्य और आकर्षक हों।

बाइबल के प्रति आस्था को प्राथमिकता दी जाती है, परन्तु हमें दोनों में से किसी एक को चुनने की ज़रूरत नहीं है। यदि गायन का उद्देश्य संवाद करना है, तो क्या हमें ऐसी संगीतमय भाषा चुनने का लक्ष्य नहीं रखना चाहिए जो हमारी कलीसिया के सांस्कृतिक [वातावरण] के अनुकूल हो? यदि हम सांस्कृतिक ग्रहणशीलता को अप्रासंगिक समझते हैं तो हम [मूर्ख] हैं, और यदि हमारे गीत असत्य या अस्पष्ट हैं तो हम अप्रासंगिक होंगे।

(मरे कैंपबेल, मेलबर्न, ऑस्ट्रेलिया में पास्टर)

अफ़्रीकी पासबानों को प्रशिक्षित करते समय, हम उनसे आग्रह करते हैं कि वे सबसे ज़्यादा पवित्रशास्त्र-संपन्न, परमेश्वर-केंद्रित, सुसमाचार-प्रेरित, शिक्षाप्रद और गाने योग्य गीत खोजें, चाहे वे पुराने हों या नए, और उन्हें खुलकर गाएँ! किसी भी संस्कृति में, परमेश्वर के लोगों को ऐसे गीतों की ज़रूरत होती है जो उन्हें मसीह के लिए जीना और मरना सिखाएँ।

(टिम कैंट्रेल, जोहान्सबर्ग, दक्षिण अफ्रीका में शिक्षक)

हिंदी में धर्मशास्त्रीय रूप से ठोस, प्रासंगिक गीतों का भंडार बहुत कम है। ज़्यादातर गीत जिनमें धर्मशास्त्रीय रूप से अच्छा है, पुराने पश्चिमी भजनों या समकालीन आराधना गीतों से अनुवादित किए गए हैं। यद्यपि उनके बोल आस्थावान हो सकते हैं, परन्तु उनका संगीत स्थानीय नहीं है, और स्थानीय लोगों को उन्हें गाने में कठिनाई होती है। साथ ही, ऐसे गीत लोगों के इस संदेह को और पुष्ट करते हैं कि मसीही धर्म एक पश्चिमी धर्म है।

दूसरी ओर, हिंदी गीत जो संगीत की दृष्टि से प्रासंगिक होते हैं, अक्सर बाइबल पर कम ध्यान देते हैं, दोहराव वाले होते हैं, और बाइबल वचनों से रहित होते हैं। कभी-कभी गीतों में मंदिरों में बजने वाली धुनें भी शामिल हो जाती हैं। हम इन दोनों प्रकार के गीतों से बचते हैं।

गीत चुनते समय मैं सबसे पहले उसकी सैद्धांतिक शुद्धता पर ध्यान देता हूँ। यदि कोई गीत बाइबल आधारित रूप से अपर्याप्त है, तो हम उसे नहीं गाएँगे, चाहे वह कितना भी प्रासंगिक क्यों न हो। यदि शब्द अच्छे हैं परन्तु धुन भारतीय नहीं है, तो हम उसे नहीं गाएँगे। हम भारतीय धुनों और सच्चे शब्दों वाले गाने चुनते हैं। माना कि इस श्रेणी में ज़्यादा गाने नहीं आते, लेकिन हम धीरे-धीरे अपनी सूची तैयार कर रहे हैं।

(हर्षित सिंह, पासबान लखनऊ, भारत)

जिस प्रकार एक मौखिक हृदय की भाषा होती है जिसमें व्यक्ति सबसे स्वाभाविक रूप से बोलता है और सबसे गहराई से महसूस करता है, उसी प्रकार एक संगीतमय हृदय की भाषा भी होती है जो व्यक्ति से सबसे गहराई से बात करती है।

एक ऐसे मिशनरी की कल्पना कीजिए जो उन लोगों की भाषा सीखने में असफल रहता है जहाँ वह सेवा करता है। वह (अपनी भाषा में) कह सकता है, "मैं यहाँ आपको सुसमाचार सुनाने आया हूँ। आप मेरी बात नहीं समझ सकते, परन्तु मेरी बात सुनते रहिए। अंततः,

आप समझ जाएँगे कि मैं क्या कह रहा हूँ, और तब आपको सुसमाचार का पता चलेगा।" बिल्कुल नहीं! इसी प्रकार, जब हम किसी संस्कृति की संगीतमय भाषा का उपयोग करने में विफल रहते हैं, तो हम सुसमाचार को समझना और भी कठिन बना देते हैं।[82]

दुख की बात है जैसा कि पासबान सिंह ने लिखा, कुछ संस्कृतियों में ऐसे बहुत कम बाइबल-सम्मत गीत हैं जो गैर-पश्चिमी संगीतमय भाषा का उपयोग करते हैं। इससे अक्सर कलीसियाओं के पास दो विकल्प रह जाते हैं: बाइबल-सम्मत सशक्त गीत जिनकी धुनें विदेशी लगती हैं या बाइबल-सम्मत कमज़ोर गीत जिनकी धुनें संगीतमय संदर्भों से जुड़ी हों। यदि हम विश्व भर में कलीसिया के निर्माण के लिए संगीत का इस्तेमाल करना चाहते हैं, तो हमें ऐसे संगीत की तलाश करनी चाहिए जो पवित्रशास्त्र के अनुरूप हो और लोगों की संगीतमय हृदय की भाषा में बोले। मेरा मानना है कि परमेश्वर हर संस्कृति में ईश्वरीय गीतकारों को बुलाना चाहता है।

यदि आप ऐसी संस्कृति में सेवा करते हैं जहाँ गुणवत्तापूर्ण आराधना संगीत कम उपलब्ध है, तो आप नए संगीत को बढ़ावा दे सकते हैं। इसके लिए दो लोगों के बीच सहयोग की आवश्यकता हो सकती है; एक अच्छे गीतों को लिखने या उनका अनुवाद करने के लिए और दूसरा संगीत लिखने के लिए। कुछ महान भजन लेखकों ने अपनी धुनें स्वयं लिखी हैं। एक समर्पित मसीही संगीतकार खोजें और उनसे ऐसे भजनों की धुनें लिखवाएँ जो बाइबल की सच्चाई का वर्णन करते हों। ऐसा करके, आप बाइबल के संदेश को एक ऐसी संगीतमय भाषा में गा सकते हैं जो आपके संसार से संवाद करती हो।

हमें हमेशा ऊपर दिए गए प्रश्न 2 पर विचार करना चाहिए: "क्या हमारी संस्कृति पवित्रशास्त्र के विपरीत है?" यदि संगीत संस्कृति पवित्रशास्त्र के विपरीत है, तो हमें उसका उपयोग नहीं करना चाहिए। भले ही, जब कोई बाइबल आधारित सिद्धांत शामिल न हो, तो हमें आराधकों की संगीतमय भाषा में आराधना की अगुआई करने का प्रयास करना चाहिए।

अपने पिता की कलीसिया में आराधना करते समय, सेवकाई की तैयारी कर रहे एक युवक को आभास हुआ कि उनके द्वारा गाए जा रहे गीतों को बहुत कम लोग समझते हैं। आराधना करने के बजाय, उन्होंने अपने द्वारा गाए जा रहे सत्यों की कम समझ दिखाई। जब उस युवक ने इस बारे में शिकायत की, तो उसके पिता ने जवाब दिया, "देखो, क्या तुम कुछ बेहतर कर सकते हो।" युवा आइज़ैक वॉट्स ने अपने पिता की चुनौती स्वीकार कर ली।

आज अंग्रेज़ी बोलने वाले लोग आइज़ैक वॉट्स के भजन गाते हैं क्योंकि एक युवा पासबान ने ऐसे भजन लिखने का दृढ़ निश्चय किया जो बाइबल के संदेश को लोगों की समझ में आने वाली भाषा में संवाद करें।[83] हमारी पीढ़ी में, हमें ऐसे भजन लेखकों की ज़रूरत है जो बाइबल की सच्चाई को ऐसी भाषाओं में कहें जो गैर-अंग्रेज़ी भाषी जगत के दिलों को छू जाएँ।

---

[82] यह उदाहरण यहाँ से लिया गया है Ronald Allen and Gordon Borror, *Worship: Rediscovering the Missing Jewel* (Colorado Springs: Multnomah Publishers, 1982), 168.

[83] "Joy to the World," "When I Survey the Wondrous Cross," और "O God, Our Help in Ages Past" ये आइज़ैक वॉट्स द्वारा लिखे गए 750 भजनों में से तीन हैं।

संगीत शैली पर कुछ अंतिम विचार

क्योंकि संगीत जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, इसलिए हममें से कई लोगों की संगीत के प्रति गहरी मान्यताएँ होती हैं। आराधना में संगीत शैलियों पर कोई भी चर्चा अक्सर विवाद का कारण बनती है।

जो लोग मानते हैं कि कुछ संगीत शैलियाँ बुरी हैं, वे कहते हैं, "केवल कुछ खास संगीत शैलियों का ही आराधना में प्रयोग किया जा सकता है।" भले ही, बाइबल संगीत शैलियों के लिए कोई विशेष दिशानिर्देश नहीं देती।

जो लोग मानते हैं कि संगीत शैलियाँ नैतिक रूप से निष्पक्ष हैं, वे कहते हैं, "ऐसा संगीत ढूँढ़ो जो लोगों को पसंद हो और उसे गाओ। शैली मायने नहीं रखती; जो तुम्हें पसंद हो, वही गाओ।" जबकि, बाइबल वचन स्पष्ट करते हैं कि हमें ऐसी किसी भी चीज़ से बचना चाहिए जो कामुक व्यवहार की ओर ले जाए। सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व के कारण, कुछ संगीत आराधना के लिए अनुपयुक्त हैं।

संगीत विकल्पों के विषय लिखते हुए, स्कॉट एनिओल ने अपनी चर्चा को दो भागों में विभाजित किया:[84]

1. **गीत-शब्द: सही और गलत का विषय।** संगीत शैली चाहे जो भी हो, यदि गीत-शब्द स्पष्ट रूप से सत्य नहीं बताता, तो वह आराधना के लिए अनुपयुक्त है। यह सही और गलत का विषय है। पारंपरिक संगीत शैलियों का उपयोग करने वाले कई गीत ऐसे हैं जिनके गीत-शब्द बाइबल की सच्चाई नहीं सिखाते; ये आराधना के लिए अनुपयुक्त हैं। समकालीन संगीत शैलियों का उपयोग करने वाले कई गीत ऐसे हैं जिनके गीत-शब्द बाइबल की सच्चाई नहीं सिखाते; ये आराधना के लिए अनुपयुक्त हैं।

2. **संगीत शैली: अस्पष्ट विषय।** क्योंकि पवित्रशास्त्र संगीत शैली के विषय पर स्पष्ट रूप से नहीं बोलता, इसलिए हमें रोमियों 14 के सिद्धांतों का पालन करना चाहिए। हमें ऐसे संगीत से बचना चाहिए जो अपने सांस्कृतिक जुड़ावों के कारण प्रश्न-चिन्ह हो। परन्तु, हमें उन लोगों का न्याय नहीं करना चाहिए जिनका विवेक उन्हें एक अलग संगीत दिशा में ले जाता है।

दोबारा जाँच

क्या आपकी आराधना में ऐसे सांस्कृतिक क्षेत्र हैं जो सुसमाचार को अपने संसार तक पहुँचाने की आपकी क्षमता को सीमित करते हैं? क्या आप सुसमाचार को अपने संसार तक पहुँचाने के लिए अपनी प्राथमिकताओं का त्याग करने को तैयार हैं?

ताली बजाने के विषय क्या है?

आराधना में ताली बजाने के विषय क्या? क्या यह सही है या गलत? ताली बजाने का प्रयोग दो संदर्भों में होता है, और इनके दो बिल्कुल अलग अर्थ होते हैं।

---

[84] Scott Aniol, *Worship in Song* (Winona Lake, IN: BMH Books, 2009), 135-140

आराधना के एक भाग के रूप में ताली बजाना

कई चर्च गायन के एक भाग के रूप में तालियाँ बजाते हैं; तालियाँ बजाना उनकी सामूहिक आराधना का एक हिस्सा है। यह आराधना के भौतिक पहलू का एक हिस्सा है, जिसका वर्णन बाइबल में किया गया है। “हे देश देश के सब लोगो, तालियाँ बजाओ! ऊँचे शब्द से परमेश्वर के लिये जयजयकार करो!” (भजन संहिता 47:1)। यहूदी आराधक उत्साह से भरे थे। यहूदी आराधना में तरह-तरह के संगीत वाद्ययंत्र, हाथ उठाकर प्रार्थना और तालियाँ बजाना शामिल था।

यदि ताली बजाना आपकी आराधना का हिस्सा है, तो आराधना अगुए को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि यह गाए जा रहे गीत के अनुरूप हो। प्रार्थना के गीत के दौरान ताली बजाना संदेश के अनुरूप नहीं है। आनंदमय स्तुति के गीत के दौरान ताली बजाना उचित है। अगुए के लिए प्रश्न हमेशा यह नहीं होता कि, "ताली बजाना सही है या गलत?" एक बेहतर प्रश्न यह हो सकता है कि, “क्या इस गीत के लिए और हमारी आराधना के इस बिंदु पर ताली बजाना उचित है?”

आराधना के प्रत्युत्तर में ताली बजाना

एक और भी कठिन विषय किसी विशेष गीत के जवाब में तालियाँ बजाना है। बाइबल में ऐसा कोई संकेत नहीं मिलता कि यहूदी या मसीही आराधकों ने आराधना के प्रत्युत्तर में तालियाँ बजाईं।

आजकल कुछ संस्कृतियाँ धन्यवाद की अभिव्यक्ति के रूप में तालियाँ बजाने में तत्पर रहती हैं। इन संस्कृतियों में, तालियों के माध्यम से परमेश्वर की स्तुति व्यक्त करना स्वाभाविक है। अन्य संस्कृतियाँ तालियों को मुख्यतः किसी अच्छे प्रदर्शन की सराहना से जोड़ती हैं। इन संस्कृतियों में, किसी गायक मंडली या संगीतकार के प्रत्युत्तर में तालियाँ बजाने से आराधना के बजाय किसी संगीत समारोह का वातावरण बन सकता है।

क्योंकि बाइबल इस मुद्दे पर सीधे तौर पर बात नहीं करती, इसलिए हमें स्वतन्त्र कथनों से बचना चाहिए। यदि तालियाँ परमेश्वर की स्तुति व्यक्त करने वाली एक स्वाभाविक आनंदमय प्रतिक्रिया है, तो यह आराधना का एक कार्य हो सकता है। यदि तालियाँ यह संदेश देती हैं, "इस व्यक्ति ने हमारे आनंद के लिए अच्छा प्रदर्शन किया है," तो यह आराधना के महत्व को कम कर सकती है।

मण्डली और संगीतकार, दोनों को ताली बजाने की प्रेरणा पर ध्यान देना चाहिए। मण्डली के लोगों को स्वयं से पूछना चाहिए, "मैं तालियाँ क्यों बजा रहा हूँ? क्या मेरी तालियाँ परमेश्वर की स्तुति से प्रेरित हैं या किसी कलाकार की प्रशंसा से?"

संगीतकार को पूछना चाहिए, “मंडली तालियाँ क्यों बजा रही है? क्या मेरे गीत ने परमेश्वर की स्तुति के आनंदमय कार्य को प्रेरित किया, या मेरे गीत ने मेरे कौशल की ओर ध्यान आकर्षित किया? क्या मैं आराधना में अगुवाई कर रहा था?” आराधना के अगुवों के रूप में हमें सावधान रहना चाहिए कि हमारी सेवकाई परमेश्वर की ओर इंगित करे, न कि हमारी क्षमताओं की ओर।

दोबारा जाँच

यदि आपकी कलीसिया आराधना के दौरान ताली.बजाती है, तो क्या यह वास्तव में परमेश्वर की स्तुति की अभिव्यक्ति है या यह किसी कलाकार की प्रशंसा की अभिव्यक्ति है?

रोमियों 14 और आराधना शैली

► रोमियों 14:1-23 पढ़ें।

रोमियों 14 उन संदिग्ध विषयों के लिए महत्वपूर्ण दिशानिर्देश प्रदान करता है जिनके बारे में पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से नहीं बताता। पौलुस उन लोगों को संबोधित करता है जो मांस खाने या विशेष दिन मनाने के बारे में असहमत हैं। वह निम्नलिखित सिद्धांत प्रस्तुत करता है।

(1) संदिग्ध विषयों में दूसरों का न्याय न करें (रोमियों 14:1-13)।

जिन क्षेत्रों में पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से नहीं बोलता, हमें उन लोगों को भी विवेक की स्वतंत्रता देनी चाहिए जो हमसे असहमत हैं। हमें स्वयं पवित्रशास्त्र से ज़्यादा स्पष्ट नहीं होना चाहिए!

(2) निर्बलों के लिए ठोकर का कारण न बनें (रोमियों 14:13-15)।

पौलुस ने माना कि एक अपरिपक्व विश्वासी को एक अधिक परिपक्व विश्वासी द्वारा प्रयोग की जाने वाली स्वतंत्रता से नुकसान हो सकता है। उस स्थिति में, प्रेम का नियम हमसे आशा करता है कि हम निर्बलों के लिए अपनी स्वतंत्रता को सीमित करें। **अपनी स्वतंत्रता के लिए उस व्यक्ति के जीवन को नष्ट न करें जिसके लिए मसीह ने अपने प्राण दिए**।
पौलुस का कथन मसीही व्यवहार के सभी क्षेत्रों के लिए एक शक्तिशाली आदर्श है; "यदि भोजन मेरे भाई को ठोकर खिलाए, तो मैं कभी किसी रीति से मांस न खाऊँगा, न हो कि मैं अपने भाई के लिये ठोकर का कारण बनूँ" (1 कुरिन्थियों 8:13)।

(3) विश्वास से कार्य करें, संदेह से नहीं (रोमियों 14:23)।

यह नये मसीहियों के लिए एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है। "जो कुछ विश्वास से नहीं, वह पाप है।" हमें किसी दूसरे को प्रसन्न करने के लिए कभी भी अपने विवेक का उल्लंघन नहीं करना चाहिए। "जो सन्देह कर के खाता है वह दण्ड के योग्य ठहर चुका, क्योंकि वह विश्वास से नहीं खाता।"

आराधना शैलियों पर लागू होने पर, ये सिद्धांत हमें सावधान करते हैं:

1. **उन लोगों का न्याय न करें जो ऐसी शैली का उपयोग करते हैं जिससे आप असहज हैं।** यदि पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से नहीं कहता है, तो आपको न्याय करने में देर करनी चाहिए।

2. **ऐसा संगीत न बजाएँ जो किसी नए विश्वासी को ठेस पहुँचाए।** यदि कोई विश्वासी ऐसी जीवनशैली से आता है जिसमें कुछ संगीत शैलियाँ अनैतिक व्यवहार से जुड़ी हैं, तो वह शैली उस विश्वासी के लिए कभी भी सहायक नहीं हो सकती। एक मसीही भाई के प्रति प्रेम आपको ऐसी किसी भी चीज़ से बचने के लिए प्रेरित करना चाहिए जो उसकी आत्मिक उन्नति में बाधा डाल सकती है।

3. **जब आपका विवेक संदेह में हो, तो स्वतंत्रता का प्रयोग न करें।** आपको सीमाओं की परीक्षा नहीं लेनी चाहिए। परमेश्वर के प्रति प्रेम आपको ऐसी किसी भी चीज़ से दूर रहने के लिए प्रेरित करना चाहिए जो आपके विवेक में संदेह पैदा करे।

बच्चों और युवाओं को आराधना में शामिल करना

"हम बच्चों और युवाओं को आराधना में कैसे शामिल कर सकते हैं? क्या हमें उन्हें तब तक अलग सभा में रखना चाहिए जब तक वे वयस्कों की सभा समझने योग्य बड़े न हो जाएँ? हम बच्चों और युवाओं को सच्ची आराधना के लिए कैसे प्रोत्साहित करें?"

कई कलीसिया बच्चों, युवाओं और वयस्कों को अलग-अलग प्रार्थना सभाओं में बुलाते हैं। इसके दो कारण हैं: एक यह चिंता कि छोटे बच्चे वयस्कों का ध्यान प्रार्थना सभा से हटा देंगे, और दूसरा यह कि बच्चे और युवा प्रार्थना सभा में हो रही बातों को समझ नहीं पाएँगे।

बाइबल में युवाओं या बच्चों के लिए अलग-अलग प्रार्थना सभाओं को मना करने का कोई उल्लेख नहीं है। फिर भी, कम से कम तीन बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए:

1. **बाइबल में, आराधना अंतर-पीढ़ीगत थी।** बाइबल यह नहीं बताती कि आराधना में बच्चों और युवाओं के साथ अलग व्यवहार किया जाता था। मंदिर की आराधना में, परिवार बलिदान की रस्म के लिए एक साथ रहता था। नए नियम में ऐसा कुछ भी नहीं है जो यह सुझाव दे कि आरंभिक कलीसिया ने आराधना के दौरान बच्चों या युवाओं को अलग किया था।

2. **अंतर-पीढ़ीगत आराधना मसीह की देह को एक रूप बनाती है।** जिस प्रकार समकालीन और पारंपरिक आराधना के लिए अलग-अलग सेवाएँ देने से देह की एकता कमज़ोर हो सकती है, उसी प्रकार बच्चों और युवाओं के लिए अलग-अलग सेवाएँ देने से कलीसिया परिवार का हिस्सा होने के बारे में उनकी जागरूकता कम हो सकती है। दूसरी ओर, जब बच्चों और युवाओं को कलीसिया परिवार की आराधना में शामिल किया जाता है, तो हर कोई समझता है कि वे मसीह की देह का एक मूल्यवान हिस्सा हैं (1 तीमुथियुस 4:12)।

3. **अंतर-पीढ़ीगत आराधना के द्वारा, विश्वास अगली पीढ़ी को हस्तांतरित होता है।** हम आराधना करके आराधना करना सीखते हैं। जब तक इसकी सावधानीपूर्वक योजना नहीं बनाई जाती, बच्चों की आराधना बच्चों के मनोरंजन का समय बन सकती है ताकि वे वयस्कों की आराधना में बाधा न डालें। यदि हम ऐसा करते हैं, तो बच्चे आराधना करना कब सीखेंगे?

युवा और बच्चे संयुक्त आराधना सभा के एक भाग के रूप में

युवा और बच्चे अक्सर एक संयुक्त आराधना सभा में भाग ले सकते हैं जो सभी उम्र के लोगों को संबोधित करती है। इसमें मुख्य संदेश के समान विषय पर बच्चों का एक छोटा सा संदेश भी शामिल हो सकता है।

जब हम यह मान लेते हैं कि बच्चे गहन सत्य को नहीं समझ सकते, तो हम उन्हें आत्मिक विवेक का पर्याप्त श्रेय नहीं दे पाते। पवित्र आत्मा ही है जो हर श्रोता, चाहे वह वयस्क हो या बच्चा, इनको समझाता है (1 कुरिन्थियों 2:10)। वयस्कों की आराधना सभा में भी, पवित्र आत्मा उनके नन्हे हृदयों को सत्य बता सकता है। बच्चों को वयस्क आराधना में शामिल करने के लिए हमें उन्हें आराधना के बारे में सिखाना होगा। हम बच्चों को आराधना की व्याख्या कर सकते हैं। हम बाइबल पठन और भजनों में कठिन शब्दों की व्याख्या कर सकते हैं। वयस्कों को भी कभी-कभी उन शब्दों की व्याख्या की आवश्यकता होती है! आराधना में बच्चों के लिए जगह बनाकर, हम उन्हें बाकी कलीसिया के साथ-साथ एक आराधक के रूप में विकसित होने का अवसर देते हैं।

युवाओं और बच्चों के लिए अलग-अलग आराधना[85]

कई कलीसिया युवाओं और बच्चों के लिए अलग-अलग सेवाएँ प्रदान करते हैं। ये सेवाएँ आराधना होनी चाहिए, मनोरंजन नहीं। यदि बच्चे और युवा आराधना करना नहीं सीखेंगे, तो वे आत्मिक परिपक्वता तक नहीं पहुँच पाएँगे। जैसे एक बच्चा मिठाई खाने से शारीरिक स्वास्थ्य विकसित नहीं करता, वैसे ही एक बच्चा आत्मिक जंक फ़ूड खाने से आत्मिक स्वास्थ्य विकसित नहीं कर पाता।

यदि कोई कलीसिया वयस्कों और युवाओं/बच्चों के लिए अलग-अलग प्रार्थना सभाएँ आयोजित करती है, तो हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वह प्रार्थना सभा वास्तव में एक आराधना सभा हो। युवाओं और बच्चों की प्रार्थना सभा में बाइबल पठन शामिल होना चाहिए। बच्चों के लिए, आकर्षक दृश्य पवित्रशास्त्र की सच्चाई को और पुष्ट कर सकते हैं।

प्रार्थना सभा में एक प्रवचन या बाइबल पठन शामिल होना चाहिए जो परमेश्वर के वचन को युवाओं और बच्चों की ज़रूरतों पर लागू करे। बाइबल को शिक्षक के हाथों में प्रेमपूर्वक रखा जाना चाहिए। बच्चे और युवा, अपने आदर करने वाले वयस्कों द्वारा परमेश्वर के वचन का प्रयोग देखकर उसका आदर करना और उसका उपयोग करना सीखते हैं।

प्रार्थना सभा में ऐसे गीत शामिल होने चाहिए जो बाइबल की सच्चाई का वर्णन करें। इसमें प्रार्थना, स्तुति और विनती, दोनों शामिल होनी चाहिए। इसमें एक भेंट शामिल होनी चाहिए जिससे बच्चे परमेश्वर को अपनी भेंट दे सकें। बच्चों या युवाओं की प्रार्थना सभा में आराधना के सभी तत्व शामिल होने चाहिए।

---

[85] इस भाग में हॉब साऊँड बाइबल कॉलेज में शिक्षा की प्रोफेसर श्रीमती क्रिस्टीना ब्लैक की सामग्री का उपयोग किया गया है।

बच्चों को प्रार्थना करना सिखाना: "प्रार्थना हाथ"

अंगूठा हमें अपने नजदीकी लोगों (परिवार) के लिए प्रार्थना करने की याद दिलाता है।

सूचक उंगली हमें उन लोगों के लिए प्रार्थना करने की याद दिलाती है जो लोगों को यीशु की ओर मार्गदर्शन करते हैं (पासबान, शिक्षक और मिशनरी)।

मध्य उँगली सबसे ऊँची होती है। यह हमें अपने देश, स्कूल, कलीसिया और घर के अगुओं के लिए प्रार्थना करने की याद दिलाती है।

चौथी उंगली सबसे कमज़ोर होती है। इसे केवल चौथी उंगली उठाकर दिखाएँ। यह हमें उन लोगों के लिए प्रार्थना करने की याद दिलाता है जो निर्बल हैं और जिन्हें यीशु की ज़रूरत है।

पाँचवीं उंगली सबसे छोटी होती है। यह आपको अपने लिए प्रार्थना करने की याद दिलाती है।

पूरा हाथ ऊपर उठाना हमें परमेश्वर की स्तुति करने की याद दिलाता है।

यह प्रार्थना हाथ एक प्रार्थना आदर्श बन सकता है जो युवा आराधकों के प्रार्थना स्तर को ऊंचा उठाता है।

सारांश

यदि हम अपने बच्चों को परिपक्व विश्वासी बनते देखना चाहते हैं, तो हमें उन्हें आत्मिक पोषण देना होगा। चाहे सामूहिक सभा हो या अलग-अलग सभाएँ हों, हमें अपने बच्चों को आराधना की ओर ले जाना होगा।

दोबारा जाँच

चाहे आप बच्चों और युवाओं के लिए अलग-अलग सभाएं करते हों या पूरी कलीसिया के लिए एक संयुक्त सभा करते हों, क्या आप अपने बच्चों और युवाओं को आराधना करना सिखा रहे हैं?

आराधना में भावना

"मेरे देश के लोग बहुत भावुक होते हैं, और हमारी आराधना अक्सर हमारी भावनात्मक जीवनशैली को दर्शाती है। हमारा आराधना संगीत आमतौर पर तेज़, तेज़ आवाज़ और लयबद्ध होता है। यह हमें भाग लेने और अपनी भावनाएँ व्यक्त करने का अवसर देता है। यद्यपि, मुझे डर है कि यह संगीत सिर्फ़ भावनाएँ ही हैं। मुझे नहीं पता कि हमारा संगीत सच्ची आराधना के लिए उपयुक्त है या नहीं।"

सच्ची आराधना आत्मा और सच्चाई से की जाने वाली आराधना है। सच्ची आराधना में भावनाएँ शामिल होती हैं, परन्तु यह आराधना भावना से कहीं बढ़कर होती है। आराधना में भावना से जुड़ी दो गलतियाँ हैं जो हमें भटका सकती हैं।

(1) आराधना में भावना का इनकार करने की गलती।

कुछ आराधक आराधना में भावनाओं का इनकार करते हैं। वे आराधना को परमेश्वर के साथ एक मानसिक मुलाक़ात मानते हैं; वे परमेश्वर से मिलने के भावनात्मक पहलू को समझने में विफल रहते हैं। सच्ची आराधना भावनाओं से बात करती है। हमारी आराधना सभा में आराधकों को परमेश्वर द्वारा स्वयं के प्रकटीकरण के प्रति अपनी भावनात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करने का अवसर मिलना चाहिए।

> गायन वह माध्यम है जिसके द्वारा परमेश्वर के लोग उसके वचन को थाम लेते है और अपनी भावनाओं तथा प्रेम को परमेश्वर के अनुरूप करते हैं।
> - जोनाथन लीमन
> से लिया गया है

(2) आराधना में भावना पर अधिक जोर देने की गलती।

इसके विपरीत ख़तरा यह है कि आराधना में केवल भावनाओं की बात की जाए — यह एक भूल है। जो आराधना बुद्धि को अनदेखा करते हुए भावनाओं से बात करती है, वह 1 कुरिन्थियों 14:15 का उल्लंघन करती है; "मैं आत्मा से गाऊँगा, और बुद्धि से भी गाऊँगा।" आराधना का कोई भी पहलू इस प्रलोभन में पड़ सकता है: एक प्रभावशाली प्रवचन जो बाइबल के पठन के प्रति निष्ठावान नहीं है; भावनात्मक संगीत जो बाइबल की सच्चाई को व्यक्त करने में विफल रहता है; आराधना पद्धतियाँ जो आराधकों की भावनाओं से छेड़छाड़ करती हैं। जो आराधना केवल भावनाओं से बात करती है, वह सच्ची आराधना नहीं है।

सच्ची आराधना: आत्मा और सच्चाई से आराधना

बाइबल आधारित आराधना पद्धति भावनाओं के महत्व का सम्मान करती है और साथ ही साथ हम जो प्रवचन देते और गाते हैं उसकी सच्चाई का सावधानीपूर्वक मूल्यांकन भी करती है। क्योंकि संगीत एक भावनात्मक माध्यम है, इसलिए हमें अपने गायन की सच्चाई का मूल्यांकन करने में विशेष रूप से सावधान रहना चाहिए। यद्यपि, सही तरीके से इस्तेमाल किया जाए तो संगीत मन और भावनाओं, दोनों से जुड़े सत्य को प्रकट करने में विशेष रूप से प्रभावी हो सकता है।

जॉन वेस्ली आराधना में भावनाओं को महत्व देते थे। उन्होंने एक मण्डली का वर्णन "पत्थर की तरह मृत - पूर्णतः शांत और पूर्णतः उदासीन" के रूप में किया। उनका मानना था कि सत्य के साथ साक्षात्कार से एक भावनात्मक प्रतिक्रिया प्रेरित होनी चाहिए। साथ ही साथ, वे उन भावनात्मक अभिव्यक्तियों की आलोचना करने में भी तत्पर रहते थे जो सच्ची आराधना से दूर ले जाती हैं।

वेस्ली ने दोनों ही चरमसीमाओं के विरुद्ध चेतावनी दी; भावनाओं को नकारना या उन्हें हमें नियंत्रित करने देना। "क्या हमें किसी एक चरमसीमा या दूसरी चरमसीमा में जाने की कोई आवश्यकता है? क्या हम परमेश्वर के वरदान का इनकार किए बिना और उसकी संतानों के महान विशेषाधिकार को त्यागे बिना, भ्रम और उत्साह की भावना से पर्याप्त दूरी बनाए रखते हुए, एक बीच का मार्ग नहीं अपना सकते?"[86] यह आज हमारे लिए एक अच्छा आदर्श है: आराधना में भावना के महत्व का सम्मान करना, तथा उन चरमसीमाओं से बचना जो हमारा ध्यान परमेश्वर और उसकी सच्चाई से हटा देती हैं।

---

[86] John Wesley, *John Wesley's Sermons*, "The Witness of the Spirit"

भावना और सच्चाई: एक मसीही का अनुभव[87]

““स्वभाव से, मैं भावनात्मक रूप से एक संवेदनशील व्यक्ति हूँ। संगीत मेरी भावनाओं पर गहरा प्रभाव डाल सकता है। कुछ वर्ष पहले मैंने अपनी भावनात्मक प्रतिक्रियाओं पर ज़रूरत से ज़्यादा भरोसा करने के बारे में एक पाठ सीखा था।

“जब मैंने एक खूबसूरत धुन वाला गीत सुना, तो मैं अपने अन्दर से भावुक हो गया। जैसे ही गीत में एक स्वर बदला, मैंने स्वयं को रोते हुए पाया। गीत के अंत तक, मुझे ऐसा लगा जैसे मुझे कोई गहरा आत्मिक अनुभव हुआ हो।

“जबकि, जब मैंने इसे दूसरी बार सुना, तो मुझे एक चौंकाने वाली बात पता चली: यह गीत बाइबल के परमेश्वर की आराधना का गीत नहीं था। यह गीत एक झूठे पंथ के किसी देवता की स्तुति गा रहा था। उस प्रभावी स्वर परिवर्तन के शब्द पाखंड थे।

“उस दिन मैंने सीखा कि मेरी भावनाओं को आसानी से प्रभावित किया जा सकता है, विशेषकर संगीत के द्वारा इसका अर्थ यह नहीं है कि संगीत के प्रति सभी भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ अमान्य हैं, परन्तु इसका अर्थ यह है कि मुझे गीतों की विषय-वस्तु का मूल्यांकन करना होगा। मुझे यह सुनिश्चित करने के लिए 'आत्माओं की परख' करनी होगी कि वे परमेश्वर की ओर से हैं या नहीं।”

दोबारा जाँच

क्या आपकी आराधना मन और भावनाओं, दोनों से बात करती है? क्या आप जो गाते और सिखाते हैं, उसका मूल्यांकन करते हैं ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वह बाइबल के अनुसार है?

आराधना के खतरे: आराधना को महत्वहीन बनाना

इस पाठ का आरम्भ वॉरेन विर्सबे की इस चेतावनी से हुआ कि आराधना को मनोरंजन के समय के रूप में न देखा जाए।[88] उन्होंने चेतावनी दी कि जब हम अपनी प्रार्थना सभाओं में परमेश्वर को छोड़कर मनोरंजन की तलाश करते हैं, तो हम आराधना को महत्वहीन बना देते हैं। "कलीसिया अभी भी आराधना शब्द का प्रयोग करती हैं, परन्तु इसका अर्थ बदल गया है। अक्सर *आराधना* केवल एक शब्द होता है जिसका प्रयोग लोग मण्डली के लिए अपनी योजना को धार्मिक सम्मान देने के लिए करते हैं, चाहे सभा का केंद्र परमेश्वर हो या न हो।" यह कैसे होता है?

हम पवित्रस्थान से रंगमंच की ओर बढ़ते हैं

आराधना कहीं भी हो सकती है। मसीहियों ने उत्पीड़कों से छिपकर गुफाओं में आराधना की है। मसीहियों ने निजी घरों या सुन्दर भवनों में आराधना की है। मसीहियों ने अस्पताल में लेटे हुए, हवाई जहाज़ में उड़ान भरते हुए, या काम करते हुए भी आराधना की है।

---

[87] Dr. Andrew Graham से एक पत्र. 29 मई, 2014.

[88] इस खण्ड के उद्धरण Warren Wiersbe, *Real Worship* (Grand Rapids: Baker Books, 2000), 169-174 से लिए गए हैं .

आराधना कहीं भी हो सकती है, परन्तु अधिकांश सामूहिक आराधना किसी न किसी भवन में होती है। " कलीसिया की सभाओं को किसी न किसी जगह इकट्ठा होना ही होता है, और वह 'स्थान' या तो एक पवित्र स्थान या एक रंगमंच बन जाता है।"

अंतर क्या है? एक पवित्र स्थान "एक ऐसा स्थान है जहाँ लोग आराधना करने और अपने प्रभु की महिमा करने के लिए इकट्ठा होते हैं।" एक रंगमंच एक ऐसा स्थान है जहाँ लोग कोई नाटक देखने के लिए इकट्ठा होते हैं। क्या आपकी कलीसिया भवन एक रंगमंच है या एक पवित्र स्थान?

हम मंडली से दर्शक की ओर बढ़ते हैं

"एक मसीही मण्डली यीशु मसीह की आराधना और उनकी महिमा करने के लिए एकत्रित होती है। दर्शक एक प्रदर्शन देखने और सुनने के लिए एकत्रित होते हैं।" मण्डली परमेश्वर पर केंद्रित होती है; दर्शक कलाकार पर केंद्रित होते हैं। मंडली में सहभागी होते हैं; दर्शक-समूह में केवल देखने वाले। क्या आप एक मण्डली की अगुआई कर रहे हैं या दर्शकों की?

हम सेवा से प्रदर्शन की ओर बढ़ते हैं

"हम मुख्य रूप से परमेश्वर के सत्य को व्यक्त करने के लिए सेवा करते हैं; हम अपनी क्षमताओं से प्रभावित करने के लिए प्रदर्शन करते हैं। अगुआ जानता है कि परमेश्वर देख रहा है और उसकी स्वीकृति ही सब कुछ है; कलाकार श्रोताओं की तालियाँ चाहता है।" सेवा कई अलग-अलग तरीकों से प्रदर्शन बन सकती है: एक संगीतकार जो श्रोताओं के मनोरंजन के लिए प्रदर्शन करता है, एक स्तुति समूह जो एक विशेष भावनात्मक प्रतिक्रिया चाहता है, या एक प्रचारक जो लोगों की प्रतिक्रिया के आधार पर अपने संदेश को मापता है। क्या आप सेवा कर रहे हैं या प्रदर्शन कर रहे हैं?

निष्कर्ष: एक मिश्नरी की गवाही - रोमियों 14 में एक अभ्यास

"जब मैं एक मिशनरी मित्र और आठ फ़िलिपीनो पासबानों के साथ एक अगुआई सेमीनार में शामिल हुआ, तो मैंने दूसरों की आराधना शैली के आधार पर उनका मूल्यांकन करने का एक मूल्यवान **पाठ** सीखा।[89]

"हमने एक बड़े सम्मेलन केंद्र में प्रवेश किया और अपनी सीटें ब्लीचर्स पर ऊँची जगह पर पाईं। छत से बड़े-बड़े स्क्रीन और लाउडस्पीकर लटके हुए थे। आराधना की अगुआ एक फ़िलिपीनो महिला थीं, जिनके साथ एक स्तुति समूह था। वे ताली बजा रही थीं और उत्साहित भीड़ को 'हाँ, प्रभु, हाँ!' कहते हुए प्रेरित कर रही थीं। यह मेरी समझ के हिसाब से बहुत ज़्यादा जीवंत था।

"बार-बार बजने वाला संगीत, तेज़ आवाज़ में गीत और शारीरिक हलचल मुझे बहुत परेशान कर रही थी। हमने अपने फ़िलिपीनो पासबानों को पवित्र अगुआ बनने की चुनौती दी थी, और अब हम उन्हें इस तरह की आराधना में शामिल कर रहे थे! एक फ़िलिपीनो

[89] फिलिपीन्स में पूर्व मिशनरी रेव. डेविड ब्लैक की गवाही से।

पासबान, जो बहुत ही आत्मिक अगुआ था, वहाँ सिर झुकाए खड़ा था। वह चुपचाप प्रार्थना कर रहा था और सभा में भाग नहीं ले रहा था।

"मैं सोच में पड़ गया, 'हम क्या करें?' बाद में, मैंने उसी पासबान को पूरे मन से ताली बजाते और गाते हुए देखा। उसका चेहरा चमक रहा था, और वह आराधना में पूरी तरह तल्लीन लग रहा था।

“उस शाम, हमने सम्मेलन में अगुआई के विषय जो सीखा, उसे साझा किया। बातचीत के दौरान, मैंने इस फिलिपिनो अगुए से पूछा कि ऐसा क्या हुआ जिससे उसका व्यवहार बदल गया। ‘आप बिना किसी भाग लिए अचानक आराधना करने और गायन का आनंद लेने क्यों लगे?’

“उसका उत्तर बहुत प्रभावशाली था। ‘मैं संगीत से परेशान था। परन्तु जब मैंने प्रार्थना की, तो परमेश्वर ने मुझे दिखाया कि आराधना अगुआ और इस सभा में उपस्थित लोग पूरे मन से परमेश्वर की आराधना कर रहे थे। वे अपनी जानकारी के अनुसार परमेश्वर को अपना सर्वश्रेष्ठ दे रहे थे। प्रभु ने कहा, “क्या तुम उन्हें मेरे पास छोड़ सकते हो? क्या तुम दूसरों का न्याय किए बिना मुझे अपनी आराधना अर्पित कर सकते हो?”’

“इस पासबान ने अपने आस-पास के लोगों का न्याय करने के बजाय, पूरे मन से परमेश्वर की आराधना करना आरम्भ कर दिया, जैसा वह आमतौर पर करता था। क्या इससे इस पासबान का आराधना के प्रति दृष्टिकोण बदल गया? नहीं; जब वह अपनी कलीसिया लौटा, तो उसने उस सप्ताहांत देखी गई आराधना शैली का अनुकरण नहीं किया।

“हमारी कलीसियाओं में एक अगुए के रूप में, यह व्यक्ति अक्सर अपने साथी पासबानों को मण्डली में नियंत्रण किए बिना आराधना में स्वतंत्रता देने के लिए प्रोत्साहित करता था। उन्होंने अपने साथी पासबानों को दो सिद्धांतों में संतुलन बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित किया:

1. अपनी कलीसिया में आराधना के बाइबल आधारित सिद्धांतों का सावधानीपूर्वक पालन करें।
2. अन्य कलीसियाओं की आराधना शैलियों की आलोचना करने से बचें।”

पाठ 9 की समीक्षा

(1) आराधना और संस्कृति

- आराधना शैलियों का मूल्यांकन करते समय, हमें संस्कृति और बाइबल को एक दूसरे से नहीं मिलाना चाहिए।
- जब हमारी संस्कृति बाइबल के विपरीत हो, तो हमें संस्कृति की आशाओं की बजाय बाइबल के आदेशों के अधीन होना चाहिए।
- सुसमाचार को संसार तक पहुँचाने के लिए, हमें यह पूछना चाहिए कि हमारी आराधना हमारी संस्कृति से सबसे प्रभावी ढंग से कैसे जुड़ सकती है।

(2) तीन प्रश्न हमें स्थानीय कलीसिया की आराधना और आसपास की संस्कृति के बीच संबंध को समझने में सहायता करते हैं:

- ***यहाँ कौन है?*** वह मण्डली को देखता है जो कलीसिया का हिस्सा है।
- ***यहाँ कौन था?*** कलीसिया की विरासत को देखता है।
- ***यहाँ किसे होना चाहिए?*** उस समुदाय पर दृष्टि करता है जिस तक पहुंचने के लिए हमें बुलाया गया है।

(3) क्योंकि संगीत हमारी सांस्कृतिक पहचान का केन्द्र बिन्दु है, इसलिए कलीसियाओं को ऐसा संगीत चुनना चाहिए जो बाइबल के प्रति विश्वासयोग्य और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील हो।

(4) यदि ताली बजाना आराधना का भाग है, तो हमें पूछना चाहिए, "क्या इस गीत के लिए और हमारी आराधना के इस बिंदु पर ताली बजाना उचित है?"

(5) यदि ताली किसी विशेष गीत के प्रत्युत्तर में बजाई जा रही है, तो हमें पूछना चाहिए, "क्या मेरी तालियाँ परमेश्वर की स्तुति से प्रेरित हैं या किसी कलाकार की प्रशंसा से?"

(6) यदि हम बच्चों और युवाओं को वयस्क सभा में रखते हैं, तो हमें ऐसी आराधना की योजना बनानी चाहिए जो सभी उम्र के लोगों को आकर्षित करे।

(7) यदि हम बच्चों और युवाओं के लिए अलग-अलग सभाएँ आयोजित करते हैं, तो हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि ये सभाएँ आराधना हों, मनोरंजन नहीं।

(8) हमें आराधना में भावनाओं पर न तो ज़्यादा ज़ोर देना चाहिए और न ही उनका इनकार करना चाहिए।

पाठ 9 के कार्य

(1) इस पाठ में कई "दोबारा जांच" प्रश्न शामिल थे। इनमें से किसी एक प्रश्न का एक पृष्ठ का उत्तर लिखें। आपके उत्तर में दो भाग होने चाहिए:

- आराधना में आप वर्तमान में क्या करते हैं, इसका मूल्यांकन।
- आराधना के बाइबल आधारित सिद्धांतों से विचलित हुए बिना आपकी आराधना को सांस्कृतिक रूप से अधिक प्रासंगिक बनाने के लिए बदलावों की एक सिफ़ारिश।

(2) अगले पाठ के आरम्भ में, आप इस पाठ पर आधारित एक परीक्षा देंगे। तैयारी के लिए परीक्षा के प्रश्नों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें।

पाठ 9 परीक्षा

(1) हमें उन आराधना प्रथाओं के प्रति कैसी प्रतिक्रिया देनी चाहिए जो हमारी सांस्कृतिक प्राथमिकताओं को ठेस पहुँचाती हैं, परन्तु बाइबल के सिद्धांतों का विरोध नहीं करतीं?

(2) हमें उन आराधना पद्धतियों के प्रति कैसी प्रतिक्रिया देनी चाहिए जो हमारी संस्कृति में स्वीकृत हैं, परन्तु जो बाइबल के विपरीत हैं?

(3) हमारे चर्च की आराधना और आस-पास की संस्कृति के बीच संबंध को समझने के लिए हमें कौन से तीन प्रश्न पूछने चाहिए?

(4) रोमियों अध्याय14 से आराधना से संबंधित तीन सिद्धांत की सूची बनाएँ।

(5) अंतर-पीढ़ी आराधना के लिए तीन बातों की सूची बनाएँ।

(6) आराधना में भावना से संबंधित दो गलतियाँ बताएँ।

(7) याद किया हुआ 1 कुरिन्थियों 14:15-17 लिखें।

पाठ 10
आराधना की जीवनशैली

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अन्त होने तक विद्यार्थी को नीचे दिए गए कार्य करने के योग्य होना चाहिए:

(1) सामूहिक आराधना और आराधना की जीवनशैली के बीच के संबंध को पहचानना।

(2) समझना कि आराधना की जीवनशैली व्यक्ति के मूल्यों को बदल देती है।

(3) परमेश्वर की महिमा के लिए जीवन व्यतीत करने का प्रयास करना।

(4) रोमियों 12:2 में सिखाई गई आराधना की जीवनशैली के प्रति समर्पित रहना।

(5) आराधना के बाइबल आधारित धर्मज्ञान को बताना।

इस पाठ की तैयारी

कण्ठस्थ करें 1 कुरिन्थियों 10:31।

भूमिका

उसी वर्ष, एक अफ़्रीकी राष्ट्र दो सूचियों में शामिल हुआ: "अफ़्रीका में सबसे बड़ी मसीही आबादी" और "अफ़्रीका का सबसे भ्रष्ट राष्ट्र"।

एशिया की सबसे बड़ी कलीसियाओं में से एक के पासबान को लाखों डॉलर के गबन का दोषी ठहराया गया।

एक अमेरिकी बहुत बड़ी कलीसिया के प्रमुख ने वैवाहिक बेवफाई स्वीकार करने के बाद त्याग पत्र दे दिया।

गलत क्या है? इन स्थितियों में कई कारक होते हैं, परन्तु इन सभी में एक बात समान है: रविवार की आराधना सोमवार के जीवन को प्रभावित नहीं करती। रविवार को " आराधना " माना जाता है - भावना और उत्साह। सोमवार को "वास्तविक जीवन" माना जाता है - अनैतिक व्यावसायिक व्यवहार और आत्म-संतुष्टि। बहुत से लोगों के लिए, आराधना गतिविधियों से जीवन में बदलाव नहीं आता।

► विचार विमर्श करें कि आराधना आपके दैनिक जीवन को कैसे प्रभावित करती है। आपकी आराधना के कारण आपका व्यवसाय कैसे अलग ढंग से संचालित होता है? आपकी आराधना के कारण आपके पारिवारिक रिश्ते कैसे अलग होते हैं? आपके आचार-विचार? आपकी राजनीति? आपके आर्थिक व्यवहार? क्या आप आराधना की जीवनशैली जी रहे हैं?

आराधना: रविवार से कहीं बढ़कर है

इस पाठ के परिचय में वर्णित समस्या नई नहीं है। आमोस ने उन लोगों से बात की जो बलिदान चढ़ाते थे और मंदिर के संस्कारों का पालन करते थे, परन्तु ईश्वरीय जीवन जीने में असफल रहे (आमोस 5:21-24)। यिर्मयाह ने उन लोगों को उपदेश दिया जो "मंदिर, मंदिर" चिल्लाते थे, परन्तु परमेश्वर की उपस्थिति की वास्तविकता को नहीं जानते थे (यिर्मयाह 7:4)। यीशु ने उन लोगों का वर्णन किया जो व्यवस्था के हर विवरण का पालन करते थे, जो छोटी से छोटी वस्तु का दशमांश देते थे, और जो प्रार्थना, सब्त के पालन और अन्य आराधना पद्धतिओं के प्रति निष्ठावान थे, परन्तु उनके हृदय अशुद्ध थे (मत्ती 23:23)। ये लोग आराधना करने का दावा करते थे, परन्तु उनकी आराधना झूठी थी। सच्ची आराधना जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित करती है।

पौलुस ने उन विश्वासियों को लिखा जो मूर्तियों को चढ़ाए जाने वाले मांस के मुद्दे से जूझ रहे थे। इस समस्या पर चर्चा करने के बाद, पौलुस ने निष्कर्ष निकाला, “इसलिये तुम चाहे खाओ, चाहे पीओ, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिये करो” (1 कुरिन्थियों 10:31)। जबकि पौलुस मूर्तियों को चढ़ाए जाने वाले मांस के मुद्दे पर बात कर रहा था, यह सिद्धांत जीवन के सभी क्षेत्रों पर लागू होता है। यदि हम सच्चे मन से आराधना करते हैं, तो हमारा दैनिक जीवन परमेश्वर की महिमा के लिए होगा।

> "एक आराधना अगुआ वह व्यक्ति होना चाहिए जो जीवन के सभी क्षेत्रों में आराधना का आदर्श प्रस्तुत करे; जो हर बात में परमेश्वर का अनुसरण करे; जो आराधना की सर्वव्यापी जीवनशैली में कलीसिया की अगुआई करे।"
> - स्टीफन मिलर से लिया गया है

आराधना की एक परिभाषा है, “...हम जो कुछ हैं, उसका सम्पूर्ण प्रत्युत्तर उस सबके प्रति जो परमेश्वर है।”[90] यह परिभाषा दर्शाती है कि आराधना में जीवन के सभी क्षेत्र शामिल होंगे। आराधना को परिभाषित करते समय दो सिद्धांतों को संतुलित रखना आवश्यक है।

सामूहिक आराधना: रविवार को आराधना

सामूहिक आराधना, कलीसिया की देह के एकत्र होने का उल्लेख करती है। यह सभा किसी कलीसिया भवन, घर या किसी अन्य स्थान पर हो सकती है। स्थान महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि सामूहिक आराधना के लिए निर्धारित समय महत्वपूर्ण है। मसीहियों को सामूहिक आराधना के लिए एकत्रित होने का विशेषाधिकार और ज़िम्मेदारी दी गई है (इब्रानियों 10:25)।

आराधना एक जीवन शैली के रूप में: जीवन के सभी क्षेत्रों में आराधना

अदन की वाटिका में, यदि आपने आदम और हव्वा से पूछा होता, "तुम कब आराधना करते हो?" तो वे उत्तर देते, "हम निरंतर आराधना करते हैं। हमारा पूरा जीवन ही आराधना है।" यह आराधना एक जीवनशैली के रूप में है।

---

[90] Warren Wiersbe, *Real Worship.* (Grand Rapids: Baker Books, 2000), 21

आराधना, विश्वासियों का एक सामूहिक मिलन भी है और परमेश्वर की महिमा के लिए व्यतीत किया गया जीवन भी। दूसरी शताब्दी के ल्यों के बिशप इरेनियस ने कहा था, "परमेश्वर की महिमा एक पूर्णतः जीवित मनुष्य है।" यह मानव-केंद्रित मानवतावाद नहीं है; यह परमेश्वर-केंद्रित मान्यता है कि मनुष्य का अंतिम उद्देश्य परमेश्वर की महिमा के लिए जीवन व्यतीत करना है। यही सच्ची आराधना है।

> "हर दिन परमेश्वर की सेवा में अपना जीवन अर्पित करना ही हमारी जीवन भर की बुलाहट है। रविवार की सुबह की आराधना इसी बुलाहट का विस्तार है।"
> - बैरी लिश

मसीही होने के नाते, हम अपने जीवन के सभी बातों, यहाँ तक कि छोटी-छोटी बातों को भी, परमेश्वर को समर्पित करते हैं। आराधना केवल रविवार तक सीमित नहीं है। हमारा काम, खेल और सामान्य कार्य परमेश्वर की महिमा के लिए किए जाते हैं। रोमियों 12:1 दिखाता है कि आराधना में अपने शरीर को एक जीवित बलिदान के रूप में अर्पित करना शामिल है; यही हमारी आत्मिक सेवा है। आराधना के बारे में बाइबल आधारित दृष्टिकोण केवल साप्ताहिक सभा तक सीमित नहीं है; यह अपना संपूर्ण जीवन परमेश्वर को समर्पित करना है।

बाइबल आधारित आराधना के दृष्टिकोण में सामूहिक आराधना और दैनिक जीवन दोनों शामिल हैं। दोनों ही पहलू महत्वपूर्ण हैं। यदि हम यह भूल जाते हैं कि आराधना में दैनिक जीवन शामिल है, तो हम आराधना सभाओं में शामिल हो सकते हैं और अपने शेष जीवन पर इसका कोई प्रभाव नहीं देख सकते। इससे हम सामूहिक आराधना में भाग लेते हैं और परमेश्वर के प्रति दैनिक आज्ञाकारिता में जीवन व्यतीत करने से चूक जाते हैं।

जबकि, यदि हम केवल इस बात पर ज़ोर देते हैं कि "आराधना ही जीवन का सार है," तो हम केंद्रित आराधना के लिए निर्धारित नियमित समय के महत्व को भूल जाते हैं। सामूहिक आराधना में भाग लेना हमें परमेश्वर द्वारा जीवन के प्रबंधन की याद दिलाता है।

प्रबंधन का यह सिद्धांत दशमांश और सब्त में देखा जा सकता है। मसीही प्रबंधन का अर्थ है कि हमारा सारा धन परमेश्वर का है; उस सिद्धांत में हमारा विश्वास हमारे दशमांश से प्रकट होता है। समय के मसीही दृष्टिकोण का अर्थ है कि सारा जीवन परमेश्वर का है; हम सप्ताह में एक दिन आराधना और विश्राम के लिए समर्पित करके इसे प्रदर्शित करते हैं। इसी प्रकार, हमारे जीवन की सभी बातें आराधना का हिस्सा हैं; हम सामूहिक आराधना के लिए साथी विश्वासियों के साथ एकत्रित होकर इसे प्रदर्शित करते हैं।

बॉब कॉफलिन ने सामूहिक आराधना और जीवनशैली के रूप में आराधना के बीच संबंध को दर्शाया:

> रविवार हमारे सप्ताह का सबसे महत्वपूर्ण क्षण हो सकता है, परन्तु यह एकमात्र क्षण नहीं है। सप्ताह के दौरान हम आराधना का जीवन जीते हैं जब हम अपने परिवारों से प्रेम करते हैं, प्रलोभनों का विरोध करते हैं, उत्पीड़ित लोगों के लिए साहसपूर्वक आवाज़ उठाते हैं, बुराई के विरुद्ध खड़े होते हैं, और सुसमाचार का प्रचार करते हैं। इन सभी बातों में हम **बिखरी हुई आराधना करने वाली कलीसिया** हैं।

परन्तु हम संसार, अपने शरीर और शैतान के विरुद्ध अपनी लड़ाई में थक जाते हैं और हमें परमेश्वर के वचन और अन्य संतों की देखभाल से बल और प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है। हम उन लोगों के साथ संगति करना चाहते हैं जिनसे परमेश्वर ने हमें अपने पुत्र के लहू के द्वारा जोड़ा है। इसलिए हम **एकत्रित होकर आराधना करने वाली कलीसिया** बनते हैं।[91]

आराधना: परमेश्वर की महिमा के लिए जीवन व्यतीत करना

आराधना हमारे मूल्यों को दर्शाती है

हमें आराधना के लिए बनाया गया है। हम सभी किसी न किसी चीज़ या व्यक्ति की आराधना करते हैं। हम उसकी आराधना करते हैं जिसे हम सबसे ज़्यादा महत्व देते हैं। आराधना कहती है, "मेरे जीवन में यही सबसे पहला स्थान रखता है।"

बहुत से लोग धन, नौकरी, पदवी, रिश्तों या सुख-सुविधाओं की आराधना करते हैं। ये चीज़ें उनके जीवन में सबसे पहले आती हैं। आप कैसे जानते हैं कि आप किसकी आराधना करते हैं? अपने जीवन पर ध्यान करें। सबसे ज़्यादा ऊर्जा, समय और पैसा किस चीज़ में जाता है? आपने जो तय किया है कि वह आपके लिए सबसे मूल्यवान है; आप उसी की आराधना करते हैं।[92]

> "हर किसी की एक वेदी होती है। और हर वेदी का एक सिंहासन होता है। तो आप कैसे जानते हैं कि आप किसकी आराधना करते हैं? यह आसान है: अपने समय, अपने स्नेह, अपनी ऊर्जा, अपने धन और अपनी निष्ठा के मार्ग का अनुसरण करें। उस मार्ग के अंत में आपको एक सिंहासन मिलेगा, और जो कुछ भी, या जो कोई भी, उस सिंहासन पर है, वही आपके लिए सबसे मूल्यवान है। उस सिंहासन पर ही वह है जिसकी आप आराधना करते हैं।"
>
> - लुई गिग्लियो

केवल परमेश्वर ही आराधना के योग्य हैं; बाकी सब मुख्य नहीं है। आराधना की जीवनशैली परमेश्वर को हर बात में प्रथम स्थान देती है। सच्चे आराधकों ने परमेश्वर को अपने जीवन के सिंहासन पर बिठाया है; उनका मूल्य सर्वोच्च है। इसका अर्थ है कि सच्चे आराधकों के लिए, जीवन का हर क्षेत्र परमेश्वर की महिमा के लिए जिया जाता है।

सच्ची आराधना हमारे मूल्यों को बदलती है

यशायाह 6 में, हम देखते हैं कि सच्ची आराधना परिवर्तन लाने वाली होती है। आराधना केवल हमारे मूल्यों को दिखाती ही नहीं, वरन् हमारे मूल्यों को बदल भी देती है।।

आराधना, चाहे परमेश्वर की हो या मूर्तियों की, हमें बदल देती है। भजन संहिता 115:8 दिखाता है कि मूर्तियों की आराधना करने से हम बुराई की ओर मुड़ जाते हैं। “जैसी वे हैं वैसे ही उनके बनानेवाले हैं; और उन पर सब भरोसा रखनेवाले भी वैसे ही हो जाएँगे।” मूर्तिपूजक अपनी मूर्तियों जैसे ही बन जाते हैं। जो लोग धन की आराधना करते हैं, वे अधिकाधिक लालची होते जाते हैं; जो लोग सुख

---

[91] Bob Kauflin, *Worship Matters* (Wheaton: Crossway Books, 2008), 210

[92] Louie Giglio, *The Air I Breathe: Worship as a Way of Life.* (Sisters, OR: Multnomah Publishers, 2003) से लिया गया है.

की आराधना करते हैं, वे अधिकाधिक सुख के गुलाम बनते जाते हैं; जो लोग यश की आराधना करते हैं, वे अधिकाधिक आत्मकेंद्रित होते जाते हैं। हम जिसकी भी आराधना करते हैं, हम उसके जैसे ही बन जाते हैं।

उसी तरह, जो लोग परमेश्वर की आराधना करते हैं वे भी धीरे-धीरे उसके जैसे बनते जाते हैं। “परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में...हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलते जाते हैं” (2 कुरिन्थियों 3:18)। आराधना में हम उसके स्वरूप मे ढलते जाते हैं।

> आराधना केवल कुछ ऐसा नहीं है जो हम करते हैं; आराधना हमारे लिए कुछ करती है।

जब हम आराधना करते हैं, तो हमारे मूल्य बदल जाते हैंहैं। आराधक होने के नाते, हमें यह पूछना चाहिए, "क्या आराधना मेरे जीवन को बदल रही है?"

परमेश्वर की महिमा के लिए जीवन व्यतीत करने में सम्पूर्ण जीवन शामिल होता है

एक जीवनशैली के रूप में आराधना का अर्थ है कि जीवन का हर क्षेत्र परमेश्वर की महिमा के लिए जिया जाए। कई मसीही अपने जीवन को दो अलग-अलग क्षेत्रों में बाँटते हैं: पवित्र (रविवार) और संसारी (सोमवार-शनिवार)। वे "रविवार के मसीही" के रूप में जीते हैं। वे कलीसिया जाते हैं और मसीही धर्म का पालन करते हैं, परन्तु रविवार की आराधना का सोमवार के व्यावसायिक आचार-विचार, बुधवार के पारिवारिक जीवन या शनिवार के मनोरंजन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

सांसारिक शब्द इस संसार में जीवन को दर्शाता है। मसीही को परमेश्वर की महिमा के लिए सांसारिक जीवन जीने के लिए कहा जाता है। मसीही को सोमवार को इस तरह जीने के लिए कहा जाता है जो रविवार की आराधना के प्रभाव को दर्शाता हो। आराधना सभा के अंत में, हमें पूछना चाहिए, "आज की आराधना को व्यवहार में लाने के लिए मैं कल क्या करूँगा?" यही परमेश्वर की महिमा के लिए व्यतीत किया गया जीवन है।

परमेश्वर की महिमा के लिए जीवन व्यतीत करना कैसा दिखाई देता है?

परमेश्वर की महिमा के लिए जीवन जीने का अर्थ है कि जीवन का हर क्षेत्र परमेश्वर के प्रति उत्साह से संचालित हो। इसका अर्थ है परमेश्वर से इस हद तक प्रेम करना कि हमारी खुशी ही उसे प्रसन्न करे। एक व्यक्ति ने कहा कि किसी से प्रेम करने का अर्थ है उसके प्रति समर्पित होना। "आप उस व्यक्ति (या वस्तु) से प्रेम करते हैं जिसके विषय आप तब सोचते हैं जब आप किसी और बात के विषय नहीं सोच रहे होते।"

इसी तरह, लुई गिग्लियो का सुझाव है कि "हम अपने मुँह से निकलने वाली बातों से जानते हैं कि हमारी आत्मा में क्या सर्वोच्च है।”[93] हम उस विषय बात करते हैं जो हमारे लिए सबसे मूल्यवान है।

---

[93] Louie Giglio, “Psalm 16” में Matt Redman and Friends, *Inside, Out Worship* (Ventura: Regal Books, 2005), 78

सम्भवत: यह बात बहुत सरल लगे, परन्तु ज़रा सोचिए। जो व्यक्ति धन से प्रेम करता है, वह किस बारे में बात करता है? धन के बारे में। वह धन की बड़ाई करता है। एक खेल प्रेमी किस के बारे में बात करता है? खेल के बारे में। वह अपनी पसंदीदा खेल टीम की बड़ाई करता है।

क्या इसका अर्थ यह है कि एक मसीही को हर परिस्थिति में बाइबल के विषय बात करनी चाहिए? नहीं; इसका सीधा सा अर्थ है कि हम जिस भी विषय पर बात करते हैं, उससे परमेश्वर की महिमा होगी। जब हम कोई व्यावसायिक निर्णय ले रहे होते हैं, तो हम अपने सहकर्मियों से यह नहीं कह सकते कि "इस निर्णय से परमेश्वर की महिमा होनी चाहिए," परन्तु परमेश्वर की महिमा हमारे निर्णय को प्रभावित करेगी। जब हमें अपने बच्चे को अनुशासित करना होता है, तो हम बातचीत का आरम्भ इस तरह नहीं करते कि "पुत्र, मैं चाहता हूँ कि यह पिटाई परमेश्वर की महिमा करे," अपितु हम स्वयं से पूछते हैं, "क्या यह अनुशासन परमेश्वर को प्रसन्न करेगा या मैं बस अपना गुस्सा शांत कर रहा हूँ? क्या मेरे स्वर्गीय पिता मुझे इसी तरह अनुशासित करेंगे?"

मसीही होने के नाते, हम हर निर्णय परमेश्वर की महिमा के प्रकाश में लेते हैं। एक जीवनशैली के रूप में आराधना का अर्थ है कि परमेश्वर और उनकी महिमा हमारे हर कार्य के केंद्र बिन्दु में हैं।

पिछले पाठ में, हमने देखा कि अनुग्रह के अलावा, सामूहिक आराधना विधि-सम्मत हो जाती है, जहाँ हम पूछते हैं, "हम किस तरह से आराधना करें जिससे परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त हो?" उसी तरह, अनुग्रह के अलावा, आराधना की जीवनशैली एक विधि-सम्मत बोझ बन जाती है, जहाँ हम पूछते हैं, "क्या होगा यदि यह निर्णय परमेश्वर की महिमा करने का सबसे अच्छा तरीका नहीं है? यदि मैं इसमें गड़बड़ी कर दूँ, तो क्या परमेश्वर नाराज़ होंगे?"

विधि-सम्मत आराधना के विपरीत, परमेश्वर के अनुग्रह के प्रकाश में आराधना एक अद्भुत विशेषाधिकार बन जाती है। परमेश्वर के अनुग्रह के प्रकाश में सामूहिक आराधना, परमेश्वर कौन है और उसने क्या किया है, इसका उत्सव मनाने का एक अवसर है। इसी प्रकार, आराधना की जीवनशैली (जब परमेश्वर के अनुग्रह के प्रकाश में जी जाए) दैनिक जीवन में परमेश्वर की महिमा करने का एक अवसर है।

सोमवार का व्यावसायिक निर्णय परमेश्वर के नियमों का पालन करने का एक आनंदहीन प्रयास नहीं है; यह परमेश्वर के चरित्र के अनुरूप नैतिकता के साथ उनकी महिमा करने का एक आनंदमय अवसर है। एक बच्चे को अनुशासित करना परमेश्वर को नाराज़ करने से बचने का एक आनंदहीन प्रयास नहीं है; यह आपके लिए एक आनंदमय अवसर है कि आप अपने बच्चे के सामने परमेश्वर के प्रेमपूर्ण चरित्र का उदाहरण प्रस्तुत करें । अनुग्रह आराधना की जीवनशैली को बदल देता है।

आराधना की जीवनशैली: बाइबल आधारित एक आदर्श

रोमियों 12:1 में, मसीही व्यक्ति को स्वयं को एक जीवित, पवित्र और परमेश्वर को ग्रहणयोग्यं बलिदान के रूप में प्रस्तुत करने के लिए कहा गया है। यही हमारी आत्मिक आराधना है। रोमियों 12:2 दिखाता है कि यह बलिदान कैसे चढ़ाया जाएगा। यह वचन आराधना को एक जीवनशैली के रूप में समझने के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

11 अध्यायों के बाद, जिनमें पौलुस मसीही जीवन की धर्मज्ञान की नींव रखता है, वह उसके लागुकरण की ओर बढ़ता है। क्योंकि हम अनुग्रह से धर्मी ठहराए गए हैं (रोमियों 1-11), इसलिए हमें एक निश्चित तरीके से जीवन व्यतीत करना चाहिए (रोमियों 12-16)। ये अध्याय आराधना की जीवनशैली के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करते हैं।

आराधना की जीवनशैली का नकारात्मक पक्ष

पौलुस एक नकारात्मक आदेश से आरम्भ करता है: "इस संसार के सदृश न बनो।" हमें इस संसार के सदृश नहीं जीना चाहिए। हम इस संसार और स्वर्गीय राज्य, दोनों के प्रति समर्पित नहीं हो सकते; हम परमेश्वर और इस युग की आत्मा, दोनों की आराधना नहीं कर सकते।

जे.बी. फिलिप्स ने पौलुस के निर्देश की व्याख्या को इस प्रकार किया, "अपने आस-पास के संसार आपको अपने साँचे में न ढालने दें।" जब मिट्टी को साँचे में डाला जाता है, तो वह जल्द ही साँचे के आकार में ढल जाती है। संसार मसीहियों को अपने साँचे में ढालना चाहता है। संसार हमें अपनी माँगों के अनुसार ढलने के लिए मजबूर करना चाहता है। इसके बजाय, हमें आराधना की जीवनशैली अपनानी चाहिए, इस संसार के प्रभाव को अस्वीकार करना चाहिए।

यह प्रलोभन विशेष रूप से खतरनाक है क्योंकि हम साँचे के प्रति जागरूक हुए बिना भी अनुकूलन कर सकते हैं। पानी में रहने वाली मछली यह नहीं सोचती, "यह पानी है।" यह बस वह संसार है जिसमें वह रहती है। मिट्टी में रेंगने वाला कीड़ा यह नहीं सोचता, "यह मिट्टी है।" यह बस वह संसार है जिसमें वह रहता है। यदि हम सावधान नहीं हैं, तो पतित संसार में रहने वाला मसीही यह नहीं सोचेगा, "यह एक पतित संसार है।" यह बस वही दुनिया होगी जिसमें हम रहते हैं।

इसीलिए सामूहिक आराधना ज़रूरी है। इब्रानियों के लेखक ने चेतावनी दी थी कि हमें एक साथ इकट्ठा होना कभी नहीं भूलना चाहिए। क्यों? क्योंकि इसी तरह हम इन दूसरी आज्ञाओं को पूरा करते हैं:

- “तो आओ, हम सच्चे मन और पूरे विश्वास के साथ... ।” (इब्रानियों 10:22)।
- “आओ हम अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें...।” (इब्रानियों 10:23)।
- “प्रेम, और भले कामों में उस्काने के लिये हम एक दूसरे की चिन्ता किया करें... ।” (इब्रानियों 10:24)।

आराधना में, हमें याद दिलाया जाता है कि हम इस संसार के नहीं हैं। बाबुल में, मंदिर से अलग, अपने लोगों की सामूहिक आराधना में भाग लेने में असमर्थ, दानिय्येल दिन में तीन बार प्रार्थना करता था, अपनी खिड़कियाँ यरूशलेम की ओर खुली रखता था (दानिय्येल

6:10)। आराधना ने दानिय्येल को बाबुल के संसार के अनुरूप न बनने के लिए मज़बूत किया। यरूशलेम की ओर मुख करके, दानिय्येल को याद दिलाया गया, "मैं बाबुल का नागरिक नहीं हूँ; मैं यरूशलेम का नागरिक हूँ। मैं मर्दुक की पूजा नहीं करता; मैं यहोवा की सेवा करता हूँ।"[94]

आराधना की जीवनशैली का अर्थ है कि हम अपने संसार के ढाँचे में ढलने से इनकार करते हैं। यह प्रलोभनों के एक समूह का विरोध करने से कहीं बढ़कर है। यह नियमों के एक समूह का पालन करने से कहीं बढ़कर है। यह किसी खास पहनावे, आचार-संहिता या धार्मिक संस्कृति से कहीं बढ़कर है। यह सोचने और जीने का एक संपूर्ण तरीका है। इसका अर्थ है हर बात का मूल्यांकन परमेश्वर के राज्य के संदर्भ में करना।

मसीही होने के नाते, हम कभी भी अपने आस-पास की संस्कृति में सहजता से ढल नहीं पाएँगे। चीन में पर्वतीय उपदेश की एक कक्षा के बाद, एक छात्र ने कहा, "चीन में, यीशु की शिक्षाओं के अनुसार जीना कठिन है।" शिक्षक ने उत्तर दिया, "आश्चर्यचकित मत होइए। अमेरिका में भी, यीशु की शिक्षाओं के अनुसार जीना कठिन है।" संस्कृति चाहे जो भी हो, आराधना की जीवनशैली इस संसार की भावना के विपरीत होगी।

आराधना की जीवनशैली का सकारात्मक पक्ष

नकारात्मक आदेश के बाद, रोमियों 12 सकारात्मक निर्देश के साथ जारी रहता है: "परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल–चलन भी बदलता जाए।"

इस संसार के सदृश होने के विपरीत केवल भिन्न होना या अपने व्यक्तित्व का दावा करना नहीं है। इस संसार के सदृश होने का विपरीत तब तक बदलाव होना है जब तक आप परमेश्वर की इच्छा को नहीं जान लेते। कुछ मसीहियों ने अपनी संस्कृति से भिन्न जीवनशैली अपना ली है, परन्तु वे परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बदले नहीं हुए हैं। इसके बजाय, उन्होंने इस संसार की संस्कृति के स्थान पर एक विशिष्ट राजनीतिक दृष्टिकोण, सामाजिक दृष्टिकोण या वेशभूषा अपना ली है। वे अपने मन के नये होने से बदले नहीं हैं।

जे.बी. फिलिप्स ने व्याख्या की है, "अपने आस-पास के संसार आपको अपने साँचे में न ढालने दें" (नकारात्मक), "परन्तु परमेश्वर को आपको फिर से बनाने दें ताकि आपके मन का पूरा दृष्टिकोण बदल जाए" (सकारात्मक)। रोमियों की पुस्तक का शेष भाग दर्शाता है कि एक बदला हुआ मन कैसा दिखाई देगा।

- रोमियों 12: एक बदला हुआ विश्वासी दूसरों की सेवा करने के लिए अपने आत्मिक वरदानों का उपयोग करता है।
- रोमियों 13: एक बदला हुआ विश्वासी नागरिक अधिकारियों का सम्मान करता है।
- रोमियों 14: एक बदला हुआ विश्वासी अपने साथी विश्वासियों के विश्वासों का सम्मान करता है।

---

[94] टिम कीप, बाइबल मेथोडिस्ट मिशन्स से उद्धृत। होब साउंड बाइबल कॉलेज में नवंबर 2013 में दिए गए चैपल उपदेश से परिभाषित।

आराधना की जीवनशैली मात्र व्यवहार से कहीं बढ़कर है; आराधना हमारी पूरी सोच को बदल देती है। आराधना की जीवनशैली के प्रभाव पर विचार करें:

- यदि मसीही व्यापारी और राजनेता धन और शक्ति के प्रति अपने दृष्टिकोण में बदलाव लाएँ, तो अफ्रीका महाद्वीप कैसा दिखेगा?
- यदि अगुआ स्वयं को परमेश्वर के धन का संरक्षक समझें, तो एशियाई कलीसिया कैसी दिखेगी ?
- यदि मसीही लोग बेवफाई को हॉलीवुड की नज़र से देखने के बजाय परमेश्वर की नज़र से देखें, तो अमेरिका में विवाहित जीवन कैसा दिखेगा?

आराधना की जीवनशैली विश्वासी के मन को बदल देती है; एक बदला हुआ मन एक बदले हुए जीवन में दिखाई देगा; बदला हुआ जीवन समाज को बदल देगा। आराधना की जीवनशैली अंततः हमारे संसार को बदल देगी।

आराधना के खतरे: आज्ञाकारिता के बिना आराधना

भविष्यवक्ताओं ने आज्ञाकारिता के बिना आराधना के विरुद्ध चेतावनी दी थी। यिर्मयाह के दिनों के लोगों का मानना था कि मंदिर उन्हें बाबुल से बचाएगा। यिर्मयाह ने प्रत्युत्तर दिया, "तुम लोग यह कहकर झूठी बातों पर भरोसा मत रखो, 'यही यहोवा का मन्दिर है; यही यहोवा का मन्दिर, यहोवा का मन्दिर'" (यिर्मयाह 7:4)। इसके बजाए:

> **यदि** तुम सचमुच अपनी अपनी चाल और काम सुधारो;
>
> और सचमुच मनुष्य मनुष्य के बीच न्याय करो;
>
> परदेशी और अनाथ और विधवा पर अन्धेर न करो; इस स्थान में निर्दोष की हत्या न करो, और दूसरे देवताओं के पीछे न चलो जिससे तुम्हारी हानि होती है:
>
> **तो** मैं तुम को इस नगर में, और इस देश में जो मैं ने तुम्हारे पूर्वजों को दिया था, युग युग के लिये रहने दूँगा। (यिर्मयाह 7:5-7)।

इस्राएल के लोगों का मानना था कि वे आज्ञाकारिता के स्थान पर धार्मिक संस्कार को अपना सकते हैं। भविष्यवक्ताओं ने उपदेश दिया कि आज्ञाकारिता के बिना धार्मिक संस्कार निरर्थक है।

कुछ परंपराओं में, आज्ञाकारिता को धार्मिक अनुष्ठानों से बदल दिया जाता है। आराधना के तत्व मौजूद होते हैं। गीत सत्य बोलते हैं। धर्मग्रंथ पढ़े और उपदेश दिए जाते हैं। प्रार्थनाएँ की जाती हैं। जबकि, परमेश्वर के वचन के प्रति आज्ञाकारिता नहीं होती। जीवन नहीं बदले जाते। यह धार्मिक संस्कार है, आराधना नहीं।

कुछ परंपराओं में, आज्ञाकारिता के स्थान पर भावनात्मक प्रतिक्रिया होती है। सभा का उद्देश्य कुछ विशेष भावनाएँ उत्पन्न करना होता है। संगीत भावनाओं को जगाता है। प्रवचन एक निमंत्रण या प्रतिबद्धता के समय की ओर ले जाता है। जबकि, सभा के बाद आज्ञाकारिता और परमेश्वर के प्रति समर्पण का जीवन नहीं होता। यह भावना है, आराधना नहीं।

मंदिर में की गई आराधना में परमेश्वर के साथ इस्राएल की वाचा का उत्सव मनाया जाता था और इस्राएल को उसकी वाचा की ज़िम्मेदारियों की याद दिलाई जाती थी। आरंभिक कलीसिया में, आराधना में यीशु की मृत्यु के माध्यम से प्रदान की गई नई वाचा का उत्सव मनाया जाता था और मसीहियों को पवित्र जीवन के प्रति उनकी ज़िम्मेदारी की याद दिलाई जाती थी। वह आराधना जो आज्ञाकारिता का परिणाम नहीं देती, झूठी है।

सच्ची आराधना आराधक को बदल देती है। इस कोर्स के दौरान, हमने देखा है कि जो लोग सच्चे मन से आराधना करते हैं, वे बदल जाते हैं। इस कोर्स का उद्देश्य केवल यह नहीं है कि आप आराधना सभाओं की योजना बनाने और उनकी अगुआई करने में बेहतर बनें, अपितु यह है कि आप एक ऐसे आराधक बनें जो आराधना के द्वारा बदले हुए हों। फिर आप अपनी कलीसिया की अगुआई ऐसी आराधना में करेंगे जो कलीसिया के प्रत्येक सदस्य को बदले।

निष्कर्ष: एक पासबान की गवाही

सच्ची आराधना का क्या प्रभाव पड़ता है? एक स्पेनिश कलीसिया के पासबान की बात सुनिए।

“1991 में, हमारी कलीसिया का आत्मिक वातावरण अपने सबसे निचले स्तर पर था। अनैतिकता ने हमारे कुछ सदस्यों को जकड़ लिया था। जब हमने पाप में गिरे हुए सदस्यों को अनुशासित किया, तो कलीसिया में फूट पड़ गई। अंततः, आत्मिक और भावनात्मक रूप से टूटने के कगार पर, एक नए विश्वासी व्यक्ति ने सुझाव दिया कि हम रविवार को पूरे दिन उपवास और प्रार्थना करें। हमने ऐसा किया और परमेश्वर हमारे बीच कार्य करने लगे।

“कुछ सप्ताह के बाद, हमारा वार्षिक कैम्प आरम्भ हुआ। कलीसिया में कुछ विभाजन बना रहा। बुधवार की रात जब प्रचारक ने अपना प्रवचन आरम्भ किया, तो उन्हें लगा कि परमेश्वर ने उन्हें 'कितना महान' गाने के लिए कहा है।

“जब उन्होंने यह महान भजन गाया, तो परमेश्वर की महिमा भूखी भीड़ पर उतर आई। कुछ लोगों ने स्तुति के साथ प्रतिक्रिया दी; अन्य लोग वेदी पर परमेश्वर को खोजने लगे। एक महिला, जो कलीसिया में संघर्ष की जड़ थी, फूट-फूट कर रोने लगी। 400 लोगों के सामने खड़ी होकर, उसने स्वीकार किया, 'मैं बहुत दुखी हूँ क्योंकि मैंने अपने हृदय में क्षमा न करने की भावना रखकर परमेश्वर और उनकी कलीसिया के विरुद्ध पाप किया है। मैं प्रभु से मुझे क्षमा करने की प्रार्थना करती हूँ, और मैं आपसे एक कलीसिया के रूप में मुझे क्षमा करने की विनती करती हूँ।'

“जैसे ही ये शब्द उसके होठों से निकले, अन्य लोगों में मेल-मिलाप हो गया। उस शाम, परमेश्वर ने हमारी कलीसिया में एकता फिर से स्थापित कर दी। जैसे-जैसे परमेश्वर के लोगों ने प्रार्थना और उपवास में स्वयं को विनम्र किया, और जैसे-जैसे परमेश्वर के सेवक

पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन के प्रति आज्ञाकारी रहे, हम परमेश्वर की उपस्थिति में लाए गए। पाप स्वीकार किया गया; एकता फिर से स्थापित हुई। यही सच्ची आराधना का परिणाम है।”.[95]

पाठ 10 की समीक्षा

(1) सामूहिक आराधना रविवार को होती है; आराधना की जीवनशैली दैनिक जीवन में होती है। आराधना के बाइबलीय दृष्टिकोण के लिए दोनों ही महत्वपूर्ण हैं।

(2) सच्ची आराधना दर्शाती है कि हम वास्तव में क्या महत्व देते हैं।

(3) सच्ची आराधना हमारे मूल्यों को बदल देती है।

(4) आराधना की जीवनशैली का अर्थ है परमेश्वर की महिमा के लिए जीवन व्यतीत करना। इसका अर्थ है कि परमेश्वर समस्त जीवन का केंद्र बिन्दु होगा।

(5) आराधना की जीवनशैली का एक बाइबलीय आदर्श रोमियों 12:2 में देखा जा सकता है। इसमें शामिल है:

- एक नकारात्मक पक्ष: “इस संसार के सदृश न बनो।”
- एक सकारात्मक पक्ष: “तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल–चलन भी बदलता जाए।”

पाठ 10 के कार्य

(1) "मेरी आराधना का धर्मज्ञान" शीर्षक से 3-4 पृष्ठों का एक निबंध लिखें। इस निबंध में यह दर्शाया जाना चाहिए कि आराधना किस प्रकार बाइबल के सिद्धांतों पर आधारित है। यह निबंध बाइबल से संबंधित और व्यावहारिक दोनों होना चाहिए।

(2) यूहन्ना 4:23-24 पर आधारित सच्ची आराधना पर एक प्रवचन दीजिए।

(3) अपने कोर्स योजना पूरी करना: कक्षा अगुए के लिए एक पृष्ठ की रिपोर्ट लिखें जिसमें संक्षेप में बताया गया हो कि आपने अपनी "30-दिवसीय आराधना यात्रा" से क्या सीखा है। आपको अपनी डायरी जमा करने की आवश्यकता नहीं है।

(4) अपनी अंतिम परीक्षा के लिए, 1 कुरिन्थियों 10:31 के पद को स्मृति से लिखें।

---

[95] होप इंटरनेशनल मिशन्स के रेवरेंड सिडनी ग्रांट की गवाही

परिशिष्ट A

आराधना सभाओं की योजना बनाने की रूपरेखा

प्रवचन के आधार पर संरचित आराधना की रूपरेखा		
उद्देश्य	**आराधना गतिविधि**	**साप्ताहिक योजना**
सत्य की घोषणा	• भजन • बाइबल वचन • प्रवचन	
सत्य के प्रति प्रतिक्रिया	• आमंत्रण • दान • समापन भजन • आशीर्वाद (वचन)	

भजन संहिता 95 पर आधारित आराधना की रूपरेखा		
बाइबल आधारित आदर्श	**आराधना गतिविधि**	**साप्ताहिक योजना**
हर्ष और धन्यवाद के साथ प्रवेश करो	• आराधना के लिए बुलावा • स्तुति के भजन	
श्रद्धापूर्ण आराधना जारी रखें	• समर्पण के भजन • प्रार्थना	
परमेश्वर की आवाज सुनें	• बाइबल पठन • प्रवचन	

परमेश्वर के लोगों की आराधना में की जाने वाली गतिविधियों पर आधारित आराधना की रूपरेखा		
गतिविधि	**आराधना गतिविधि**	**साप्ताहिक योजना**
परमेश्वर के लोग एकत्रित होते हैं	स्तुति • आराधना के लिए बुलावा स्तुति -गीत • अंगीकार • प्रार्थना	
परमेश्वर के लोग वचन सुनते हैं	• बाइबल पठन • प्रवचन	
परमेश्वर के लोग वचन का उत्तर देते हैं	• आमंत्रण-गीत • प्रार्थना • दान	
परमेश्वर के लोगों को भेजा जाता है	• समापन भजन • आशीर्वाद (वचन)	

परमेश्वर और उसके लोगों के बीच संवाद को दर्शाती आराधना की रूपरेखा (यशायाह 6)		
क्रिया	**आराधना गतिविधि**	**साप्ताहिक योजना**
परमेश्वर स्वयं को प्रकट करते है	• आराधना के लिए बुलावा • (बाइबल से)	
परमेश्वर के लोग स्तुति और अंगीकार के साथ प्रत्युत्तर देते हैं	• भजन • प्रार्थना	
परमेश्वर अपने लोगों से बात करते हैं	• बाइबल पठन • प्रवचन	
परमेश्वर के लोग समर्पण के साथ प्रत्युत्तर देते हैं	• आमंत्रण भजन • दान	
परमेश्वर अपने लोगों को आदेश देते हैं	• आशीर्वाद	

परिशिष्ट B

गीत मूल्यांकन प्रपत्र

गीत के शब्द:			
	कमज़ोर	**मध्यम**	**सशक्त**
क्या शब्द सैद्धांतिक रूप से सत्य है?			
क्या यह शब्द मसीही अनुभव के प्रति विश्वसनीय है?			
क्या मण्डली शब्दों को समझ पाएगी?			
क्या संगीत की शैली शब्दों के अनुरूप है?			
क्या यह धुन मण्डली के लिए गाना आसान है?			

सुझाए गए संसाधन

पाठ 1

आराधना के अर्थ के विषय अधिक जानने के लिए कृपया निम्नलिखित संसाधन देखें:

पुस्तकें:

Jeremiah, David. *Worship*. CA: Turning Point Outreach, 1995. (देखें पाठ 1-2.)

Reimers, Gary. *The Glory Due His Name*. Greenville: Bob Jones University Press, 2009.

Segler, Franklin M. and Randall Bradley. *Christian Worship: Its Theology and Practice*. Nashville: B&H Publishing, 2006. (देखें पाठ 1।)

ऑनलाइन संसाधन:

"The Language of Worship: Seven Minute Seminary." पर https://www.youtube.com/watch?v=RqDCG_-cbrg

"Sin and Worship in Romans: Seven Minute Seminary." पर https://www.youtube.com/watch?v=6RyrW3aO0UI

पाठ 3

बाइबल में आराधना के विषय अधिक जानने के लिए कृपया निम्नलिखित संसाधन देखें।

Peterson, David. *Engaging with God: A Biblical Theology of Worship*. Downers Grove: InterVarsity Press, 1992.

Ross, Allen P. *Recalling the Hope of Glory: Biblical Worship from the Garden to the New Creation*. Grand Rapids: Kregel Publications, 2006.

Webber, Robert. *The Biblical Foundations of Worship*. Nashville: Star Song Publishing Group, 1993.

पाठ 5

आराधना के इतिहास के विषय अधिक जानने के लिए कृपया निम्नलिखित संसाधन देखें।

Segler, Franklin M. and Randall Bradley. *Christian Worship: Its Theology and Practice*. Nashville: B&H Publishing, 2006. (देखें पाठ 3।)

Webber, Robert. *Rediscovering the Missing Jewel: A Study in Worship Through the Centuries*. Peabody: Hendrickson Publishers, 1997.

Webber, Robert. *Twenty Centuries of Christian Worship*. Nashville: Star Song Publishing Group, 1994.

पाठ 6

आराधना में संगीत के विषय अधिक जानने के लिए कृपया निम्नलिखित संसाधन देखें।

Hustad, Donald. *Jubilate II: Church Music in Worship and Renewal*. Carol Stream: Hope Publishing, 1993.

Janvier, George. *Leading the Church in Music and Worship*. Nigeria: Africa Christian Textbooks, 2003.

Lloyd-Jones, D. Martyn. *Singing to the Lord*. Wales: Bryntirion Press, 2003.

Wolf, Garen. *Church Music Matters*. Salem: Schmul Publishing, 2005.

पाठ 7

आराधना में पवित्रशास्त्र और प्रार्थना के विषय अधिक अध्ययन करने के लिए कृपया निम्नलिखित संसाधन देखें।

Bounds, E. M. *Power through Prayer*. (कई संस्करण उपलब्ध हैं।)

Drury, Keith. *The Wonder of Worship: Why We Worship the Way We Do*. Fishers: Wesleyan Publishing House, 2002.

Duewel, Wesley. *Mighty Prevailing Prayer*. Grand Rapids: Zondervan, 2013.

Murray, Andrew. *With Christ in the School of Prayer*. (कई संस्करण उपलब्ध हैं।)

पाठ 9

Stauffer, S. Anita, ed. “The Nairobi Statement on Worship and Culture,” में *Christian Worship: Unity in Cultural Diversity*. Geneva: Lutheran World Federation, 1996.

Witvliet, John D. “An Open and Discerning Approach to Culture.” Video lecture. At http://worship.calvin.edu/resources/resource-library/an-open-and-discerning-approach-toculture

कार्यों का रिकॉर्ड

विद्यार्थी का नाम _____

नीचे दी गई तालिका में, प्रत्येक कार्य पूरा होने पर आद्याक्षर दिए जाएँगे। परीक्षाएँ तभी पूरी मानी जाएँगी जब छात्र 70% या उससे अधिक अंक प्राप्त कर लेगा। Shepherds Global Classroom से प्रमाणपत्र प्राप्त करने के लिए सभी कार्य सफलतापूर्वक पूरे करना आवश्यक है। ।

पाठ	परीक्षा	कार्य		
1				
2				
3				
4				
5				
6				
7				
8				
9				
10				

Shepherds Global Classroom से समापन प्रमाणपत्र के लिए आवेदन हमारी वेबसाइट www.shepherdsglobal.org पर पूरा किया जा सकता है। प्रमाणपत्र SGC के अध्यक्ष द्वारा प्रशिक्षकों और संचालकों को डिजिटल रूप से प्रेषित किए जाएँगे जो अपने छात्र/छात्राओं की ओर से आवेदन भरेंगे।

मसीह पर केंद्रित। प्रशिक्षण। हर जगह।

shepherds
GLOBAL CLASSROOM

SHEPHERDSGLOBAL.ORG